सार्द्ध-
नवचण्डीपुरश्चरणम्

शान्ति
कान्ति
लक्ष्मी
धृति
वृत्ति
श्रुति
स्मृति
दया
तुष्टि
पुष्टि
क्षुधा
छाया
शक्ति
जाति
लज्जा

लेखक एवं सम्पादक

डॉ. रामप्रिय पाण्डेय

।। श्रीः ।।

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

506

सार्द्धनवचण्डिपुरश्चरणम्

लेखक एवं सम्पादक

डॉ० रामप्रिय पाण्डेय

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

© सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का किसी भी रूप में पुनर्मुद्रण, या किसी भी विधि (जैसे - इलेक्ट्रोनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉडिग या कोई अन्य विधि) से प्रयोग या किसी ऐसे यंत्र में भंडारण, जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो, प्रकाशक की पूर्वलिखित अनुमति के बिना नही किया जा सकता है।

ISBN : 978-93-80326-67-2

प्रकाशक :
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
के-37/117 गोपाल मंदिर लेन, पोस्ट बॉक्स न. 1129
वाराणसी-221001
दूरभाष : (0542) 2335263

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण : 2011
मूल्य : 500.00

अन्य प्राप्तिस्थान :
चौखम्बा पब्लिशिंग हाऊस
4697/2, भू-तल (ग्राउण्ड फ्लोर)
गली न. 21-ए, अंसारी रोड़, दरियागंज
नई दिल्ली - 110002
दूरभाषः (011) 32996391, टेलीफैक्सः (011) 23286537

*

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38. यू. ए. बंग्लो रोड़, जवाहर नगर,
पोस्ट बॉक्स न. 2113, दिल्ली - 110007

*

चौखम्बा विद्याभवन
चौक (बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे)
पोस्ट बॉक्स न. 1069, वाराणसी-221001

मुद्रक
डीलक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

भूमिका

इस अक्षुण्ण नश्वर संसार में प्राणियों की नश्वरता सर्वत्र विदित है। सर्वत्र अल्पायु का प्रकोप व्याप्त है। प्रत्येक प्राणी पशुवत् जीवन जी रहा है। मनुष्य सदैव केवल उदरपूर्ति और भोगों में संलग्न है; इसके अतिरिक्त अन्य किसी भी विषय का उसे कोई ज्ञान ही नहीं है। वह केवल अपने क्षणिक भौतिक सुख के साधनों के लिए सदैव दिन-रात संघर्ष करता रहता है। उसके संघर्ष की कोई सीमा ही नहीं है। यह संघर्ष असीमित है। वह अपने व्यक्तिगत कामनाओं की पूर्त्ति के लिए अपने समाज में आपस के ही लोगों से दुर्नीतिपूर्ण तथा दुराग्रहपूर्वक व्यवहार करने लगा है, जिससे उसका अपना ही जीवन अनिश्चितता से ग्रस्त होकर विपत्तियों और परेशानियों के भवसागर में फँस गया है, जिसके फलस्वरूप वह असहाय-सा हो गया है। ऐसे कालुष्य-प्रधान युग में उसके विपत्तियों से त्राण कराने वाला कोई नहीं है। समस्त प्राणी इस घोर विपत्ति के महासागर में असहाय होकर प्रवाहित हो रहे हैं। उनके पास इस समस्या से समाधान का कोई भी साधन नहीं है। अज्ञान के भवसागर में पड़ कर जन्म-मृत्यु के बन्धन से ग्रस्त होकर बार-बार मृत्यु तथा बार-बार जन्म के सागर में वे डूब रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में **कलौ चण्डिविनायकौ** अर्थात् कलियुग में केवल चण्डिका देवी ही रक्षक तथा तारक हैं।

भगवती चण्डिका के स्वरूपाख्यान में सप्तशती के प्राधानिक रहस्य में कहा गया है कि—

भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः।
एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन्प्रधानं वक्तुमर्हसि।।
आराध्यं यन्मया देव्या स्वरूपं येन च द्विज।
विधिना ब्रूहि सकलं यथावत् प्रणतस्य मे।।

यहाँ प्रकृति (सृष्टि) को मूल कारण के रूप में व्यक्त किया गया है; जिसके स्वरूप के विषय में इस प्रकार उद्धृत है—

सर्वस्याऽऽद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी।
लक्ष्याऽलक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता।।
मातुलिङ्गं गदा खेटं पानपात्रं च विभ्रती।
नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृपमूर्धनि।।

तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा।
शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा।।

लिङ्गं योनिं च बिभ्रती के स्वरूपाख्य में **लिङ्गः शिवरूपात्मकं परमात्मतत्त्वं** (लिङ्ग ही शिवरूप परमात्म तत्त्व) तथा **योनिः शरीररूपात्मिका आवरणात्मिका मायात्मिका शक्तिः** (योनि ही शरीररूपात्मक आवरणात्मक माया शाक्ति है) यही शिव-शक्तिमय ऐक्यता (शिव-शक्ति का सम्मिलित एक रूप) ही सदाशिव है। इसी में लिङ्गरूप पुंरूपत्व तथा योनिरूप स्त्रीरूपत्व और दोनों पुंभाव तथा स्त्रीभाव का सम्मिलित रूपत्व होने से ही शिव-शक्त्यात्मक सदाशिवत्व स्पष्ट ही है। सदाशिव में आरूढ शक्ति को ही शाक्त सम्प्रदायवादी महालक्ष्मी रूप से प्रतिष्ठित करते हैं। यही महालक्ष्मी कूटस्थ समष्टि रूप ही सप्तशती महास्तोत्र में प्रथममध्यमोत्तमचरित्रत्रय मे सकलदेवीरूपा है।

सदाशिवाङ्कमारूढा शक्तिरिच्छाह्वया शिवा।
महालक्ष्मीरिति ख्याता देवी सर्वगुणान्विता।।

सदाशिवाङ्कभूता महालक्ष्मी शिवा ही गुणत्रय के विभाग से महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वतीरूपा है। परमात्मिका मूल प्रकृति ही सभी रूपों में अवतरित है और इन्हीं से ही ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र की भी सृष्टि हुई है।

शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी।
बभार रूपमपरं तमसा केवलेन हि।।
सा भिन्नाञ्जनसङ्काशा दंष्ट्राङ्कितवरानना।
विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा।।
खड्गपात्रशिरःखेटैरलंकृतचतुर्भुजा ।
कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणां हि शिरःस्त्रजम्।।
सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा।
नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः।।
तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसी प्रमदोत्तमाम्।
ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते।।
महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा।
निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया।।
इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः।
एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम्।।
तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृपम्।
सत्त्वाख्येऽनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ।।

अक्षमालांकुशधरा वीणापुस्तकधारिणी।
सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ।।
महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती।
आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी।।
अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम्।
युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः।।
इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुने स्वयम्।
हिरण्यगर्भं रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ।।
ब्रह्मन् विद्ये विरिञ्चेति धातरित्याह तं नरम्।
श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम्।।
महाकाली भारती च मिथुने सृजतः उभौ।
एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते।।
नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम्।
जनयामास पुरुषं महाकालीं सितां स्त्रियम्।।
स रुद्रः शङ्करः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः।
त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा।।
सरस्वतीं स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप!।
जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते।।
विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः।
उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा।।
एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे।
चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः।।
ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम्।
रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम्।।
स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत्।
विभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान्।।
अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभून्नृप!।
महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम्।।
पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः।
सञ्जहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः।।
महालक्ष्मीर्महाराज! सर्वसत्त्वमयीश्वरी।
निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत्।।

नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नाऽन्येन केनचित्।

महालक्ष्मी ही सत्त्वगुणात्मक, रजोगुणात्मक, तमोगुणात्मक तथा त्रिगुणमयी आदि भेद से तीन रूप वाली हो जाती है। वे ही शर्वा, चण्डिका, दुर्गा, भद्रा, भगवती आदि नामों से अभिहित हैं। तमोगुणगयी महाकाली ही विष्णु की योगनिद्रा कही गयी हैं। इन्हीं देवी की ब्रह्मा जी ने मधु-कैटभ के वध के लिए स्तुतिपुर्वक आराधना की थी। वे दश मुखों, दश भुजाओं तथा दश पैरों वाली हैं; उनका वर्ण कृष्ण है तथा वे तीस नेत्रों वाली हैं। वे भीषण होते हुए भी महत्सौभाग्य देने वाली हैं। यह महाकाली ही भगवान् विष्णु की दुरूह माया हैं। इनकी उपासना करने पर उपासक चराचर विश्व को भी अपने अधीनस्थ कर लेता है और सर्वत्र स्वतन्त्र विचरण करता है।

त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता।
सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते।।
योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा।
मधुकैटनाशार्थं यां तुष्टावाऽम्बुजासनः।।
दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया।।
स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपाऽपि भूमिप।
रूप-सौभाग्य-कान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः।।
खड्ग-बाण-गदा-शूल-चक्र-शङ्ख-भुशुण्डिभृत्।
परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ।।
एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया।
आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराऽचरम्।।

समस्त देवों के अङ्गों से जिनकी उत्पत्ति हुई, वे ही असीम कान्तिमयी साक्षात् महालक्ष्मी हैं। वे ही त्रिगुणमयी तथा महिषासुरमर्दिनी हैं। वे गौरवर्णा हैं, विश्व में अजेय है। वे अत्यन्त मनोहारी एवं विचित्र दीखती हैं। उनके समस्त वस्त्राभरणादि वस्तुयें भी विचित्र हैं। वे रूप, लावण्य और सौभाग्य से विभूषित हैं। अगणित भुजाओं वाली होती हुईं भी वे अष्टादश भुजाओं वाली हैं। वे कमलासन पर विराजमान, सर्वदेवमयी तथा सभी प्राणियों की ईश्वरी हैं। जो इन महालक्ष्मी देवी की आराधना करता है, वह समस्त लोकों तथा देवों का भी स्वामी बन जाता है।

सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा।
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी।।
श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला।
रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा।।

सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा।
चित्रानुलेपना कान्ति-रूप-सौभाग्यशालिनी।।
अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती।
अयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात्।।
अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा।
चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः।।
शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः।
अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम्।।
सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप!।
पूजयेत् सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत्।।

पार्वती जी के शरीर से जो एकमात्र सत्त्वगुणमयी उत्पन्न हुईं, जिन्होंने शुम्भ-निशुम्भादि का वध किया, उन्हें साक्षत् महासरस्वती कहा जाता है। निशुम्भमर्दिनी तथा शुम्भासुर-संहारिणी सरस्वती देवी की जो भक्ति-भावयुक्त होकर उपासना करता है, वह मनुष्य सर्वज्ञता प्राप्त कर लेता है।

गौरीदेहात् समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया।
साक्षात् सरस्वती प्रोक्ता शुम्भाऽसुरनिबर्हिणी।।
दधौ चाष्टभुजा बाणमुशले शूलचक्रभृन्।
शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप।।
एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्त्वं प्रयच्छति।
निशुम्भमथिनी देवी शुम्भाऽसुरनिबर्हिणी।।
इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव।
उपासने जगन्मातुः पृथगासां निशामय।।

इनकी भिन्न-भिन्न प्रकार से ही पूजाविधि भी बतलाई गयी है। जब महालक्ष्मी की पूजा करनी हो तो उन्हें मध्य भाग में स्थापित करे, तदनन्तर उनके दक्षिण तथा वाम भाग में क्रमशः महाकाली तथा महासरस्वती की प्रतिमा स्थापित कर पूजन करना चाहिये; साथ ही उनके पीछे तीन युगल देवताओं की पूजा करनी चाहिये।

महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती।
दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम्।।
विरिञ्चिः स्वरयोर्मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे।
वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम्।।

यदि अष्टादश भुजाओं वाली महादेवी की पूजा करनी हो तो मध्य में अष्टादशभुजा

देवी के बाँयें दशमुखी महाकाली तथा दाहिने अष्टभुजा महासरस्वती का पूजन करना चाहिये; साथ ही उनके दाँये-बाँयें काल तथा मृत्यु का भी पूजन करे। जब अष्ट भुजाओं वाली देवी का पूजन करना हो तो ब्राह्मी आदि नौ शक्तियों का भी पूजन करे।

अष्टादशभुजा मध्ये वामे चाऽस्या दशानना।
दक्षिणेष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत्।।
अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप!।
दशानना चाऽष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा।।
कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये।
यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भाऽसुरनिबर्हिणी।।
नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ।
नमो देव्यै---------------------------------।।

इस स्तोत्रमन्त्र से महालक्ष्मी देवी की आराधना करनी चाहिये। उनके तीन अवतारों के पूजन-काल में स्तोत्र में वर्णित मन्त्रों का ही प्रयोग करना चाहिये। अष्टादश भुजाओं वाली महिषासुरमर्दिनी महालक्ष्मी और महासरस्वती ही विशेषतया आराध्य हैं; ये ही महाकाली, महासरस्वती तथा महालक्ष्मी कही जाती हैं।

नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत्।।
अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रैर्मन्त्रास्तदाश्रयाः।
अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी।।
महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती।
ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी।।
महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः।
पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्।।

महालक्ष्मी परमाम्बिका ही समस्त विपत्तियों को नष्ट कर जीवों का कल्याण करती हैं। इन्हीं महालक्ष्मी को ही शाक्तवादी साधक चण्डिकादि नामों से व्यवहृत करते हैं। महादेवी चण्डिका की उपासना के लिये सर्वाधिक प्रसिद्ध साधन श्रीदुर्गा सप्तशती महा-स्तोत्र है। दुर्गासप्तशती महास्तोत्र का मनुष्यों की कामनाओं के अनुरूप विभिन्न ग्रन्थों में बहुत प्रकार से प्रयोग विधियाँ बतायी गयी हैं। शापोद्धार, उत्कीलनादि के बाद पाठ करने की विधि निर्देशित की गई है। शास्त्रों में चण्डीपाठ के बहुत प्रकार के फल बतलाये गये हैं।

चण्डीपाठफलं देवि शृणुष्व गदतो मम।
एकावृत्त्यादिपाठानां प्रत्यहं पठतां नृणाम्।।

सङ्कल्प्य पूज्यां सम्पूज्य न्यस्याङ्गेषु मनून्सकृत्।
पश्चाद् बलिप्रदानेन फलमाप्नोति मानवः।।

विधिपूर्वक सङ्कल्प करके न्यास-पूजा का विधान करने के बाद बलि प्रदान करके मनुष्य अपनी कामनाओं की पूर्ति करता है। मानवों को उपसर्ग की शान्ति के लिए तीन आवृत्ति पाठ करना चाहिये। ग्रहों के दोषों की शान्ति के लिए पञ्च आवृत्ति पाठ करना चाहिए। महाभय उपस्थित होने पर सात पाठ करना चाहिये। प्राणसङ्कट का भय होने पर नव आवृत्ति पाठ करना चाहिये। कामनाओं की सिद्धि के लिए द्वादशावृत्ति पाठ करना चाहिये। शत्रुओं तथा स्त्रियों को वश में करने के लिए चौदह आवृत्ति पाठ करना चाहिए। श्री की कामना के लिए पन्द्रह पाठ करना चाहिए। पुत्र-पौत्र, धन-धान्यादि की वृद्धि के लिए षोडश आवृत्ति, राजभय-विनाश के लिए सत्रह आवृत्ति तथा उच्चाटनादि की कामना में अष्टादश आवृत्ति पाठ करना चाहिए। महारण से विमोचन के लिए बीस पाठ करना चाहिए। बन्दी-मोचन के लिए पच्चीस पाठ करना चाहिए। हमेशा सङ्कट की स्थिति बनी रहे तथा सदैव ही कुछ-कुछ भय उपस्थित होता रहे, जातीध्वंस, कुलोच्छेद, आयुष्यनाश की स्थिति उपस्थित होने पर, वैरियों की वृद्धि हो जाने पर, धननाश की अवस्था में, धन के क्षय होने की परिस्थिति में, त्रिविध उत्पात उपस्थित होने पर तथा अतिपातक की उपस्थिति में यत्नपूर्वक शतावृत्ति पाठ करना चाहिए। श्रीवृद्धि के लिए तथा राजवृद्धि के लिए अष्टोत्तरशतावृत्ति पाठ करना चाहिए। सौ अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त करने के लिए सहस्रावृत्ति पाठ करना चाहिए।

उपसर्गोपशान्त्यर्थं त्रिरावृत्तं पठेन्नरः।
ग्रहदोषोपशान्त्यर्थं पञ्चावृत्तं वरानने।।
महाभये समुत्पन्ने सप्तावृत्तमुदीरयेत्।
नवावृत्त्या पठेद् मुच्येत्प्राणार्तिजाद्भयाद्।।
राजवश्याय भूत्यै च रुद्रावृत्तमुदीरयेत्।
अर्कावृत्त्या कामसिद्धिर्वैरिनाशश्च जायते।।
मन्वावृत्त्या रिपुर्वश्यस्तथा स्त्री वश्यतामियात्।
सौख्यं पञ्चदशावृत्त्या श्रियमाप्नोति मानवः।।
कलावृत्त्या पुत्रपौत्रधनधान्यागमं विदुः।
राजभीतिविनाशाय वरस्योच्चाटनाय च।।
कुर्यात्सप्तदशावृत्तं तथाऽष्टादशकं प्रिये।
महारणविमोक्षाय विंशावृत्तं पठेन्नरः।।
पञ्चविंशावर्तनाच्च भवेद्बन्धविमोक्षणम्।
सङ्कटे समनुप्राप्ते दुश्चिकित्सभये सदा।।

जातिध्वंसे कुलोच्छेदे आयुषो नाश आगते।
वैरिवृद्धौ व्याधिवृद्धौ धननाशे तथा क्षये।।
तथैव त्रिविधोत्पाते तथा चैवातिपातके।
कुर्याद्यत्नाच्छतं वृतं ततः सम्पद्यते शुभम्।।
विपदस्तस्य नश्यन्ति ततो याति परां गतिम्।
श्रियो वृद्धिः शतावृत्त्या राजवृद्धिस्तथा परा।।
मनसा चिन्तितं देवि सिध्येदष्टोत्तराच्छतात्।
शताश्वमेधयज्ञानां फलमाप्नोति सुव्रते।।
सहस्रावर्तनाल्लक्ष्मीरावृणोति स्वयं स्थिरा।
प्राप्तो मनोरथान्कामान्नरो मोक्षमवाप्नुयात्।।
यथाश्वमेधः क्रतुषु देवानां च यथा हरिः।
स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः।।
अथवा बहुनोक्तेन किमन्येन वरानने।
चण्ड्याः शतावृत्तपाठात्सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः।।

समस्त कामनाओं के लिए शतावृत्ति पाठ करना ही श्रेयस्कर बताया गया है। इसी प्रकार पाठ की विधियाँ तथा हवन के भी विभिन्न प्रकार के विधान निर्देशित किये गये हैं।

वर्तमान काल में विद्वानों के द्वारा सर्वत्र विभिन्न विधियों के द्वारा भगवती की आराधना भी की जा रही है। आजकल बहुतेरे सामर्थ्यवान लोग श्रद्धा और निष्ठा के द्वारा शतचण्डी-विधान करते-करवाते हैं। नवरात्र के समय पर तो नवचण्डी-पाठ की योजनायें ही सर्वाधिक देखी जा रही हैं। सर्वाधिक यही देखने को मिल रहा है कि उपासनायें करते-करवाते तो बहुत हैं; लेकिन उनकों उस उपासना का फल नहीं मिलता और उनकी परेशानियाँ भी अपनी जगह पर बनी ही रहती हैं। जब फल-प्राप्ति में ही सन्देह होने लग जाय तो यह स्पष्ट जान लेना चाहिए कि या तो कहीं विधि ही में कमी है अथवा कर्म में ही कहीं दोष है, जिससे फल-प्राप्ति नहीं हो पा रही है। इस विषय में पुनः विधियों तथा उपासना के अधिकार-सम्बन्धी विचार अवश्य करना चाहिए। पूर्वाचार्यों के द्वारा समस्त विधियों पर प्रकाश डालते हुए अधिकारी के विषय में निर्देशित है कि वही व्यक्ति चण्डी-यज्ञ का अधिकारी है, जो कुण्डलिनी शक्ति को उत्थापित करके षट्चक्रों का भेदन करते हुए सहस्रार-स्थित शिव से अमृतश्राव करा कर षट्चक्रों में स्थित डाकिन्यादि मण्डलों का सिंचन करके चण्डी यज्ञ करता है। तभी उसका कर्म फलवान होता है; अन्यथा वह किया गया कर्म ही काल-मृत्युरूप हो जाता है और कर्ता तथा यजमान दोनों की ही हानि करता है।

कुण्डलिन्युत्थापनेन मधुस्त्रावणेन डाकिन्यादिमण्डलं आप्लापवनरूपान्तरकर्माणि सत्येव बाह्यानि यज्ञानि कर्माणि सफलानि भवन्ति। तदभावे ते यस्मिन् काले कर्माणि क्रियन्ते, स काल एव तेषां कर्मणां कालमृत्युरूपो भवतीति।

अन्तरग्नौ मधुस्त्रावं कुर्वतां शिशिरात्मनाम्।
इष्टापूर्तादिकर्माणि फलन्ति किल कालतः।।
अन्तःस्त्रावविहीनानां सदा सन्तप्तचेतसाम्।
कर्माणि क्रियमाणानि कालो ग्रसति तत्क्षणात्।।
कालकर्षिणिकैवान्तःकरोति मधु वर्षति।
इति यो वेद तस्य स्याद् ब्रह्मरन्ध्रात् सुधास्त्रुतिः।।

शान्त चित्त वाले साधक ही अन्तरग्नि में मधुस्त्राव करना जानते हैं, उनके द्वारा किया गया कर्म ही कामनापूर्ति में सहायक होता है। अन्तःस्त्राव-विहीन सन्तप्त चित्त वाले व्यक्तियों के द्वारा किया गया कार्य काल के द्वारा तत्क्षण ही ग्रस लिया जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि चण्डी यज्ञ करने का अधिकार केवल कुशल योगियों को ही है; लेकिन आजकल सर्वत्र योगिजन उपलब्ध नहीं है तथा कर्मकाण्डी जन भी यौगिक क्रिया से सर्वथा वञ्चित ही हैं। स्थिति यहाँ तक है कि वे दैनिक सन्ध्या कर्म तक नहीं करते। इस प्रकार कर्मकाण्डी जनों के पास चण्डी यज्ञ कराने अथवा करने का अधिकार ही नहीं है। कर्ता यदि योगानुष्ठानादि में दक्ष नहीं है, यौगिक क्रियाओं को नहीं करता है और चण्डी यज्ञ करना चाहता है तो उसके लिए शास्त्र में अन्य व्यवस्था यह है कि चण्डी यज्ञानुष्ठानकर्ता तीन दिन पूर्व से कालाकर्षिणिका शक्ति का अनुष्ठान करके तब चण्डी याग करे। यह कालाकर्षिणिका शक्ति ही उनके कृत कर्म को फल के रूप में परिवर्तित करके उसकी कामनापूर्ति सम्पादित करती है। अतः कार्यसिद्धि में कोई सन्देह नहीं रहता और कार्य अवश्य ही सफल होता है। अथवा स्वप्न विद्या के द्वारा इष्ट से अनुमति ग्रहण करके यज्ञानुष्ठान सम्पादित करे, जिसमें चण्डिका का पूर्व ही अनुग्रह प्राप्त हो जाता है।

आज कल यज्ञानुष्ठान करने वाले कर्मकाण्डी गण न तो कुशल योगि होते हैं, न ही वे कालाकर्षिणिका शक्ति का अनुष्ठान जानते हैं और न तो वे स्वप्न विद्या ही जानते हैं। ऐसी परिस्थिति में कुछ ऐसे भी कार्य होते हैं, जिसमें मधुस्त्राव करे या न करे, कालाकर्षिणिका शक्ति का अनुष्ठान करे या न करे अथवा स्वप्न विद्या का बोध हो या न हो, किसी भी परिस्थिति में अनुष्ठान किया जाय तो वह अवश्य ही फल प्रदान करता है। वह अनुष्ठान शास्त्र में सार्द्धनवचण्डी पुरश्चरण के नाम से ख्यातिलब्ध है। यह प्रयोग किसी भी कामना के लिए किया जा सकता है। इस अनुष्ठान में न ही तो मधुस्त्राव की ही आवश्यकता है, न तो कालकर्षिणिका शक्ति के अनुष्ठान की ही

आवश्यकता है और न तो स्वप्नविद्याा की ही आवश्यकता है। किसी भी अवस्था में सार्द्धनवचण्डी पुरश्चरण प्रयोग फलवान होता ही है।

नवसार्धं जपेद्यस्तु मुच्येत् प्राणान्तकाद् भयात्।
राज्यश्रीसर्वसम्पत्तिः सर्वान्कामानवाप्नुयात्।।
प्रयोगोऽयं महागुह्यो देवानामपि दुर्लभम्।
तत्तेऽहं सम्प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय।।
मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम्।
शक्रादिस्तुतिदेवातो देवीसूक्तं पुनस्तथा।।
नारायणीस्तुतिश्चैव फलानुकीर्तनं तथा।
ततो वरप्रदानं च ह्यर्धपाठोऽयमुच्यते।।
अर्धपाठस्त्वयं प्रोक्तः सर्वकामफलप्रदः।
अर्धपाठेन रहितं नवपाठफलं न हि।।

सार्द्धनवचण्डी पुरश्चरण के नाम की तो प्रसिद्धि प्राप्त होती है; लेकिन कर्मकाण्डी जनों के पास इस प्रयोग को सम्पादित करने-कराने की विधिपूर्वक पद्धति कहीं भी उपलब्ध नहीं थी। केवल कुछ अत्युच्च कोटि के विद्वानों के पास मौखिक ही थी। कर्मकाण्डी विद्वानों के मांग पर इस पद्धति का साङ्गोपाङ्ग अवतरण किया गया। जिसमें यज्ञकर्ता का हित होता हो, कर्मकाण्डी जन अपने या यजमान के लिए इस अनुष्ठान को सम्पादित करके जनकल्याण कर सकते हैं।

इस प्रयोग को एक दिन में भी सम्पादित कर सकते हैं, जिसमें एकादश ब्राह्मणों के वरण की आवश्यकता होती है—नौ ब्राह्मण नव पाठ के लिए तथा एक ब्राह्मण अर्ध पाठ के लिए तथा एक ब्राह्मण रुद्राभिषेक करने के लिए। इस प्रकार एकादश ब्राह्मणों का वरण करके एक दिन में भी अनुष्ठान सम्पादित किया जा सकता है। इस अनुष्ठान को नवरात्रियों में भी कराया जा सकता है, जिसमें केवल एक ही ब्राह्मण सम्पूर्ण कार्य को प्रतिदिन के हिसाब से सम्पादित करते हैं। अन्तिम दिन हवन के बाद रुद्राभिषेक किया जाता है। आवश्यकता होने पर इस अनुष्ठान को कभी भी किया जा सकता है। इसमें किसी भी विशेष मुहूर्त की भी आवश्यकता नहीं होती; क्योंकि इसका आपत्तिकाल में भी प्रयोग होता है। जिस क्षण आपत्ति की जानकारी हुई, उसी काल में इस प्रयोग को किया जा सकता है। जिस क्षण विपत्ति का आगमन हुआ और जब ही अनुष्ठान करने की कामना हो गयी उसी क्षण इस अनुष्ठान को सम्पादित करा कर लाभान्वित हुआ जा सकता है। आतुर काल ही इसका सर्वसुलभ मुहूर्त है। इसलिए निःशङ्क होकर मानव जन इस विधि से अपना कल्याण कर सकते हैं। यह सर्व सरल

और सुगम विधि है। श्रीकाशीविश्वनाथस्वरूप मेरे जनक परमपुण्यमय स्व० प्रो० वायुनन्दन पाण्डेय जी की असीम कृपाप्रसादस्वरूप जनकल्याणार्थ यह सार्द्धनवचण्डी-पुरश्चरण विधि लोक में अवतरित हो रही है, जो जनकल्याणकारी है। जनसामान्य तथा कर्मकाण्डी विद्वान् इस विधि का अनुसरण करके अपना तथा लोक का भला करें।

विद्वच्चरणचञ्चरीकः

डॉ० रामप्रियपाण्डेयः

विषयसूची

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
स्वस्तिवाचनशान्तिपाठः	१
गणेशाम्बिकापूजनम्	४
गणेशाथर्वशीर्षपाठः	१५
देव्यथर्वपाठः	१६
फलश्रुतिः	१८
वरुणकलशस्थापनपूजनम्	१९
पुण्याहवाचनम्	२६
ब्राह्मणानां करपूजनम्	२७
पुण्याहवाचनमन्त्रपाठः	२८
अभिषेकः	३३
षोडशमातृकापूजनम्	३५
सप्तघृतमातृकापूजनम्	४३
आयुष्यमन्त्रपाठः	४९
साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दिश्राद्धम्	५०
आचार्यादिवरणम्	५५
दिग्रक्षणम्	५७
पञ्चगव्यकरणम्	५९
सर्वतोभद्रचक्रम्	६०
प्रधानकलशस्थापनम्	७२
पीठदेवतास्थापनम्	७५
यन्त्रस्थदेवावाहनम्	८०
अग्न्युत्तारणविधिः	९०
सहस्रनामार्चनम्	१०८
आवरणपूजनम्	१४१
नारिकेलबलिदानम्	१५५
श्रीमहाभैरवपूजनम्	१६३
सप्तशतीपाठविधिः	१८२

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
श्रीचण्डिकाकवचम्	१८५
श्रीचण्डिका अर्गलास्तोत्रम्	१८९
श्रीचण्डिका कीलकस्तोत्रम्	१९१
नवार्णजपविधिः	१९२
सप्तशतीन्यासविधिः	१९४
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती प्रथमोऽध्यायः	१९७
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती द्वितीयोऽध्यायः	२०४
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती तृतीयोऽध्यायः	२११
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती चतुर्थोऽध्यायः	२१५
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती पञ्चमोऽध्यायः	२२०
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती षष्टोऽध्यायः	२२७
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती सप्तमोऽध्यायः	२२९
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती अष्टमोऽध्यायः	२३२
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती नवमोऽध्यायः	२३७
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती दशमोऽध्यायः	२४१
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती एकादशोऽध्यायः	२४४
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती द्वादशोऽध्यायः	२४९
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती त्रयोदशोऽध्यायः	२५३
नवार्णजपविधिः	२५९
परदेवीसूक्तम्	२६१
रहस्यत्रयपाठः	२६३
प्राधानिकं रहस्यम्	२६३
वैकृतिकं रहस्यम्	२६६
मूर्तिरहस्यम्	२६८
अर्धपाठविधिः	२७०
सप्तशतीन्यासः	२७१
श्रीदुर्गासप्तशती प्रथमोऽध्यायः	२७३
श्रीदुर्गासप्तशती तृतीयोऽध्यायः	२८३
श्रीदुर्गासप्तशती चतुर्थोऽध्यायः	२८६
श्रीदुर्गासप्तशती पञ्चमोऽध्यायः	२९१
श्रीदुर्गासप्तशती एकादशोऽध्यायः	२९८
श्रीदुर्गासप्तशती द्वादशोऽध्यायः	३०३
श्रीदुर्गासप्तशती त्रयोदशोऽध्यायः	३०६

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
हवनप्रकरणम्	३१५
ग्रहमण्डलपूजनम्	३१६
कुशकण्डिकाविधिः	३३४
सूर्यादिग्रहाणां हवनम्	३३७
प्रधानदेवानां हवनम्	३४०
नवार्णहवनविधिः	३४१
सप्तशतीन्यासः	३४३
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती प्रथमोऽध्यायः	३४६
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती द्वितीयोऽध्यायः	३४८
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती तृतीयोऽध्यायः	३६७
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती चतुर्थोऽध्यायः	३७४
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती पञ्चमोऽध्यायः	३८१
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती षष्ठोऽध्यायः	३९४
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती सप्तमोऽध्यायः	३९९
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती अष्टमोऽध्यायः	४०३
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती नवमोध्यायः	४११
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती दशमोध्यायः	४१७
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती एकादशोऽध्यायः	४२२
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती द्वादशोऽध्यायः	४३०
श्रीचण्डिका दुर्गासप्तशती त्रयोदशोऽध्यायः	४३५
नवार्णहवनविधिः	४४४
आवाहितदेवानां हवनम्	४४६
कुमारी-सुवासिनीपूजनम्	४५३
बलिदानप्रकरणम्	४५६
दिक्पालादीनां बलिदानम्	४६०
ग्रहाणां बलिदानम्	४६४
पञ्चलोकपालादिबलिदानम्	४६९
पूर्णाहुतिः	४७३
वसोर्द्धाराहोमः	४७४
विभिन्नदानादिसङ्कल्पः	४७६
आवाहितदेवानामुत्तरपूजनम्	४७८
दुर्गादेव्याः षोडशोपचारपूजनम्	४७९
आवाहितदेवानां विसर्जनम्	४९४

स्तुतिकुसुमाञ्जलि

काश्यामुपेत्य विधिवत्तपसाश्रयेण प्राप्तश्रियः सकलशास्त्रविचारदक्षान् ।
अध्यापनेन सततं कृतशास्त्ररक्षान् श्रीवायुनन्दनबुधान् प्रणमामि नित्यम् ।।१।।
पूर्व नमस्त्रिमुनिशास्त्रविचक्षणाय साहित्यमर्मविदुषे कृतिने ततश्च ।
मीमांसया दलितदुर्व्यसनाय पश्चाच्छ्रीवायुनन्दनमहामतये नमस्ते ।।२।।
शास्त्राण्यधीत्य वहवः कटुकैर्विवादैर्ग्रस्तान्तरास्तु समयं क्षपयन्ति नित्यम् ।
श्रौतप्रभाविलसिता गुरवो मदीया श्रीविश्वनाथपदभक्तिजुषः किलासन् ।।३।।
साहित्यशास्त्रसुरवृक्षविवर्धनेन तस्यामृताभफलदानमनोहरेण ।
सत्रेण भारतधरा किल यस्य भाति तस्मै बृहस्पतिनिभाय नमो नमस्ते ।।४।।
ये ब्रह्मवंशविभुताकलितान्तरङ्गा आचारतश्च भृतभूरिविभूतिभङ्गा ।
गङ्गावगाहनशिवार्चनतत्परास्ते श्रीवायुनन्दनबुधा गुरवो जयन्ति ।।५।।
भस्मत्रिपुण्ड्रविलसच्छुभविग्रहाणां विद्याविलासविगलन्मधुवाग्झराणाम् ।
पाण्डेयवर्यविदुषां पदयोर्नतिर्नौ भूयादहर्निशममङ्गलनाशनाय ।।६।।
काश्यां विपश्चिदतुलासु सभासु सभ्या यत्सन्निधौ विधृतमौननिभा अभूवन् ।
तान् विश्वनाथपदपङ्कजभृङ्गभूतान् श्रीवायुनन्दनगुरून् सततं स्मरामि ।।७।।
जाज्वल्यमाननिजपावनविग्रहेण लोकोत्तरेण महसा च तपोबलेन ।
श्रीविश्वनाथपदमाशुगतं भवन्तः ध्यात्वा पितुर्वयमहो कृतिनो भवामः ।।८।।

●

।। श्रीः ।।

सार्द्धनवचण्डिपुरश्चरणम्

पञ्चगव्यप्राशनम्—सर्वप्रथम शरीरशुद्ध्यर्थ तथा कर्माधिकार-प्राप्त्यर्थ पञ्चगव्य का प्राशन अधोलिखित मन्त्र द्वारा करे—

ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामकीम्।
प्राशनात्पञ्चगव्यस्य पिबेत्यग्निरिवेन्धनम्।।

पञ्चगव्यप्राशन के पश्चात् तीन बार आचमन करे।

त्रिराचमनम्—ॐ केशवाय नमः।। ॐ नारायणाय नमः।। ॐ माधवाय नमः।। ॐ हृषीकेशाय नमः।। मन्त्र बोल कर हाथ धो ले।

पवित्रि-धारणम्—अधोलिखित मन्त्र से पवित्री धारण करे—

ॐ पवित्रेस्त्थोव्वैष्ष्णव्यौसवितुर्व्वः प्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेणपवित्रेणसूर्य्यस्य रश्मिभिः।। तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

पवित्री-धारण के पश्चात् तीन बार पुनः आचमन करे। आचमन करने के पश्चात् समन्त्रक प्राणायाम करे तथा अधोलिखित मन्त्र से अपने ऊपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।। ॐ केशवः पुनातु।। ॐ नारायणः पुनातु।।

हाथ में अक्षत पुष्प लेकर भद्रसूक्त मन्त्रों का पाठ करे।

स्वस्तिवाचनम्

ॐ आनोभद्द्राः क्क्रतवोयन्तुव्विश्श्वतोऽदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः।। देवानोयथासदमिद्वृधेऽअसन्नप्प्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे।।१।। देवानाम्भद्द्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवानाᳯंरातिरभिनोनिवर्त्तताम्।। देवानाᳯंसक्ख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवानऽआयुः प्प्रतिरन्तुजीवसे।।२।। तान्पूर्व्वयानिविदाहूमहेव्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम्।। अर्य्यमणंव्वरुणᳯंसोममश्श्विनासरस्वतीनः सुभगामयस्करत्।।३।। तन्नो-

व्वातो॑मयो॒भुव्वा॑तु भेष॒जन्तन्मा॒तापृ॑थि॒वीतत्पि॒ताद्यौः।। तद्ग्रावा॑णःसोम॒सुतो॑मयो॒भुव॒स्तद॑श्श्विनाश्शृणु तन्धिष्ष्ण्ण्या॒युवम्।।४।। तमीशा॑न॒ञ्जग॑तस्त॒स्थुषस्प्पतिं॑न्धियञ्जि॒न्न्वमव॑सेहूमहे व्व॒यम्।। पूषानो॒यथा॒व्वेद॑सा॒मस॑द्वृधेर॑क्षि॒तापा॒युरद॑ब्धःस्व॒स्तये॑।।५।। स्व॒स्तिन॒ऽइन्द्रो॑ व्वृ॒द्धश्श्र॑वाꣳस्व॒स्तिनः॑पूषाव्वि॒श्श्ववे॑दाꣳ।। स्व॒स्तिन॒स्तार्क्ष्यो॒ऽअरि॑ष्टनेमिꣳस्व॒स्तिनो॒ बृह॒स्प्पति॑र्द्दधातु।।६।। पृष॑दश्श्वा॒मरु॑तꣳपृश्न्नि॑मातरꣳशुभं॒य्यावा॑नोव्वि॒दथे॑षु॒जग्म॑यꣳ।। अ॒ग्निजि॒ह्वामन॑वꣳसूर॑चक्षसो॒व्विश्श्वे॑नोदे॒वाऽअव॒सागम॑न्नि॒ह।।७।। भ॒द्रङ्कर्ण्णे॑भिꣳ श्शृणुयामदेवाभ॒द्रम्प॑श्श्येमा॒क्षभि॒र्य्यज॑त्राꣳ।। स्थि॒रैरङ्गै॑स्तुष्टु॒वाꣳसस्त॒नूभि॒र्व्व्यशे॑महि दे॒वहि॑तं॒य्यदा॑युः।।८।। श॒तमिन्नु॒श॒रदो॒ऽअन्ति॑देवा॒यत्रा॑नश्श्च॒क्क्राज॒रस॑न्त॒नूना॑म्।। पु॒त्रासो॒यत्र॑पि॒तरो॒भव॑न्ति॒मानो॑म॒द्ध्यारी॑रिषता॒युर्ग्गन्तोः॑।।९।। अदि॑ति॒र्द्द्यौरदि॑तिर॒न्तरि॑क्ष॒ मदि॑तिर्म्मा॒तासपि॒तासपु॒त्रः।। व्विश्श्वे॑दे॒वाऽअदि॑तिꣳपञ्च॒जना॒ऽअदि॑तिर्ज्जा॒तमदि॑ति॒र्ज्ज नि॑त्त्वम्।।१०।।
ॐ द्यौःशान्ति॑र॒न्तरि॑क्ष॒ꣳशान्तिः॑पृथि॒वीशान्ति॒रापꣳशान्ति॒रोष॑धयꣳ शान्तिः॑।। व्वन॒स्प्पत॑यꣳशान्ति॒र्व्विश्श्वे॑दे॒वाःशान्ति॒र्ब्ब्रह्म॒शान्ति॒ꣳसर्व्व॒ꣳशान्ति॒ꣳशान्ति॑रे॒व शान्ति॒ꣳसामा॒शान्ति॑रेधि।। यतो॑यतःस॒मीह॑सेततो॑नो॒ऽअभ॑यङ्कुरु।। शन्नः॑कुरु प्प्र॒जाब्भ्योभ॑यन्नꣳप्प॒शुब्भ्यः॑।। सुशान्तिर्भवतु।।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।। उमामहेश्वराभ्यां नमः।। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः।। शचीपुरन्दराभ्यां नमः।। मातापितृभ्यां नमः।। इष्टदेवताभ्यो नमः।। कुलदेवताभ्यो नमः।। ग्रामदेवताभ्यो नमः।। वास्तुदेवताभ्यो नमः।। स्थानदेवताभ्यो नमः।। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।।

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीङ्गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।१।।
वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्य समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।२।।
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।३।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।४।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।५।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये।।६।।

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।७।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि! नमोस्तु ते।।८।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः।।९।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंघ्रियुगं स्मरामि।।१०।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दिवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।११।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।१२।।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।१३।।
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।१४।।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवाः दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।१५।।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।।

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रश्मचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुक ऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य च दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यादि सकलदोषपरिहारार्थं मम जन्मकुण्डल्यां चन्द्रकुण्डल्यां भावकुण्डल्यां ये केचन चतुर्थाष्टमषष्ठद्वादश-

स्थानस्थितसमस्तग्रहजन्यसकलअशुभदृष्टिसमस्तदुःखञ्च निवृत्तिपूर्वकसकलानिष्टयोगेन शरीरे व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च समस्तविघ्नानां दुःखानां शरीरस्थितकष्टानां ज्वरादिपीड़ादीनां निवृत्तिपूर्वकत्रिविधतापोपशमनार्थं भूतप्रेतपिशाचडाकिन्यादिकृतानां सर्वेषामन्यानां कृतयन्त्रमन्त्रतन्त्रादिकृतसमस्ताभिचारादिनाञ्च अस्मद्गृहे वास्त्वादिदोषानां सद्यः समाप्तिपूर्वकं दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यवंशाभिवृद्धिसमस्तसुखसौभाग्यादिप्राप्त्यर्थं सकलकामनापरिपूर्तिपूर्वकसकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिणी त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवताप्रीत्यर्थं सार्द्धनवचण्डीपुरश्चरणं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये।

पुनः हाथ में जल लेकर **तदङ्गत्वेन स्वतिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनं आयुष्यमन्त्रजपं साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धं आचार्यादि वरणानि च करिष्ये।**

पुनः हाथ में जल लेकर **तत्राऽऽदौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।**

सङ्कल्प करने के बाद गणेशाऽम्बिका का पूजन करे। दो पात्रों में अक्षत भर कर अष्टदल कमल निर्मित करके उस पर गोमय से लिंगरूप गौरी तथा फलमय लिंगरूप गणेश की स्थापना करके हाथ में पुष्प लेकर महागणपति का ध्यान करे।

गणेशाऽम्बिकापूजनम्

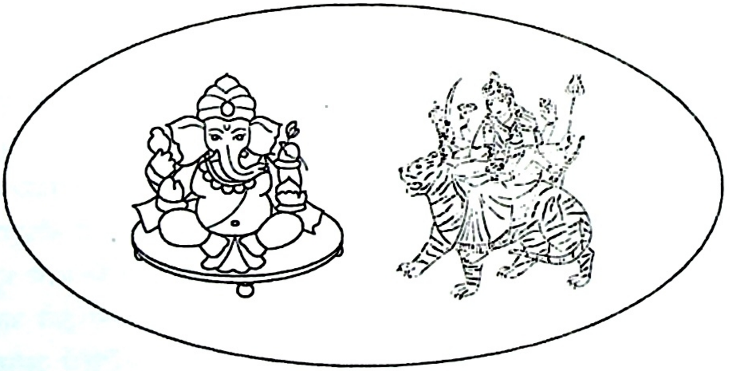

ॐ ग॒णाना॑न्त्वाग॒णप॑तिꣳहवामहेप्प्रि॒याणा॑न्त्वाप्प्रि॒यप॑तिꣳहवामहेनि॒धीना॑न्त्वा नि॒धिप॑तिꣳहवामहेव्वसोमम।। आहम॑जानिगर्ब्भ॒धमात्त्वम॑जासिगर्ब्भ॒धम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः ऋद्धिसिद्धिसहिताय महागणाधिपतये नमः ऋद्धिसिद्धिसहिताय महागणपतिं ध्यायामि। ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

हाथ में अक्षत लेकर महागणपति का आवाहन करे—

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत्सिद्धिविनायकम्॥१॥
ध्यायेद्गजाननं देवं तप्तकाञ्चनसन्निभम्।
चतुर्भुजं महाकायं सर्वाभरणभूषितम्॥२॥
हे हेरम्ब त्वमेह्येहि ह्यम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।
सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्ष लाभपितुः पितः॥३॥
नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।
भूषितस्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरस्वधैः॥४॥
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।
इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजायागं च रक्ष मे॥५॥

ॐ भूर्भुवःस्वः ऋद्धिसिद्धिसहिताय महागणाधिपतये नमः ऋद्धिसिद्धिसहिताय महागणपतिं आवाहयामि। आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

हाथ में पुष्प लेकर महागौरी का ध्यान करे—

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न॥ सस॑स्त्यश्श्व॒कः॑सुभद्रि॒काङ्का॒म्पीलवा॒सिनी॑म्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः महागौर्यै नमः महागौरीं ध्यायामि। ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

हाथ में अक्षत लेकर महागौरी का आवाहन करे—

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः महागौर्यै नमः महागौरीमावाहयामि आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

हाथ से स्पर्श कर प्रतिष्ठा करे।

प्रतिष्ठा—ॐ मनो॑जू॒तिर्ज्जु॑षता॒माज्ज्य॑स्य॒बृह॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्टंय्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्द॑धातु॥ विश्श्वे॑दे॒वास॑ऽइ॒हमा॑दयन्ता॒मो३म्प्रति॑ष्ठ॥

अस्यैः प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः प्रतिष्ठापनार्थे अक्षतान्निवेदयामि आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः सन्निहिता वरदा भव।

हाथ में पुष्प लेकर गणेशाम्बिका का ध्यान करे—

ध्यानम्—**ॐ सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात्।। सभूमिꣳसर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः आवाहनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

हाथ में अक्षत लेकर आसन का ध्यानपूर्वक समर्पण करे—

आसनम्—**ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्वंय्यद्भूतंयच्चभाव्यम्।। उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति।।**

विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

आचमनीय पात्र में जल लेकर पाद्य (पैर धोने का जल) समर्पित करे—

पाद्यम्—**ॐ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्चपूरुषः।। पादोऽस्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि।।**

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
विघ्नराज गृहाणेदं भगवान् भक्तवत्सल!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

आचमनीय पात्र में अर्घ्योदक लेकर समर्पित करे—

अर्घ्यम्—**ॐ त्रिपादूर्द्ध्वऽउदैत्पुरुषःपादोऽस्येहाभवत्पुनः।। ततोविष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि।।**

गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर।
अर्घ्यञ्च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीय पात्र में जल लेकर ध्यानपूर्वक आचमन समर्पण करे।

आचमनम्—**ॐ ततोविराडजायतविराजोऽअधिपूरुषः।। सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः।।**

विनायकं नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

दोनों हाथों में स्नानीय जल लेकर ध्यानपूर्वक समर्पण करे।

स्नानीयम्—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्।। पशूँस्ताँश्चक्रेवायव्यानारण्याग्राम्म्याश्चये।।

मन्दाकिन्यस्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

हाथ में जल लेकर ध्यानपूर्वक पुनः आचमनीय जल समर्पण करे।

पुनराचमनीयम्—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचःसामानिजज्ञिरे।। छन्दाꣳसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्म्मादजायत।।

गङ्गोदकस्य यद्वारि सर्वं मलहरं परम्।
तदिदं समर्पितं देव पुनराचमनं शुभम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

सपात्र हाथ में गोदूग्ध लेकर ध्यानपूर्वक समर्पित करे।

पयःस्नानम्—ॐ पयः पृथिव्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः।। पयस्वतीःप्प्रदिशःसन्तुमह्यम्।।

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

पात्र सहित हाथ में दधि लेकर ध्यान करके समर्पण करे।

दधिस्नानम्—ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः।। सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषितारिषत्।।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

पात्र में घृत भर कर हाथ में ग्रहण कर गणेशाम्बिका का ध्यान करते हुये समर्पण करे।

घृतस्नानम्—ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम।। अनुष्ष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्।।

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

हाथ में शहद लेकर ध्यान करते हुये समर्पित करे।

मधुस्नानम्—ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः।। माद्ध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः।। मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्त्थिवꣳरजः।। मधुद्यौरस्तुनःपिता।। मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः।। माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः।।

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

हाथ में शक्कर लेकर ध्यान पूर्वक समर्पण करे।

शर्करास्नानम्—ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम्।। अपाꣳरसस्ययोरसस्तंव्वोगृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्।।

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि।

दोनों हाथों में पञ्चामृत लेकर ध्यान पूर्वक समर्पण करे।

पञ्चामृतस्नानम्—ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः।। सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्।।

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः मिलित पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।

आचमनीय पात्र में जल लेकर ध्यान करके समर्पित करे।

शुद्धोदकस्नानम्—ॐ शुद्धवालःसर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतःश्येताक्षोरुणस्तेरुद्रायपशुपतयेकर्ण्णायामाऽअविलिप्तारौद्रानभोरूपाःपार्ज्जन्न्याः।।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

दोनों हाथों में अधोवस्त्र (साड़ी एवं धोती) लेकर समर्पण करे।

वस्त्रनिवेदनम्—ॐ तस्मादश्श्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः।। गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः।।

ॐयुवासुवासाःपरिवीतऽआगात्सऽउत्श्रेयान्भवतिजायमानः।
तं धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।
शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रं समर्पयामि।

आचमनीय पात्र से ध्यान करके जल समर्पण करे।

वस्त्राङ्गाचमनीयं जलम्—ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन।। महेरणायचक्षसे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

हाथ में ऊर्ध्ववस्त्र ग्रहण कर ध्यान पूर्वक समर्पण करे।

उपवस्त्र निवेदन—ॐ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः।। तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्श्चये।। ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मव्वरूथमासदत्स्वः।। व्वासोअग्ग्नेव्विश्श्वरूपꣳसंव्व्ययस्वव्विभावसो।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

आचमनीय पात्र से ध्यान पूर्वक जल समर्पण करे।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयं जलम्—ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः।। उशतीरिवमातरः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

दोनों हाथों से यज्ञोपवीत लेकर ध्यान करते हुये समर्पण करे।

१८. यज्ञोपवीतनिवेदनम्—ॐ यत्पुरुषंव्यदधुःकतिधाव्व्यकल्पयन्।। मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरू पादाऽउच्च्येते।। ॐ यज्ञोदेवानाम्प्प्रत्त्येतिसुम्म्नमादित्त्यासोभवतामृडयन्तः।। आवोर्व्वाचीसुमतिर्व्ववृत्त्यादꣳहोश्चिद्याव्वरिवोवित्तरासदादित्त्येब्भ्यस्त्वा।।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण गणनायक।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत के बाद आचमनीय जल समर्पण करे।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयं जलम्—**ॐ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ।। आपोंजनयथाच नः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

अनामिका अंगुली से चन्दन समर्पण करे।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—**ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।। त्वामोंषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत।।**

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

हाथ में अक्षत (चावल) लेकर अलङ्कार का ध्यान करके समर्पण करे।

अक्षतसमर्पणम्—**ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत।। अस्तोंषतस्वभानवोविप्प्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरीं।।**

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

दोनों हाथों से फूल की माला समर्पित करे।

पुष्पमालासमर्पणम्—**ॐ ओषधीःप्प्रतिमोदध्ध्वंपुष्प्पवतीःप्रसूवरीः।। अश्श्वाऽइवसजित्त्वरीर्व्वीरुधःपारयिष्ण्णवः।।**

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वा हाथ में लेकर ध्यान करते हुये समर्पण करे।

दूर्वासमर्पणम्—**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषष्प्परिं।। एवानोंदूर्व्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च।।**

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान् अमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः दूर्वाङ्कुरान् समपयामि।

हाथ में अबीर बुक्का लेकर ध्यान करते हुये समर्पण करे।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—ॐ अहिरिवभोगैःपर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिंप्परिबाधमानः।। हस्तघ्नोविश्श्वा वयुनानिविद्द्वान्पुमान्पुमाꣳसंपरिपातुविश्श्वतः।।

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितो देवमतः शान्तिं प्रयक्ष मे।।
नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

अनामिका एवं अंगुष्ठ से सिन्दूर समर्पण करे।

सिन्दूरसमर्पणम्—ॐ सिन्धोरिवप्प्राद्ध्वनेशूघनासोव्वातप्प्रमियःपतयन्तियह्वाः। घृतस्यधाराऽअरुषोनव्वाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिःपिन्न्वमानः।।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य—

मध्यमा-अनामिका-अङ्गुष्ठ से धूपवत्ती घुमाते हुये समर्पित करे।

धूप आघ्रापणम्—ॐ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्न्यःकृतः।। ऊरूतदस्ययद्वैश्श्यःपद्भ्याꣳ शूद्द्रोऽअजायत।। ॐ धूरसिधूर्व्वधूर्व्वन्तंय्योऽस्मान्धूर्व्वतितंधूर्व्वयंव्वयंधूर्व्वामः।। देवानामसिवह्नितमꣳसस्नितमंपप्प्रितमंजुष्टतमंदेवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः धूपं समर्पयामि।

दोनों हाथों में जलता दीपक लेकर अपने नेत्र, दीपक की लौ तथा देवता का नेत्र तीनों एकाकार ध्यान करके समर्पण करें।

दीपसमर्पणम्—ॐ चन्द्रमामनसोजातश्श्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत।। श्श्रोत्राद्वायुश्श्चप्प्राणश्श्च मुखादग्निरजायत।। ॐ अग्निज्ज्योतिज्ज्योतिरग्निःस्वाहासूर्य्योज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यःस्वाहा।। अग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहासूर्य्योव्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहा।। ज्ज्योतिःसूर्य्यःसूर्य्योज्ज्योतिःस्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह।।

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद्घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

दोनों हाथों से भोग को ग्रहण करके देवता के सामने रख कर ध्यान करते हुये समर्पण करें।

नैवेद्यसमर्पणम्—ॐ नाब्भ्याऽआसीदुन्तरिक्षᳪशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत।। पुद्भ्याम्भूमिर्द्दिशःश्श्रोत्रात्तथालोकाँ२।।ऽअकल्प्पयन्।। ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः।। प्रप्रदातारंतारिषऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे।।

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
इप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

दोनों हाथों की अनामिका अंगुली में चन्दन लगाकर समर्पण करे।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—ॐ अᳪशुनातेअᳪशुःपृच्च्यतांपरुषापरुः।। गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽअच्च्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देवि! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

हाथ में ताम्बूल लेकर ध्यान पूर्वक समर्पण करे।

ताम्बूलादि समर्पणम्—ॐ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत।। वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यंग्ग्रीष्मऽइध्मःशरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलपत्रं पूगीफलं-एलालवङ्गादिकं समर्पयामि।

दोनों हाथों में फल लेकर ध्यान पूर्वक समर्पण करे।

फलादि समर्पणम्—ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्पायाश्च पुष्प्पिणीः।। बृहस्प्पतिप्प्रसूता स्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दोनों हाथों में द्रव्य ग्रहण कर ध्यान कर समर्पण करे।

दक्षिणासमर्पणम्—ॐ हिरण्यगर्ब्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत्।। सदाधार पृथिवीद्यामुतेमांकस्म्मैदेवायहविषाविधेम्।।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

दोनों हाथों से आरती घुमाते हुये समर्पण करे।

नीराजनं समर्पणम्—ॐ आरात्रिपार्थ्थिवꣳरजःपितुरप्प्रायिधामभिः।। दिवःसदाꣳसिबृहतीवितिष्ठसऽआत्त्वेषंव्वर्त्ततेतमः।। ॐ इदꣳहविःप्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्वगणꣳस्वस्तये।। आत्मसनिप्प्रजासनिपशुसनिलोकसन्न्यभयसनि।। अग्निःप्प्रजांबहुलांमेकरोत्वन्नंपयोरेतोऽअस्म्मासुधत्त।।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

दोनों हाथों में पुष्प लेकर ध्यान करके समर्पण करे।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथमान्न्यासन्।। तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्रपूर्व्वेसाद्ध्याःसन्तिदेवाः।।

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलीं समर्पयामि।

पुष्प लेकर गणेशाऽम्बिका के चारो ओर वामावर्त घुमा कर समर्पण करे।

परिक्रमासमर्पणम्—ॐ सप्प्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्प्तसमिधःकृताः।। देवायद्यज्ञन्तन्न्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्।।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।
पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः परिक्रमां समर्पयामि।

दोनों हाथों से विशेषर्घ्य लेकर ब्रह्मतीर्थ से समर्पण करे।

विशेषार्घ्य समर्पण—परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुरग्रज प्रभो!।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोस्तु सदा मम।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करके समर्पण करे।

प्रार्थना-समर्पणम्—

ॐ विघ्नेश्वराय वरदायं सुरप्रियाय,
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय,
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।१।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय,
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय,
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।२।।
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।३।।
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक!।।४।।
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।५।।

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति,
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव।।६।।
गणेशपूजनं कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम।।७।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाऽम्बिकाभ्यां नमः प्रार्थनापूर्वकस्तुतिपाठं समर्पयामि।

दोनों हाथों में पुष्प लेकर स्तुति पाठ करने के बाद समर्पण करे।

गणेशाऽथर्वशीर्षपाठः

ॐ लँ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षदात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं मां। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवनूचानम्। अव शिष्यम्। अव पश्चात्तत्। अव पुरस्तात्। अव चोत्तरात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तत्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयः। त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयः। त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयोऽसि। त्वं विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा। त्वं विष्णुः। त्वं रुद्रः। त्वं इन्द्रः। त्वं अग्निः। त्वं वायुः। त्वं सूर्यः। त्वं चन्द्रमा। त्वं ब्रह्म भुर्भूवः स्वरोम्। गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुष्यरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दूरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेश विद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री छन्दः। श्रीमहागणपतिः देवता। ॐ गँ गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुश धारिणम्। अभयं वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्।। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये। नमो

गणपतये। नमः प्रमथपतये। नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः।।

माहात्म्यफलश्रुतिः

एतदथर्वशिरो योऽधीते स ब्रह्मभूयाय कल्पिते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षं अशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान्भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति स विद्यावान्भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्याचरणं विद्यात्। न विभेति कदाचनेति। यो दूर्वाङ्कुरैः यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान्भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छित फलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्धिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्य वर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। य एवं वेद।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाय नमः। स्तुतिपाठं समर्पयामि।

दोनों हाथों में पुष्प लेकर अथर्वशीर्ष का पाठ करके समर्पण करे।

अथ देव्यथर्वपाठः

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति।।१।। सा ब्रवीत् अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्।। शून्यं चाशून्यं च।।२।। अहमानन्दानानन्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्माब्रह्मणि वेदितव्ये। अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत्।।३।। वेदोहमवेदोऽम्। विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्।।४।। अहं रुद्रेभिः वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमाश्विनावुभौ।।५।। अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि।।६।। अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्रीसङ्गमनीवसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। य एवं वेद। स दैवी सम्पदमाप्नोति।।७।। ते देवा अब्रुवन्—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।८।।
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्ती वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः।।९।।
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैस्तु।।१०।।
कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्।।११।।
महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्।।१२।।
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबान्धवः।।१३।।
कामो योनिः कमला वज्रपाणिः गुहाहसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमाता दिवि द्योम्।।१४।।

एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी। पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा। एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति।।१५।। नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः।।१६।। सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः। सैषा विश्वेदेवाः सोमपाः असोमपाश्च। सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः। सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि। कलाकाष्ठादि कालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्।।

पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम्।।१७।।
वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्।।१८।।
एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः।।१९।।
वाङ्मया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दु संयुक्ताष्टाच्तृतीयकः।।२०।।
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः।।२१।।
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।।२२।।

त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे।
नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्।।२३।।
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्।

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका। एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैकानैकेति।।२३।।

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी।।२४।।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता।
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्।।२५।।

फलश्रुतिः

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयाति शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः।

दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापं प्रमुच्यते।
महादुर्गाणि तरति महादेव्या प्रसादतः।।२६।।

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक् सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवी सन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। स महामृत्युं तरति य एवं वेद।

ॐ भूर्भुवःस्वः पराम्बिकायै नमः स्तुति पाठं समर्पयामि। अनेन यथोपलब्ध द्रव्येण पूजनेन गणेशाम्बिके प्रीयन्ताम्।।

श्रीगणेशाम्बिकापूजनं परिपूर्णम्

●

वरुणकलशस्थापनपूजनम्

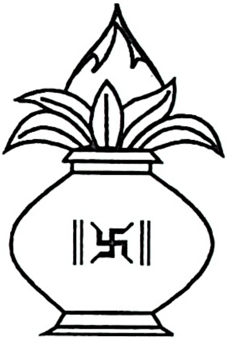

भूमि-स्पर्श—ॐ म॒हीद्यौःपृथि॒वीच॑नऽइ॒मंय्य॒ज्ञंमि॑मिक्षताम्।। पि॒पृतानो॒भरी॑मभिः।।

सप्तधान्य विखेरना—ॐ ओष॑धयः॒सम॑वदन्त॒सोमे॑नस॒हराज्ञा।। यस्मै॑कृ॒णोति॑ब्राह्म॒णस्तꣳरा॑जन्न्पार यामसि।।

कलश स्थापन—ॐ आजि॑घ्रक॒लशं॑म॒ह्यात्वा॑वि॒शन्त्वि॒न्दवः॑।। पुन॑रू॒र्ज्जानि॒वर्त॑स्व॒सानः॑स॒हस्र॑न्धुक्ष्वो॒रुधा॑रा॒पय॑स्वती॒पुन॒र्म्मावि॑शताद्र॒यिः।।

कलश में जल भरना—ॐ वरु॑णस्यो॒त्तम्भ॑नमसि॒वरु॑णस्यस्कम्भ॒सर्ज्जनी॑स्थो॒वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑न्न्यसि॒ वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑नमसि॒वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑नमासीद।

कलश में गन्ध डालना—ॐ त्वाङ्ग॑न्ध॒र्व्वाऽअ॑खनँ॒स्त्वामिन्द्र॒स्त्वाम्बृह॒स्पतिः॑।। त्वामो॑षधे॒सोमो॒राजा॑वि॒द्वा न्न्यक्ष्मा॑दमुच्च्यत।।

कलश में सर्वौषधी डालना—ॐ याओष॑धीः॒पूर्व्वाजा॒तादे॒वेब्भ्य॑स्त्रियु॒गंपुरा।। मनै॒नुब॒भ्रुणा॑म॒हꣳश॒तंधामा॑नि स॒प्त च॑।।

कलश में दूर्वा डालना—ॐ काण्डा॑त्काण्डात्प्र॒रोह॑न्ती॒परु॑षःपरुष॒ष्प्परि॑।। एवानो॑दूर्व्वे॒प्प्रत॑नुस॒हस्रे॑ण श॒तेन॑ च।।

कलश में पञ्चपल्लव डालना—ॐ अ॒श्व॒त्त्थेवो॑नि॒षद॑नंप॒र्ण्णेवो॑वस॒तिष्कृ॒ता।। गो॒भाज॒ऽइत्किला॑सथ॒यत्स॒नव॑थ॒ पूरु॑षम्।।

कलश में कुश डालना—ॐ प॒वित्रे॑स्त्थोवैष्ण॒व्व्यौ॒सवि॒तुर्वः॑प्प्रस॒वऽउत्पु॑ना॒म्यच्छिद्द्रे॑णप॒वित्रे॑ण॒सूर्य्य॑स्य र॒श्मिभिः॑।। तस्य॑तेप॒वित्र॑पतेप॒वित्र॑पूतस्य॒यत्का॑मःपुनेतच्छ॑केयम्।।

कलश में सप्तमृत्तिका डालना—ॐ स्यो॒नापृ॑थिविनोभवानृक्ष॒रानि॒वेश॑नी।। यच्छा॑नः॒शर्म्म॑स॒प्प्रथाः॑।।

कलश में पूगीफल डालना—ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः।। बृहस्प्पति प्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः।।

कलश में पञ्चरत्न डालना—ॐ परिवाजपतिःकविरग्निर्हव्यान्न्यक्रमीत्।। दधद्रत्नानिदाशुषे।।

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डालना—ॐ हिरण्ण्यगर्ब्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्य्यजातःपतिरेकऽआसीत्।। सदाधार पृथिवीद्यामुतेमां अस्म्मैदेवायहविषाविधेम्।।

युग्म वस्त्र—ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः।। वासोअग्नेविश्वरूपꣳसंव्य्य यस्वविभावसो।।

पूर्ण पात्र—ॐ पूर्ण्णादर्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत।। वस्नेवविक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳ शतक्रतो।।

नारिकेल फल—ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः।। बृहस्प्पतिप्प्रसूता स्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः।।

वरुण ध्यान आवाहन पञ्चोपचार पूजन—ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः।। अहेडमानो वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः।।

प्रतिष्ठा—ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दं धातु।। विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि। ॐ अपांपते वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहन—

कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते।।१।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रिताः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।२।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती।।३।।
कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।।४।।

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै।।५।।
सर्वे समुद्राः सहितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।६।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः।।७।।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।८।।

प्रतिष्ठा तथा षोडशोपचार पूजन—

ॐ मनो॑जू॒तिर्ज्जु॑षता॒माज्ज्य॑स्य॒बृह॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्ट्टंय्य॒ज्ञᳬसमि॒मन्द॑धातु।। व्विश्श्वे॑दे॒वास॑ऽइ॒हमा॑दयन्ता॒मो३म्प्रति॑ष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवःस्वः कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। विष्णवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः।

षोडशोपचार पूजन करे—

ध्यानम्—ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒पुरु॑षःसहस्रा॒क्षःस॒हस्र॑पात्।। सभूमिᳬस॒र्व्वत॑स्प्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गु॒लम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरु॑षऽए॒वेदᳬसर्व्वं॒य्यद्भू॒तंयच्च॒भाव्य॑म्।। उ॒तामृ॑त॒त्वस्येशा॑नो॒यद॒न्नेना॑ति॒रोह॑ति।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—ॐ ए॒तावा॑नस्यमहि॒मातो॒ज्ज्याया॑ँश्च॒पूरु॑षः।। पादो॑ऽस्य॒व्विश्वा॑भू॒तानि॑त्त्रि॒पाद॑स्या॒मृत॑न्दि॒वि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पाद्योः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—ॐ त्रि॒पादू॒र्ध्वऽउदै॒त्पुरु॑षः॒पादो॑ऽस्ये॒हाभ॑व॒त्पुनः॑।। ततो॒व्विष्व॒ङ्व्य॒क्रामत्साशनानश॒नेऽअ॒भि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ ततोव्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः।। सजातोऽअत्यरिच्च्यतपश्श्चाद्भूमिमथोपुरः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—ॐ तस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतःसम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्।। पशूँस्ताँश्श्चक्क्रेव्वायव्व्यानारण्याग्ग्राम्म्याश्श्चये।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—ॐ तस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतऽऋचःसामानिजज्ञिरे।। छन्दाꣳसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्म्मादजायत।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—ॐ पयःपृथिव्व्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः।। पयस्वतीःप्प्रदिशःसन्तुमह्यम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—ॐ दधिक्क्राव्णोऽअकारिषंजिष्ष्णोरश्श्वस्यव्वाजिनः।। सुरभिनोमुखाकरत्त्प्रणऽआयूꣳषितारिषत्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्म्वस्यधाम।। अनुष्ष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंव्वृषभव्वक्षिहव्व्यम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्न्तिसिन्धवः।। माद्ध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः।। मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्त्पार्त्थिवꣳरजः।। मधुद्यौरस्तुनःपिता।। मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः।। माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम्।। अपाꣳरसस्ययोरसस्तंव्वोगृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः।। सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशे भवत्सरित्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—ॐ शु॒द्धवा॑लꣳस॒र्वशु॑द्धवालोमणि॒वा॒लस्तऽआश्वि॒नाः श्येतः श्येता॒क्षो॒रु॒णस्ते रु॒द्राय॑पशु॒पत॑येक॒र्ण्णा॒या॒माऽअ॑विलि॒प्तारौ॒द्रानभो॑रूपाꣳपार्ज्ज॒न्याः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—ॐ तस्मा॒दश्वा॑ऽअजायन्त॒येकेचो॑भ॒याद॑तः।। गावो॑हजज्ञि॒रे॒तस्मा॒त्तस्मा॑ज्जा॒ताऽअ॑जा॒वयः॑।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—ॐ आपो॒हिष्ठाम॑यो॒भुव॒स्तान॑ऽऊ॒र्जेद॑धातन।। म॒हेरणा॑य॒चक्ष॑से।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—ॐ तंय्य॒ज्ञम्ब॒र्हिषि॒प्प्रौक्ष॒न्पुरु॑षञ्जा॒तम॑ग्ग्र॒तः।। तेन॑दे॒वाऽअ॑यजन्तसा॒ध्याऽऋष॑य श्च॒ये।। ॐ सुजा॑तो॒ज्ज्यो॒तिषास॒हशर्म्म॒वरू॑थ॒मास॑द॒त्स्वः॑।। वासो॑अग्ग्रेवि॒श्वरू॑प॒ꣳसंव्य॑यस्वविभावसो।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—ॐ योव॑ः शि॒वत॑मो॒रस॒स्तस्य॑भाजयते॒हनः।। उ॒श॒तीरि॑व मा॒तरः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—ॐ यत्पुरु॑ष॒व्व्यद॑धुꣳकति॒धाव्य॑कल्पयन्।। मुख॒ङ्किम॑स्यासी॒त्किम्बा॒हूकिमू॒रू पादा॑ऽउच्च्येते।। ॐ य॒ज्ञोदे॒वाना॒म्प्रत्त्ये॑तिसु॒म्न्नमादि॑त्त्यासो॒भव॑तामृड॒यन्तः॑।। आवो॒ र्व्वाची॑सुम॒तिर्व्व॑वृत्त्यादꣳहो॒श्चि॒द्याव॑रिवो॒वित्त॒रास॑दादि॒त्त्येभ्य॑स्त्वा।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयजलम्—ॐ तस्मा॒ऽअर॑ङ्गमामवो॒यस्य॒क्षया॑य॒जिन्व॑थ।। आपो॑ज॒नय॑था च नः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—ॐ त्वाङ्ग॑न्ध॒र्व्वाऽअ॑खनँ॒स्त्वामिन्द्र॒स्त्वाम्बृह॒स्पतिः॑।। त्वामो॑षधे॒सोमो॒राजा॑ वि॒द्वान्यक्ष्मा॑दमुच्च्यत।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—**ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत।। अस्तोषतस्वभानवोविप्प्रानविष्ठया मतीयोजान्विन्द्रतेहरी।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—**ॐ ओषधीःप्प्रतिमोदद्ध्वंपुष्प्पवतीःप्रसूवरीः।। अश्श्वाऽइवसजित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषष्प्परि।। एवानोदूर्व्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—**ॐ अहिरिवभोगैः पर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिंप्परिबाधमानः।। हस्तग्घ्नोविश्श्वा वयुनानिविद्द्वान्पुमान्पुमाꣳसंपरिपातुविश्श्वतः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—**ॐ सिन्धोरिवप्प्राद्ध्वनेशूघनासोवातप्प्रमियःपतयन्तियह्वाः।। घृतस्यधाराऽ अरुषोनवाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिःपिन्न्वमानः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य—

धूपसमर्पणम्—**ॐ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्न्यःकृतः।। ऊरूतदस्ययद्वैश्यःपद्द्भ्याꣳ शूद्रोऽअजायत।। ॐ धूरसिधूर्व्वधूर्व्वन्तंधूर्व्वतंयोऽस्मान्धूर्व्वतितंधूर्व्वयंवयंधूर्व्वामः।। देवानामसि वह्नितमꣳसस्नितमंपप्रितमंजुष्टतमंदेवहूतमम्।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—**ॐ चन्द्रमामनसोजातश्श्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत।। श्श्रोत्राद्वायुश्श्चप्प्राणश्श्च मुखादग्निरजायत।। ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निःस्वाहासूर्य्योज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यःस्वाहा।। अग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहासूर्य्योवर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहा।। ज्ज्योतिःसूर्य्यःसूर्य्योज्ज्योतिःस्वाहा।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—**ॐ नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत।। पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्श्रोत्रात्तथालोकाँ२।।ऽअकल्प्पयन्।। ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमी-**

वस्य॑शु॒ष्मिण॑ः।। प्रप्र॑दा॒तारं॑ता॒रिष॒ऊर्ज्ज॑न्नोधेहिद्वि॒पदे॒चतु॑ष्पदे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—ॐ अ॒ꣳशुना॑तेअ॒ꣳशुः पृ॑च्च्यतां॒परु॑षा॒परु॑ः।। ग॒न्धस्ते॒सोम॑मवतु॒मदा॑य॒रसो॒ऽअच्च्यु॑तः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—ॐ यत्पुरु॑षेणह॒विषा॑दे॒वाय॒ज्ञमत॑न्वत।। व॒स॒न्तो॒ऽस्यासी॒दाज्ज्यं॑ग्री॒ष्मऽइ॒ध्मः श॒रद्ध॒विः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलपत्रं पूगीफलं एलालवङ्गादिकं समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—ॐ याः फ॒लिनी॒र्य्याऽअ॑फ॒लाऽअ॑पु॒ष्पायाश्च॑पु॒ष्पिणी॑ः।। बृ॒हस्प्पति॑प्प्रसूता॒ स्तानो॑मु॒ञ्चन्त्वꣳह॑सः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—ॐ हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः सम॑वर्त्त॒ताग्ग्रे॑भूतस्य॑जा॒तः पति॒रेक॑ऽआसीत्।। सदा॑धार पृथि॒वीद्यामु॒तेमां॑कस्मै॑दे॒वाय॑ह॒विषा॑विधेम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—ॐ आरा॑त्त्रि॒पार्त्थि॑वꣳ॒रजः॑पि॒तुर॑प्प्रायि॒धाम॑भिः।। दि॒वः सदा॑ꣳसिबृ॒हती॒विति॑ष्ठस॒ऽआत्त्वे॒षंव्व॑र्त्तते॒तमः॑।। ॐ इ॒दꣳह॒विः प्र॒जन॑नंमेऽअस्तु॒दश॑वीर॒ꣳसर्व॑गणꣳस्व॒स्तये॑।। आ॒त्म॒सनि॑प्प्रजा॒सनि॑पशु॒सनि॑लोक॒सन्न्य॑भय॒सनि॑।। अ॒ग्निः प्प्र॒जांब॑हु॒लांमे॑ करो॒त्वन्नं॒पयो॒रेतो॑ऽअ॒स्म्मासु॑धत्त।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—ॐ य॒ज्ञेन॑य॒ज्ञम॑यजन्तदे॒वास्तानि॒धर्म्मा॑णिप्प्रथ॒मान्न्या॑सन्।। तेह॒नाकं॑म्महि॒मान॑ः सचन्त॒यत्र॒पूर्वे॑सा॒द्ध्याः सन्ति॑दे॒वाः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलीं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—ॐ स॒प्तास्या॑सन्परि॒धय॒स्त्रिः स॒प्तस॒मिध॑ः कृ॒ताः।। दे॒वाय॒द्यज्ञन्तन्व्वा॒ना ऽअब॑ध्न॒न्पुरु॑षम्प॒शुम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत्, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

पूजन समर्पण—**ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।।**

कलश प्रार्थना—

ॐ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।१।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।२।।
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।३।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव।।४।।
सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयं वरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा।।५।।
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।६।।
पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्म समाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव।।७।।

पुण्याहवाचनम्

अवनीकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशं अञ्जलिं शिरस्याधायाऽनन्तरं दक्षिणेन पाणिना कलशं धारयित्वा आशिषः प्रार्थयेत्।

यजमान कमल के समान अञ्जली को बना करके शिर पर कलश धारण करके प्रार्थना करे—

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।
तेनाऽऽयुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्तु।।

ब्राह्मण बोले—**अस्तु दीर्घमायुः।।**

ॐ त्रीणिप॒दाविच॑क्रमे॒विष्णु॒र्गो॒पाऽअदा॑भ्यः।। अतो॒धर्म्मा॑णिधा॒रय॑न्।।

यजमान बोले—**तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुः।**

ॐ त्रीणिपदाविचक्रमेविष्णुर्गोपाऽअदाब्भ्यः।। अतोधर्म्माणिधारयन्।।

यजमान बोले—**तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुः।**

ॐ त्रीणिपदाविचक्रमेविष्णुर्गोपाऽअदाब्भ्यः।। अतोधर्म्माणिधारयन्।।

इस प्रकार करके कलश को भूमि पर रखे। ब्राह्मणों का हस्त पूजन करे।

ब्राह्मणानां करपूजनम्

यजमान बोले—

अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु मे।।

ॐ शिवा आपः सन्तु। हाथ में जल दे।

ब्राह्मण बोले—**सन्तु शिवा आपः।**

यजमान बोले—

लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथाऽस्तु नः।।

सौमनस्यमस्तु। हाथ में पुष्प प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**अस्तु सौमनस्यम्।**

यजमान बोले—

अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम।।

अक्षतं चारिष्टं चाऽस्तु—हाथ में अक्षत प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**अस्त्वक्षतमरिष्टं च।**

यजमान बोले—

चन्दनमस्तु आरोग्यं गन्धाः पान्तु ते यदा।
ब्राह्मणानां करे यस्तु माङ्गल्यं चास्तु मे सदा।।

गन्धाः पान्तु—हाथ में चन्दन प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**सुमङ्गल्यं चास्तु।**

यजमान बोले—**पुनरक्षताः पान्तु।** हाथ में पुनः अक्षत प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**आयुष्यमस्तु।**

यजमान बोले—**पुनः पुष्पाणि पान्तु।** हाथ में पुनः पुष्प प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**सौश्रियमस्तु।**

यजमान बोले—

ऐश्वर्यं सफलमस्तु देवाः प्रीतिभवा यदा।
ब्राह्मणानां प्रसादश्च ऐश्वर्य मे सदाऽकरा।।

सफलताम्बूलानि पान्तु—हाथ में सुपाड़ी-सहित पान प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**ऐश्वर्यमस्तु।**

यजमान बोले—

यज्ञपुण्यसाफल्यञ्च अनन्तफलदा भवा।
ब्राह्मणानां प्रसादेन दक्षिणा सफला सदा।।

दक्षिणाः पान्तु—हाथ में दक्षिणा प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**बहु देयं चाऽस्तु।**

यजमान बोले—**पुनरत्राऽपः पान्तु**—हाथ में पुनः जल प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**स्वर्चितमस्तु।**

यजमान बोले—**दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो बहुपुत्रं पौत्रं बहुधनं चाऽऽयुष्यं चाऽस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**तथास्तु।**

यजमान बोले—**यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तं अहं ओङ्कारं आदिं कृत्वा यजुराशीर्वचनं बहु ऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिः अनुज्ञातः पुण्यं पुण्याऽहं वाचयिष्ये।**

ब्राह्मण बोले—**वाच्यन्ताम्।**

पुण्याहवाचनमन्त्रपाठः

करोतु स्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्ति चाऽपि द्विजातयः।
सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा।।१।।
ययातिर्नहुषश्चैव धुन्धुमारो भगीरथः।
तुभ्यं राजर्षयः सर्वे स्वस्ति कुर्वन्तु नित्यशः।।२।।
स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्य एव च।
स्वस्त्यस्त्वापादकेभ्यश्च सर्वेभ्यः स्वस्ति ते सदा।।३।।
स्वाहा स्वधा शची चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
करोतु स्वस्ति वेदादिर्नित्यं तव महामखे।।४।।
लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ।
असितो देवलश्चैव विश्वामित्रस्तथाङ्गिराः।।५।।
वशिष्ठः कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
धाता विधाता लोकेशो दिशश्च सदिगीश्वराः।।६।।

स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्त्तिकेयश्च षण्मुखः।
विवस्वान्भगवान् स्वस्ति करोतु तव सर्वदा।।७।।
दिग्गजाश्चैव चत्वारः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः।
अधस्ताद् धरणीं चाऽसौ नागो धारयते हि यः।।८।।
शेषश्च पन्नगश्रेष्ठः स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु।

ॐ द्रविणोदाःपिपीषतिजुहोतप्रचतिष्ठत।। नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत।। सवितात्त्वा सवानाꣳसुवतामग्निर्गृहपतीनाꣳसोमोवनस्पतिनाम्।। बृहस्पतिर्व्वाचऽइन्द्रोज्ज्यैष्ठ्या यरुद्रःपशुब्भ्योमित्रःसत्त्योवरुणोधर्म्मपतीनाम्।। नतद्रक्षाꣳसिनपिशाचास्तरन्ति देवानामोजःप्प्रथमजꣳह्येतत्।। योबिभर्त्तिदाक्षायणꣳहिरण्ण्यꣳसदेवेषुकृणुते दीर्घमायुꣳसमनुष्ष्येषुकृणुतेदीर्घमायुः।। उच्चातेजातमन्धसोदिविसद्भूम्म्याददे ।। उग्रꣳशर्म्ममहिश्श्रवः।।उपास्म्मैगायतानरःपवमानायेन्दवे।।अभिदेवाँ२।।ऽइयक्षते।।

व्रत-जप-नियम-तपः-स्वाध्याय-क्रतु-शम-दम-दया-दान-विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।

ब्राह्मण बोले—**समाहितमनसः स्मः।**

यजमान बोले—**प्रसीदन्तु भवन्तः।**

ब्राह्मण बोले—**प्रसन्ना स्मः।**

यजमान अधोलिखित मन्त्र बोलते हुए कलश के ऊपर अक्षत छोड़े तथा ब्राह्मण प्रत्युत्तर में अस्तु आदि प्रतिवचन बोले—

ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्माऽस्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु।

द्वितीय पात्र में—(बहिः) **ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। ॐ यत्पापं रोगं पापं अशुभं अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।**

कलश के ऊपर—**ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरं अहरहमभिवृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः**

प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगाः उमा-मातरः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगाः ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयेताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयेताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्न-विनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाः इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्।

द्वितीय पात्र में—(बहिः) ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्त्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः।

कलश के ऊपर—ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा नद्यः सन्तु। ॐ शिवा गिरयः सन्तु। ॐ शिवा सागराः सन्तु ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ नि॒का॒मेनि॑कामेनः॒पु॒र्जन्यो॑वर्षतु॒फल॑वत्यो॑न॒ऽओष॑धयः॒पच्यन्तांयोगक्षे॒मोनः॑ कल्पताम्।।

ॐ शुक्राऽङ्गारक बुध बृहस्पति शनैश्चर राहु केतु सोमसहित आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोनुवाक्या यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

यजमान बोले—एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण बोले—वाच्यताम्।

यजमान बोले—

ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य सार्द्धनवचण्डीपुरश्चरणाख्यकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—ॐ पुण्याहम्।

यजमान बोले—अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—ॐ पुण्याहम्।

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ पुण्याहम्।**

ॐ पुन॑न्तु मा देवज॒नाः पुन॑न्तु मन॑सा॒धिय॑ः॥ पुन॑न्तु विश्वा॑भू॒तानि॒ जात॑वेदः पुनी॒हि मा॑॥

यजमान बोले—

पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य सार्द्धनवचण्डीपुरश्चरणाख्यकर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ कल्याणम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कल्याणम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कल्याणम्।**

ॐ यथे॒मांवाचं॑कल्या॒णीमा॒वदा॑नि॒जने॑भ्यः॥ ब्र॒ह्म॒रा॒ज॒न्या॒भ्याᳪंशू॒द्राय॒ चार्य्या॑यच॒स्वाय॒चार॑णायच॒प्प्रि॒योदे॒वानां॒दक्षि॑णायैदा॒तु॒रि॒हभूयासम॒यं मे॒ काम॒ः समृ॑द्ध्यता॒मुप॑मा॒दोन॑मतु॥

यजमान बोले—

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य सार्द्धनवचण्डीपुरश्चरणाख्यकर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।**

ॐ स॒त्रस्य॒ऋद्धि॑र॒स्यग॑न्म॒ज्योति॑र॒मृता॑ऽअभूम॥ दिवं॑पृथि॒व्याऽअध्यारु॑हा॒ मावि॑दामदे॒वान्त्स्व॒ज्योति॑ः॥

यजमान बोले—

स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य सार्द्धनवचण्डीपुरश्चरणाख्यकर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

यजमान बोले—**अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

यजमान बोले—**अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

ॐ स्व॒स्तिन॒ऽइन्द्रो॑वृ॒द्धश्र॑वाःस्व॒स्तिनः॑पू॒षावि॒श्ववे॑दाः।। स्व॒स्तिनस्तार्क्ष्यो॒ऽअरि॑ष्टनेमिःस्व॒स्तिनो॒बृह॒स्पति॑र्दधातु।।

यजमान बोले—

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य सार्द्धनवचण्डीपुरश्चरणाख्यकर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

ॐ श्रीश्च॑तेल॒क्ष्मीश्च॒पत्न्या॑वहोरा॒त्रेपा॒र्श्वेनक्ष॑त्राणिरू॒पम॒श्विनौ॒व्यात्त॑म्।। इ॒ष्णंनि॑षाणा॒मुंम॑ऽइषाणसर्व॑लो॒कंम॑ऽइषाण।।

यजमान बोले—

मृकण्डसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्।।

ब्राह्मण बोले—**शतं जीवन्तु भवन्तः।**

ॐ श॒तमिन्नुश॒रदो॒अन्ति॑देवा॒यत्रा॑नश्च॒क्राज॒रसं॑त॒नूना॑म्।। पु॒त्रासो॒यत्र॑पि॒तरो॒भव॑न्ति॒मानो॑म॒द्ध्यारी॑रिषता॒युर्गन्तोः॑।।

यजमान बोले—

शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि।।

ब्राह्मण बोले—ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ मनसः कामुमाकूतिंवाचः सुत्यमशीय।। पशूनाꣳरूपमन्नस्युरसोयशः श्रीः श्रयतांमयिस्वाहा।।

यजमान बोले—

प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः।।

ब्राह्मण बोले—ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्न्युन्योविश्श्वारूपाणिपरितावभूव।। यत्कामास्तेजुहुम स्तन्नोऽअस्तुव्वयꣳस्यामपतयोरयिणाम्।।

यजमान बोले—

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः।।

ब्राह्मण बोले—ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ प्प्रतिपन्थामपद्महिस्वस्तिगामनेहसम्।। येनविश्श्वाःपरिद्विषोवृणक्तिविन्दते व्वसु।।

यजमान बोले—ॐ स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु।

ब्राह्मण बोले—अस्तु स्वस्तिवाचनसमृद्धिः।

यजमान संकल्प करे—ॐ तत्सद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहं कृतस्य स्वस्तिवाचनकर्मणः समृद्ध्यर्थं स्वस्तिवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

पुण्याहवाचनं पूर्णम्

●

अभिषेकः

वरुण कलश का जल लेकर चार अविधुर ब्राह्मण दर्भ-दूर्वादि से अभिषेक करें। अभिषेक के समय यजमानपत्नी यजमान के वाम भाग में बैठे—

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः।।

प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान्यमो वै निर्ऋतिस्तथा।।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्राह्मणाः सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा।।
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसिताऽर्कजाः।।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः।।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः।।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये।।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये।।

ॐ पय॑ःपृथि॒व्यांपय॒ऽओष॑धीषु॒पयो॑दि॒व्य॒न्तरि॑क्षे॒पयो॑धाः।। पय॑स्वतीःप्र॒दिश॑ः सन्तु॒मह्य॑म्।। ॐ पञ्च॑न॒द्यः॒सर॑स्वती॒मपि॑यन्ति॒सस्रो॑तसः।। सर॑स्वती॒तुप॑ञ्च॒धासो दे॒शेभ॑वत्स॒रित्।। ॐ व्व॒रुण॑स्यो॒त्तम्भ॑नमसि॒व्वरु॑णस्यस्कम्भ॒सर्ज्जनी॑स्त्थो॒व्वरु॑णस्यऽऋत॒ सद॑न्न्यसि॒व्वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑नमसि॒व्वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑नमासीद।। ॐ पु॒नन्तु॑मादेवज॒नाः पु॒नन्तु॒मन॑साधिय॑ः।। पु॒नन्तु॒व्विश्वा॑भू॒तानि॒जात॑वेदःपुनी॒हिमा॑।। ॐ दे॒वस्य॑त्वासवि॒तुः प्र॑स॒वे॒ऽश्विनो॑र्ब्बा॒हुभ्यां॑पू॒ष्णोहस्ता॑भ्याम्।। सर॑स्वत्यैव्वा॒चोय॒न्तुर्य॒न्त्रितयै॑दधामि॒ बृह॒स्पते॑ष्ट्वा॒साम्म्रा॑ज्येना॒भिषि॑ञ्चाम्यसौ।। ॐ दे॒वस्य॑त्वासवि॒तुःप्र॑स॒वे॒ऽश्विनो॑ र्ब्बा॒हुभ्यां॑पू॒ष्णोहस्ता॑भ्याम्।। सर॑स्वत्यैव्वा॒चोय॒न्तुर्य॒न्त्रेणा॒ग्नेःसाम्म्रा॑ज्येना॒भिषि॑ञ्चामि।। ॐ दे॒वस्य॑त्वासवि॒तुःप्र॑स॒वे॒ऽश्विनो॑र्ब्बा॒हुभ्यां॑पू॒ष्णोहस्ता॑भ्याम्।। अ॒श्विनो॒ भैष॑ज्येन॒तेज॑सेब्रह्मवर्च॒साया॒भिषि॑ञ्चामि॒।। सर॑स्वत्यै॒भैष॑ज्येनव्वी॒र्या॒न्नाद्या॑या॒भिषि॑ञ्चामीन्द्र॑स्येन्द्रियेण॒बला॑यश्रि॒यैयश॑से॒ऽभिषि॑ञ्चामि।। ॐ विश्वा॑निदेवसवितर्दुरि॒तानि॒परा॑सुव।। यद्भ॒द्रंतन्न॒ऽआसु॑व।। धाम॒च्छदु॒ग्निरिन्द्रो॑ब्ब्र॒ह्मादे॒वोबृह॒स्पति॑ः।। सचे॑तसो॒व्विश्वे॑दे॒वाय॒ज्ञंप्राव॑न्तुनःशु॒भे।। त्वंय्य॑विष्ठदा॒शुषो॒नॄःपा॑हिशृणु॒धीगिर॑ः।। रक्षा॑तो॒कमु॒तत्मना॑।। ॐ अन्न॑पते॒ऽन्न॑स्यनोदेह्यनमी॒वस्य॑शु॒ष्मिण॑ः।। प्रप्र॑दा॒तारं॑तारिष॒ऊर्जं॑नोधेहिद्विपदे॒चतु॑ष्पदे।। ॐ द्यौःशान्ति॑र॒न्तरि॑क्ष॒ꣳशान्ति॑ःपृथि॒वीशान्ति॒राप॒ꣳ शान्ति॒रोष॑धय॒ꣳ शान्ति॑ः।।

वनस्प्पतयःᳫ शान्तिर्विश्श्वेदेवाः शान्तिर्ब्ब्रह्मशान्तिःᳫ सर्व्वᳫशान्तिःᳫशान्तिरेव-शान्तिःᳫसामाशान्तिरेधि।। यतोयतः समीहसेततोनो ऽ अभयङ्कुरु।। शन्नः-कुरुप्प्रजाब्भ्योभयन्नःᳫप्पशुब्भ्यः।। सुशान्तिर्भवतु।।

अभिषेक कर्म करने के बाद यजमान संकल्पपूर्वक ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करे।

यजमान संकल्प करे—ॐ तत्सद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य अभिषेककर्मणः समृद्ध्यर्थं अभिषेक-कर्तृकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

अभिषेककर्म परिपूर्णम्

◆

षोडशमातृकापूजनम्

कुलदेवता	लोकमातर	देवसेना	मेधा
तुष्टि	मातृ	जया	शची
पुष्टि	स्वाहा	विजया	पद्मा
धृति	स्वधा	सावित्री	गौरी गणेश

१. गणेशावाहनम्—ॐ गणानान्त्वागणपतिᳫहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिᳫहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिᳫहवामहेव्वसोमम।। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् ।।

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा।
त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

२. गौर्यावाहनम्—ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः।। पितरंच प्प्रयन्त्स्वः।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

३. पद्मावाहनम्—ॐ हिंण्यरूपाऽउषसोविरोकऽउभाविन्द्राऽदिथः सूर्य्यश्च।। आरोहतंवरुण मित्रगर्तंततश्चक्षाथामदितिंदितिंचमित्रोऽसिवरुणोऽसि।।

पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरुसंस्थिताम्।
जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि।

४. शच्यावाहनम्—ॐ निवेशनः सङ्गमनोवसूनांविश्वारूपाभिचष्टेशचीभिः।। देवऽइवसवितासत्त्य धर्म्मेन्द्रोनतस्त्थौसमरेपथीनाम्।।

दिव्यरूपां विशालाक्षी शुचिकुण्डलधारिणीम्।
रक्तमुक्ताद्यलङ्कारां शचीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः शच्यै नमः शचीमावाहयामि स्थापयामि।

५. मेधावाहनम्—ॐ मेधांमेवरुणोददातुमेधामग्निः प्प्रजापतिः।। मेधामिन्द्रश्चवायुश्चमेधांधाता ददातुमेस्वाहा।।

विश्वेऽस्मिन्भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम्।
बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।

६. सावित्र्यावाहनम्—ॐ सवितात्त्वासवानाꣳसुवतामग्निर्ग्गृहपतिनाꣳसोमोवनस्प्पतीनाम्।। बृहस्प्पतिर्व्वाचऽइन्द्रोज्यैष्ठ्यायरुद्रः पशुब्भ्योमित्रः सत्त्योवरुणोधर्मपतीनाम्।

जगत्सृष्टिकरी धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम्।
वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

७. विजयावाहनम्—ॐ विज्ज्यन्धतुः कपर्दिनोविशल्योबाणवाँ२।।उत।। अनेशन्नस्ययाऽषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः।।

सर्वास्त्रधारिणीं देवीं सर्वाभरणभूषिताम्।
सर्वदेवस्तुतां वन्द्यां विजयां स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः विजयायै नमः विजयामावाहयामि स्थापयामि।

८. जयावाहनम्—ॐ वह्वीनांपिताबहुरस्यपुत्रश्चिश्चाकृणोतिसमनावगत्त्य।। इषुधिःसङ्काः पृतनाश्चसर्वाःपृष्ठेनिनद्धोजयतिप्रसूतः।।

सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम्।
त्रैलोक्यवन्दितां शुभ्रां जयामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः जयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि।

९. देवसेनावाहनम्—ॐ इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञःपुरएतुसोमः।। देवसेनानामभि भञ्जतीनांजयन्तीनांमरुतोयन्त्वग्ग्रम्।।

मयूरवाहनां देवीं खड्गशक्तिधनुर्धराम्।
आवाहयेद्देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः देवसेनायै नमः देवसेनामावाहयामि स्थापयामि।

१०. स्वधावाहनम्—ॐ पितृभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमःपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः प्प्रपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः।। अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्त पितरःपितरःशुन्धद्ध्वम्।।

अग्रजां सर्वदेवानां कव्यार्थं या प्रतिष्ठिता।
पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

११. स्वाहावाहनम्—ॐ स्वाहाप्प्राणेभ्यःसाधिपतिकेभ्यः।। पृथिव्यैस्वाहाग्ग्नयेस्वाहान्तरिक्षाय स्वाहाव्वायवेस्वाहा।। दिवेस्वाहासूर्य्यायस्वाहा।।

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

१२. मातृः आवाहनम्—ॐ आपोऽअस्म्मान्मातरःशुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्प्वःपुनन्तु।। व्विश्श्वꣳहिरिप्प्रं प्प्रवहन्तिदेविरुदिदाभ्यःशुचिरापूतऽएमि।। दीक्षातपसोस्तनूरसितांत्वाशिवाꣳ शग्ग्मांपरिदधेभद्द्रंव्वर्णंपुष्य्यन्।।

आवाहयाम्यहं मातृः सकलाः लोकपूजिताः।
सर्वकल्याणरूपिण्यो वरदाः दिव्यभूषणाः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः मातृभ्यो नमः मातृः आवाहयामि स्थापयामि।

१३. लोकमातृः आवाहनम्—ॐ रयिश्चमेरायश्चमेपुष्टंचमेपुष्टिश्चमेव्विभुचमेप्प्रभुचमेपूर्णंचमेपूर्णतरंच मेकुयवञ्चमेऽक्षितञ्चमेऽन्नंचमेऽक्षुच्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।

आवाहयेल्लोकमातृः जयन्तिप्रमुखा शुभा।
नानाऽभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोकहितावहाः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि।

१४. धृत्यावाहनम्—ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्च्चयज्ज्योतिरन्तरमृतंप्प्रजासु।। यस्मान्नऽऋृते किञ्चनकर्म्मक्क्रियतेतन्न्मेमनःशिवसङ्कल्प्पमस्तु।।

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

१५. पुष्ट्यावाहनम्—ॐ अङ्गान्न्यात्मन्निभिषजातदश्श्विनात्मानमङ्गैःसमधात्त्सरस्वती।। इन्द्रस्यरूपꣳ शतमानमायुश्च्चन्द्रेणज्ज्योतिरमृतंदधानाः।।

पोषयन्ती जगत्सर्वं स्वदेहप्रभवैर्नवैः।
शाकैः फलैर्जलै रत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

१६. तुष्ट्यावाहनम्—ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्श्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।

देवैराराधितां देवीं सदा सन्तोषकारिणीम्।
प्रसादसुमुखीं देवीं तुष्टिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः तुष्ट्यै नमः तुष्टीमावाहयामिं स्थापयामि।

१७. कुलदेवतावाहनम्—ॐ प्प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहा।। चक्षुषेस्वाहाश्श्रोत्त्रायस्वाहा व्वाचेस्वाहामनसेस्वाहा।।

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजाति कुलेशानी दुर्गामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवतां आवाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु।। व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितगौर्यादि आत्मनः कुलदेवतान्त आवाहितमातृभ्यो नमः आवाहिता प्रतिष्ठिता भव।

१. ध्यानम्—

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

२. आसनम्—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

३. पाद्यम्—

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः पाद्योः पाद्यं समर्पयामि।

४. अर्घ्यम्—

ॐ कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

५. आचमनीयम्—

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

६. स्नानीयम्—

ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

७. पुनराचमनीयम्—

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभि स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

८. पञ्चामृतस्नानम्—

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

९. शुद्धोदकस्नानम्—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

१०. पुनराचमनीयम्—

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

११. वस्त्रोपवस्त्रम्—

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

१२. यज्ञोपवीतम्—

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

१३. गन्धम्—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

१४. अक्षतम्—

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

१५. पुष्पमालाम्—

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

१६. अबीरबुक्काम्—

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

१७. सिन्दूरम्—

ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जवाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य—

१८. धूपम्—

ॐ दशाङ्गगुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः धूपं समर्पयामि।

१९. दीपम्—

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

२०. नैवेद्यम्—

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

२१. करोद्वर्तनम्—

ॐ नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

२२. ताम्बूलम्—

ॐ आर्द्रां यः करिर्णीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलपत्रं पूगीफलं एलालवङ्गादिकञ्च समर्पयामि।

२३. फलम्—

ॐ द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाऽऽम्रकपित्थकम्।
नारिकेलेक्षु जम्ब्वादि फलानि प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

२४. दक्षिणाम्—

ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान्कुरु मनोरथान्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

२५. प्रदक्षिणाम्—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषान्हम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

२६. पुष्पाञ्जलीम्—

ॐ यः शुचि प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्चदशर्चञ्च च श्रीकामः सततं जपेत्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहितषोड़शमातृकाभ्यां नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलीं समर्पयामि।

२७. प्रार्थना—

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश।।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः।।

षोडशोपचार पूजन के पश्चात् पूजन समर्पण करे। यथा—**अनेन यथोपलब्धद्रव्येण यथाज्ञानेन यथापूजनेन गणेशसहितगौर्यादि आत्मनः कुलदेवतान्त आवाहितषोडशमातरः प्रीयन्तां न मम।**

गणेशसहितषोड़शमातृकापूजनं परिपूर्णम्

सप्तघृतमातृकापूजनम्

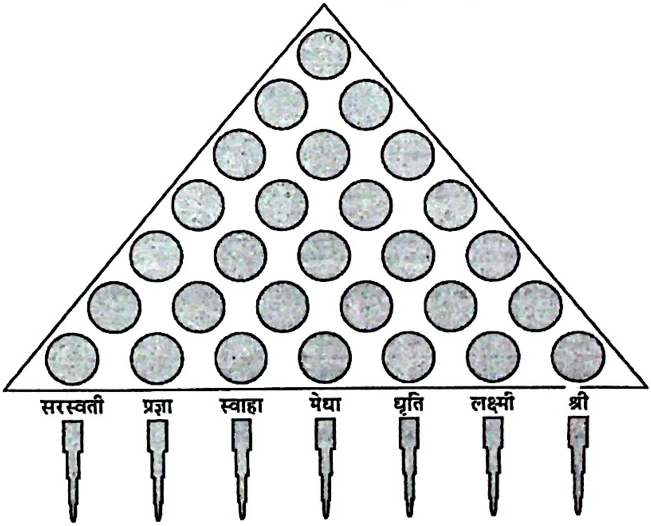

किसी पाटा पर कपड़ा बिछा कर अधोलिखित चक्र सिन्दूर से सप्तविन्द्वात्मक पहले नीचे सात विन्दू बनाकर फिर उसके ऊपर छः विन्दू फिर पांच विन्दू उसके ऊपर चार विन्दू उसके ऊपर तीन विन्दू उसके ऊपर दो विन्दू फिर एक विन्दू बनायें। नीचे के सात विन्दुओं पर घृत धारा कर आवाहन स्थापन करके षोडश मातृकाओं के सदृश ही पूजन करे।

घृतधारा—घी से अधोलिखित मन्त्र पढ़ते हुए सप्तमातृका विन्दुओं पर घृत-धारा दें। पश्चात् गुण से कामधुक्ष बोल कर एकीकरण करके प्रत्येक धाराओं पर तत्तद् देवताओं का आवाहन करे।

ॐ व्वसोः पवित्रमसिशतधारंव्वसोः पवित्रमसिसहस्रधारम्।। देवस्त्वासविता-पुनातु व्वसोः पवित्रेणशतधरिणसुप्वा।। ॐ कामधुक्षः।।

१. श्र्यावाहनम्—**ॐ मनसः काममाकूतिंव्वाचः सत्त्यमशीय।। पशूनाꣳरूप-मन्नस्यरसोयशः श्रीः श्रयतांमयिस्वाहा।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि।

२. लक्ष्म्यावाहनम्—**ॐ श्रीश्च्चतेलक्ष्मीश्च्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणि-रूपमश्श्विनौव्यात्तम्।। इष्णंन्निषाणामुंमऽइषाणसर्व्वलोकंमऽइषाण।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।

३. धृत्यावाहनम्—**ॐ भद्रङ्कर्ण्णेभिः शृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यज-त्राः।। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

४. मेधावाहनम्—**ॐ मेधांमेव्वरुणोददातुमेधामग्निः प्प्रजापतिः।। मेधामि-न्द्रश्च्चव्वायुश्च्चमेधां धातादददातुमेस्वाहा।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।

५. स्वाहावाहनम्—**ॐ प्प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहा।। चक्षुषे-स्वाहाश्श्रोत्रायस्वाहा व्वाचेस्वाहामनसेस्वाहा।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

६. प्रज्ञावाहनम्—**ॐ आयङ्गौः पृश्श्निरक्क्रमीदसदन्मातरंपुरः।। पितरंच-प्प्रयन्त्स्वः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि।

७. सरस्वत्यावाहनम्—**ॐ पावकानः सरस्वतीव्वाजेभिर्व्वाजिनीवतियज्ञंव्वष्टुधि-यावसुः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः सरस्वत्यै नमः सरस्वतीं आवाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—ॐ मनोँजूतिर्ज्जुषता॒माज्ज्यस्य॒बृह॒स्स्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्टंय्य॒ज्ञꣳसमि॒ मन्द॑धातु।। व्विश्श्वे॑दे॒वास॑ऽइ॒हमा॑दयन्ता॒मो३म्प्रति॑ष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः आवाहिता प्रतिष्ठिता भव।

१. ध्यानम्—

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

२. आसनम्—

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

३. पाद्यम्—

अश्वपूर्णां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः पाद्योः पाद्यं समर्पयामि।

४. अर्घ्यम्—

कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

५. आचमनीयम्—

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

६. स्नानीयम्—

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

७. पुनराचमनीयम्—

कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभि स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

८. पञ्चामृतस्नानम्—

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

९. शुद्धोदकस्नानम्—

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

१०. पुनराचमनीयम्—

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ विल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

११. वस्त्रोपवस्त्रम्—

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

१२. यज्ञोपवीतम्—

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

१३. गन्धम्—

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

१४. अक्षतम्—

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पाशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

१५. पुष्पमालाम्—

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

१६. अबीरबुक्काम्—

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

१७. सिन्दूरम्—

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः सिन्दूराद्याभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य—

१८. धूपम्—

दशाङ्गगुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

१९. दीपम्—

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

२०. नैवेद्यम्—

अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

२१. करोद्वर्तनम्—

नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे कुंकुमचन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

२२. ताम्बूलम्—

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आऽवह।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलपत्रं पूगीफलं एलालवङ्गादिकञ्च समर्पयामि।

२३. फलम्—

द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाऽऽम्रकपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्वादिफलानि प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

२४. दक्षिणाम्—

पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान्कुरु मनोरथान्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

२५. प्रदक्षिणाम्—

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषानहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

२६. पुष्पाञ्जलीम्—

य: शुचि: प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रिय: पञ्चदशर्चञ्च श्रीकाम: सततं जपेत्।।

ॐ भूर्भुव:स्व: श्र्यादिसप्तघृतमातृभ्यो नम: मन्त्रपुष्पाञ्जलीं समर्पयामि।

२७. प्रार्थना—

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातर:।।
यदङ्गत्वेन भो देव्य: पूजिता विधिमार्गत:।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्।।

२८. समर्पणम्—**अनेन यथोपलब्धद्रव्येण यथाज्ञानेन पूजनेन श्र्यादिसरस्वन्त्यन्तसप्तघृतमातर: प्रीयन्तां न मम।**

सप्त घृतमातृकाओं के पूजन के बाद सभी ब्राह्मण मिलकर आयुष्यमन्त्र का पाठ करें और यजमान ध्यानपूर्वक सपरिवार उसको सुने।

सप्तघृतमातृकापूजनं परिपूर्णम्

●

आयुष्यमन्त्रपाठ:

यदायुष्यं चिरं देवा: सप्तकल्पान्तजीविषु।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरद: शतम्।।
दीर्घा नागा नगा नद्योऽनन्ता: सप्तार्णवा दिश:।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरद: शतम्।।
सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च।
आविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरद: शतम्।।

ॐ आ॒यु॒ष्य्यं॑व्वर्च्च॒स्य॒ꣳरा॒यस्प्पोष॒मौद्भिदम्।। इ॒दꣳहिर॑ण्ण्यं॒व्वर्च्च॑स्व॒ज्जैत्रा॒या विश॑तादु॒माम्।। ॐ नतद्र॒क्षाꣳसि॒नपि॑शा॒चास्त॑रन्ति दे॒वाना॒मोज॑:प्प्रथम॒जꣳह्ये॒तत्।। यो बि॒भर्त्ति॒दाक्षा॑य॒णꣳहिर॑ण्य॒ꣳसदे॒वेषु॑कृणुतेदी॒र्घमायु॒ꣳसम॑नु॒ष्ष्ये॒षुकृणुतेदी॒र्घमायु॑:।। ॐ यदाब॑ध्नन्दाक्षाय॒णाहिर॑ण्ण्यꣳश॒तानी॑कायसुमन॒स्यमा॑ना:।। तन्म॒ऽआब॑ध्नामि श॒तशा॑रदा॒यायु॑ष्मान्ज॒रद॑ष्टि॒र्य्यथास॑म्।।

आयुष्य मन्त्रपाठ-श्रवण करने के बाद यजमान दक्षिणा संकल्प करके ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करे।

दक्षिणा संकल्प—**ॐ तत्सद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य आयुष्यमन्त्रपाठकर्मणः समृद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं आयुष्यमन्त्रपाठकर्तृकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।**

आयुष्य मन्त्रपाठ के बाद किसी पत्तल या पाटे पर अधोलिखित आकृति के अनुसार रेखाओं को बना कर उस पर कुश रख कर पूजन करे।

आयुष्यमन्त्रपाठं परिपूर्णम्

●

साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दिश्राद्धम्

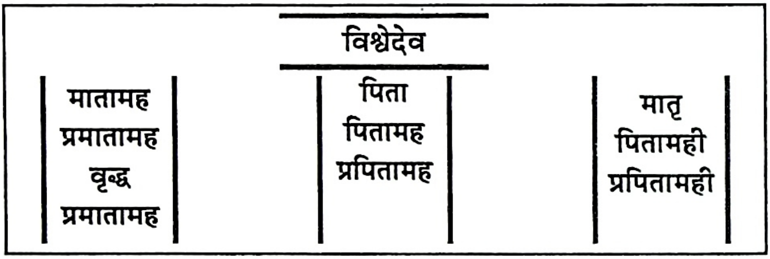

आयुष्यमन्त्र पाठ के बाद किसी पत्तल या पाटे पर आकृति के अनुसार रेखाओं को बना कर उस पर कुशा रख कर पूजन करे। ऊर्ध्व की रेखाओं पर विश्वेदेव का तथा नीचे की दक्षिण की दोनों रेखाओं पर मातृ पितामही प्रपितामही का तथा मध्य रेखाओं पर पितृ पितामह प्रपितामह का एवं वाम रेखाओं पर मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामह का आवाहन-पूजन करे। यह श्राद्ध सव्य होकर ही करे। सर्वप्रथम विश्वेदेव के साथ पितरों का ध्यान करे। जिनके माता-पिता जीवित हों, वे माता-पिता को छोड़ कर ऊपर की पीढ़ी पितामहादि के लिए श्राद्ध करें। विद्वान् कर्मकाण्डी तदनुसार ऊह करके श्राद्ध करायें।

विश्वेदेवावाहनम्—**ॐ विश्वेदेवासऽआगतशृणुताम्ऽइमꣳहवम्।। एदम्बर्हिन्निषीदत।। उपयाम गृहीतोसिविश्वेब्भ्यस्त्वादेवेब्भ्यऽएषतेयोनिर्विश्वेब्भ्यस्त्वादेवेब्भ्यः।। ॐ विश्वे देवाऽअꣳशुषुन्न्युप्तोविष्णुराप्प्रीतपाऽआप्प्याय्यमानोयमःसूयमानोविष्णुः सम्भ्रियमाणोवायुःपूयमानःशुक्रःपूतःशुक्रःक्षीरश्रीर्म्मन्थीसक्तुश्रीर्विश्वेदेवाः।। ॐ विश्वेदेवाश्चमसेषून्नीतोसुर्होमायोद्यतोरुद्रोहूयमानोवातोब्भ्यावृत्तोनृचक्षाः प्प्रतिक्ख्यातोभक्षोभक्ष्यमाणःपितरोनाराशꣳसाःसन्नःसिन्धुः।। ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेमꣳहवम्मेयेऽअन्तरिक्क्षेयऽउपद्यविष्ठ।। येऽ-**

अग्ग्निजिह्वाऽउतवायजत्राऽ आसद्द्यास्म्मिन्बर्हिषिमादयध्द्वम्।।

पितृणामावाहनम्—ॐ उशन्तस्त्वानिधीमह्युशन्तःसमिधीमहि।। उशन्नुशतऽआवहपितृन्हविषेऽ अत्तवे।। ॐ आयन्तुनःपितरःसोम्म्यासोऽग्निष्ष्वात्ताःपथिभिर्द्देवयानैः।। अस्म्मिन्न्यज्ञे स्वधयामदन्तोधिब्ब्रुवन्तुतेवन्त्वस्मान्।।

मातृपितामहीप्रपितामह्यानामावाहनम्—ॐ उदीरतामवरऽउत्त्परासऽउन्मद्ध्यमाःपितरःसोम्म्यासः।। असुँय्यऽईयुरं वृकाऽऋतज्ञास्त्तेनोवन्तुपितरोहवेषु।। ॐ अङ्गिरसोनःपितरोनवग्ग्वाऽअथर्व्वाणो भृगवः सोम्म्यासः।। तेषांव्वयꣳ सुमतौय्यज्ञियानामपिभद्द्रेसौमनसेस्याम।। ॐ आयन्तुनः पितरः सोम्म्यासोऽसोग्निष्ष्वात्ताः पथिभिर्द्देवयानैः।। अस्म्मिन्न्यज्ञेस्वध यामदन्तोधि ब्ब्रुवन्तु तेवन्त्वस्मान्।। ॐ ऊर्ज्जंव्वहन्तीरमृतंघृतम्पयः कीलालम्परि स्रुतम्।। स्वधास्त्थतर्प्पयत मे पितृन्।। ॐ पितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः प्प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः।। अक्क्षन्न्पितरोऽमीमदन्तपितरोतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धद्ध्वम्।। ॐ ये चेह पितरो ये चनेह याँश्च्श्च विद्द्मयाँ२।।ऽउचनप्प्रविद्द्म।। ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्क्षरन्ति सिन्धवः।। माद्ध्वीन्नः सन्त्वोषधीः।। ॐ मधुनक्त्त मुतोषसो मधु मत्त्पात्त्थिवꣳ रजः।। मधुद्द्यौरस्तुनः पिता।। ॐ मधुमान्नो व्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तु सूर्य्यः।। माद्ध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः।।

पितापितामहप्रपितामहानामावाहनम्—ॐ अत्रपितरोमादयद्ध्वँय्यथाभागमावृषायद्ध्वम्।। अमीमदन्तपितरोयथाभाग मावृषायिषत।। ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्न्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्तसतो वः पितरो देष्म्मैतद्वः पितरो व्वास।। आधत्त पितरो गर्ब्भङ्कुमारम्पुष्क्करस्रजम्।। यथेह पुरुषो सत्।। ऊर्ज्जं व्वहन्तीरमृतं घृतम्पयः कीलालम्परिस्रुतम्।। स्वधास्त्थ तर्प्पयत मे पितृन्।।

मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानामावाहनम्—ॐ पितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः प्प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः।। अक्क्षन्न्पितरोऽमीमदन्त-पितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धद्ध्वम्।।

पाद्यसमर्पणम्—ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ अमुकगोत्रा अस्मत् मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ अमुकगोत्रा अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ अमुकगोत्रा अस्मत् मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्निकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

आसनदानम्—**ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्रप्नुवामः।**

ॐ अमुकगोत्रा (अपना गोत्र उच्चारित करे) **अस्मत् मातृपितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवःस्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।**

ॐ अमुकगोत्र (अपना गोत्र उच्चारित करे) **अस्मत् पितृपितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।**

ॐ अमुकगोत्र (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **अस्मत् मातामहप्रमाता-महवृद्धप्रमातामहाः सपत्निकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।**

आसनदान के बाद षोडशोपचार पूजन करे।

षोडशोपचारपूजनम्—मौन होकर सामग्री चढ़ा कर गन्धादि दान का सङ्कल्प करे।

इदं स्नानीयं सुस्नानीयम्। स्नान के लिए जल प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इदं वस्त्रं सुवस्त्रम्। वस्त्र प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इमे यज्ञोपवीते सुयज्ञोपवीते। यज्ञोपवीत प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। यज्ञोपवीताङ्गाचमनीय जल प्रदान करे।

एष गन्धः सुगन्धः। चन्दन प्रदान करे।

इमे तिलाक्षताः सुतिलाक्षताः। अक्षत प्रदान करे।

इदं माल्यं सुमाल्यम्। पुष्पमाला प्रदान कर नैवेद्य स्थापित करे।

एष धूपः सुधूपः। धूप आघ्रापित कर प्रदान करे।

एष दीपः सुदीपः। दीप दिखाकर प्रदान करे।

हस्तप्रक्षालनम्—दोनों हस्त प्रक्षालित करे।

इदं नैवेद्यं सुनैवेद्यम्। नैवेद्य प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इदं फलं सुफलम्। ऋतुफल प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इदं ताम्बूलं सुताम्बूलम्। ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा सुदक्षिणा। दक्षिणा प्रदान करे।

इयं पुष्पाञ्जली सुपुष्पाञ्जली। पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

गन्धादिदानम्—**ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं गन्धद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।**

ॐ अमुकगोत्रा (अपना गोत्र उच्चारित करे) **अस्मत् मातृपितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं गन्धद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।**

ॐ अमुकगोत्र (अपना गोत्र उच्चारित करे) **अस्मत् पितृपितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं गन्धद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।**

ॐ अमुकगोत्र (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **अस्मत् मातामहप्रमाता-महवृद्धप्रमातामहाः सपत्निकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं गन्धद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।**

भोजननिष्क्रयदानम्—**ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।**

ॐ अमुकगोत्रा (अपना गोत्र उच्चारित करे) **अस्मत् मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।**

ॐ अमुकगोत्र (अपना गोत्र उच्चारित करे) **अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं युग्म ब्राह्मणभोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।**

ॐ अमुकगोत्र (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **अस्मत् मातामहप्रमाता-महवृद्धप्रमातामहाः सपत्निकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं युग्मब्राह्मण-भोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।**

सक्षीरयवमुदकदानम्—**ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।**

ॐ अमुकगोत्रा (अपना गोत्र उच्चारित करे) **अस्मत् मातृपितामही-प्रपितामह्यः नान्दी मुख्यः प्रीयन्ताम्।**

ॐ अमुकगोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

ॐ अमुकगोत्र अस्मत् मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्निकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

दक्षिणादानम्—**ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।**

ॐ अमुकगोत्रा (अपना गोत्र उच्चारित करे) **अस्मत् मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।**

ॐ अमुकगोत्र (अपना गोत्र उच्चारित करे) **अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।**

ॐ अमुकगोत्र (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **अस्मत् मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्निकाः नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।**

प्रार्थना—यजमान प्रार्थना करे—

ॐ गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च।
श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देयं च नोऽस्तु।।
अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि।
याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन।।

एताः सत्या आशिषः सन्तु।।

ब्राह्मण बोले—**सन्त्वेताः सत्या आशिषः।।**

ॐ उपास्मैगायतानर॒पवमाना॒येन्दवे।। अ॒भिदे॒वाँ२।।इयक्षते।। ॐ इडामग्ने पुरु॒दꣳसꣳस॒निंगोःशश्वत्त॒मꣳहवमानाय॒साध।। स्यान्नःसूनुस्तनयोविजावाग्ने॒सातें सुम॒तिर्भूत्व॒स्मे।।

यजमान बोले—**नान्दीश्राद्धं सुसम्पन्नम्।**

ब्राह्मण बोले—**सुसम्पन्नम्।**

विसर्जनम्—मातृ-पितामही-प्रपितामही, पिता-पितामह-प्रपितामह तथा सपत्निक मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामह सभी के आसन के ऊपर यवाक्षत छिड़क कर विसर्जन करे।

ॐ व्वाजे॑वाजेऽवत व्वा॑जिनो नो॒ धने॑षु व्विप्प्राऽअमृताऽ ऋतज्ञाः। अ॒स्य मद्ध्वः॑ पिबत मा॒दय॑द्ध्वं तृ॒प्ता यात्तप॒थिभि॑र्द्देव॒ यानैः॥ ॐ आ मा॒ व्वाज॑स्य प्प्रस॒वो ज॑गम्म्या॒देमे॒ द्यावा॑ पृथि॒वी व्विश्श्वरू॑पे॥ आ मा॑ गन्तां पि॒तरा॑ मा॒तरा॒ चा मा॒ सोमोऽअमृत॒त्वेन॑ गम्म्यात्॥

विश्वेदेव का विसर्जन करे—**ॐ विश्श्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।**

यजमान बोले—**मयाऽऽचरिते साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्रीगणेशप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु परिपूर्णम्।**

नान्दिश्राद्धं परिपूर्णम्

●

आचार्यादिवरणम्

वरण सामग्री के साथ सर्वप्रथम आचार्य का पूजन करके वरण करे।

ॐ वरणसामग्रीभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

आचार्य वरणम्—

यजमान बोले—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्नं अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् सार्द्धनवचण्डीकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत!॥

आचार्य बोले—**वृतोस्मि।**

ब्रह्मावरणम्—यजमान बोले—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्नं अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् सार्द्धनवचण्डीकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम!॥

ब्रह्मा बोले—वृतोस्मि।

उपद्रष्टावरणम्—यजमान बोले—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्नं अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् सार्द्धनवचण्डीकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः उपद्रष्टात्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मपरायण!।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नुपद्रष्टा भव द्विज!।।

उपद्रष्टा बोले—वृतोस्मि।

गाणपत्यवरणम्—यजमान बोले—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्नं अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् सार्द्धनवचण्डीकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः गाणपत्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—

वाञ्छितार्थफलावाप्त्यै पूजितोऽसि सुराऽसुरैः।
निर्विघ्नं क्रतुसंसिद्ध्यै त्वामऽहं गणपं वृणे।।

गणप बोले—वृतोस्मि।

सदस्यवरणम्—यजमान बोले—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्नं अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् सार्द्धनवचण्डीकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः सदस्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतांवर।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन् सदस्यो भव सुव्रत!।।

सदस्य बोले—**वृतोस्मि। वृतास्मः वा।**

ऋत्विग्वरणम्—यजमान बोले—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्नं अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं**

ब्राह्मणं अस्मिन् सार्द्धनवचण्डीकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे।

प्रार्थना—

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मपरायण!।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नृत्विक्त्वं मे मखे भव।।

उपद्रष्टा बोले—**वृतोस्मि।**

यजमान सबकी प्रार्थना करे—

अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।
ग्रहध्यानरताः नित्यं प्रसन्नमनसः सदा।।
अदुष्टभक्षणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः।
ममाऽपि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि।।
ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः।।
अस्मिन् कर्मणि ये विप्राः वृता गुरुमुखादयः।
सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम्।।
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम्।।

यजमान बोले—**यथाविहितं कुरुध्वम्।**

विप्र बोले—**यथाज्ञानं करवामः।**

आचार्यादिवरणं परिपूर्णम्

●

दिग्रक्षणम्

आचार्य प्राणायामाचमन करके सङ्कल्पपूर्वक दिग्रक्षण करे—

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेयुगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (वाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुक-**

करणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं अस्मिन् सार्द्धनवचण्डीपुरश्चरणे अमुकगोत्रनामादियजमानेन वृतोऽहम् आचार्यकर्म करिष्ये।

आचार्य हाथ में पीला सरसो लेकर रक्षोघ्न करे—

ॐ र॒क्षो॒हणं॑व्वलग॒हनं॑व्वैष्ण॒वीमि॒दम॒हंतं॑व्वल॒गमुत्कि॑रामि॒यंमे॒निष्ट्यो॒यम॒मात्यो॑ नि॒च॒खाने॒दम॒हंतं॑व्वल॒गमुत्त्कि॑रामि॒यंमें॑समा॒नोयम॑समानोनि॒च॒खाने॒दम॒हंतं॑व्वल॒गमुत्कि॑रामि॒ यंमे॒सब॑न्धुर्य्य॒मस॑बन्धुर्निच॒खाने॒दम॒हंतं॑व्वल॒गमुत्कि॑रामि॒यम्मे॑सजा॒तोयमस॑जातो नि॒च॒खानोत्कृ॒त्यांकि॑रामि।।१।।

पूर्व दिशा में पीले सरसो का प्रक्षेप करे—

ॐ र॒क्षो॒हणो॑वोव्वलग॒हन॒ःप्प्रोक्षा॑मिवैष्ण॒वान्र॑क्षो॒हणो॑वोव्वलग॒हनोऽव॑नयामि वैष्ण॒वान्र॑क्षो॒हणो॑वोव्वलग॒हनोऽव॑स्तृणामिवैष्ण॒वान्र॑क्षो॒हणौ॑वांव्वलग॒हना॒ऽउप॑दधामि वैष्ण॒वीर॑क्षो॒हणौ वां व्वलग॒ह नौ॒पर्य्यूहामिवैष्ण॒वीवैष्ण॒वम॑सिवैष्ण॒वास्त्थ।।२।।

दक्षिण दिशा में पीले सरसो का प्रक्षेप करे—

ॐ रक्ष॑सांभा॒गो॒ऽसि॒निर॑स्त॒ꣳरक्ष॑ऽइदम॒हꣳरक्षो॒ऽभिति॑ष्ठामी॒दम॒हꣳरक्षो॒ऽव॑ बाधऽइदम॒ꣳरक्षों॑ऽधम॒न्तमों॑नयामि।। घृ॒तेन॑द्यावापृथिवी॒प्प्रोर्णु॑वाथां॒व्वायो॒वेस्तो॒कानाम॒ग्निराज्ज्य॑स्यवे॒तुस्वाहा॒स्वाहा॑कृतेऽऊ॒र्ध्वन॑भसम्मारु॒तङ्ग॑च्छतम्।।३।।

पश्चिम दिशा में पीले सरसो का प्रक्षेप करे—

ॐ र॒क्षो॒हाव्वि॒श्श्वच॑र्षणिर॒भियोनि॒मयो॑हते।। द्रोणे॑स॒धस्थ॒मास॑दत्।।४।।

उत्तर दिशा में पीले सरसो का प्रक्षेप करे—

ॐ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु।।

अग्निकोण में पीले सरसो का प्रक्षेप करे—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

नैर्ऋत्य कोण में पीले सरसो का प्रक्षेप करे—

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

वायव्य कोण में पीले सरसो का प्रक्षेप करे—

भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु यत्र यागं करोम्यहम्।।

ईशान कोण में पीले सरसो का प्रक्षेप करे—

ॐ हुँ फट्।

ऊपर पीले सरसो का प्रक्षेप करे—

ॐ हुँ फट्।

भूमि पर नीचे पीले सरसो का प्रक्षेप करे।

चारो तरफ क्रोधमयी दृष्टि डाल कर चारो तरफ के विघ्नों का निस्सारण करे तथा भूमि पर तीन बार पैर की एडी से (ॐ हुँ फट् मन्त्र वोलते हुये) प्रहार करके भूमिस्थित विघ्नकर्ताओं से रक्षार्थ विघ्नों का निस्सारण करे।

पञ्चगव्यकरणम्

ॐ गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह।। ब्बृहुत्युष्णिहाककुप्सूचीभि÷ शम्म्यन्तुत्त्वा।। मन्त्र से गोमूत्र स्थापित करे।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

मन्त्र से गोमय मिश्रित करे।

ॐ आप्प्यायस्वसमेतुतेव्विश्श्वत÷सोमव्वृष्ण्ण्यम्।। भवाव्वाजस्यसङ्गथे।। मन्त्र से दुग्ध मिश्रित करे।

ॐ दधिक्क्राब्ण्णोऽअकारिषञ्जिष्ष्णोरश्श्वस्यव्वाजिन÷।। सुरभिनोमुखाकरत्त्प्रणऽआयूᳫंषितारिषत्।। मन्त्र से दधि मिश्रित करे।

ॐ तेजोऽसिशुक्क्रमस्यऽमृतमसिधामनामाऽसिप्प्रियंदेवानामनाधृष्ट्टन्देव यजनमसि।। मन्त्र से घृत मिश्रित करे।

ॐ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेऽश्श्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्।। मन्त्र से कुशोदक मिश्रित करके यज्ञकाष्ठ से आलोडित करे।

ॐ आपोहिष्ठामयो भुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन।। महेरणायचक्क्षसे।। योव÷ शिवतमो रसस्तस्यभाजय तेहन÷।। उशतीरिवमातरे÷।। तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयोयजिन्न्वथ।। आपोजनयथाचनᳬ।।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

पञ्चगव्य-निर्माण के बाद मन्त्र से तीन बार यज्ञभूमि तथा यज्ञसामग्री का मार्जन-प्रोक्षण करे। फिर अञ्जली वना कर स्वस्तिवाचन दो बार करे—

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्श्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्श्ववेदाः।। स्वस्तिनस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्द्दधातु।। मन्त्र का दो बार पाठ करे।

देवाः आयान्तु।। यातुधानाः अपयान्तु।। विष्णोर्देव भूम्यमिमं रक्षस्व।।

पञ्चगव्यकरणं परिपूर्णम्

●

सर्वतोभद्र-चक्र

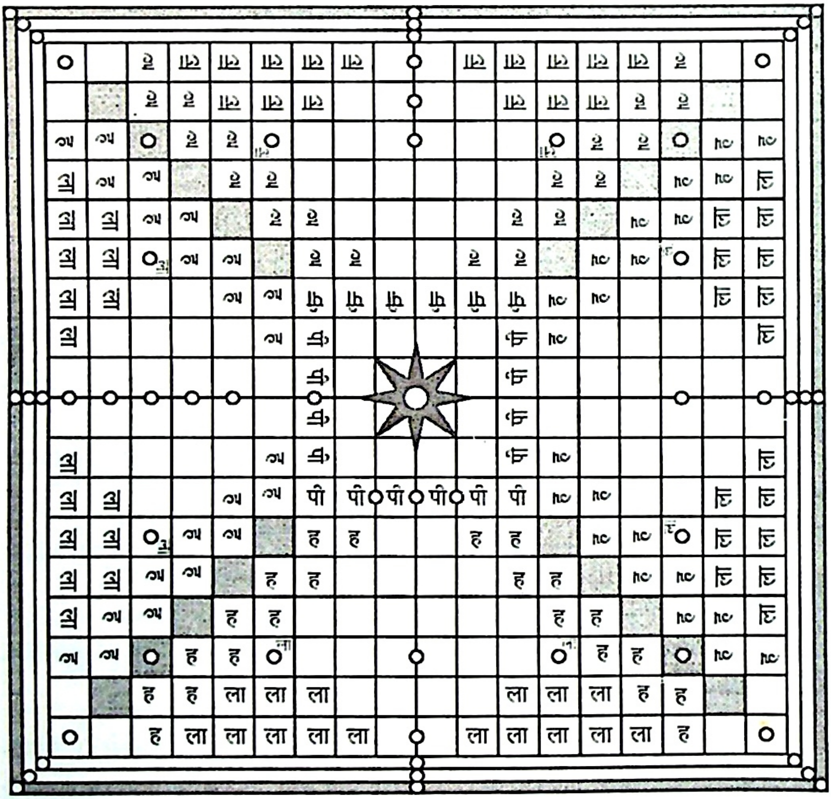

किसी चौकोर चौकी पर कपड़ा बिछा कर अष्टादशकोष्टक चक्र बनाकर चित्रानुसार विभिन्न रंगों से रञ्जित चावलादि रखकर उसपर नियत स्थान पर सुपाड़ी रख कर सर्वतोभद्र मण्डल के देवताओं का आवाहन-स्थापन पूजन करे।

सर्वतोभद्रदेवतानां स्थापनपूजनच—

ब्रह्मावाहनम्—**ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः।।**

सबुध्न्याऽ उपमाऽअस्यव्विष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चव्विवः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

सोमावाहनम्—**ॐ व्वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः।। प्रजावन्तꣳसचेमहि।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

ईशानावाहनम्—**ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिंधियंजिन्न्वमवसेहूमहेव्वयम्।। पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धयें।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रावाहनम्—**ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम्।। ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्त्विन्द्रः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

अग्न्यावाहनम्—**ॐ त्वन्नोऽअग्नेतवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्न्वश्श्चवन्द्य।। त्रातातोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणस्तवव्व्रते।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

यमावाहनम्—**ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा।। स्वाहाघर्म्मायस्वाहा घर्म्मःपित्रे।**

ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

निर्ऋत्यावाहनम्—**ॐ असुन्न्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्न्विहितस्करस्य।। अन्न्यमस्म्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुब्भ्यमस्तु।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

वरुणावाहनम्—**ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः।। अहेडमानोव्वरुणेहबोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

वाय्वावाहनम्—**ॐ आनोनियुद्भिःशतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्।। व्वायोऽअस्म्मिनत्सवनेमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिःसदानः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

अष्टवस्वावाहनम्—**ॐ व्वसुब्भ्यस्त्वारुद्रेब्भ्यस्त्वाऽऽदित्येब्भ्यस्त्वासञ्जानाथांद्यावापृथिवीमित्रावरुणौत्वाव्वृष्ट्यावताम्।। व्यन्तुव्वयोक्तꣳरिहाणामरुतांपृषतीर्गच्छव्वशापृश्निर्ब्भूत्वादिवंगच्छततोनोव्वृष्टिमावह।। चक्षुष्प्पाऽअग्नेऽसिचक्षुर्म्मेपाहि।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवसूनावाहयामि स्थापयामि।

एकादशरुद्रावाहनम्—**ॐ नम॑स्तेरुद्रम॒न्न्यव॑ऽउ॒तोत॒ऽइष॑वे॒नम॑ः।। बा॒हुब्भ्या॑मुतते॒ नम॑ः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि।

द्वादशादित्यावाहनम्—**ॐ य॒ज्ञोदे॒वानां॒प्रत्यै॑तिसु॒म्नमादि॑त्यासो॒भव॑तामृड॒यन्त॑ः।। आवो॒ऽर्व्वाची॑सुम॒तिर्व्व॑वृत्त्याद॒ꣳहोश्चि॒द्याव॑रिवो॒वित्त॒रास॑त्।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्यान् आवाहयामि स्थापयामि।

अश्विनीकुमारावाहनम्—**ॐ अ॒श्विना॒तेज॑सा॒चक्षु॑ःप्प्रा॒णेन॒सर॑स्वतीव्वी॒र्य्य॒म्।। व्वा॒चेन्द्रो॒बले॒नेन्द्रा॑यदधु रि॒न्द्रि॒यम्।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आावाहयामि स्थापयामि।

सपैतृकविश्वेदेवावाहनम्—**ॐ विश्श्वे॑देवास॒ऽआग॑तशृणु॒ताम॑ऽइ॒मꣳहव॑म्।। एदंब॒र्हिर्न्निषी॑दत।। उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि॒व्विश्श्वे॑ब्भ्यस्त्वादे॒वेब्भ्य॑ऽए॒षते॒योनि॒र्व्विश्श्वे॑ब्भ्यस्त्वादे॒वेब्भ्य॑ः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः सपैतृकविश्वेदेवानावाहयामि स्थापयामि।

सप्तयक्षावाहनम्—**ॐ अ॒भित्यंदे॒वꣳस॑वि॒तार॑मो॒ण्यो॒ःक॒विक्क्र॑तु॒मर्च्चा॑मिस॒त्त्यस॑वꣳरत्न॒धाम॒भिप्प्रि॒यंम॒तिंक॒विम्।। ऊ॒र्द्ध्वाय॒स्या॒ऽमति॒र्भाऽअदि॑द्युत॒त्सवी॑मनि॒हिर॑ण्यपाणिरमिमीतसु॒क्क्रतु॑ःकृ॒पास्व॑ः।। प्र॒जाब्भ्य॑स्त्वाप्प्र॒जास्त्वा॑नु॒प्प्राण॑न्तुप्र॒जास्त्वम॑नु॒प्प्राणि॑हि।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि।

सर्पावाहनम्—**ॐ नमो॑स्तु स॒र्प्पेब्भ्यो॒ ये के च॑ पृथि॒वीमनु॑।। येऽअ॒न्तरि॑क्षे॒ ये दि॒वि तेब्भ्य॑ः स॒र्प्पेब्भ्यो॒ नम॑ः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पेभ्यो नमः सर्पानावाहयामि स्थापयामि।

गन्धर्वाऽप्सरसः आवाहनम्—**ॐ ऋ॒ता॒षाडृ॒तधा॑मा॒ग्ग्निर्ग॑न्ध॒र्व्वस्तस्यौष॑धयोप्प्स॒रसो॒मुदो॒नाम॑।। सन॑ऽइ॒दम्ब्रह्म॑क्ष॒त्रम्पा॑तु॒तस्मै॒स्वाहा॒व्वाट्॒ताब्भ्य॒ꣳस्वाहा॑।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः गन्धर्वाऽप्सरोभ्यो नमः गन्धर्वाऽप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि।

स्कन्दावाहनम्—**ॐ यदक्क्र॑न्दः प्प्रथ॒मं जाय॑मानऽउ॒द्यन्त स॑मुद्रादु॒तवा॒पुरी॑षात्।। श्ये॒नस्य॑प॒क्षा ह॑रि॒णस्य॑बाहूऽउप॒स्तुत्त्यंम॑हिजा॒तंते॑ऽअर्व्वन्।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

वृषभावाहनम्—ॐ आशुःशिशानोवृषभोनभीमोघनाघनःक्षोभणश्चर्षणीनाम्।। सङ्क्रन्दनोऽनिमिषऽएकवीरःशतꣳसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वृषभाय नमः वृषभमावाहयामि स्थापयामि।

शूलावाहनम्—ॐ कार्षिरसिसमुद्रस्यत्वाक्षित्त्याऽउन्नयामि।। समापोऽअद्भिरग्गमतसमोषधीभिरोषधीः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः शूलाय नमः शूलमावाहयामि स्थापयामि।

महाकालावाहनम्—ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम्।। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः महाकालाय नमः महाकालमावाहयामि स्थापयामि।

दक्षादिसप्तगणावाहनम्—ॐ शुक्रज्ज्योतिश्चचित्रज्ज्योतिश्चसत्यज्ज्योतिश्चज्ज्योतिष्माँश्च।। शुक्रश्चऽऋतपाश्चात्यꣳहाः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः दक्षादिसप्तगणानावाहयामि स्थापयामि।

दुर्गावाहनम्—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन।। ससस्त्यश्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

विष्णवावाहनम्—ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्।। समूढमस्यपाꣳसुरेस्वाहा।।

ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

स्वधावाहनम्—ॐ पितृब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःपितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःप्प्रतितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमः।। अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपितरःपितरःशुन्धद्ध्वम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

मृत्युरोगावाहनम्—ॐ परम्मृत्योऽअनुपरेहिपन्थांयस्तेऽअन्यऽइतरोदेवयानात्।। चक्षुष्मतेशृण्वतेतेब्ब्रवीमिमानःप्प्रजाꣳरीरिषोमोतवीरान्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि।

गणपत्यावाहनम्—ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेवसोमम।। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् ।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

अबावाहनम्—**ॐ अप्प्स्वग्ग्नेसधिष्ष्ट्वसौषधीरनुरुध्यसे।। गर्ब्भेसञ्जायसेपुनः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः अद्भ्यो नमः अपामावाहयामि स्थापयामि।

मरुतावाहनम्—**ॐ मरुतोयस्यहिक्षयेपाथादिवोव्विकहसः।। ससुगोपातमोजनः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः मरुद्भ्यो नमः मरुतवाहयामि स्थापयामि।

पृथ्व्यावाहनम्—**ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी।। यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः पृथिव्यै नमः पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।

गङ्गादिनद्यावाहनम्—**ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः।। सरस्वतीतु पञ्चधासोदेशेभवत्सरित्।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः गङ्गादिनदीनावाहयामि स्थापयामि।

सप्तसागरावाहनम्—**ॐ समुद्रोऽसिनभस्वार्द्रदानुः।। शम्भूर्म्मयोभूरभिमाव्वाहिस्वाहा।। मारुतोऽसिमरुतांगणःशम्भूर्म्मयोभूरभिमाव्वाहिस्वाहा।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि।

मेर्वावाहनम्—**ॐ प्रपर्व्वतस्यव्वृषभस्यपृष्ठान्नावश्चरन्तिस्वसिचऽइयानाः।। ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताअहिम्बुध्न्यमनुरीयमाणाः।। व्विष्णोर्व्विक्रमणमसिव्विष्णोर्व्विक्रान्तमसिव्विष्णोःक्क्रान्तमसि।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः मेरवे नमः मेरुमावाहयामि स्थापयामि।

गदावाहनम्—**ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोममआहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः गदायै नमः गदामावाहयामि स्थापयामि।

त्रिशूलावाहनम्—**ॐ त्रिꣳशद्धामव्विराजतिव्वाक्पतङ्गायधीयते।। प्रतिवस्तोरहद्युभिः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः त्रिशूलाय नमः त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि।

वज्रावाहनम्—**ॐ महाँ२।।इन्द्रोवज्रहस्तःषोडशीशर्म्मयच्छतु।। हन्तुपाप्मानंयोऽस्मान्द्वेष्टि।। उपयामगृहीतोऽसिमहेन्द्रायत्त्वैषतेयोनिर्म्महेन्द्रायत्वा।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः वज्राय नमः वज्रमावाहयामि स्थापयामि।

शक्त्यावाहनम्—ॐ व्वसुंचमेव्वसु॒तिश्श्चमेकर्म्मंचमे॒शक्तिश्श्च॒मेऽर्थश्श्चम॒एम॑श्श्चमइ॒त्याचमे॒गतिश्श्चमेय॒ज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः शक्तये नमः शक्तिमावाहयामि स्थापयामि।

दण्डावाहनम्—ॐ इडु॒ऽएह्यदित॒ऽएहि॒काम्म्या॒ऽएत॥ मयिवःकाम॒धरणं भूयात्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः दण्डाय नमः दण्डमावाहयामि स्थापयामि।

खड्गावाहनम्—ॐ ख॒ड्गोवैश्श्वदे॒वःश्श्वाकृ॒ष्णःक॒र्णोगर्द्दभस्त॒रक्षु॒स्तेरक्षसा॒मिन्द्रायसूक॒रःसि॒ꣳहोमारु॒तःकृकला॒सःपिप्प्काश॒कुनि॒स्तेश॒रव्व्या॒यै॒व्विश्श्वेषांदे॒वानांपृष॒तः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः खड्गाय नमः खड्गमावाहयामि स्थापयामि।

पाशावाहनम्—ॐ उदु॒त्तमंव्वरु॒णपाश॑म॒स्म्मदवाध॒मंव्विमध्य॒मꣳश्रथाय अथाव्व॒यमादित्यव्व्र॒तेतवानागसो॒ऽअदितयेस्याम॥

ॐ भूर्भुवःस्वः पाशाय नमः पाशमावाहयामि स्थापयामि।

अङ्कुशावाहनम्—ॐ अꣳ॒शुश्श्च॒मेर॒श्मिम्मश्श्च॒मेऽदाब्भ्यश्श्च॒मेऽधिपतिश्श्चमऽउपा॒ꣳशुश्श्चमेऽन्तर्य्या॒मश्श्चमऽऐन्द्रवाय॒वश्श्चमेमैत्रावरु॒णश्श्चमेऽआश्श्वि॒नश्श्च॒मेप्प्रतिप्प्र॒स्थानश्श्चमेशुक्क्रश्श्चमेम॒न्थी॒चमेय॒ज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः अङ्कुशाय नमः अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि।

गौतमावाहनम्—ॐ आयंगौःपृश्निरक्क्रमी॒दसदन्म्मा॒तरंपु॒रः॥ पि॒तरञ्चप्प्रय॒न्त्स्वः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः गौतमाय नमः गौतममावाहयामि स्थापयामि।

भरद्वाजावाहनम्—ॐ अ॒यंदक्षि॒णाव्वि॒श्श्वकर्म्मा॒तस्य॒मनोव्वैश्श्वकर्म्म॒णंग्ग्री॒ष्मोमान॒सस्त्रि॒ष्टुब्ग्रैष्म्मीत्रि॒ष्टुभः स्वा॒रꣳस्वा॒रादन्तर्य्या॒मो॒ऽन्तर्य्या॒मात्पञ्चद॒शःपञ्चद॒शाद्बृ॒हद्भरद्वाज॒ऽऋषिःप्प्र॒जापतिगृहीतया॒त्त्वया॒मनोगृह्णामिप्र॒जाब्भ्यः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः भरद्वाजाय नमः भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि।

विश्वामित्रावाहनम्—ॐ इ॒दमु॒त्त॒रात्स्व॒स्तस्य॒श्श्रोत्र॒ꣳसौ॒वꣳश॒रच्छ्रौ॒त्र्य॒नु॒ष्टुप्शार॒द्य्यनुष्टुभऽऐडमै॒डान्म॒न्थीम॒न्थिनऽएकवि॒ꣳशऽएकवि॒ꣳशाद्वैरा॒जंव्वि॒श्श्वामित्त्र॒ऽऋषिःप्प्र॒जापतिगृहीतया॒त्त्वया॒श्श्रोत्रंगृह्णामिप्प्र॒जाब्भ्यः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः विश्वामित्राय नमः विश्वमित्रमावाहयामि स्थापयामि।

कश्यपावाहनम्—ॐ त्र्या॒यु॒षंज॒मदग्ग्नेःक॒श्यपस्यत्र्यायु॒षम्॥ यद्दे॒वेषु॒त्र्याय॒ु॒षंतन्नोअस्तु॒त्र्यायु॒षम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः कश्यपाय नमः कश्यपमावाहयामि स्थापयामि।

जमदग्न्यावाहनम्—**ॐ अ॒यंप॒श्चाद्वि॒श्वव्य॑चा॒स्तस्य॒चक्षु॑र्वैश्वव्य॒चसंव॒र्षाश्चाक्षु॒ष्य॒जग॑तीव॒र्षाज॑गत्त्या॒ऽऋक्स॑मृक्स॑माच्छु॒क्रःशु॒क्रात्स॑प्तद॒शःस॑प्तद॒शाद्वैरू॒पंज॒मद॑ग्नि॒र्ऋषि॑ःप्र॒जाप॑तिगृहीतया॒त्त्वया॒चक्षु॑र्गृह्णामिप्र॒जाभ्य॑ः॥**

ॐ भूर्भुवःस्वः जमदग्नये नमः जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि।

वसिष्ठावाहनम्—**ॐ अ॒यंपु॒रोभु॒वस्तस्य॑प्प्राणोभौ॑वनाय॒नोव॑स॒न्तःप्प्राणाय॒नोगा॒य॒त्रीव॑स॒न्तीगा॒य॒त्र्यैगा॒य॒त्रंगा॒य॒त्रादु॑पा॒ꣳशुरु॑पा॒ꣳशोस्त्रि॒वृत्त्रि॒वृतो॑रथान्त॒रंव॑सिष्ठ॒ऽऋषि॑ःप्र॒जाप॑तिगृहीतया॒त्वया॒प्प्रा॒णंगृ॑ह्णामिप्र॒जाभ्य॑ः॥**

ॐ भूर्भुवःस्वः वसिष्ठाय नमः वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि।

अत्र्यावाहनम्—**ॐ अत्र॑पितरोमादयद्ध्वं॑य्यथाभा॒गमावृ॑षायद्ध्वम्॥ अमी॑मदन्तपि॒तरो॑यथाभा॒गउमावृ॑षायिषत॥**

ॐ भूर्भुवःस्वः अत्रये नमः अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।

अरुन्धत्यावाहनम्—**ॐ तंपत्नी॑भि॒रनु॑गच्छेमदे॒वाःपु॒त्रैर्भ्रातृ॑भिरु॒तवा॒हिर॑ण्ण्यैः॥ नाकं॑गृभ्णा॒नाःसु॑कृ॒तस्य॑लो॒केतृ॒तीये॑पृ॒ष्ठेऽअधि॑रोच॒नेदि॒वः॥**

ॐ भूर्भुवःस्वः अरुन्धत्यै नमः अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि।

ऐन्द्र्यावाहनम्—**ॐ अदि॑त्यै॒रास्न्ना॑सीन्द्रा॒ण्ण्याऽउ॒ष्ण्णीष॑ः॥ पूषा॑सिघ॒र्म्माय॑दीष्व॥**

ॐ भूर्भुवःस्वः ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि।

कौमार्यावाहनम्—**ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्च॒न॥ सस॑स्त्यश्व॒कःसुभ॑द्रिकाङ्काम्पील॑वा॒सिनी॑म्॥**

ॐ भूर्भुवःस्वः कौमार्य्यै नमः कौमारीमावाहयामि स्थापयामि।

ब्राह्म्यावाहनम्—**ॐ इन्द्राया॑हिधि॒येषि॒तोव्विप्र॑जूतःसु॒ताव॑तः॥ उप॒ब्ब्रह्मा॑णिवा॒घत॑ः॥**

ॐ भूर्भुवःस्वः ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि।

वाराह्यावाहनम्—**ॐ इन्द्र॑स्यक्क्रो॒डोऽअदि॑त्यैपाज॒स्यं॑दि॒शांज॒त्रवोऽदि॑त्यैभ॒सज्जी॒मूता॑न्हृदयौप॒शेना॒न्तरि॑क्षंपुरी॒तता॒नभ॑ऽउद॒र्य्ये॑णचक्रवा॒कौमत॑स्नाभ्यां॒दिवं॑व॒क्काभ्यां॑गि॒रीन्प्ला॒शिभि॒रुप॑लान्प्ली॒ह्नाव॒ल्मीका॑न्क्लो॒मभि॒र्ग्लौ॑भि॒र्गुल्मा॑न्हि॒राभिः॒स्रव॑न्तीर्ह्र॒दान्कु॑क्षि॒भ्याꣳस॑मु॒द्रमु॒दरे॑णवैश्वान॒रंभस्म॑ना॥**

ॐ भूर्भुवःस्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।

चामुण्डावाहनम्—ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न।। सस॑स्त्यश्व॒कःसुभ॑द्रिकाङ्काम्पीलवा॒सिनी॑म्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः चामुण्डायै नमः चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि।

वैष्णव्यावाहनम्—ॐ आप्या॑यस्व॒समे॑तुतेव्वि॒श्श्वत॑ःसोम॒व्वृष्ण्य॑म्।। भवा॒व्वाज॑स्यसङ्ग॒थे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वैष्णव्यै नमः वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।

माहेश्वर्यावाहनम्—ॐ याते॑रुद्रशि॒वात॒नूरघो॒राऽपा॑पकाशिनी।। तया॑नस्त॒न्वा॒शन्त॑मया॒गिरि॑शन्ता॒भिचा॑कशीहि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।

वैनायक्यावाहनम्—ॐ सम॑क्ख्येदे॒व्याधि॒यासन्दक्षि॑णयो॒रुच॑क्षसा।। माम॒ऽआयु॒ःप्प्रमो॑षी॒म्म्र्मोऽअ॒हंतव॑व्वी॒रंव्वि॑देय॒तव॑देविस॒न्दृशि॑।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वैनायक्यै नमः वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—ॐ मनो॑जू॒तिर्ज्जु॑षता॒माज्ज्य॑स्य॒बृह॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्टंय्य॒ज्ञꣳसमि॒ मन्द॑धातु।। व्विश्श्वे॑दे॒वास॑ऽइहमा॑दयन्ता॒मो३ँम्प्रति॑ष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताः आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः भव।।

ध्यानम्—

भद्रं कल्याणकर्तृत्वं पारिषदं सर्वदेवाः।
मोदनार्थञ्च जीवानां मण्डलं परिकल्पताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रनण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—

विचित्र-रत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
त्रिगुणात्म गृहाणेदं भगवन् भक्तवत्सल!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पाद्योः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—

त्रिगुणात्मन्नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर।
अर्घ्यञ्च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—

त्रिदेवञ्च नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—

मन्दाकिन्यस्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

आचमनम्—

गङ्गोदकस्य यद्वारि सर्वं मलहरं परम्।
तदिदं समर्पितं देव पुनराचमनं शुभम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पञ्चामृतम्—

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकम्—

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेर्याचमनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रोपवस्त्रम्—

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रोपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्—

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण सुरपूजित।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

गन्धम्—

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकाम्—

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वाङ्कुरान्—

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान् अमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण सुरनायक!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि—

नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरम्—

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनमम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य—

धूपम्—

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्—

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनम्—

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलम्—

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलपत्रं एलालवङ्गादिकञ्च समर्पयामि।

ऋतुफलम्—

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणाद्रव्यम्—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनम्—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिः—

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलीं समर्पयामि।

परिक्रमाम्—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

पूजन-समर्पण—**अनया पूजया सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताः प्रीयन्ताम्।**

सर्वतोभद्र मण्डलस्थ देवताओं के आवाहन-स्थापन के पश्चात् सर्वप्रथम मण्डल के मध्य में रोली से अष्टदल निर्मित कर उसके ऊपर प्रधान कलश श्रीत्रिगुणात्मिका देवी चण्डिका के लिए स्थापित करे। स्थापित कर पूजन करने के बाद उस पर

सुवर्ण-निर्मित श्रीदुर्गा देवी की मूर्ति अग्नि में तपा कर घृतलेपन के पश्चात् जलधारा के द्वारा शुद्धि हेतु अभिषेक करे।

सर्वतोभद्रपूजनं परिपूर्णम्

प्रधानकलशस्थापनम्

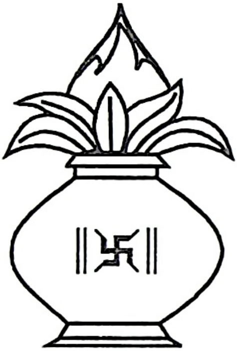

भूमि-स्पर्श—**ॐ महीद्यौःपृथिवीचनऽइमंय्यज्ञंमिमिक्षताम्।। पिपृतान्नोभरीमभिः।।**

सप्तधान्य विखेरना—**ॐ ओषधयःसमवदन्तसोमेनसहराज्ञा।। यस्मैकृणोतिब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि।।**

कलश स्थापन—**ॐ आजिघ्रकलशंमह्यात्वाविशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जानिवर्तस्वसानःसहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविवर्तस्वसानःसहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्रयिः।।**

कलश में जल भरना—**ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थोव्वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।।**

कलश में गन्ध डालना—**ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।। त्वामौषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।**

कलश में सर्वौषधी डालना—**ॐ याओषधीःपूर्व्वाजातादेवेब्भ्यस्त्रियुगंपुरा।। मनैनुबब्भ्रुणामहꣳशतंधामानि सप्तच।।**

कलश में दूर्वा डालना—**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषस्प्परि।। एवानोदूर्व्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च।।**

कलश में पञ्चपल्लव डालना—**ॐ अश्वत्त्थेवोनिषदनंपर्ण्णेवोवसतिष्कृता।। गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथ पूरुषम्।।**

कलश में कुश डालना—**ॐ पवित्रेस्त्थोवैष्ष्णव्यौसवितुर्व्वः प्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्रेणपवित्रेणसूर्य्यस्यरश्मिभिः।। तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।**

कलश में सप्तमृत्तिका डालना—**ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी।। यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः।।**

कलश में पूंगीफल डालना—**ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्पायाश्च्चपुष्प्पिणीः।। बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चत्वꣳहसः।।**

कलश में पञ्चरत्न डालना—**ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।। दधद्रत्नानिदाशुषे।।**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डालना—**ॐ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्।। सदाधारपृथिवीन्द्यामुतेम्मांकस्मैदेवायहविषाविधेम।।**

युग्म वस्त्र—**ॐ सुजातोज्ज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः।। वासोऽअग्ने विश्श्वरूपꣳसंव्ययस्वविभावसो।।**

पूर्ण पात्र—**ॐ पूर्ण्णादर्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत।। वस्नेवविक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳशतक्रतो।।**

नारिकेल फल—**ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्पायाश्च्चपुष्प्पिणीः।। बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चत्वꣳहसः।।**

वरुण ध्यान आवाहन पञ्चोपचार पूजन—**ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः।। अहेडमानो वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुः प्प्रमोषीः।।**

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं शक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि। ॐ अपांपते वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहन—

कलाकला हि देवानां दानवानां कला कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते।।१।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रिताः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।२।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती।।३।।

कावेरी कृष्ण वेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।।४।।
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै।।५।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।६।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।।७।।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।८।।

प्रतिष्ठा तथा षोडशोपचार पूजन—**ॐ मनो॑जू॒तिर्ज्जु॑षता॒माज्ज्य॑स्य॒बृह॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्ट्टंय्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्द॑धातु।। विश्श्वे॑दे॒वास॑ऽइ॒हमा॑दयन्ता॒मो३म्प्रति॑ष्ठ।।**

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु। ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। विष्णवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः।

पूर्ववत् षोडशोपचार पूजन कर हाथ में जल लेकर समर्पण करे—**ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।।**

कलश-प्रार्थना—

ॐ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।१।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।२।।
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।३।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव।।४।।
सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयं वरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा।।५।।
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।६।।

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्म समाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव।।७।।

कलश-स्थापना के बाद सर्वतोभद्रमण्डल पर रोली-निर्मित अष्टदल पर पीठ-देवताओं की स्थापना करे।

पीठस्थ देवताओं की स्थापना—

१. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे पूर्णपीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि। मध्य में।

२. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे कामपीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि। मध्य में।

३. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे उड्डीयानपीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि। उत्तर में।

४. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे कामरूपपीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि। ईशान कोण में।

५. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे पूर्वपीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि। पूर्व में।

६. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे मातृपीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि। अग्निकोण में।

७. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे जालन्धरपीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि। दक्षिण में।

८. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे कोल्हापुरपीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि। नैर्ऋत्य कोण में।

९. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे पूर्णगिरिपीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि। पश्चिम में।

१०. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे सौंहारोपपीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि। वायव्य कोण में।

११. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे कोल्हागिरिपीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि। उत्तर में।

कलश के दक्षिण में गुरुओं का आवाहन-स्थापन करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे गुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे परमगुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे परमेष्ठिगुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे परात्परगुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे उपमन्युनारदसनकव्यासादिभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि।

कलश के बाँयें गणपत्यादि का आवाहन-स्थापन करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे गणपतये नमः आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे दुर्गायै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे सरस्वत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे क्षेत्रपालाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

पीठ के मध्य में—

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे मण्डूकाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे आधारशक्त्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे मूलप्रकृत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे कालाग्निरुद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे आदिकूर्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अनन्ताय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे आदिवराहाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे पृथिव्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अमृतार्णवाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे रत्नद्वीपाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

११.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे हेमगिरये नमः आवाहयामि स्थापयामि।

१२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नन्दनोद्यानाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

१३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे कल्पवृक्षाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

१४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे मणिभूतलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

१५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे दिव्यमण्डपाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

१६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे स्वर्णवेदिकायै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

१७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे रत्नसिंहासनाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

१८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे धर्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

१९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्ञानाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

२०. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वैराज्ञाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

२१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ऐश्वर्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि

२२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अनैश्वर्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

२३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे सत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

२४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे प्रबोधात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि।

२५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे रजसे नमः आवाहयामि स्थापयामि।

२६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे प्रकृत्यात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि।

२७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे तमसे नमः आवाहयामि स्थापयामि।

२८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे मोहात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि।

२९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे सोममण्डलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

३०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे सूर्यमण्डलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

३१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वह्निमण्डलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

३२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे मायातत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

३३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे विद्यातत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

३४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे शिवतत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

३५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ब्रह्मणे नमः आवाहयामि स्थापयामि।

३६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे विष्णवे नमः आवाहयामि स्थापयामि।

३७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे महेश्वराय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

३८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे आत्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि।

३९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अन्तरात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि।

४०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे परमात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि।

४१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे जीवात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि।

४२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्ञानात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि।

४३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे कन्दाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

४४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नीलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

४५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे पद्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

४६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे महापद्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

४७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे रत्नेभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि।

४८.ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे केशरभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि।

४९.ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे कर्णिकायै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

कर्णिका में शक्तियों की स्थापना करे—

१.ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नन्दायै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

२.ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भगवत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

३.ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे रक्तदन्तिकायै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

४.ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे शाकम्भर्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

५.ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे दुर्गायै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

६.ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भीमायै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

७. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे कालिकायै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

८.ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे शिवदूत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

९.ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे शक्तिसहितपीठस्थदेवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पीठस्थ देवताओं की स्थापना के बाद यन्त्र में यन्त्रस्थ देवताओं का आवाहन करे।

पीठस्थदेवतानां स्थापनं परिपूर्णम्

●

यन्त्रस्थ देवताओं का आवाहन-स्थापन

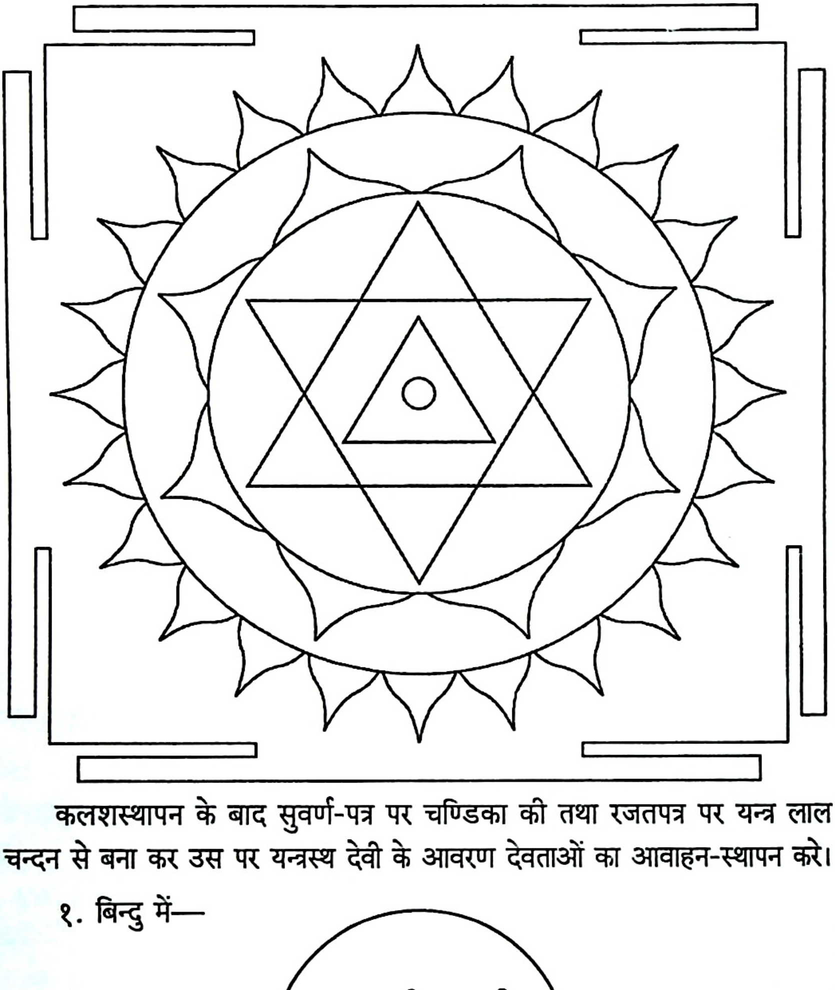

कलशस्थापन के बाद सुवर्ण-पत्र पर चण्डिका की तथा रजतपत्र पर यन्त्र लाल चन्दन से बना कर उस पर यन्त्रस्थ देवी के आवरण देवताओं का आवाहन-स्थापन करे।

१. बिन्दु में—

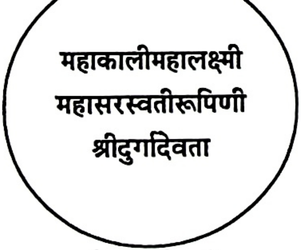
महाकालीमहालक्ष्मी
महासरस्वतीरूपिणी
श्रीदुर्गादेवता

१. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै श्रीदुर्गादेवतायै नमः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिणीं दुर्गादेवतां आवाहयामि स्थापयामि।

२. बिन्दु के उत्तर—

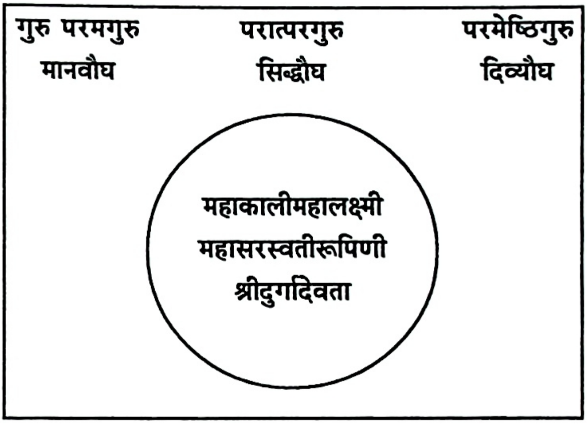
गुरु परमगुरु
मानवौघ
परात्परगुरु
सिद्धौघ
परमेष्ठिगुरु
दिव्यौघ
महाकालीमहालक्ष्मी
महासरस्वतीरूपिणी
श्रीदुर्गादेवता

१. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे गुरवे नमः गुरुशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

२. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे परमगुरवे नमः परमगुरुशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

३. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे परात्परगुरवे नमः परात्परगुरुशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

४. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे परमेष्ठिगुरवे नमः परमेष्ठिगुरुशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

५. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे मानवौघसिद्धौघदिव्यौघगुरुपंक्तये नमः गुरुपंक्तिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

३. त्रिकोण में—

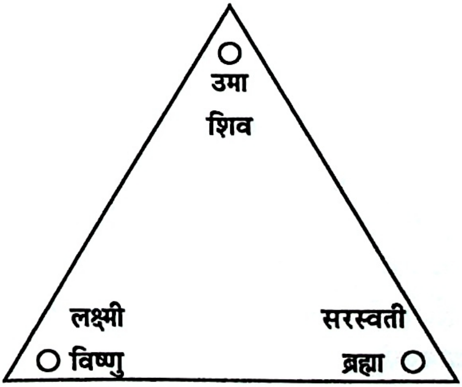
उमा
शिव
लक्ष्मी
विष्णु
सरस्वती
ब्रह्मा

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे स्वरया सह विधात्रे नमः विधात्रीशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रिया सह विष्णवे नमः विष्णुशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे उमया सह शिवाय नमः शिवशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे हुँ सिंहाय नमः सिंहशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे हुँ महिषाय नमः महिषशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

४. षट्कोण में—

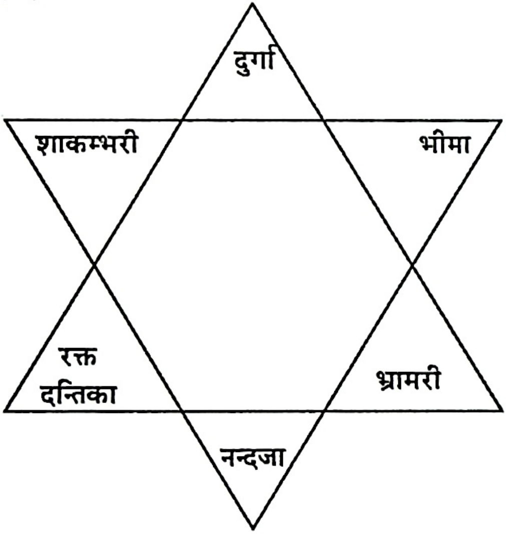

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नन्दजायै नमः नन्दजाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे रक्तदन्तिकायै नमः रक्तदन्तिकाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे शाकम्भर्यै नमः शाकम्भरीशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे दुर्गायै नमः दुर्गाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे भीमायै नमः भीमाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे भ्रामर्यै नमः भ्रामरीशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

५. अष्टपत्रों में—

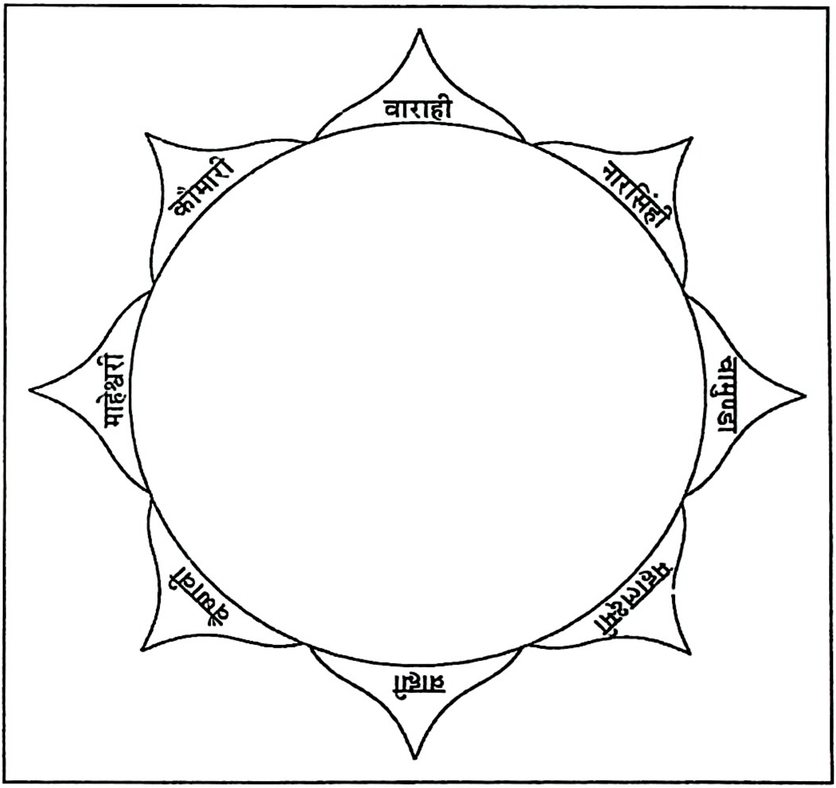

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ब्राह्म्यम्बायै नमः श्रीब्राह्म्यम्बाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वैष्णव्यम्बायै नमः श्रीवैष्णव्यम्बाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे माहेश्वर्यम्बायै नमः श्रीमाहेश्वर्यम्बाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे कौमार्यम्बायै नमः श्रीकौमार्यम्बाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ऐन्द्र्यम्बायै नमः श्रीऐन्द्र्यम्बाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वाराह्यम्बायै नमः श्रीवाराह्यम्बाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नारसिंह्यम्बायै नमः श्रीनारसिंह्यम्बाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे चामुण्डाऽम्बायै नमः श्रीचामुण्डाऽम्बाशक्ति श्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

६. चतुर्विंशति पत्रों में—

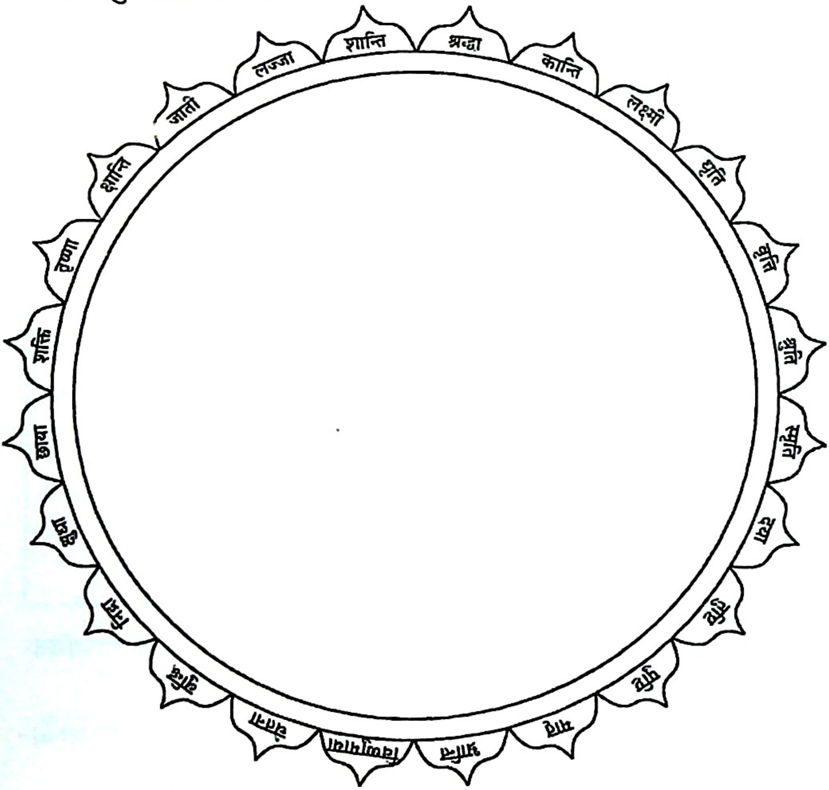
विष्णुमाया
चेतना
बुद्धि
निद्रा
क्षुधा
छाया
शक्ति
तृष्णा
क्षान्ति
जाती
लज्जा
शान्ति
श्रद्धा
कान्ति
लक्ष्मी
धृति
वृत्ति
श्रुति
स्मृति
दया
तुष्टि
पुष्टि
मातृ
भ्रान्ति

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे विष्णुमायायै नमः विष्णुमायाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे चेतनायै नमः चेतनाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे बुद्ध्यै नमः बुद्धिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे निद्रायै नमः निद्राशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे क्षुधायै नमः क्षुधाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे छायायै नमः छायाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे शक्त्यै नमः शक्तिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे तृष्णायै नमः तृष्णाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे क्षान्त्यै नमः क्षान्तिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे जात्यै नमः जातिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

११.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे लज्जायै नमः लज्जाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

१२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे शान्त्यै नमः शान्तिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

१३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रद्धायै नमः श्रद्धाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

१४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे कान्त्यै नमः कान्तिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

१५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

१६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे धृत्यै नमः धृतिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

१७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वृत्त्यै नमः वृत्तिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

१८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रुत्यै नमः श्रुतिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

१९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे स्मृत्यै नमः स्मृतिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

२०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे दयायै नमः दया शक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

२१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे तुष्ट्यै नमः तुष्टिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

२२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे पुष्ट्यै नमः पुष्टिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

२३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे मातृभ्यो नमः मातृशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

२४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे भ्रान्त्यै नमः भ्रान्तिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

७. भूपुर के चारो कोणों में—

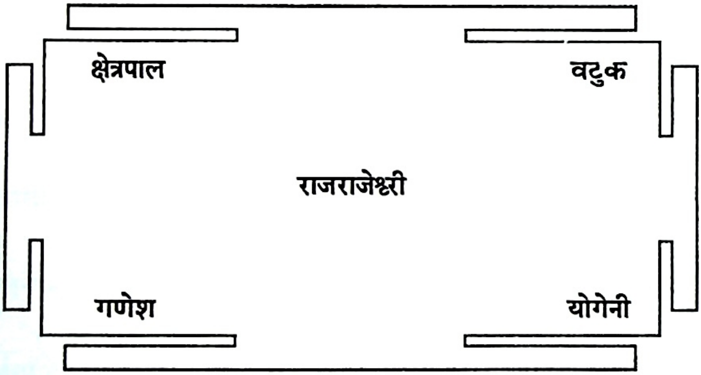

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वँ वटुकाय नमः श्रीवटुकशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे याँ योगिनीभ्यो नमः श्रीयोगिनीशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे गँ गणपतये नमः श्रीगणपतिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे क्षँ क्षेत्रपालाय नमः श्रीक्षेत्रपालशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

८. भूपुर के दशो दिशाओं में—

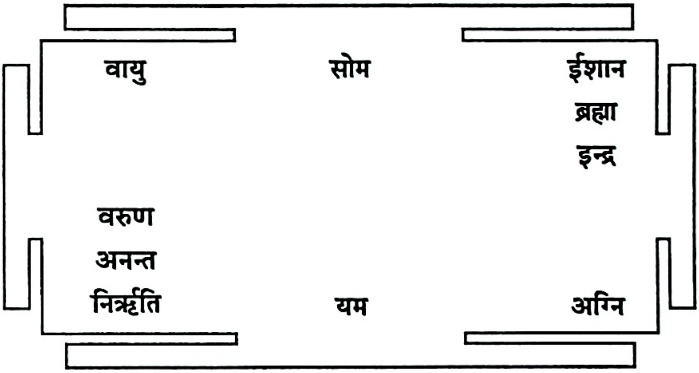

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे इन्द्राय नमः श्रीइन्द्रशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अग्नये नमः श्रीअग्निशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे यमाय नमः श्रीयमशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे निर्ऋतये नमः श्रीनिर्ऋतिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वरुणाय नमः श्रीवरुणशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वायवे नमः श्रीवायुशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे सोमाय नमः श्रीसोमशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ईशानाय नमः श्रीईशानशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ब्रह्मणे नमः श्रीब्रह्माशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अनन्ताय नमः श्रीअनन्तशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

९. भूपुर के दशो दिशाओं में—

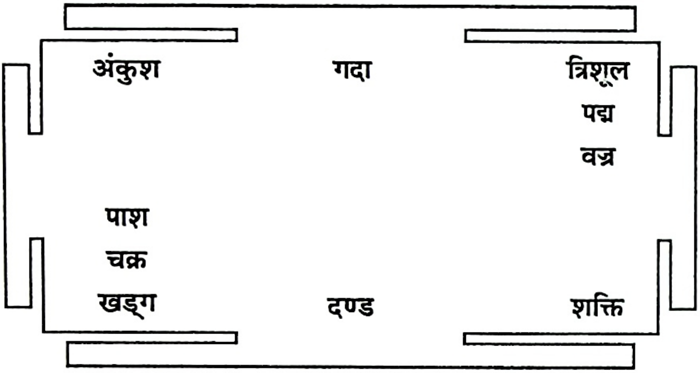

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वज्राय नमः श्रीवज्रशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे शक्तये नमः श्रीशक्तिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे दण्डाय नमः श्रीदण्डशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे खड्गाय नमः श्रीखड्गशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे पाशाय नमः श्रीपाशशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अङ्कुशाय नमः श्रीअङ्कुशशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे गदायै नमः श्रीगदाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे त्रिशूलाय नमः श्रीत्रिशूलशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे पद्माय नमः श्रीपद्मशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे चक्राय नमः श्रीचक्रशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

१०. भूपुर के दशो दिशाओं में—

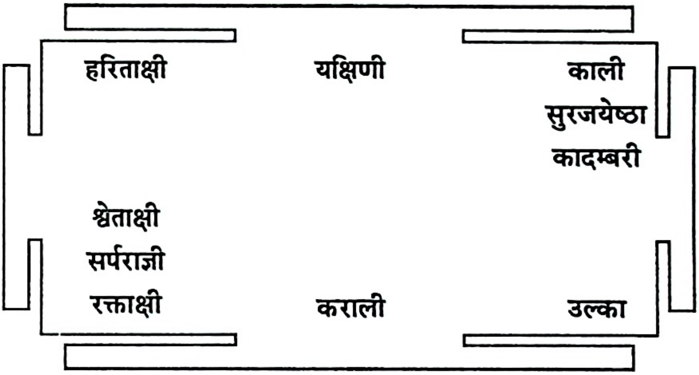

१.वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरीदेव्यै नमः शक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

२.शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै नमः शक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

३.दण्डहस्तायै महिषारूढायै करालीदेव्यै नमः शक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

४.खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै नमः शक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

५.पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै नमः शक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

६.अङ्कुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै नमः शक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

७.गदाहस्तायै सिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै नमः शक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

८.शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै नमः शक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

९.पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै नमः शक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

१०.चक्रहस्तायै शार्पवाहनायै सार्पराज्ञीदेव्यै नमः शक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे यन्त्रस्थसमस्तदेवताभ्यो नमः यन्त्रस्थसमस्तशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

यन्त्रस्थ देवताओं का आवाहन करने के बाद सुवर्णपत्र पर श्रीदेवी की प्रतिष्ठा करे।

अग्न्युत्तारण-विधिः

देवी की सुवर्णमूर्ति को अग्नि में तपा कर उस पर घृतलेपन कर किसी पात्र में पान के पत्ते पर रख कर जल-धारा गिरायें।

ॐ समुद्रस्यत्त्वावकयाग्ग्नेपरिव्ययामसि।। पावकोऽअस्म्मब्भ्यꣳशिवोभव।। ॐ हिमस्यत्वाजरायुणाग्ग्नेपरिव्ययामसि।। पावकोअस्म्मब्भ्यꣳशिवोभव।। ॐ उपज्ज्मनुपवेतसेऽवतरनदीष्ष्वा।। अग्ग्नेपित्तमपामसिमण्ण्डूकितामिरागहिसेमंनोयज्ञं पावकवर्ण्णꣳशिवंकृधि।। ॐ अपामिदंन्ययनꣳसमुद्रस्यनिवेशनम्।। अन्न्याँस्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्म्मब्भ्यꣳशिवोभव।। ॐ अग्ग्नेपावकरोचिषामन्द्रया देवजिह्व्वया।। आदेवान्न्वक्षियक्षिच।। ॐ सनः पावकदीदिवोऽग्ग्नेदेवाँ२।।ऽइहावह।। उपयज्ञꣳहविश्श्चनः।। ॐ पावकयायश्श्चितयन्त्याकृपाक्षामन्नुरुचऽउषसोन भानुना। तूर्व्वन्नयामन्नेतशस्यनूरणऽआयोघृणेनततृषाणोऽअजरः।। ॐ नमस्तेहरसे शोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्च्चिषे।। अन्न्याँस्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्म्मब्भ्यꣳशिवोभव।। ॐ नृषदेव्वेडप्सुषदेव्वेड्बर्हिषदेव्वेड्वनसदेव्वेट्स्वर्व्विदेव्वेट्।। ॐ येदेवा देवानांय्यज्ञियाय्यज्ञियानाꣳसंव्वत्सरीणामुपभागमासते।। अहुतादोहविषोयज्ञेऽअस्म्मिन्नत्स्वयंपिबन्तुमधुनोघृतस्य।। ॐ येदेवादेवेष्वधिदेवत्वमायन्न्येब्रह्मणःपुरऽएतारोऽअस्य।। येब्भ्योनऋतेपवतेधामकिञ्चनन्नतेदिवोनऽपृथिव्याऽअधिस्नुषु।। ॐ प्राणदाऽअपानदाव्व्यानदाव्वर्च्चोदाव्वरिवोदाः।। अन्न्याँस्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्म्मब्भ्यꣳशिवोभव।।

अग्न्युत्तारण के पश्चात् बीजमन्त्र से प्राणप्रतिष्ठा करे—

ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंसः अस्यां सुवर्णप्रतिमायां श्रीदुर्गादेवताया प्राणाः इह प्राणाः।।

ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंसः अस्यां सुवर्णप्रतिमायां श्रीदुर्गादेवताया जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंसः अस्यां सुवर्णप्रतिमायां श्रीदुर्गादेवताया सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।

ॐ मनो॑जूति॒र्ज्जुषता॒माज्ज्य॑स्य॒बृह॒स्स्पति॒र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्ट्टं॒य्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्द॑धातु॥ विश्श्वे॑दे॒वास॑ऽइ॒हमा॑दयन्ता॒मो३म्प्रति॑ष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीदुर्गादेवतायै नमः श्रीदुर्गादेवता आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः स्थापिताः भव।

१. श्रीदेवी ध्यानम्—

खड्गञ्चक्रगदेषु चापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम्,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥१॥
अक्षस्रक्परशुङ्गदेषु कुलिशं पद्मं धनुःकुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥२॥
घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकम्,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा,
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम्॥३॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः ध्यायामि ध्यानोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ध्यान करके यन्त्र पर पुष्प चढ़ाये।

२. आसनम्—

ॐ सर्वान्तर्यामिन्यै देवि! सर्वबीजमये शुभे।
स्वात्मस्थायै परं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहम्॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः आसनं समर्पयामि, आसनार्थे पुष्पं निवेदयामि। पद्म मुद्रा के द्वारा पुष्प समर्पित करे।

३. स्थापनम्—

ॐ देवि! त्वं भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते।
यावत्त्वामहं पूजयामि तावत्त्वां सुस्थिरा भव॥

तावयं महिमामूर्तिस्तस्यां त्वां सर्वगां प्रभो।
भक्तिस्नेहसमाकृष्टा दीपवत् स्थापयाम्यहम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः स्थापनं समर्पयामि स्थापनार्थे अक्षतान् निवेदयामि। स्थापनी मुद्रा के द्वारा पुष्प समर्पित करे।

४. सन्निधापनम्—

ॐ अनन्याशक्तिदेवेशी मूर्तिशक्तिरियं प्रभो।
सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वां भक्तानुग्रहतत्परे।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः इह सन्निधेहि सन्निधानार्थे अक्षतान् निवेदयामि। सन्निधापन मुद्रा के द्वारा पुष्प समर्पित करे।

५. सन्निरोधनम्—

ॐ आज्ञया तव देवेशि! कृपाम्भोधे गुणाम्बुधः।
आत्मना चैकदृप्तां त्वां संरुणद्धि महेश्वरि।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः इह सन्निरुध्यस्व सन्निरोधनार्थे अक्षतान् निवेदयामि। सन्निरोधन मुद्रा से अक्षत समर्पित करे।

६. सम्मुखीकरणम्—

ॐ आज्ञाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यासाधकस्य च।
मम ऊनं भवेत् कृत्यं तदाप्याभिमुखी भव।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः सम्मुखीभव साम्मुख्यार्थे अक्षतान् निवेदयामि। सम्मुखीकरण मुद्रा से अक्षत समर्पित करे।

७. अवगुंठनम्—

ॐ कल्याणकारिणी देवी सर्वजीवनदायिनी।
अवगुंठनं पूजार्थं सुहृदया सदा प्रिया।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः इह अवगुंठयामि अवगुंठनार्थे अक्षतान् निवेदयामि। भ्रामित मुद्रा के द्वारा अक्षत समर्पित करे।

८. सकलीकरणम्—

ॐ दशापीयूषवर्षिण्या पूरयेद्यज्ञविष्टरम्।
मूर्तौदा यज्ञसम्पूर्तौ स्थिरा भव महेश्वरि।।

श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै दुर्गादेव्यै नमः सकलीकरणार्थे अक्षतान् निवेदयामि। षडङ्गन्यासात्मक सकलीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे।

ॐ ऐँ हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा।
ॐ क्लीँ शिखायै वषट्।
ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्।
ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

९. अमृतीकरणम्—

ॐ स्वभक्तवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणार्पिते।
स्वतेजःपुञ्जरेणाशु वेष्टिता भव सर्वतः॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः अमृतीकरणं समर्पयामि अमृतीकरणार्थे अक्षतान् निवेदयामि। धेनुमुद्रा से अमृतीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे।

१०. परमीकरणम्—

ॐ समुद्भूतं सुसौन्दर्यं सौन्दर्यारुणविग्रहम्।
दिव्यतेजस्सुसम्पन्ना शक्त्यक्षरात्मरूपिणी॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः परमीकरणं समर्पयामि परमीकरणार्थे अक्षतान् निवेदयामि। महामुद्रा से परमीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे।

११. स्वागतम्—

ॐ यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये।
तस्यै ते परमेशानि आगतं स्वागतं तथा॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः स्वागतं समर्पयामि स्वागतार्थे अक्षतान् निवेदयामि। स्वागत मुद्रा के द्वारा स्वागत के लिए अक्षत निवेदन करे।

१२. सुस्वागतम्—

ॐ कृतार्थोऽनुगृहीतोऽस्मि सफलं जीवनञ्च मे।
आगता भव देवेशि सुस्वागतमिदं पुनः॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः सुस्वागतं समर्पयामि सुस्वागतार्थे अक्षतान् निवेदयामि। सुस्वागत मुद्रा के द्वारा सुस्वागत के लिए अक्षत निवेदन करे।

१३. अष्टादशमुद्रा-प्रदर्शनम्—

अक्षमालामुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

अङ्गुष्ठं तर्जन्यग्रेषु ग्रथयित्वाङ्गुलित्रयम्।
प्रसारयेदक्षमाला मुद्रेयं परिकीर्तिता।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः अक्षमालामुद्रां प्रदर्शयामि। अक्षमाला मुद्रा प्रदर्शित करे।

परशुमुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

करे करे तु करयोस्तिर्यक्संयोज्य चाङ्गुलीः।
संहताः प्रसृताः कुर्यान्मुद्रेयं परशोर्मता।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः परशुमुद्रां प्रदर्शयामि। परशुमुद्रा प्रदर्शित करे।

गदामुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

वाममुष्ट्यन्तरेऽङ्गुष्ठे दक्षिणे सरलाङ्गुलीः।
वामाङ्गुष्ठः स्पृशेदग्रे योजितः सरलोदरः।।
अन्योन्याभिमुखौ हस्तौ कृत्वा तु ग्रथिताङ्गुली।
अङ्गुल्यौ मध्यमे भूयः सुलग्ने सुप्रसारिते।।
गदामुद्रेयमुदिता देव्याः सन्तोषवर्द्धिनी।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः गदामुद्रां प्रदर्शयामि। गदामुद्रा प्रदर्शित करे।

वाणमुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

यथा हस्तगताः बाणस्तथा हस्तं कुरु प्रिये।
बाणमुद्रेयमाख्याता रिपुवर्गनिकृन्तनी।।
दक्षमुष्टस्तु तर्जन्या दीर्घया बाणमुद्रिका।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः वाणमुद्रां प्रदर्शयामि। वाणमुद्रा प्रदर्शित करे।

वज्रमुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

दक्षिणहस्तं मुष्टिं बद्ध्वा क्षेपणाकारं कुर्यात्।
वज्रमुद्रा समाख्याता देवानां मोदकारिणी।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः वज्रमुद्रां प्रदर्शयामि। वज्रमुद्रा प्रदर्शित करे।

पद्ममुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

करौ तु सम्मुखीकृत्य संहतावुन्नताङ्गुली।
तलान्तमिलिताङ्गुष्ठौ कुर्यादेषाब्जमुद्रिका।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः पद्ममुद्रां प्रदर्शयामि। पद्ममुद्रा प्रदर्शित करे।

धेनुमुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

वामस्य मध्यमाग्रन्तु तर्जन्यग्रेण योजयेत्।
अनामिका कनिष्ठाञ्च तस्याङ्गुष्ठेन पीडयेत्।।
दर्शयेद्वामके स्कन्धे धेनुमुद्रेयमीरिता।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः धेनुमुद्रां प्रदर्शयामि। धेनुमुद्रा प्रदर्शित करे।

कुण्डिकामुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

करद्वयं यदा शुभ्रं कुण्डाकारं भवेत्तदा।
कुण्डकेति महामुद्रा कथिता पूर्वसूरिभिः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः कुण्डिकामुद्रां प्रदर्शयामि। कुण्डिकामुद्रा प्रदर्शित करे।

दण्डमुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

मुष्टिं कुर्यात्तु दक्षस्य (हस्तस्य) दर्शयेद्दण्डमुद्रिका।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः दण्डमुद्रां प्रदर्शयामि। दण्डमुद्रा प्रदर्शित करे।

शक्तिमुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

मुष्टिं कृत्वा कराभ्यां च वामस्योपरि दक्षिणःम्।
कृत्वा शिरसि संयोज्या शक्तिमुद्रेयमिरिता।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः शक्तिमुद्रां प्रदर्शयामि। शक्तिमुद्रा प्रदर्शित करे।

खड्गमुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

कनिष्ठेऽनामिके बद्ध्वा स्वाङ्गुष्ठेनैव दक्षतः।
शिलष्टाङ्गुगुली तु प्रसृत्ये संदृष्टे खड्गमुद्रिका।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः खड्गमुद्रां प्रदर्शयामि। खड्गमुद्रा प्रदर्शित करे।

चर्ममुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

वामहस्तं यथा तिर्यक् कृत्वा चैव प्रसार्य च।
आकुञ्चिताङ्गुलीः कुर्याच्चर्म मुद्रेयमीरिता।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः चर्ममुद्रां प्रदर्शयामि। चर्ममुद्रा प्रदर्शित करे।

शंखमुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

वामागुष्ठन्तु संगृह्य दक्षिणेन तु मुष्ठिना।
कृत्वोत्तानं ततो मुष्टिमङ्गुष्ठन्तु प्रसारयेत्।।
वामाङ्गुल्यस्तया श्लिष्टाः संयुक्ताः स्युः प्रसारिता।
दक्षिणाङ्गुष्ठसंस्पृष्टा ज्ञेयैषा शङ्खमुद्रिका।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः शंखमुद्रां प्रदर्शयामि। शङ्खमुद्रा प्रदर्शित करे।

घण्टामुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

वाममुष्टिभ्रमेणैव घण्टामुद्रा प्रजायते।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः घण्टामुद्रां प्रदर्शयामि। घण्टामुद्रा प्रदर्शित करे।

कुम्भमुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

मुष्ट्योरूर्ध्वी कृताङ्गुष्ठे तर्जन्यग्रेषु विन्यसेत्।
सर्वरक्षाकरी ह्येषा कुम्भमुद्रा प्रकीर्तिता।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः कुम्भमुद्रां प्रदर्शयामि। कुम्भमुद्रा प्रदर्शित करे।

शूलमुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

अङ्गुष्ठेन कनिष्ठान्तु बद्ध्वा श्लिष्टांगुलित्रयम्।
प्रसारयेत्त्रिशूलाख्या मुद्रैषा परिकीर्तिता।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः शूलमुद्रां प्रदर्शयामि। शूलमुद्रा प्रदर्शित करे।

पाशमुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

वाममुष्टिस्थतर्जन्या दक्षमुष्टिस्थतर्जनीम्।
संयोज्याङ्गुष्ठकाग्राभ्यां तर्जन्यग्रे स्वके क्षिपेत्।।

एषा वा पाशमुद्रेति विद्वद्भिः परिकीर्तिता।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः पाशमुद्रां प्रदर्शयामि। पाशमुद्रा प्रदर्शित करे।

चक्रमुद्रालक्षणंप्रदर्शनम्—

हस्तौ तु संमुखौ कृत्वा सुलग्नौ सुप्रसारितौ।
कनिष्ठाङ्गुष्ठकौ लग्नौ मुद्रेषा चक्रसंज्ञिता।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः चक्रमुद्रां प्रदर्शयामि। चक्रमुद्रा प्रदर्शित करें।

क्रमशः समस्त मुद्राओं को दिखाकर दुर्गागायत्री का जप करे।

१४. श्रीचण्डिका गायत्री—**ॐ कात्यायन्यै विद्महे कन्याकुमारी च धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।।** १०८ बार जप करे।

१५. अङ्गपुष्पाञ्जली—

ॐ नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वरि।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः पादयोः पुष्पाञ्जलीं समर्पयामि। दोनों पैरों पर पुष्पाञ्जली प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः जान्वोः पुष्पाञ्जलीं समर्पयामि। दोनों जानुओं पर पुष्पाञ्जली प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः नाभ्यां पुष्पाञ्जलीं समर्पयामि। नाभि पर पुष्पाञ्जली प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः हृदये पुष्पाञ्जली समर्पयामि। हृदय पर पुष्पाञ्जली प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः मस्तके पुष्पाञ्जलीं समर्पयामि। मस्तक पर पुष्पाञ्जली प्रदान करे।

१६. पाद्यम्—

ॐ यद्भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्दसम्भवः।
तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

गन्ध, उसीर, गोरोचन, श्यामक, विष्णुकान्ता, कमल एवं दूर्वायुक्त जल अनामिका-अङ्गुष्ठ मिलाकर यन्त्रस्थित भगवती के युगल चरणों मे समर्पित करे।

१७. अर्घ्यम्—

ॐ निधीनां सर्वदेवानां त्वमनर्घ्यगुणा ह्यसि।
शवोपरि स्थिते देवी! गृहाणाऽर्घ्यं नमोऽस्तु ते॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। हाथ में अर्घ्य प्रदान करे।

१८. आचमनम्—

ॐ वेदानामपि वेदाय देवानां देवतात्मने।
आचमनं कल्पयामीशि शुद्धानां शुद्धिहेतवे॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

हीनोन्नत समस्ताङ्गुलियों से आचमन मुद्रा के द्वारा चन्दन, पुष्प, जाती, कर्पूर, कंकोल, लवङ्गचूर्ण जल में मिलाकर मुख में आचमन निवेदन करे।

१९. मधुपर्कम्—

ॐ सर्वकालुष्यहीनायै परिपूर्णसुखात्मने।
मधुपर्कमिदं देवि! कल्पयामि प्रसीद मे॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः मुखे मधुपर्कं समर्पयामि।

मधु, घृत, शर्करायुक्त मधुकर्प को मुख में अधोमुख अनामिका, मध्यमा तथा अङ्गुष्ठ से निवेदन करे।

२०. स्नानीय-जलम्—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि। स्नानीय जल समर्पित करे।

२१. स्नानाङ्गाचमनीयजलम्—

ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वाऽपि यस्या स्मरणमात्रतः।
शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः स्नानाङ्गाचमनीयं जलं समर्पयामि। आचमनीय प्रदान करे।

२२. पुनरर्घ्यम्—

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः पुनरिदमर्घ्यं समर्पयामि।

जल, कुश, अक्षत, तिल, व्रीहि, यवाज्य, पुष्प मिश्रितअर्घ्य शिर पर सर्वाङ्गुलि से निवेदन करे।

२३. उद्वर्तनम्—

ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकमातर्महाशये।
सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ददामि स्नेहमुत्तमम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः उद्वर्तनं समर्पयामि।

हरिद्रादि-द्रव्य-तैल-चन्दन-संयुक्त उद्ववर्तन अधोमुखाङ्गुलि से निवेदित करे।

२४. शुद्धस्नानीय जलम्—

ॐ परमानन्द बोधाविध निमग्न निजमूर्तये।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमिश्वरि।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः शुद्धस्नानीयमिदं जलं समर्पयामि। स्नानीय मुद्रा से स्नानोदक प्रदान करे।

२५. वस्त्रम्—

ॐ मया चित्रपदच्छन्नं निजगुह्योरुतेजसे।
निवारणाय अविज्ञान वासस्ते कल्पयाम्यहम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः इदं वासः समर्पयामि। वासमुद्रा से प्रदान करे।

२६. यज्ञोपवीतम्—

ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण त्रिगुणेश्वरि।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-

स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः इदं यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीत समर्पित करे।

२७. उत्तरीयम्—

ॐ यामाश्रित्य महादेवो जगत्संहारकः सदा।
तस्यै ते परमेशान्यै कल्पयाम्युत्तरीयकम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः इदं वासः समर्पयामि। उत्तरीय समर्पित करे।

२८. पुष्पसारम्—

ॐ जननीचम्पकतैलमिदं पुरोमृगमदोऽयमयं पटवासकः।
सुरभिगन्धमिदं च चतुःसमं सपदिसर्वमिदं परिगृह्यताम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः इदं पुष्पसारं समर्पयामि। इत्र समर्पित करे।

२९. आभूषणम्—

ॐ स्वभावसुन्दराङ्गयै नानाशक्याश्रिते शिवे।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः इदं आभूषणं समर्पयामि। आभूषण समर्पित करे।

३०. मातृका-विन्यासम्—

ॐ भावमन्त्रार्थसंयुक्तं वर्णस्वरसमन्वितम्।
मातृकारूपिणि देवि! विन्यासं परिकल्पितम्।।
सर्वलिपिसमायुक्तामभिनवरूपधारिणीम्।
अज्ञानान्धकारनाशाय विन्यासं परिकल्पितम्।।

समस्त मातृका वर्णो से मूल मन्त्र को सम्पुटित करके इष्ट देवता के तत्तदङ्गों में न्यास करे—

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीदुर्गादेव्यै नमः शिरसे विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ

अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीदुर्गादेव्यै नमः मुखे विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीदुर्गादेव्यै नमः कण्ठे विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीदुर्गादेव्यै नमः हृदये विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीदुर्गादेव्यै नमः नाभौ विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीदुर्गादेव्यै नमः जान्वोः विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीदुर्गादेव्यै नमः जङ्घयोः विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीदुर्गादेव्यै नमः पादौ विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ श्रीदुर्गादेव्यै नमः सर्वाङ्गे विन्यसामि।

समस्त मातृकावर्णों से मूल मन्त्र को सम्पुटित करके इष्ट देवता के तत्तदङ्गों में न्यास करे।

३१. चन्दनम्—

ॐ परमानन्दसौभाग्यपरिपूर्ण दिगन्तरे।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः चन्दनं समर्पयामि। सभी अङ्गुलियों से लेप करे।

३२. अक्षतम्—

ॐ अक्षतान्धवलान्देवि सुवर्णरौप्यमयीकृतान्।
गृहाण जगदीशानि प्रसीद परमेश्वरि।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः अक्षतं समर्पयामि। अक्षत समर्पित करे।

३३. पुष्पम्—

ॐ तुरीयवनसम्भूतं नानागुणमनोहरम्।
आमन्दसौरभं पुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः एतानि ऋतुकालोद्भवपुष्पाणि वौषट्। विभिन्न प्रकार के पुष्पों को समर्पित करे।

३४. पुष्पमालाम्—

ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादिनी वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः पुष्पमालां समर्पयामि। पुष्पमाला समर्पित करे।

३५. दूर्वादि—

ॐ दूर्वाङ्कुरान्सुहरितानमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण जगदीश्वरी।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। दूर्वा समर्पित करे।

३६. बिल्वपत्राणि—

ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं त्रितया युतम्।
त्रिजन्मपापसंहारं विल्वपत्रं शिवाऽर्पणम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः बिल्वपत्राणि समर्पयामि। बिल्वपत्र समर्पित करे।

३७. नाना परिमल द्रव्याणि—

ॐ नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। नाना परिमल द्रव्य समर्पित करे।

३८. सिन्दूरम्—

ॐ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः सिन्दूरं समर्पयामि। सिन्दूर समर्पित करे।

३९. कुङ्कुमम्—

ॐ कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्।
कुङ्कुमेनाऽर्चिते देवि! प्रसीद परमेश्वरि।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः कुङ्कुमं समर्पयामि। कुंकुम समर्पित करे।

४०. धूपसंस्कार—

ॐ नमः। धूपपात्र का अभ्यर्चन करे।

ॐ फट्। धूपपात्र का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ यँ। षोडश बार जप कर दोषों का संशोषण करे।

ॐ रँ। वाम हस्ततल को दक्ष हस्तपृष्ठपर रख कर निवेशन करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

४१. धूपाभिमन्त्रणम्—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। आठ बार अभिमन्त्रण करे।

४२. घण्टापूजनम्—

ॐ पराऽपरालसन्देवि! सर्वानन्दकारिणीम्।
विघ्नविच्छेदनार्थाय सुघण्टावादनं शुभम्।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः जयध्वनिमातः स्वाहा। घण्टा पूजन करे।

४३. धूपदानम्—

ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः एष धूपं समर्पयामि। धूप का आघ्रापन करे।

शङ्ख के जल का प्रक्षेप करके बाँये हाथ से घण्टा बादन करते हुए धूपमुद्रा से देवता के नाभि प्रदेश पर धूप का आघ्रापन करे तथा धूप के ऊपर पुष्प घुमा कर पुष्पाञ्जली प्रदान करे।

४४. दीपदानम्—

ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः।
स बाह्याभ्यन्तरज्ज्योतीर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः दीपं समर्पयामि। दीप प्रदर्शित करने के पश्चात् दीप के ऊपर पुष्प घुमा कर देवता को समर्पित करे।

४५. पुष्पाञ्जलीम्—

ॐ चमेलीचम्पकं दिव्यं विभिन्नगन्धसंयुतम्।
चण्डिकामोदनार्थाय पादयोः श्रद्धयार्पितम्।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः पुष्पाञ्जलीमिदं समर्पयामि। पुष्पाञ्जली प्रदान करे।

४६. नैवेद्यसंस्कार:—

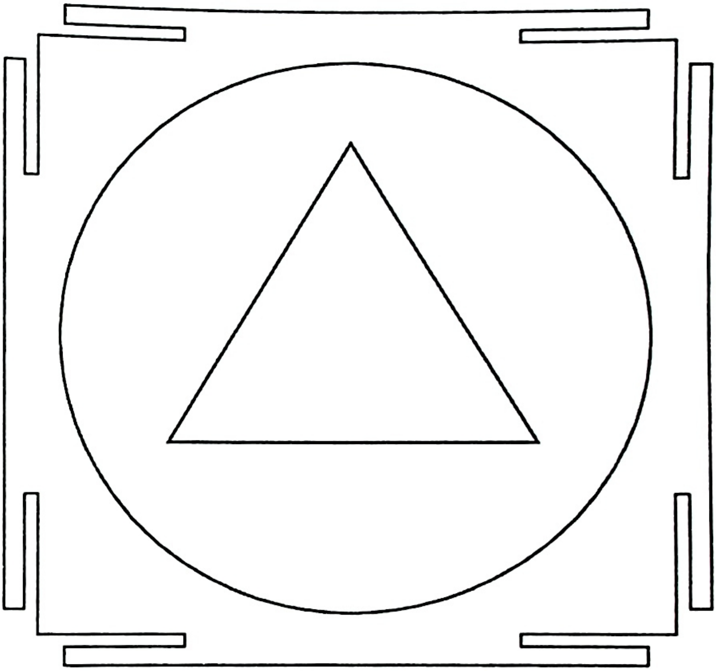

विविध प्रकार के नैवेद्य साज्यसर्करापायसादि परिष्कार करके चतुरस्र मण्डल पर स्थापित करे तथा सर्व्वदोषों का निषेचन करे।

ॐ नमः। मण्डल का अभ्यर्चन करे।

ॐ फट्। चक्रमुद्रा से अभिरक्षण करे।

ॐ यँ। षोडश बार जप कर दोषों का संशोषण करे।

ॐ रँ। वाम हस्ततल को दक्ष हस्तपृष्ठपर रख कर अग्नि निवेशन करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। आठ बार अभिमन्त्रण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः जयध्वनिमातः स्वाहा।

धेनुमुद्रा दिखकर गन्धाक्षत से नैवेद्य का पूजन करके तत्त्व मुद्रा से देवी को घण्टा बजाते हुए नैवेद्य समर्पित करके मुद्राओं का प्रदर्शन करे।

४७. नैवेद्यसमर्पणम्—

ॐ सत्पात्रसिद्धं स हविर्विधानैकभक्ष मम।
निवेदयामि देवेशि कृपया त्वं गृहाण तत्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः नैवेद्यमिदं समर्पयामि। ग्रासमुद्रा से समर्पित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः प्रणाय स्वाहा। प्राणमुद्रा दिखाये।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः अपानाय स्वाहा। अपान मुद्रा दिखाये।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः व्यानाय स्वाहा। व्यान मुद्रा दिखाये।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः उदानाय स्वाहा। उदान मुद्रा दिखाये।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः समानाय स्वाहा। समान मुद्रा दिखाये।

४८. पानीय जलम्—

ॐ समस्तदेवदेवेशि सर्वप्राप्तिकरं परम्।
अखण्डानन्दसम्पूर्णं गृहाण जलमुत्तमम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः पानीयं जलं समर्पयामि। चुलुक मुद्रा से पानीय प्रदान करे।

४९. उद्वर्तनम्—

ॐ चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं दिव्यं गृहाण महामाहेश्वरि।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः उद्वर्तनकं समर्पयामि। उद्वर्तन समर्पित करे।

५०. ताम्बूल संस्कारः—

ॐ फट्। चक्रमुद्रा से अभिरक्षण करे।

ॐ यँ। षोडश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ नमः। ताम्बूल का अभ्यर्चन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे। आठ बार अभिमन्त्रण करे।

५१. ताम्बूलसमर्पणम्—

ॐ एलालवङ्गकर्पूरनागवल्लिदलैर्युतम्।
पूगभागेरितं देवि! ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि। तत्त्वमुद्रा से ताम्बूल समर्पित करे।

५२. ऋतुफलम्—

ॐ यद्यत्फलं सुविमलं मधुरं सुपक्वं,
तच्छ्रीफलादि तव तुष्टायार्पितं च।
तेन प्रसीद गणनायक जन्मलाभं,
दुर्गेऽत्र देवि! वरदे कुरु तं फलाढ्यम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः ऋतुकालोद्भवफलं समर्पयामि। अनामिका-अंगुष्ठ से देवी को ताम्बूल समर्पित करे।

५३. नीराजनम्—

चन्द्रादित्यौ च धरिणी विद्युदग्निस्तथैव च।
त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः नीराजनं समर्पयामि। पुष्प से तत्त्वमुद्रा से नीराजन समर्पित करे।

५४. पुष्पाञ्जलीम्—

ॐ मन्दारपारिजातादिपाटलीकेतकानि च।
जातीचम्पकपुष्पाणि गृहाणेशानि शोभने।।
नानासुगन्धिसंयुक्तं यथाकालोद्भवं तथा।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वरि।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः पुष्पाञ्जलिः समर्पयामि। पुष्पाञ्जली समर्पित करे।

५५. प्रदक्षिणाम्—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि। प्रदक्षिणा करने के बाद पुष्प से प्रदक्षिणा समर्पित करे।

५६. प्रार्थनाम्—

एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवि! पूजा,
स्वीकृत्यैनां सपदि सकलान् मेऽपराधान् क्षमस्व।
नूनं यत्तत्तव करुणया पूर्णतामस्तु सद्यः,
सानन्दं मे हृदयकमले तेऽस्तु नित्यं निवासः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै दुर्गा देव्यै नमः प्रार्थनां समर्पयामि। हाथ मे जल लेकर प्रार्थना समर्पित करे।

अञ्जली मुद्रा से देवी को प्रार्थना समर्पित कर देवी के सहस्रनामों से पुष्पार्चन करे। समस्त कामना के लिए पाठ के पहले और बाद में १०८ पुष्पाञ्जली समर्पित करे। अलग-अलग कामनाओं के लिए अलग-अलग पुष्पों का चयन करना चाहिए।

भुक्तौ मुक्तौ शान्तौ च श्वेतपुष्पं विनिर्दिशेत्।
आकृष्टौ च वशीकारे रक्तपुष्पं च समर्पयेत्।।
स्तम्भने मोहने चैव पीत पुष्पं विनिर्दिशेत्।
उच्चाटने मारणे च कृष्णपुष्पं च आनयेत्।।
अनेनैव प्रकारेण ध्यानं स्यात् पुष्प वर्णकम्।
एवं पुष्पविधिः प्रोक्तः पूजादौ जपकर्मणि।।

सहस्रनामार्चन

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेत वाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मानामाऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य च दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यादिसकलदोष-**

परिहारार्थं मम जन्मकुण्डल्यां, चन्द्रकुण्डल्यां, भावकुण्डल्यां ये केचन चतुर्थाष्टमषष्ठद्वादशस्थानस्थित समस्तग्रहजन्य सकल अशुभदृष्टि समस्तदुःखनिवृत्तिपूर्वक सकलानिष्टयोगेन शरीरे व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च समस्तविघ्नानां दुःखानां शरीरस्थितकष्टानां ज्वरादिपीड़ादीनां निवृत्तिपूर्वकत्रिविधतापोपशमनार्थं भूतप्रेतपिशाचडाकिन्यादिकृतसर्वेषामन्यानां कृत यन्त्रमन्त्रतन्त्रादिकृतसमस्ताभिचारादीनाञ्च अस्मद्गृहे वास्त्वादिदोषानां सद्यः समाप्तिपूर्वकं दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यवंशाभिवृद्धि समस्तसुखसौभाग्यादिप्राप्त्यर्थं सकलकामनापरिपूर्तिपूर्वकसकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै श्रीदुर्गादेवताप्रीत्यर्थं सार्द्धनवचण्डी पुरश्चरणाङ्गत्वेन मम सपरिवारस्य सकलपापक्षयनिवृत्तिपूर्वकदीर्घायुष्यपुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मी ऐहिकाऽऽमुष्मिकसमस्तकामनासिद्धिद्वारा धर्माऽर्थकाममोक्षचतुर्विधफलावाप्तये श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थे तद्दिव्यसहस्रनामावलीभिः पुष्पादि समर्पणं करिष्ये।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीदुर्गासहस्रनाममालामन्त्रस्य नारद ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदुर्गा देवता, ऐं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं श्रीदुर्गादेवताप्रीत्यर्थं समस्तरोगदारिद्र्यदौर्भाग्यशोकदुःखादिविनाशपूर्वकसर्वाशापरिपूर्णार्थं च तद्दिव्यसहस्रनामावलिभिः पुष्पादिद्रव्यसमर्पणे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ नारदऋषये नमः शिरसि।
ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।
ॐ श्रीदुर्गादेवतायै नमः हृदये।
ॐ ऐं बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
ॐ क्लीं कीलकायै नमः नाभौ।
ॐ श्रीदुर्गादेवतायै नमः सर्वाङ्गे।

ध्यानम्—

सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः,
शङ्खं चक्र-धनुः शरांश्च दधतीः नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।।
आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत् काञ्ची क्वणन्नूपुरा,
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत् कुण्डला।।
आनन्दमन्थरपुरन्दरमुक्तमाल्यं,
मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य।

पादाम्बुजं भवतु वो विजयाय मञ्जु-
मञ्जीरशिञ्जितमनोहरमम्बिकायाः ।।

ध्यान करने के बाद पुष्प से देवी का अर्चन करे।

समर्चनम्—

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुं दुर्गायै नमः।
२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गतिहरायै नमः।
३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गाचलनिवासिन्यै नमः।
४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गानुसंचरायै नमः।
५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गनिवासिन्यै नमः।
६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गप्रविष्टायै नमः।
७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गप्रवेशिन्यै नमः।
८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गकृतावासायै नमः।
९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गजयप्रियायै नमः।
१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गगृहीतार्चायै नमः।
११.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गस्थितात्मिकायै नमः।
१२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गस्तुतिपरायै नमः।
१३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गस्मृतिपरायै नमः।
१४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गसदास्थाल्यै नमः।
१५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गरतिप्रियायै नमः।
१६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गस्थलस्थानायै नमः।
१७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गविलासिन्यै नमः।
१८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गत्यक्तवस्त्रायै नमः।
१९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गप्रवर्तिन्यै नमः।
२०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गासुरनिहन्त्र्यै नमः।
२१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गासुरनिषूदिन्यै नमः।
२२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गासुरहरायै नमः।
२३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूत्यै नमः।
२४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गासुरविनासिन्यै नमः।
२५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गासुरवधोन्मत्तायै नमः।
२६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गासुरवधोत्सुकायै नमः।
२७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गासुरवधोत्साहायै नमः।

२८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गासुरवधोद्यतायै नमः।
२९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गासुरवधप्रसवे नमः।
३०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गासुरमखान्तकृते नमः।
३१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गासुरध्वंसतोषायै नमः।
३२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गदानवदारिण्यै नमः।
३३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गविद्रावणकर्यै नमः।
३४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गविद्राविण्यै नमः।
३५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गविक्षोभणकर्यै नमः।
३६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गशीर्षनिकृन्तिन्यै नमः।
३७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गविध्वंसनकर्यै नमः।
३८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गदैत्यनिकृन्तिन्यै नमः।
३९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गदैत्यप्राणहरायै नमः।
४०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गदैत्यान्तकारिण्यै नमः।
४१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गदैत्यहर्त्रे नमः।
४२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गदैत्यसृगुन्मदायै नमः।
४३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गदैत्याशनकर्यै नमः।
४४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गचर्माम्बरावृतायै नमः।
४५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गयुद्धोत्सवकर्यै नमः।
४६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गयुद्धविशारदायै नमः।
४७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गयुद्धासवरतायै नमः।
४८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गयुद्धविमर्दिन्यै नमः।
४९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गयुद्धहास्यरतायै नमः।
५०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गयुद्धाट्टहासिन्यै नमः।
५१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गयुद्धमहामत्तायै नमः।
५२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गयुद्धानुसारिण्यै नमः।
५३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गयुद्धोत्सवोत्साहायै नमः।
५४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गदेशनिषेविण्यै नमः।
५५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गदेशवासरतायै नमः।
५६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गदेशविलासिन्यै नमः।
५७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गदेशार्चनरतायै नमः।
५८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गदेशजनप्रियायै नमः।
५९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमस्थानसंस्थानायै नमः।

६०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमध्यानुसाधनायै नमः।
६१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमान्यै नमः।
६२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमाध्यानायै नमः।
६३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमात्मस्वरूपिण्यै नमः।
६४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमार्गसन्धानायै नमः।
६५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमागमसंस्तुतायै नमः।
६६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमागमदुर्ज्ञेयायै नमः।
६७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमश्रुतिसम्मतायै नमः।
६८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमश्रुतिमान्यायै नमः।
६९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमश्रुतिपूजितायै नमः।
७०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमश्रुतिसुप्रीतायै नमः।
७१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमश्रुतिहर्षदायै नमः।
७२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमश्रुतिसंस्थानायै नमः।
७३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमश्रुतिमानितायै नमः।
७४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमाचारसन्तुष्टायै नमः।
७५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमाचारतोषितायै नमः।
७६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमाचारनिवृत्तायै नमः।
७७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमाचारपूजितायै नमः।
७८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमाचारवशितायै नमः।
७९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमस्थानदायिन्यै नमः।
८०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमप्रेमनिरतायै नमः।
८१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमद्रविणप्रदायै नमः।
८२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमाम्बुजमध्यस्थायै नमः।
८३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गमाम्बुजवासिन्यै नमः।
८४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गनाडीमार्गगत्यै नमः।
८५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गनाडीप्रचारिण्यै नमः।
८६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गनाडीपद्मरतायै नमः।
८७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गनाड्यम्बुजस्थितायै नमः।
८८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गनाडीगतायागतायै नमः।
८९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गनाडीकृतास्पदायै नमः।
९०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गनाडीरतरतायै नमः।
९१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गनाडीसंस्तुतायै नमः।

९२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गनाडीश्वररतायै नमः।
९३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गनाडीशचुम्बितायै नमः।
९४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गनाडीशक्रोडस्थायै नमः।
९५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गनाड्यारोहणायै नमः।
९६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गनाड्युत्थितोत्सुकायै नमः।
९७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्गनाडीनिषेवितायै नमः।
९८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरिस्थानायै नमः।
९९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरिस्थानवासिन्यै नमः।
१००.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दनुजान्तकृते नमः।
१०१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरीकृततपस्यायै नमः।
१०२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरीकृतहरार्चनायै नमः।
१०३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरीजापितदीष्टायै नमः।
१०४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरीकृतरतिक्रियायै नमः।
१०५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरीकृतहरायै नमः।
१०६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरीक्रीडितपुत्रिकायै नमः।
१०७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरीसन्दर्शनरतायै नमः।
१०८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरीरोदितवृश्चिकायै नमः।
१०९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरीगुप्तिकौतुकाढ्यायै नमः।
११०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरीभ्रमणतत्परायै नमः।
१११.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दनुजान्तकर्यै नमः।
११२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनायै नमः।
११३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दनुसन्तानदारिण्यै नमः।
११४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दनुजध्वंसिन्यै नमः।
११५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूतायै नमः।
११६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दनुजेन्द्रविनासिन्यै नमः।
११७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवध्वंसिन्यै नमः।
११८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देव्यै नमः।
११९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवानां भयङ्कर्यै नमः।
१२०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानव्यै नमः।
१२१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवाराध्यायै नमः।
१२२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवेन्द्रवरप्रदायै नमः।
१२३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवेन्द्रनिहन्त्र्यै नमः।

१२४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवद्वेषिणीसत्यै नमः।
१२५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवारिप्रेमरतायै नमः।
१२६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवारिप्रपूजितायै नमः।
१२७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवारिकृतार्चायै नमः।
१२८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवारिभूतिदायै नमः।
१२९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवारिमहानन्दायै नमः।
१३०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवारिरतिप्रियायै नमः।
१३१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवारिदानरतायै नमः।
१३२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवारिकृतास्पदायै नमः।
१३३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवारिस्तुतिरतायै नमः।
१३४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवारिस्मृतिप्रियायै नमः।
१३५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवार्याहाररतायै नमः।
१३६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवारिप्रबोधिन्यै नमः।
१३७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवारिधृतप्रेमायै नमः।
१३८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुःखशोकविमोचिन्यै नमः।
१३९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुःखहन्त्र्यै नमः।
१४०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुःखदात्र्यै नमः।
१४१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुःखनिर्मूलकारिण्यै नमः।
१४२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुःखनिर्मूलनकर्यै नमः।
१४३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुःखदार्यरिनाशिन्यै नमः।
१४४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुःखहरायै नमः।
१४५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुःखनाशायै नमः।
१४६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुःखग्रामायै नमः।
१४७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुरासदायै नमः।
१४८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुःखहीनायै नमः।
१४९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुःखधीरायै नमः।
१५०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणाचारदायिन्यै नमः।
१५१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणोत्सर्गसन्तुष्टायै नमः।
१५२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणत्यागतोषितायै नमः।
१५३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणस्पर्शसन्तुष्टायै नमः।
१५४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणस्पर्शमानदायै नमः।
१५५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणस्पर्शहर्षाढ्यायै नमः।

१५६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणस्पर्शतुष्टिदायै नमः।
१५७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणस्पर्शनकर्यै नमः।
१५८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणस्पर्शनातुरायै नमः।
१५९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणस्पर्शनोत्साहायै नमः।
१६०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणस्पर्शसाधितायै नमः।
१६१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणस्पर्शनमतायै नमः।
१६२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणस्पर्शपुत्रिकायै नमः।
१६३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणस्पर्शरक्षिण्यै नमः।
१६४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणस्तोमदायिन्यै नमः।
१६५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणाकर्षणकर्यै नमः।
१६६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणौघविसर्जिन्यै नमः।
१६७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणाचलदानाढ्यायै नमः।
१६८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रविणाचलवासिन्यै नमः।
१६९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनमात्रे नमः।
१७०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनबन्धवे नमः।
१७१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनविघ्नविनाशिन्यै नमः।
१७२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनसेव्यायै नमः।
१७३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनसिद्धायै नमः।
१७४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनसाध्यायै नमः।
१७५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बर्यै नमः।
१७६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनगेहकृतानन्दायै नमः।
१७७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनगेहविलासिन्यै नमः।
१७८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनभावप्रेमरतायै नमः।
१७९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनभावविनोदिन्यै नमः।
१८०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनमानवचेतःस्थायै नमः।
१८१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनमानवहर्षदायै नमः।
१८२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनदैन्यविघातेच्छायै नमः।
१८३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनद्रविणदायिन्यै नमः।
१८४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनसाधनसन्तुष्टायै नमः।
१८५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनदर्शनदायिन्यै नमः।
१८६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनपुत्रादिदात्र्यै नमः।
१८७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनसम्पद्विधायिन्यै नमः।

१८८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयध्यानरतायै नमः।
१८९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयप्रपूजितायै नमः।
१९०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयर्षिसंसिद्धायै नमः।
१९१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयविभावितायै नमः।
१९२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयकृतार्हणायै नमः।
१९३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयप्रसाधितायै नमः।
१९४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयहर्षदायै नमः।
१९५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयसुखप्रदायै नमः।
१९६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयस्तुतायै नमः।
१९७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयसदानुतायै नमः।
१९८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयप्रेमरतायै नमः।
१९९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयानुमानितायै नमः।
२००.ॐ एँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयसमुद्गतायै नमः।
२०१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयकुटुम्बिन्यै नमः।
२०२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयप्राणतुल्यायै नमः।
२०३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयशरीरिण्यै नमः।
२०४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयकृतानन्दायै नमः।
२०५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयांशसम्भवायै नमः।
२०६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयविभूषितायै नमः।
२०७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयानुसारिण्यै नमः।
२०८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयगीतिरतायै नमः।
२०९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयधनप्रदायै नमः।
२१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयदुःखहरायै नमः।
२११.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयवरप्रदायै नमः।
२१२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयज्ञानदात्र्यै नमः।
२१३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तात्रेयभयापहायै नमः।
२१४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवकन्यायै नमः।
२१५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवमान्यायै नमः।
२१६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदुःखविनासिन्यै नमः।
२१७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवसिद्धायै नमः।
२१८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवपूज्यायै नमः।
२१९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवेज्यायै नमः।

२२०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देववन्दितायै नमः।
२२१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवमान्यायै नमः।
२२२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवधन्यायै नमः।
२२३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवविघ्नविनाशिन्यै नमः।
२२४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवरम्यायै नमः।
२२५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवरतायै नमः।
२२६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवकौतुकतत्परायै नमः।
२२७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवक्रीडायै नमः।
२२८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवव्रीडायै नमः।
२२९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देववैरिविनाशिन्यै नमः।
२३०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवकामायै नमः।
२३१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवरामायै नमः।
२३२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवद्विष्टविनाशिन्यै नमः।
२३३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवप्रियायै नमः।
२३४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देव्यै नमः।
२३५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदानववन्दितायै नमः।
२३६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवरतानन्दायै नमः।
२३७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेववरोत्सुकायै नमः।
२३८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवप्रेमरतायै नमः।
२३९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवप्रियम्बदायै नमः।
२४०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवप्राणतुल्यायै नमः।
२४१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवनितम्बिन्यै नमः।
२४२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवहृतमनसे नमः।
२४३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवसुखावहायै नमः।
२४४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवक्रीडारतायै नमः।
२४५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवसुखप्रदायै नमः।
२४६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवमहानन्दायै नमः।
२४७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवप्रचुम्बितायै नमः।
२४८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवोपभुक्तायै नमः।
२४९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवानसेवितायै नमः।
२५०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवगतप्राणायै नमः।
२५१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवगतात्मिकायै नमः।

२५२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवहर्षदात्र्यै नमः।
२५३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवसुखप्रदायै नमः।
२५४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवमहानन्दायै नमः।
२५५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवविलाशिन्यै नमः।
२५६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवधर्मपत्न्यै नमः।
२५७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवमनोगतायै नमः।
२५८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेववध्वे नमः।
२५९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवार्चनप्रियायै नमः।
२६०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवाङ्कनिलयायै नमः।
२६१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवाङ्कशायिन्यै नमः।
२६२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवाङ्कसुखिन्यै नमः।
२६३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवाङ्कवासिन्यै नमः।
२६४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवाङ्कभूषायै नमः।
२६५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवाङ्गभूषणायै नमः।
२६६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवप्रियकर्यै नमः।
२६७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवप्रियान्तकृते नमः।
२६८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवप्रियप्राणायै नमः।
२६९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवप्रियात्मिकायै नमः।
२७०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवार्चकप्राणायै नमः।
२७१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवार्चकप्रियायै नमः।
२७२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवार्चकोत्साहायै नमः।
२७३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवार्चकप्रियायै नमः।
२७४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवार्चकविघ्नायै नमः।
२७५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवप्रसवे नमः।
२७६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवजनन्यै नमः।
२७७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवविधायिन्यै नमः।
२७८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवरमण्यै नमः।
२७९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवहृदयाश्रयायै नमः।
२८०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवेष्टदेव्यै नमः।
२८१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवतापसपातिन्यै नमः।
२८२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताभावसन्तुष्ट्यै नमः।
२८३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताभावतोषितायै नमः।

२८४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताभाववरदायै नमः।
२८५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताभावसिद्धिदायै नमः।
२८६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताभावसंसिद्धायै नमः।
२८७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताभावसंभवायै नमः।
२८८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताभावसुखिन्यै नमः।
२८९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताभाववन्दितायै नमः।
२९०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताभावसुप्रीतायै नमः।
२९१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताभावहर्षदायै नमः।
२९२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताविघ्नहन्त्र्यै नमः।
२९३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताद्विष्टनासिन्यै नमः।
२९४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवतापूजितपदायै नमः।
२९५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताप्रेमतोषितायै नमः।
२९६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवतागारनिलयायै नमः।
२९७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवतासौख्यदायिन्यै नमः।
२९८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवतानिलभावायै नमः।
२९९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताहृतमानसायै नमः।
३००.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताकृतपदाचार्यै नमः।
३०१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवताहृतभक्तिकायै नमः।
३०२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवतागर्वमध्यस्थायै नमः।
३०३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवतायै नमः।
३०४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदेवतायै नमः।
३०५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दनवे नमः।
३०६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुं दुर्गायै नमो नाम्न्यै नमः।
३०७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुं फट् मन्त्रस्वरूपिण्यै नमः।
३०८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूं नमो मन्त्रस्वरूपायै नमः।
३०९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूं नमो मूर्तिकात्मिकायै नमः।
३१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूरदर्शिप्रियायै नमः।
३११.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुष्टविनाशिन्यै नमः।
३१२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुष्टभूतनिषेवितायै नमः।
३१३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूरदर्शिप्रेमरतायै नमः।
३१४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूरदर्शिप्रियम्बदायै नमः।
३१५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूरदर्शिसिद्धिदात्र्यै नमः।

३१६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूरदर्शिप्रतोषितायै नमः।
३१७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूरदर्शिकण्ठसंस्थायै नमः।
३१८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूरदर्शिप्रहर्षितायै नमः।
३१९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूरदर्शिगृहीताचार्यायै नमः।
३२०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूरदर्शिप्रतर्पितायै नमः।
३२१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूरदर्शिप्राणतुल्यायै नमः।
३२२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूरदर्शिसुखप्रदायै नमः।
३२३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूरदर्शिभ्रान्तिहरायै नमः।
३२४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूरदर्शिहृदास्पदायै नमः।
३२५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूरदर्श्यरिविद्भवायै नमः।
३२६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घदर्शिप्रमोदिन्यै नमः।
३२७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घदर्शिप्राणतुल्यायै नमः।
३२८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घदर्शिवरप्रदायै नमः।
३२९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घदर्शिहर्षदात्र्यै नमः।
३३०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घदर्शिप्रहर्षितायै नमः।
३३१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घदर्शिमहानन्दायै नमः।
३३२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घदर्शिगृहालयायै नमः।
३३३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घदर्शिगृहीताचायायै नमः।
३३४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घदर्शिहृतार्हणायै नमः।
३३५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयायै नमः।
३३६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवत्यै नमः।
३३७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दात्र्यै नमः।
३३८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयालवे नमः।
३३९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनवत्सलायै नमः।
३४०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयार्द्रायै नमः।
३४१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयाशीलायै नमः।
३४२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयाढ्यायै नमः।
३४३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयात्मिकायै नमः।
३४४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावर्षिण्यै नमः।
३४५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दानवत्यै नमः।
३४६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दात्र्यै नमः।
३४७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयालवे नमः।

३४८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीनवत्सलायै नमः।
३४९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयार्द्रायै नमः।
३५०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयाशीलायै नमः।
३५१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयाकर्णायै नमः।
३५२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयात्मिकायै नमः।
३५३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयाम्बुधये नमः।
३५४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयासागरायै नमः।
३५५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयासागरपारगायै नमः।
३५६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयासिन्धवे नमः।
३५७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयाभारायै नमः।
३५८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावत्करुणाकर्यै नमः।
३५९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावत्सलायै नमः।
३६०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयादेव्यै नमः।
३६१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयामूर्त्त्यै नमः।
३६२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयादानरतायै नमः।
३६३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावद्भक्तिसुखिन्यै नमः।
३६४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावत्परितोषितायै नमः।
३६५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावत्स्नेहनिरतायै नमः।
३६६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावत्प्रतिपादिकायै नमः।
३६७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावत्त्राणकर्त्र्यै नमः।
३६८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावन्मुक्तिदायिन्यै नमः।
३६९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावद्भावसन्तुष्टायै नमः।
३७०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावत्परितोषितायै नमः।
३७१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावत्तारणपरायै नमः।
३७२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावत्सिद्धिदायिन्यै नमः।
३७३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावत्पुत्रभावायै नमः।
३७४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावत्पुत्ररूपिण्यै नमः।
३७५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयावद्देहनिलयायै नमः।
३७६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयाबन्धवे नमः।
३७७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयाश्रयायै नमः।
३७८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयालुवात्सल्यकर्यै नमः।
३७९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयालुसिद्धिदायिन्यै नमः।

३८०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयालुशरणासक्तायै नमः।
३८१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयालुर्देहमन्दिरायै नमः।
३८२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयालुभक्तिभावस्थायै नमः।
३८३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयालुप्राणरूपिण्यै नमः।
३८४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयालुसुखदायै नमः।
३८५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयालुदम्भायै नमः।
३८६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयालुप्रेमवर्षिण्यै नमः।
३८७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयालुवशगायै नमः।
३८८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घायै नमः।
३८९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घाङ्ग्यै नमः।
३९०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घलोचनायै नमः।
३९१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घनेत्रायै नमः।
३९२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घचक्षुषे नमः।
३९३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घबाहुलतात्मिकायै नमः।
३९४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घकेश्यै नमः।
३९५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घमुख्यै नमः।
३९६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीर्घघोणायै नमः।
३९७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुणायै नमः।
३९८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुणासुरहन्त्र्यै नमः।
३९९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुणासुरदारिण्यै नमः।
४००.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुणाहवकर्ण्यै नमः।
४०१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुणाहवहर्षितायै नमः।
४०२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुणाहवहोमाढ्यायै नमः।
४०३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुणाचलनाशिन्यै नमः।
४०४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुणाचारनिरतायै नमः।
४०५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुणोत्सवहर्षितायै नमः।
४०६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुणोद्यतरूपायै नमः।
४०७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुणारिनिवारिण्यै नमः।
४०८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुणेक्षणसंयुक्तायै नमः।
४०९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुणदोश्चतुष्कविराजितायै नमः।
४१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशदोष्कायै नमः।
४११.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशभुजायै नमः।

४१२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशबाहुविराजितायै नमः।
४१३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशास्त्रधारिण्यै नमः।
४१४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशदेव्यै नमः।
४१५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशदिक्ख्यातविक्रमायै नमः।
४१६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशरथार्चितपदायै नमः।
४१७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाशरथिप्रियायै नमः।
४१८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाशरथिप्रेमतुष्टायै नमः।
४१९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाशरथिरतिप्रियायै नमः।
४२०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाशरथिप्रियकर्यै नमः।
४२१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाशरथिप्रियंवदायै नमः।
४२२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाशरथीष्टसंदात्र्यै नमः।
४२३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाशरथीष्टदेवतायै नमः।
४२४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाशरथिद्वेषनाशायै नमः।
४२५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाशरथ्यानुकूल्यदायै नमः।
४२६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाशरथिप्रियतमायै नमः।
४२७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाशरथिप्रपूजितायै नमः।
४२८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशाननारिसम्पूज्यायै नमः।
४२९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशाननारिदेवतायै नमः।
४३०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशाननारिप्रमदायै नमः।
४३१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशाननारिजन्मभूम्यै नमः।
४३२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशाननारिरतिदायै नमः।
४३३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशाननारिसेवितायै नमः।
४३४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशाननारिसुखदायै नमः।
४३५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशाननारिवैरिहृते नमः।
४३६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशाननारीष्टदेव्यै नमः।
४३७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवारिवन्दितायै नमः।
४३८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवारिजनन्यै नमः।
४३९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवारिभाविन्यै नमः।
४४०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवारिसहितायै नमः।
४४१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवसभाजितायै नमः।
४४२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवरमण्यै नमः।
४४३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीववध्वे नमः।

४४४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवनाशकर्त्र्यै नमः।
४४५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीववरप्रदायै नमः।
४४६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवपुरस्थायै नमः।
४४७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीववधोत्सुकायै नमः।
४४८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवप्रीतिदात्र्यै नमः।
४४९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवविनाशिन्यै नमः।
४५०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवाहवकर्यै नमः।
४५१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवानपायिन्यै नमः।
४५२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवप्रियावन्द्यायै नमः।
४५३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवहृतायै नमः।
४५४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवाहितकर्यै नमः।
४५५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवेश्वरप्रियायै नमः।
४५६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवेश्वरप्राणायै नमः।
४५७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीववरप्रदायै नमः।
४५८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशग्रीवेश्वररतायै नमः।
४५९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशवर्षीयकन्यकायै नमः।
४६०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशवर्षीयबालायै नमः।
४६१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशवर्षीयवासिन्यै नमः।
४६२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशपापहरायै नमः।
४६३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशदम्यायै नमः।
४६४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशहस्तविभूषणायै नमः।
४६५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशस्त्रलसद्दोष्कायै नमः।
४६६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशदिक्पालवन्दितायै नमः।
४६७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशावताररूपायै नमः।
४६८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशावताररूपिण्यै नमः।
४६९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशविद्याभिन्नदेव्यै नमः।
४७०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशप्राणस्वरूपिण्यै नमः।
४७१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशविद्यास्वरूपायै नमः।
४७२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशविद्यामय्यै नमः।
४७३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशदृक्स्वरूपायै नमः।
४७४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशदृक्प्रदात्र्यै नमः।
४७५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशदृग्रूपायै नमः।

४७६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशदृग्प्रकाशिन्यै नमः।
४७७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशदिगन्तरायै नमः।
४७८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशदिगन्तस्थायै नमः।
४७९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरविलासिन्यै नमः।
४८०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरसमाजस्थायै नमः।
४८१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरप्रपूजितायै नमः।
४८२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरसहचर्यै नमः।
४८३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरकृतास्पदायै नमः।
४८४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरहृतार्चितायै नमः।
४८५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरकथाप्रियायै नमः।
४८६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरगुणरतायै नमः।
४८७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरस्वरूपिण्यै नमः।
४८८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरशिरोधार्यायै नमः।
४८९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरहृताश्रयायै नमः।
४९०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरप्रेमरतायै नमः।
४९१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बररतातुरायै नमः।
४९२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरस्वरूपायै नमः।
४९३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरगणार्चितायै नमः।
४९४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरगणप्राणायै नमः।
४९५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरीगणप्रियायै नमः।
४९६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरीगणाराध्यायै नमः।
४९७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरगणेश्वर्यै नमः।
४९८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरगणस्पर्शायै नमः।
४९९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरमदिरापानविह्वलायै नमः।
५००.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरीकोटिवृतायै नमः।
५०१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरीगणवृतायै नमः।
५०२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिगम्बरीदुरन्तायै नमः।
५०३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुष्कृतिहरायै नमः।
५०४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्ध्येयायै नमः।
५०५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुरतिक्रमायै नमः।
५०६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुरन्तदानवद्वेष्ट्र्यै नमः।
५०७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुरन्तदनुजान्तकृते नमः।

५०८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुरन्तपापहन्त्र्यै नमः।
५०९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रनिस्तारकारिण्यै नमः।
५१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रमानससंस्थानायै नमः।
५११.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रज्ञानविवर्धिन्यै नमः।
५१२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रसंभोगजन्यै नमः।
५१३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रसंभोगदायिन्यै नमः।
५१४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रसंभोगभवनायै नमः।
५१५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रविद्याविधायिन्यै नमः।
५१६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रोद्वेगहरायै नमः।
५१७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रजनन्यै नमः।
५१८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रसुन्दर्यै नमः।
५१९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रभक्तिविधाज्ञानायै नमः।
५२०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रद्विष्टविनाशिन्यै नमः।
५२१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रापकारदमन्यै नमः।
५२२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रसिद्धिविधायिन्यै नमः।
५२३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रताराराधितायै नमः।
५२४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रमातृप्रपूजितायै नमः।
५२५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रदैन्यहरायै नमः।
५२६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रतातनिषेवितायै नमः।
५२७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रपितृशतज्योतिषे नमः।
५२८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रकौशलदायिन्यै नमः।
५२९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षारिसहितायै नमः।
५३०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षारिकामिन्यै नमः।
५३१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षपुर्यै नमः।
५३२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षसभाजितायै नमः।
५३३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षारिसुप्रीतायै नमः।
५३४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षवधूप्रियायै नमः।
५३५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षशिरश्छेत्र्यै नमः।
५३६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षनितम्बिन्यै नमः।
५३७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षहरप्राणायै नमः।
५३८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षहरात्मिकायै नमः।
५३९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षहराराध्यायै नमः।

५४०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षारिवन्दितायै नमः।
५४१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षारिसुखदायै नमः।
५४२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षकपालिन्यै नमः।
५४३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षज्ञानदात्र्यै नमः।
५४४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षारिदेहिन्यै नमः।
५४५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षवधोपात्तायै नमः।
५४६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशश्रीरामचन्द्ररूपायै नमः।
५४७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षराष्ट्रदेव्यै नमः।
५४८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षारिसारिण्यै नमः।
५४९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षभ्रातृतुष्टायै नमः।
५५०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षवधूप्रियायै नमः।
५५१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षवधूप्राणायै नमः।
५५२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दशशीर्षवधूरतायै नमः।
५५३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दैत्यगुरुरतासाध्वै नमः।
५५४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दैत्यगुरुप्रपूजितायै नमः।
५५५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दैत्यगुरूपदेष्ट्र्यै नमः।
५५६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दैत्यगुरुनिषेवितायै नमः।
५५७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दैत्यगुरुमतप्राणायै नमः।
५५८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दैत्यगुरुतापनाशिन्यै नमः।
५५९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुरन्तदुःखशमन्यै नमः।
५६०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुरन्तदमनीतम्यै नमः।
५६१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुरन्तशोकशमन्यै नमः।
५६२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुरन्तरोगनासिन्यै नमः।
५६३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुरन्तवैरिदमन्यै नमः।
५६४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुरन्तदैत्यनाशिन्यै नमः।
५६५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुरन्तकलुषघ्न्यै नमः।
५६६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुष्कृतिस्तोमनाशिन्यै नमः।
५६७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुराशयायै नमः।
५६८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुराधारायै नमः।
५६९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्जयायै नमः।
५७०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुष्टकामिन्यै नमः।
५७१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दर्शनीयायै नमः।

५७२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दृश्यायै नमः।
५७३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अदृश्यायै नमः।
५७४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दृष्टिगोचरायै नमः।
५७५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूतियागप्रियायै नमः।
५७६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूत्यै नमः।
५७७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूतियागकरप्रियायै नमः।
५७८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूतियागकरानन्दायै नमः।
५७९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूतियागसुप्रदायै नमः।
५८०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूतियागकरायातायै नमः।
५८१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूतियागप्रमोदिन्यै नमः।
५८२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासःपूजितायै नमः।
५८३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोमुनिभावितायै नमः।
५८४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोऽर्चितपादायै नमः।
५८५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोमौनभावितायै नमः।
५८६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोमुनिवन्द्यायै नमः।
५८७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोमुनिदेवतायै नमः।
५८८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोमुनिमात्रे नमः।
५८९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोमुनिसिद्धिदायै नमः।
५९०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोमुनिभावस्थायै नमः।
५९१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोमुनिसेवितायै नमः।
५९२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोमुनिचित्तस्थायै नमः।
५९३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोमुनिमण्डितायै नमः।
५९४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोमुनिसञ्चारायै नमः।
५९५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोहृदयङ्गमायै नमः।
५९६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोहृदयाराध्यायै नमः।
५९७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोहृत्सरोजगायै नमः।
५९८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासस्तापसाराध्यायै नमः।
५९९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासस्तापसाश्रयायै नमः।
६००.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासस्तापसरतायै नमः।
६०१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासस्तापसेश्वर्यै नमः।
६०२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोमुनिकन्यायै नमः।
६०३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्वासोऽद्भुतसिद्धिदायै नमः।

६०४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरात्र्यै नमः।
६०५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरहरायै नमः।
६०६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरयुक्तायै नमः।
६०७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरापहायै नमः।
६०८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरघ्न्यै नमः।
६०९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरहन्त्र्यै नमः।
६१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरयुक्तायै नमः।
६११.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दराश्रयायै नमः।
६१२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरस्मेरायै नमः।
६१३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरापाङ्ग्यै नमः।
६१४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयादात्र्यै नमः।
६१५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयाश्रयायै नमः।
६१६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयामात्रे नमः।
६१७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयादेव्यै नमः।
६१८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयादुरोन्मदायै नमः।
६१९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयासिद्धायै नमः।
६२०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयासंस्थायै नमः।
६२१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रतापविमोचिन्यै नमः।
६२२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्रक्षोभहरानित्यायै नमः।
६२३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयालोकगतात्मिकायै नमः।
६२४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दैत्यगुर्वङ्गनावन्द्यायै नमः।
६२५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दैत्यगुर्वङ्गनाप्रियायै नमः।
६२६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दैत्यगुर्वङ्गनासिद्धायै नमः।
६२७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दैत्यगुर्वङ्गनोत्सुकायै नमः।
६२८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दैत्यगुरुप्रियतमायै नमः।
६२९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवगुरुनिषेवितायै नमः।
६३०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवगुरुप्रसूरूपायै नमः।
६३१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवगुरुकृतार्हणायै नमः।
६३२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवगुरुप्रेमयुतायै नमः।
६३३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवगुर्वनुमानितायै नमः।
६३४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवगुरुप्रभावज्ञायै नमः।
६३५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवगुरुसुखप्रदायै नमः।

६३६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवगुरुज्ञानदात्र्यै नमः।
६३७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवगुरुप्रमोदिन्यै नमः।
६३८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दैत्यस्त्रीगणसम्पूज्यायै नमः।
६३९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दैत्यस्त्रीगणपूजितायै नमः।
६४०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दैत्यस्त्रीगणरूपायै नमः।
६४१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दैत्यस्त्रीचित्तहारिण्यै नमः।
६४२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीगणपूज्यायै नमः।
६४३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीगणवन्दितायै नमः।
६४४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीगणचित्तायै नमः।
६४५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीगणभूषितायै नमः।
६४६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीगणसंसिद्धायै नमः।
६४७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीगणतोषितायै नमः।
६४८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीगणहस्तस्थायै नमः।
६४९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीगणचारुचामरवीजितायै नमः।
६५०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवाङ्गनोत्सृष्टनागवल्लर्यै नमः।
६५१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दलकृतोत्सुकायै नमः।
६५२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवाङ्गनाधृतादर्शहृष्ट्यायै नमः।
६५३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवाङ्गनामुखचन्द्रमायै नमः।
६५४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीगणहस्तस्थदीपमालाविलोकितायै नमः।
६५५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीगणहस्तस्थधूपघ्राणविनोदिन्यै नमः।
६५६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवनारीकरगतवासकासवपायिन्यै नमः।
६५७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवनारीकङ्कतिकाकृतकेशनिर्माजनायै नमः।
६५८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवनारीसेव्यगात्रायै नमः।
६५९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवनारीकृतोत्सुकायै नमः।
६६०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवनारीविरचितपुष्पमालाविराजितायै नमः।
६६१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवनारीविचित्राङ्ग्यै नमः।
६६२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीदत्तभोजनायै नमः।
६६३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीगणगीतायै नमः।
६६४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीगीतोत्सुकायै नमः।
६६५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीनृत्यसुखिन्यै नमः।
६६६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीनृत्यदर्शिन्यै नमः।
६६७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीयोजितलसद्रत्नपादपादाम्बुजायै नमः।

६६८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवस्त्रीगणविस्तीर्णचारुतल्पनिषेदुष्यै नमः।
६६९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवनारीचारुकरालीलाङ्ग्यादिदेहिकायै नमः।
६७०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवनारीकरव्यग्रतालवृन्दमरूत्सुकायै नमः।
६७१.ॐ ऐँह्रीँक्लीँ देवनारीवेणुवीणानादसोत्कण्ठमानसाग्रै नमः।
६७२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवकोटिस्तुतिनुतायै नमः।
६७३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवकोटिकृतार्हणायै नमः।
६७४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवकोटिगीतगुणायै नमः।
६७५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवकोटिकृतस्तुत्यै नमः।
६७६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवदृष्ट्योद्वेगफलायै नमः।
६७७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ देवकोलाहलाकुलायै नमः।
६७८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्वेषरागपरित्यक्त्यायै नमः।
६७९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्वेषरागविवर्जितायै नमः।
६८०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामपूज्यायै नमः।
६८१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरपूज्यायै नमः।
६८२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरविनाशिन्यै नमः।
६८३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरप्रेमरतायै नमः।
६८४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरभगिन्यै नमः।
६८५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरपत्न्यै नमः।
६८६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरप्रसवे नमः।
६८७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरपतिव्रतायै नमः।
६८८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदराऽभिन्नदेहायै नमः।
६८९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदररतिप्रियायै नमः।
६९०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदराऽभिन्नतनवे नमः।
६९१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरकृतास्पदायै नमः।
६९२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरकृतप्राणायै नमः।
६९३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरगतात्मिकायै नमः।
६९४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरकौतुकाढ्यायै नमः।
६९५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरकलाकलायै नमः।
६९६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरालिङ्गिताङ्ग्यै नमः।
६९७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरकुतूहलायै नमः।
६९८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरकृताह्लादायै नमः।
६९९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरसुचुन्नितायै नमः।

७००.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरसुताकृष्टायै नमः।
७०१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरसुखप्रदायै नमः।
७०२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरसहाढ्यायै नमः।
७०३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरसहासिन्यै नमः।
७०४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरगुणज्ञायै नमः।
७०५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरवरप्रदायै नमः।
७०६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरानुकूलायै नमः।
७०७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरनितम्बिन्यै नमः।
७०८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरजलक्रीडाकुशलायै नमः।
७०९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरदर्शनप्रियायै नमः।
७१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरस्वजनसौहृदायै नमः।
७११.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरलसद्रासकेलिकौतुकिन्यै नमः।
७१२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरभ्रातृकायै नमः।
७१३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरपरायणायै नमः।
७१४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरधरायै नमः।
७१५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरवैरिविनाशिन्यै नमः।
७१६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरोपजायायै नमः।
७१७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरनिमन्त्रितायै नमः।
७१८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरपराभूतायै नमः।
७१९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरपराजितायै नमः।
७२०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरसमाक्रान्तायै नमः।
७२१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरहताशुभायै नमः।
७२२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरोत्सवरतायै नमः।
७२३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरस्तन्यदात्र्यै नमः।
७२४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दामोदरगवेषितायै नमः।
७२५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दमयन्तीसिद्धिदात्र्यै नमः।
७२६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दमयन्तीप्रसाधितायै नमः।
७२७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दमयन्तीष्टदेव्यै नमः।
७२८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दमयन्तीस्वरूपिण्यै नमः।
७२९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दमयन्तीकृतार्चायै नमः।
७३०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दमनर्षिविभावितायै नमः।
७३१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दमनर्षिप्राणतुल्यायै नमः।

७३२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दमनर्षिस्वरूपिण्यै नमः।
७३३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दमनर्षिस्वरूपायै नमः।
७३४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्भपूरितविग्रहायै नमः।
७३५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्भहन्त्र्यै नमः।
७३६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्भदात्र्यै नमः।
७३७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्भलोकविमोहिन्यै नमः।
७३८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्भशीलायै नमः।
७३९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्भहरायै नमः।
७४०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्भवत्परिमर्दिन्यै नमः।
७४१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्भरूपायै नमः।
७४२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्भकर्यै नमः।
७४३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्भसन्तानदारिण्यै नमः।
७४४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तमोक्षायै नमः।
७४५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तधनायै नमः।
७४६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तारोग्यायै नमः।
७४७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्भिकायै नमः।
७४८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तपुत्रायै नमः।
७४९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तदारायै नमः।
७५०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तहारायै नमः।
७५१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारिकायै नमः।
७५२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तभोगायै नमः।
७५३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तकोशायै नमः।
७५४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तहस्त्यादिवाहनायै नमः।
७५५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तमत्यै नमः।
७५६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तभार्यायै नमः।
७५७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तशास्त्रावबोधिकायै नमः।
७५८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तपानायै नमः।
७५९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तदानायै नमः।
७६०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तदारिद्र्यनाशिन्यै नमः।
७६१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तसौधावनीवासायै नमः।
७६२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दत्तस्वर्गायै नमः।
७६३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दासदायै नमः।

७६४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दास्यतुष्टायै नमः।
७६५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दास्यहरायै नमः।
७६६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दासदासीशतप्रदायै नमः।
७६७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाररूपायै नमः।
७६८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारवासायै नमः।
७६९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारवासिहृदास्पदायै नमः।
७७०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारवासिजनाराध्यायै नमः।
७७१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारवासिजनप्रियायै नमः।
७७२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारवासिविनिर्मितायै नमः।
७७३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारवासिसमर्च्चितायै नमः।
७७४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारवास्याहृतप्राणायै नमः।
७७५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारवास्यारिनाशिन्यै नमः।
७७६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारवासिविघ्नहरायै नमः।
७७७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारवासिविमुक्तिदायै नमः।
७७८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाराग्निरूपायै नमः।
७७९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारायै नमः।
७८०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारकार्यरिनाशिन्यै नमः।
७८१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्पत्यै नमः।
७८२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्पतीष्टायै नमः।
७८३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्पतीप्राणरूपिकायै नमः।
७८४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्पतीस्नेहनिरतायै नमः।
७८५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाम्पत्यसाधनप्रियायै नमः।
७८६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाम्पत्यसुखसेनायै नमः।
७८७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाम्पत्यसुखदायिन्यै नमः।
७८८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाम्पत्याचारनिरतायै नमः।
७८९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाम्पत्यामोदमोदितायै नमः।
७९०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्पत्यामोदसुखिन्यै नमः।
७९१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्पत्याह्लादकारिण्यै नमः।
७९२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दम्पतीष्टपादपद्मायै नमः।
७९३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाम्पत्यप्रेमरूपिण्यै नमः।
७९४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाम्पत्यभोगभवनायै नमः।
७९५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाडिमीफलभोजिन्यै नमः।

७९६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाडिमीफलसन्तुष्टायै नमः।
७९७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाडिमीफलमानसायै नमः।
७९८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाडिमीवृक्षसंस्थानायै नमः।
७९९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाडिमीवृक्षवासिन्यै नमः।
८००.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाडिमीवृक्षरूपायै नमः।
८०१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाडिमीवनवासिन्यै नमः।
८०२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाडिमीफलप्रियभोज्ञायै नमः।
८०३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षिणायै नमः।
८०४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षिणारूपायै नमः।
८०५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षिणारूपधारिण्यै नमः।
८०६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षकन्यायै नमः।
८०७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षपुत्र्यै नमः।
८०८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षमात्रे नमः।
८०९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षस्वे नमः।
८१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षगोत्रायै नमः।
८११.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षसुतायै नमः।
८१२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षयज्ञविनाशिन्यै नमः।
८१३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षयज्ञनाशकर्त्र्यै नमः।
८१४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षयज्ञान्तकारिण्यै नमः।
८१५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षप्रसूत्यै नमः।
८१६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षेज्यायै नमः।
८१७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षवंशैकपावन्यै नमः।
८१८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षात्मजायै नमः।
८१९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षसूनवे नमः।
८२०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षजायै नमः।
८२१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षजातिकायै नमः।
८२२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षजन्मने नमः।
८२३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षजनुषे नमः।
८२४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षदेहसमुद्भवायै नमः।
८२५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षजनुषे नमः।
८२६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षयागध्वंसिन्यै नमः।
८२७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षकन्यकायै नमः।

८२८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षिणाचारनिरतायै नमः।
८२९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षिणाचारतुष्टिदायै नमः।
८३०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षिणाचारसंसिद्धायै नमः।
८३१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षिणाचारभावितायै नमः।
८३२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षिणाचारसुखिन्यै नमः।
८३३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षिणाचारसाधितायै नमः।
८३४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षिणाचारमोक्षाप्त्यै नमः।
८३५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षिणाचारवन्दितायै नमः।
८३६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षिणाचारशरणायै नमः।
८३७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दक्षिणाचारहर्षितायै नमः।
८३८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्वारपालप्रियायै नमः।
८३९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्वारवासिन्यै नमः।
८४०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्वारसंस्थितायै नमः।
८४१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्वाररूपायै नमः।
८४२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्वारसंस्थायै नमः।
८४३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्वारदेशनिवासिन्यै नमः।
८४४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्वारकर्यै नमः।
८४५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्वारधात्र्यै नमः।
८४६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषमात्रविवर्जितायै नमः।
८४७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषकरायै नमः।
८४८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषहरायै नमः।
८४९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषराशिविनाशिन्यै नमः।
८५०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरविभूषाढ्यायै नमः।
८५१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरकपालिन्यै नमः।
८५२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरसहस्राभायै नमः।
८५३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरसमाननायै नमः।
८५४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरमुख्यै नमः।
८५५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दिव्यायै नमः।
८५६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरकराग्रजायै नमः।
८५७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरसमज्योतिषे नमः।
८५८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरसुशीतलायै नमः।
८५९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरश्रेण्यै नमः।

८६०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषासदृशापाङ्गवीक्षणायै नमः।
८६१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरेष्टदेव्यै नमः।
८६२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरनिषेवितायै नमः।
८६३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरप्राणरूपायै नमः।
८६४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरमरीचिकायै नमः।
८६५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरोल्लसज्ज्वालायै नमः।
८६६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरसुहर्षितायै नमः।
८६७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरशिरोभूषायै नमः।
८६८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरवधूप्रियायै नमः।
८६९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरवधूमतायै नमः।
८७०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरवधूप्राणायै नमः।
८७१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरवधूप्रीतायै नमः।
८७२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरवध्वे नमः।
८७३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाकरपूज्यायै नमः।
८७४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषापूजितायै नमः।
८७५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाहारिण्यै नमः।
८७६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाजापमहानन्दायै नमः।
८७७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषाजापपरायणायै नमः।
८७८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषापुरश्चाररतायै नमः।
८७९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषापूजकपुत्रिकायै नमः।
८८०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषापूजकवात्सल्यकारिण्यै नमः।
८८१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषापूजकवैरिघ्न्यै नमः।
८८२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषापूजकविघ्नहृते नमः।
८८३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषापूजकसन्तुष्टायै नमः।
८८४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दोषापूजकमुक्तिदायै नमः।
८८५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दमप्रसूनसम्पूज्यायै नमः।
८८६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दमपुष्पप्रियायै नमः।
८८७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुर्योधनप्रपूज्यायै नमः।
८८८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुःशासनसमर्चितायै नमः।
८८९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिप्रियायै नमः।
८९०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिमात्रे नमः।
८९१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दयानिधये नमः।

८९२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिसमाराध्यायै नमः।
८९३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिप्रपूजितायै नमः।
८९४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिगृहासक्तायै नमः।
८९५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिप्रियंवदायै नमः।
८९६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिप्रियतमायै नमः।
८९७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिमनोहरायै नमः।
८९८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिहृतप्राणायै नमः।
८९९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिसुसिद्धिदायै नमः।
९००.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिपरामृष्टायै नमः।
९०१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिप्रहर्षितायै नमः।
९०२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिविघ्नहरायै नमः।
९०३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिशिरोधृतायै नमः।
९०४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिप्राप्तचर्यायै नमः।
९०५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाण्युन्मुख्यै नमः।
९०६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिप्राप्तपदायै नमः।
९०७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाणिवरोन्मुख्यै नमः।
९०८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डहस्तायै नमः।
९०९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डपाण्यै नमः।
९१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डबाहवे नमः।
९११.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दरान्तकृते नमः।
९१२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डदोष्कायै नमः।
९१३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डकरायै नमः।
९१४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डचित्तकृतास्पदायै नमः।
९१५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डविद्यायै नमः।
९१६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डिमात्रे नमः।
९१७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डिखण्डकनाशिन्यै नमः।
९१८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डिप्रियायै नमः।
९१९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डिपूज्यायै नमः।
९२०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दण्डिसन्तोषदायिन्यै नमः।
९२१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्युपूज्यायै नमः।
९२२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्युरतायै नमः।
९२३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्युद्रविणदायिन्यै नमः।

९२४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्युवर्गकृतार्हायै नमः।
९२५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्युवर्गविनाशिन्यै नमः।
९२६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्युकुलनिर्णाशिन्यै नमः।
९२७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्युप्रियकर्यै नमः।
९२८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दस्युनृत्यदर्शनतत्परायै नमः।
९२९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुष्टदण्डकर्यै नमः।
९३०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुष्टवर्गविद्राविण्यै नमः।
९३१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दुष्टवर्गनिग्रहार्हायै नमः।
९३२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूषकप्राणनाशिन्यै नमः।
९३३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूषकोत्तापजनन्यै नमः।
९३४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूषकारिष्टकारिण्यै नमः।
९३५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूषकद्वेषकर्यै नमः।
९३६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाहिकायै नमः।
९३७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दहनात्मिकायै नमः।
९३८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुकारिनिहन्त्र्यै नमः।
९३९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुकेश्वरपूजितायै नमः।
९४०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुकेश्वरमात्रे नमः।
९४१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दारुकेश्वरवन्दितायै नमः।
९४२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दर्भहस्तायै नमः।
९४३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दर्भयुतायै नमः।
९४४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दर्भकर्मविवर्जितायै नमः।
९४५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दर्भमय्यै नमः।
९४६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दर्भतनवे नमः।
९४७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दर्भसर्वस्वरूपिण्यै नमः।
९४८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दर्भकर्माचाररतायै नमः।
९४९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दर्भहस्तकृतार्हणायै नमः।
९५०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दर्भानुकूलायै नमः।
९५१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दाम्भर्यायै नमः।
९५२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दर्वीपात्रानुदामिन्यै नमः।
९५३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दमघोषप्रपूज्यायै नमः।
९५४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दमघोषवरप्रदायै नमः।
९५५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दमघोषसमाराध्यायै नमः।

९५६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दावाग्निरूपिण्यै नमः।
९५७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दावाग्निनिर्णाशितायै नमः।
९५८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दावाग्निमहाबलायै नमः।
९५९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दन्तदंष्ट्रासुरकलायै नमः।
९६०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दन्तचर्चितहस्तिकायै नमः।
९६१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दन्तदंष्ट्रस्यन्दनायै नमः।
९६२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दन्तनिर्णाशितासुरायै नमः।
९६३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधिपूज्यायै नमः।
९६४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधिप्रीतायै नमः।
९६५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिवरदायिन्यै नमः।
९६६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचीष्टदेवतायै नमः।
९६७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिमोक्षदायिन्यै नमः।
९६८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिदैत्यहन्त्र्यै नमः।
९६९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिदरदारिण्यै नमः।
९७०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिभक्तिसुखिन्यै नमः।
९७१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिमुनिसेवितायै नमः।
९७२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिज्ञानदात्र्यै नमः।
९७३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिगुणदायिन्यै नमः।
९७४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिकुलसम्भूषणायै नमः।
९७५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिभुक्तिमुक्तिदायै नमः।
९७६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिकुलदेव्यै नमः।
९७७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिकुलदेवतायै नमः।
९७८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिकुलगम्यायै नमः।
९७९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिकुलपूजितायै नमः।
९८०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिसुखदात्र्यै नमः।
९८१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिदैन्यहारिण्यै नमः।
९८२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिदुःखहन्त्र्यै नमः।
९८३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिकुलसुन्दर्यै नमः।
९८४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिकुलसम्भूतायै नमः।
९८५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिकुलपालिन्यै नमः।
९८६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिदानगम्यायै नमः।
९८७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिदानमानिन्यै नमः।

९८८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिदानसन्तुष्टायै नमः।
९८९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिदानदेवतायै नमः।
९९०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिजयसंप्रीतायै नमः।
९९१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिजपमानसायै नमः।
९९२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिजपपूजाढ्यायै नमः।
९९३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिजपमालिकायै नमः।
९९४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिजपसन्तुष्टायै नमः।
९९५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिजपतोषिण्यै नमः।
९९६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचितापसाराध्यायै नमः।
९९७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दधीचिशुभदायिन्यै नमः।
९९८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूर्वायै नमः।
९९९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूर्वादलश्यामायै नमः।
१०००.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दूर्वादलसमद्युतये नमः।

अनेन सहस्रनामार्चनेन श्रीदुर्गादेवता प्रीयन्तां न मम।

अर्चन करने के बाद आवरण देवताओं का दक्षिण हाथ से ज्ञानमुद्रा द्वारा पूजन तथा वाम हाथ से तत्त्व मुद्रा द्वारा विशेषार्घ जल से तर्पण करे।

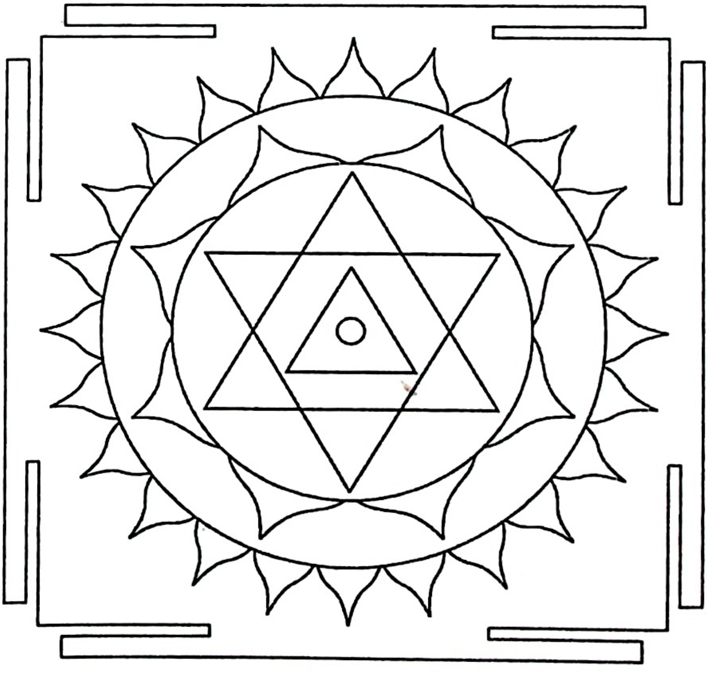

५७. आवरण अनुज्ञा—हाथ में पुष्प लेकर परिवारार्चन के लिए अनुज्ञा का अनुरोध करे—

सञ्चिन्मयपरे देवि! परामृतचरुप्रिये!।
अनुज्ञां देहि मे मातः! परिवारार्चनाय ते।।

१. बिन्दु में प्रथमावारण देवता पूजन—

महाकालीमहालक्ष्मी
महासरस्वतीरूपिणी
श्रीदुर्गादेवता

१. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकाश्रीदुर्गादेवतायै नमः श्रीदुर्गादेवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

२. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकाल्यै नमः श्रीमहाकालीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

३. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहालक्ष्म्यै नमः श्रीमहालक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहासरस्वत्यै नमः श्रीमहासरस्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

बिन्दु के उत्तर—

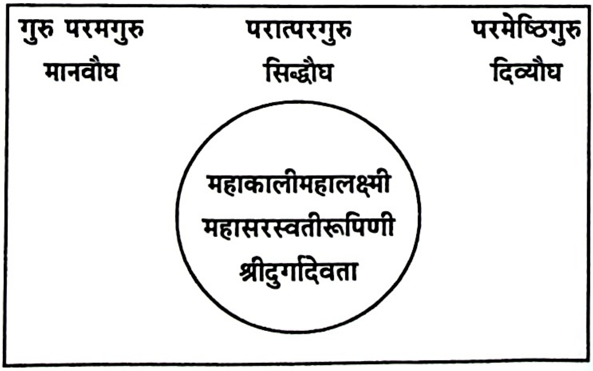
गुरु परमगुरु
मानवौघ
परात्परगुरु
सिद्धौघ
परमेष्ठिगुरु
दिव्यौघ
महाकालीमहालक्ष्मी
महासरस्वतीरूपिणी
श्रीदुर्गादेवता

१. **ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे गुरवे नमः गुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।** अग्नि कोण में।

२. **ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे परमगुरवे नमः परमगुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।** नैर्ऋत्य कोण में।

३. **ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे परात्परगुरवे नमः परात्परगुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।** वायव्य कोण में।

४. **ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे परमेष्ठिगुरवे नमः परमेष्ठिगुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।** ईशान कोण में।

५. **ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे मानवौघसिद्धौघदिव्यौघगुरुपंक्तये नमः गुरु पंक्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।**

प्रथमावरणस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सामान्यार्घ जल से—**एताः प्रथमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।**

पुष्पाञ्जलिः—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

अनेन प्रथमावरणदेवतापूजनेन साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै श्रीदुर्गादेवता प्रियताम्।

समर्पण के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित करते हुए प्रणाम करके द्वितीयावरण देवताओं का पूजन करे।

२. त्रिकोण में द्वितीयावरण देवता पूजन—

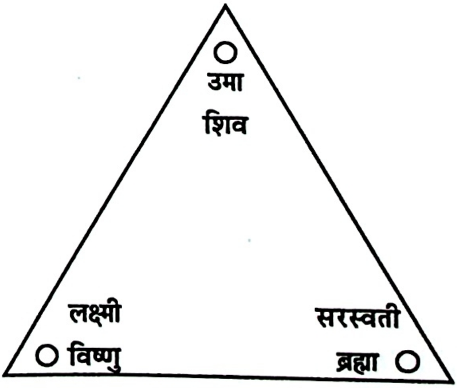

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे स्वरया सह विधात्रे नमः विधात्रीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रिया सह विष्णवे नमः विष्णुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे उमया सह शिवाय नमः शिवशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे हुँ सिंहाय नमः सिंहशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे हुँ महिषाय नमः महिषशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

द्वितीयावरणस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सामान्यार्घ जल से—**एताः द्वितीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।**

पुष्पाञ्जलिः—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

अनेन द्वितीयावरणदेवतापूजनेन साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै श्रीदुर्गादेवता प्रियताम्।

समर्पण के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित करते हुए प्रणाम करके तृतीयावरण देवताओं का पूजन करे।

३. षट्कोण में तृतीयावरण देवता पूजन—

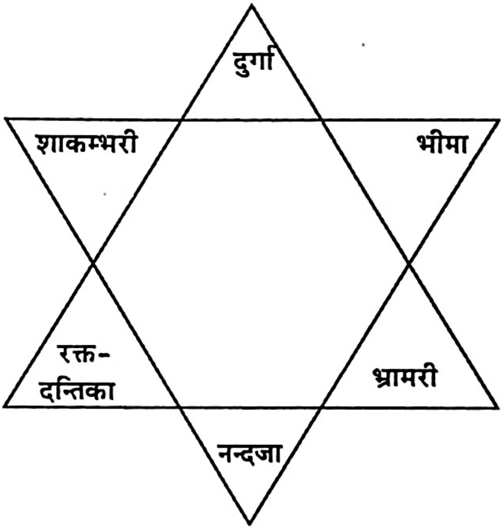

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नन्दजायै नमः नन्दजाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे रक्तदन्तिकायै नमः रक्तदन्तिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायैविच्चे शाकम्भर्यै नमः शाकम्भरीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे दुर्गायै नमः दुर्गाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे भीमायै नमः भीमाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे भ्रामर्यै नमः भ्रामरीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

तृतीयावरणस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सामान्यार्घ जल से—**एताः तृतीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।**

पुष्पाञ्जलि:—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

अनेन तृतीयावरणदेवतापूजनेन साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै श्रीदुर्गादेवता प्रियताम्।

समर्पण के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित करते हुए प्रणाम करे।

४. अष्टपत्रों में चतुर्थावरण देवता पूजन—

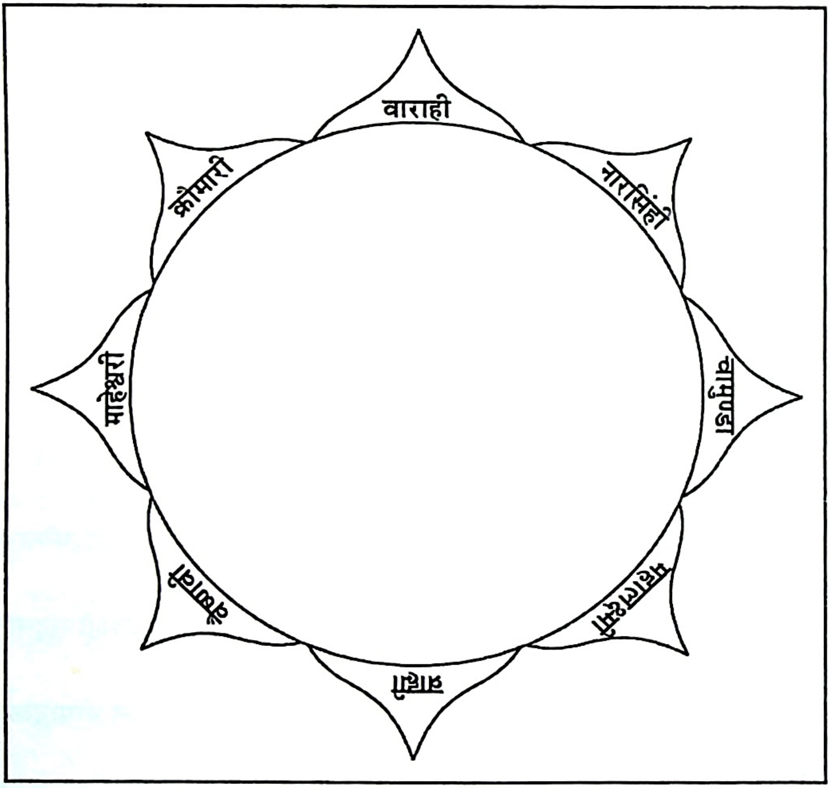

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ब्राह्म्यम्बायै नमः श्रीब्राह्म्यम्बाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वैष्णव्यम्बायै नमः श्रीवैष्णव्यम्बाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे माहेश्वर्यम्बायै नमः श्रीमाहेश्वर्यम्बाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे कौमार्यम्बायै नमः श्रीकौमार्यम्बाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ऐन्द्र्यम्बायै नमः श्रीऐन्द्र्यम्बाशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वाराह्यम्बायै नमः श्रीवाराह्यम्बाशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नारसिंह्यम्बायै नमः श्रीनारसिंह्यम्बा-शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे चामुण्डाऽम्बायै नमः श्रीचामुण्डाऽम्बा-शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

चतुर्थावरणस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सामान्यार्घ जल से—**एताः चतुर्थावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।**

पुष्पाञ्जलिः—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

अनेन चतुर्थावरणदेवतापूजनेन साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै श्रीदुर्गादेवता प्रियताम्।

समर्पण के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित करते हुए प्रणाम करे।

५. चतुर्विंशति पत्रों में पञ्चमावरण देवता पूजन—

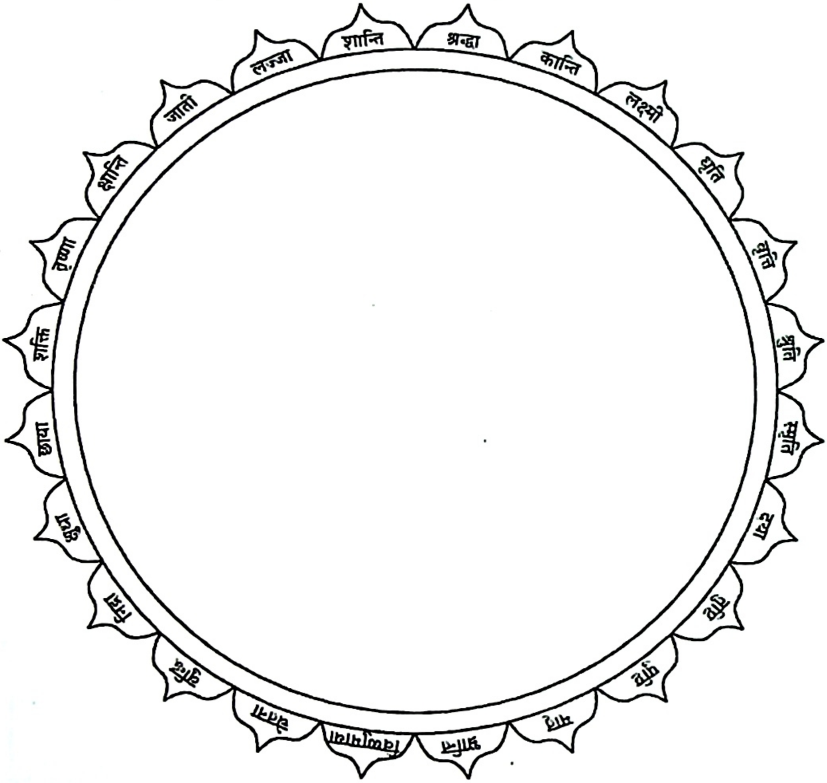
शान्ति
श्रद्धा
कान्ति
लक्ष्मी
धृति
वृत्ति
श्रुति
स्मृति
दया
तुष्टि
पुष्टि
मातृ
भ्रान्ति
विष्णुमाया
चेतना
बुद्धि
निद्रा
क्षुधा
छाया
शक्ति
तृष्णा
क्षान्ति
जाति
लज्जा

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे विष्णुमायायै नमः विष्णुमायाशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे चेतनायै नमः चेतनाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे बुद्ध्यै नमः बुद्धिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे निद्रा नमः निद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे क्षुधायै नमः क्षुधाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे छायायै नमः छायाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे शक्त्यैनमः शक्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे तृष्णायै नमः तृष्णाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे क्षान्त्यै नमः क्षान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे जात्यै नमः जातिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

११. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे लज्जायै नमः लज्जाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

१२. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे शान्ति नमः शान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

१३. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रद्धायैनमः श्रद्धाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

१४. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे कान्त्यैनमः कान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

१५. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे लक्ष्म्यैनमः लक्ष्मिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

१६. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे धृत्यै नमः धृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

१७. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वृत्यै नमः वृत्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

१८. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे श्रुत्यै नमः श्रुतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

१९. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे स्मृत्यैनमः स्मृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

२०. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे दयायै नमः दयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

२१. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे तुष्ट्यै नमः तुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

२२. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे पुष्ट्यै नमः पुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

२३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे मातृभ्यो नमः मातृशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

२४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे भ्रान्त्यै नमः भ्रान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

पञ्चमावरणस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सामान्यार्घ जल से—एताः पञ्चमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिः—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।

अनेन पञ्चमावरणदेवतापूजनेन साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै श्रीदुर्गादेवता प्रियताम्।

समर्पण के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित करते हुए प्रणाम करे।

६. भूपुर के चारो कोणों मे षष्ठावरण देवता पूजन—

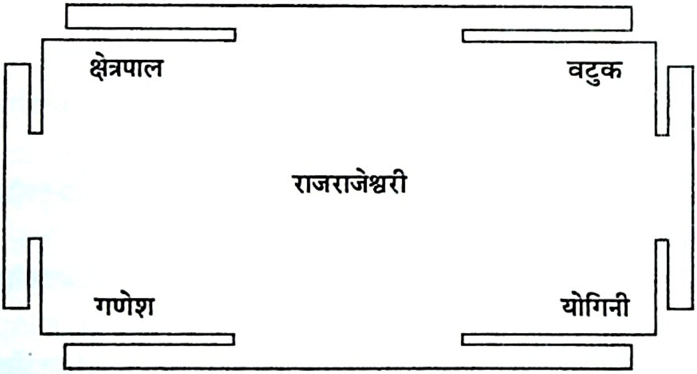

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वँ वटुकाय नमः श्रीवटुकशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे याँ योगिनीभ्यो नमः श्रीयोगिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे गँ गणपतये नमः श्रीगणपतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४.ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे क्षं क्षेत्रपालाय नमः श्रीःक्षेत्रपालशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

षष्ठावरणस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सामान्यार्घ जल से—**एताः षष्ठावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।**

पुष्पाञ्जलि:—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।।

अनेन षष्ठावरणदेवतापूजनेन साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै श्रीदुर्गादेवता प्रियताम्।

समर्पण के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित करते हुए प्रणाम करे।

७. भूपुर के दशो दिशाओं में सप्तमावरण देवतापूजन—

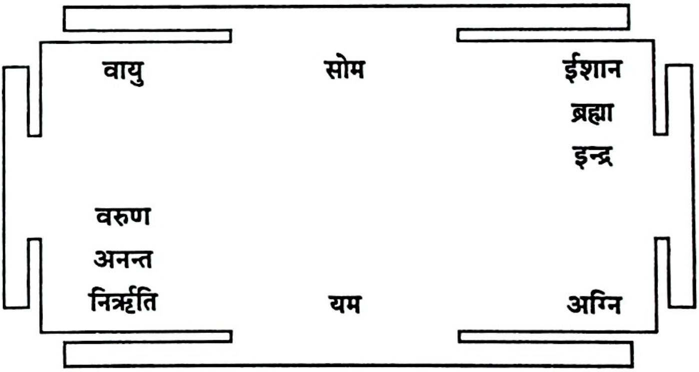

१.ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इन्द्राय नमः श्रीइन्द्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

२.ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अग्नये नमः श्रीअग्निशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

३.ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे यमाय नमः श्रीयमशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४.ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे निर्ऋतये नमः श्रीनिर्ऋतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

५. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वरुणाय नमः श्रीवरुणशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

६. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वायवे नमः श्रीवायुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

७. ॐ ऐँ ह्रीँ वलीँ चामुण्डायै विच्चे सोमाय नमः श्रीसोमशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

८. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ईशानाय नमः श्रीईशानशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

९. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ब्रह्मणे नमः श्रीब्रह्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

१०. ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अनन्ताय नमः श्रीअनन्तशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सप्तमावरणस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सामान्यार्घ जल से—एताः सप्तमावरणदेवताः साङ्गः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिः—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।।

अनेन सप्तमावरणदेवतापूजनेन साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै श्रीदुर्गादेवता प्रियताम्।

समर्पण के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित करते हुए प्रणाम करे।

८. भूपुर के दशो दिशाओं में अष्टमावरण देवतापूजन—

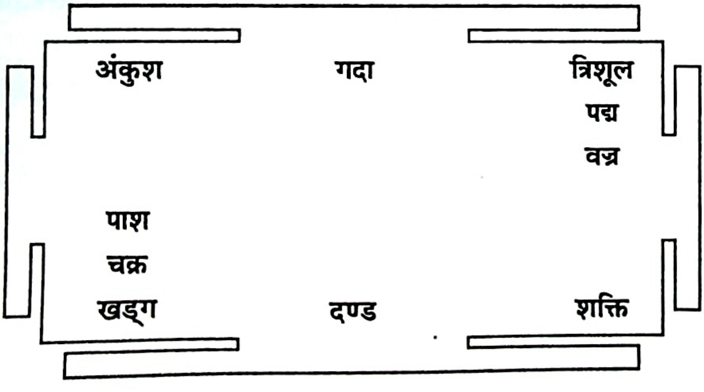

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वज्राय नमः श्रीवज्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे शक्तये नमः श्रीशक्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे दण्डाय नमः श्रीदण्डशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे खड्गाय नमः श्रीखड्गशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे पाशाय नमः श्रीपाशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अङ्कुशाय नमः श्रीअङ्कुशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे गदायै नमः श्रीगदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे त्रिशूलाय नमः श्रीत्रिशूलशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे पद्माय नमः श्रीपद्म शक्तिश्रीपादुकां-पूजयामि तर्पयामि।

१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे चक्राय नमः श्रीचक्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अष्टमावरणस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सामान्यार्घ जल से—**एताः अष्टमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।**

पुष्पाञ्जलिः—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्।।

अनेन अष्टमावरणदेवतापूजनेन साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै श्रीदुर्गादेवता प्रियताम्।

समर्पण के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित करते हुए प्रणाम करे।

९. भूपुर के दशो दिशाओं में नवमावरण देवता पूजन—

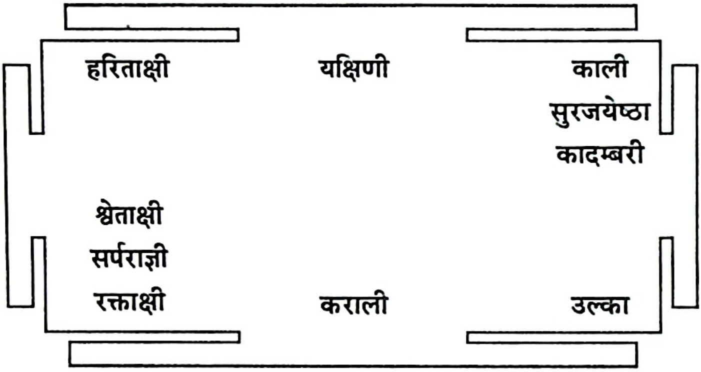

१.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरीदेव्यै नमः कादम्बरीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

२.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै नमः उल्काशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

३.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे दण्डहस्तायै महिषारूढायै करालीदेव्यै नमः करालीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

४.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै नमः रक्ताक्षीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

५.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै नमः श्वेताक्षीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

६.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अङ्कुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै नमः मृगवाहनाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

७.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे गदाहस्तायै सिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै नमः यक्षिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

८.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै नमः कालीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

९.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै नमः सुरज्येष्ठाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

१०.ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै नमः सर्पराज्ञीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

नवमावरणस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सामान्यार्घ जल से—**एता: नवमावरणदेवता: साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।**

पुष्पाञ्जलिः—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्।।

अनेन नवमावरणदेवतापूजनेन साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै श्रीदुर्गादेवता प्रियताम्।

समर्पण के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित करते हुए प्रणाम करे। पुष्पाञ्जली प्रदान कर देवी को नारिकेल बलि प्रदान करने के बाद वटुकादि बलिदान करे।

नारिकेलबलिदानम्

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकअयने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा अमुकनामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये श्रीष्टदेवताप्रीतये सार्द्धनवचण्डीपुरश्चरणसिद्धये नारिकेलबलिदानं अहं करिष्ये।**

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नारिकेलदेयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे नारिकेलदेयबलिं तुभ्यं समर्पयामि।

नारिकेलबलि-पूजन के बाद वीरासन मुद्रा से एक-हाथ से ही एक बार में बलि का स्फोटन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे हुँ फट्।। बलि स्फोट करे।

पश्चात् नारिकेल के जल से कौशिकी तथा अन्य का तर्पण करे।

तर्पणम्—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे कौशिक्यै नमः रुधिरेण आप्यायताम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे योगिन्यै नमः रुधिरेण आप्यायताम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे डाकिन्यै नमः रुधिरेण आप्यायताम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे चरकयै नमः रुधिरेण आप्यायताम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे विदरिकायै नमः रुधिरेण आप्यायताम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे पापराक्षरयै नमः रुधिरेण आप्यायताम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे पूतनायै नमः रुधिरेण आप्यायताम्।

समर्पण—अनेन बलिदानेन श्रीचण्डिका प्रीयतां न मम।

५८. वटुकादि बलिदान—

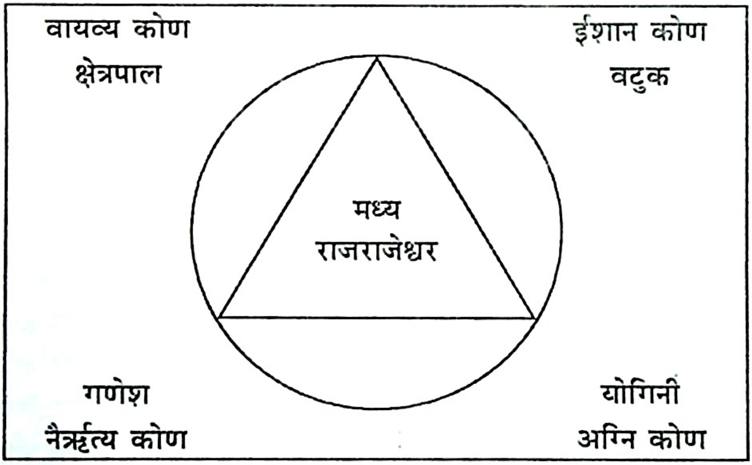

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमेतीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुक-अयने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः

अमुकशर्मा अमुकनामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये श्रीष्टदेवताप्रीतये सार्द्धनवचण्डीपुरश्चरणसिद्धये चतुर्दिक्षु वटुकादिदेवताभ्यो पायषान्नद्रव्यैः पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये।

बिन्दु, त्रिकोण, वृत्त, ईशान, वह्नि, निर्ऋति, वायव्य कोणात्मक चतुरस्र युक्त मण्डल बनाकर क्रम से ईशानकोण में बटुक, अग्निकोण में योगिनी, नैर्ऋत्यकोण में गणेश तथा वायव्य में क्षेत्रपाल का पूजन करके मण्डल से बाहर भूतगणों को बलि प्रदान करे।

वटुकबलिः—**ॐ वँ वटुकबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः।** ईशान कोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ वँ वटुकबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पात्र पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः।

द्रव्य पूजन करके संकल्प करे—**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे एह्येहि देविपुत्र बटुकनाथ कपिल जटाभार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामाश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजा बलिं गृह्ण गृह्ण हूँ फट् स्वाहा।**

प्रार्थनाम्—

ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

पुष्पाञ्जलीम्—

बलिदानेन सन्तुष्टो बटुकः सर्वसिद्धिदः।
शान्तिं करोतु मे नित्यं भूतवेतालसेवितः।।

समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन वटुकः प्रीयतां न मम।**

योगिनी बलि—**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे याँ योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः।** अग्निकोण में मण्डल का पूजन करके बलि पात्र रखे।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे याँ योगिनीबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे

गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पात्र पूजन कर वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे याँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे याँ सर्ववर्णयोगिनीभ्यो सर्वशक्तिभ्यः त्रिनेत्र सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान्कामाश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृह्ण गृह्ण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थनाम्—

ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा,
पाताले वा स्थले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थितो वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठे दिशि च कृतपदा धूपदीपादिकेभ्यः,
प्रीत्या देव्या सदा नः शुभविधिबलिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्या।।

पुष्पाञ्जलीम्—

योगिनी योगमाया च सर्वभैरवमोहिनी।
सर्ववीर्यमहातेजाः सर्वत्र शुभदायिनी।।
या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोर परात्पराः।
द्युतिव्योमभूमिचारी सर्वे प्रीतास्तु मे सदा।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे सर्वेभ्यो योगिनीभ्यो फट्।

समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वयोगिन्यः प्रीयतां न मम।**

गणेश बलिः—**ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे गँ गणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः।**

नैर्ऋत्य कोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे गँ गणेशबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः।

पात्र का पूजन कर वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे गँ गणेशबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः।

द्रव्य-पूजन कर संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे गँ गाँ गीँ गूँ गैँ गौँ गः गणेशाय सर्व-

विघ्नान्नाशय नाशय सर्वान्कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहितं इमां पूजाबलिं गृह्ण गृह्ण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थनाम्—

ॐ ॐ ॐकाररूपं त्र्यहमिति च परं यत्स्वरूपं तुरीयं,
त्रैगुण्यातीतनीलं कलयति मनसस्तेजसिन्दूरमूर्तिम्।
योगीन्द्रैर्ब्रह्मरन्ध्रैः सकलगुणमयं श्रीहरेन्द्रेण सङ्गं,
गं गं गं गं गणेशं गजमुखमभितो व्यापकं चिन्तयन्ति।।

पुष्पाञ्जली—

ॐ गजाननाय पूर्णाय सांख्यरूपमयाय ते।
विदेहेन च सर्वत्र संस्थिताय नमो नमः।।
अमेयाय च हेरम्ब परशुधारकाय ते।
मूषकवाहनायैव विश्वेशाय नमो नमः।।

समर्पणम्—अनेन बलिदानेन गणेशः प्रीयतां न मम।

क्षेत्रपाल बलिः—ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः।

वायव्य कोण में मण्डल का पूजन करके बलि-पात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः।

पात्र का पूजन कर वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे क्षँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः।

द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः क्षेत्रपालाय सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान्कामश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहितं इमां पूजाबलिं गृह्ण गृह्ण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थनाम्—

ॐ यं यं यं यक्षरूपं दश दिशि वदनं भूमिकम्पायमानं,
सं सं संहारमूर्तिशुभमुकुटजटाशेखरं चन्द्रविम्बम्।
दं दं दं दीर्घकायं विकृतनखमुखं चोर्ध्वरोमं करालं,
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्।।

पुष्पाञ्जलीम्—

ॐ यस्मिन्क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालसकिंकरः।
प्रीतोऽयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे।।

समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।**

राजराजेश्वर बलिदानम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः।**

मध्य में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः।

पात्र का पूजन कर वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः।

द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः हसौँ सहौँ राजराजेश्वर! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान्कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहितां इमां पूजाबलिं गृह्ण गृह्ण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थनाम्—

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र,
लोकेश शेषवलय प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां,
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष।।

पुष्पाञ्जलीम्—

गौरीविलासभुवनाय महेश्वराय,
पञ्चाननाय शरणागतरक्षकाय।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।

समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन श्रीराजराजेश्वरः प्रीयतां न मम।**

भूतादि बलिः—**ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे सर्वभूतविघ्नकृद्बलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः।**

पीठ के बाहर मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे सर्वभूतविघ्नकृद्बलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः।

पात्र का पूजन कर वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे सर्वभूतविघ्नकृद्बलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः।

द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान्कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहितां इमां पूजाबलिं गृह्ण गृह्ण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थनाम्—

भूता ये विघ्नकर्तारः दिवि भूम्यन्तरिक्षगाः।
पातालस्थसंस्थाश्च शिवयोगेन भाविता।।
क्रूराद्याः शतसंख्याकाः पाखण्डाद्या व्यवस्थिताः।
ध्रुवाद्याः सत्यसंख्यांश्च इन्द्राद्या व्यवस्थिताः।।
तृप्यन्तु प्रीतिमनसो भूता गृह्णन्त्विमं बलिम्।
नगरे वाऽथ संग्रामे अटव्यां वै सरित्तटे।।
वापीकूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे।
नानारूपधरा ये च बहुरूपधराश्च ये।।
ते सर्वे चैव सन्तुष्टा बलिं गृह्णन्तु मे सदा।।
ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः।
मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये।
भूचरा खेचराश्चैव तथा चैवान्तरक्षगा।।
ते सर्वे प्रीतिमनसाः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम्।

पुष्पाञ्जलीम्—

भूतानि यानीह वसन्ति भूतले,
बलिं गृहीत्वा विधिवत् प्रयुक्तम्।
सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वं,
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु।।

समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः प्रीयतां न मम।**

पुष्पाञ्जली प्रदान करने के बाद हाथ-पैर धोकर, प्राणायामादि करके तब आगे का कार्य करे।

अखण्ड दीप-पूजनम्—

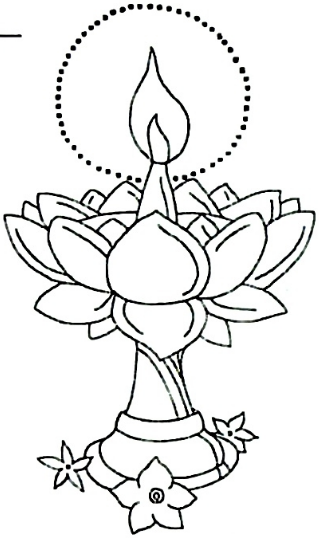

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।। अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।। ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

सुप्रकाशो महादीप्तः सर्वतस्तिमिरापहः।
सबाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे दीपस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाऽक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थनाम्—

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

पुस्तक पूजनम्—

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।। यज्ञं वष्टुधिया वसुः।।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।
या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे वाङ्मयमूर्तिस्वरूपिण्यै सरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

योनिमुद्रा से पुस्तक को प्रणाम करके सद्यः फलप्राप्ति के लिए भैरव शतनाम का न्यास-पाठ अवश्य करे।

श्रीदुगदिवतापूजनं परिपूर्णम्

●

श्रीमहाभैरवपूजनम्

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीमातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, मातृका सरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, विन्दुः कीलकं, श्रीमहाभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

प्राणायामः—

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः। पूरक करे।

ॐ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ नमः। कुम्भक करे।

ॐ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः। रेचक करे।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि।
ॐ गायत्री छन्देभ्यो नमः मुखे।
ॐ सरस्वतीदेवतायै नमः हृदि।
ॐ हल्भ्यो बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयोः।

ॐ विन्दुः कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ सरस्वतीदेवतायै नमः सर्वाङ्गे।

कराङ्गन्यासः—

ॐ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—

ॐ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः।

ॐ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा।

ॐ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्।

ॐ एँ तँ थँ दँ धँ णँ ऐँ कवचाय हुम्।

ॐ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।

चक्रन्यासः—

ॐ लँ नमः चतुर्दलकमलात्मकमूलाधारचक्रः गुह्ये।

ॐ वँ नमः षड्दलकमलात्मकस्वाधिष्ठानचक्रः लिङ्गमूले।

ॐ रँ नमः दशदलकमलात्मकमणिपूरचक्रः नाभौ।

ॐ यँ नमः द्वादशदलकमलात्मक-अनाहतचक्रः हृदये।

ॐ हँ नमः षोडशदलकमलात्मकविशुद्धचक्रः कण्ठे।

ॐ हँ क्षँ नमः द्विदलकमलात्मकआज्ञाचक्रः भ्रूमध्ये।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः सहस्रदलकमलात्मकसहस्रारचक्रः कपाले।

अन्तर्मातृका न्यासः—

ॐ पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्तसुखदो यन्मध्यवक्षःस्थलां,
भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रसकलामापीनतुङ्गस्तनीम् ।
मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं व्याख्यां च हस्ताम्बुजे,
बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये।।

चक्रमातृका न्यासः—

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः धूम्राभे षोडशदले कण्ठे विशुद्धचक्रे।

ॐ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ नमः द्वादशदले प्रवालसन्निभे हृदयोपर्यनाहते।

ॐ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ नमः नीलजीमूतसन्निभे दशदले नाभ्योरुपरि मणिपूरे।

ॐ बँ भँ मँ यँ रँ लँ नमः विद्युत्सन्निभे षड्दले लिङ्गमूले स्वाधिष्ठाने।

ॐ वँ शँ षँ सँ लँ नमः सुवर्णाभे चतुर्दले मूलाधारे।

ॐ हँ क्षँ नमः द्विदले चन्द्राभे भ्रूमध्ये आज्ञायां।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ नमः हिमसन्निभे अनन्तचन्द्राभे सहस्रदले कपाले सहस्रारचक्रे।

सहस्रारे हिमसन्निभे सर्ववर्णविभूषिते।
अकखादित्रिरेखासु आ ल क्ष त्रयभूषिते।।

ॐ परबिन्दुभ्यो नमः सहस्रारे।

मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा से ब्रह्मरन्ध्र तक विन्दुचिदात्मक ब्रह्मस्वरूपिणी कुण्डलिनी शक्ति को अपनी आत्मा में सदाशिव के साथ ध्यान करके उन दोनों के पादतल से टपकते हुए अमृतरस के द्वारा सभी मातृकाओं का तर्पण करके तृप्त करने के बाद मानसोपचार पूजन करे।

आधारे लिङ्गनाभे प्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे,
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के।
वासन्ते बालमध्ये डफकठसहिते कण्ठदेशे स्वराणां,
हं क्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि।।

बहिर्मातृका न्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ आँ नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ कँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ घँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ङँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ टँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ठँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ डँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ढँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ णँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ तँ नमः वामोरौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ पँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ मँ नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ यँ नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ रँ नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ लँ नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ वँ नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ शँ नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ षँ नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सँ नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हँ नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ळँ नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्षँ नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।

भैरवपूजनम्

ध्यान—

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेद हेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

सात्विक ध्यान—

वन्दे वालं स्फटिक सदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी नूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्रभ्यां वटुक सदृशं शूलदण्डोपधानाम्।।

राजस ध्यान—

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डोज्जलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये।।

तामस ध्यान—

वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।

नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत् किङ्किणीनूपुराढ्यम्।।

प्रतिष्ठा—

ॐ मनो॑जूति॑र्ज्जुषता॒माज्ज्य॑स्य॒बृह॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्टंय्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्द॑धातु।। विश्श्वे॑दे॒वास॑ऽइ॒हमा॑दयन्ता॒मो३म्प्रति॑ष्ठ।।

अस्यैः प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाक्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

भैरवाय सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः भैरवाय नमः प्रतिष्ठापनार्थे अक्षतान्निवेदयामि आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः सन्निहिताः वरदाः भव।

षोडशोपचार पूजनम्—

१. ध्यानम्—

ॐ नम॑स्तेरुद्द्रम॒न्न्यव॑ऽउ॒तोत॒ऽअष॑वे नम॑÷।। बा॒हुब्भ्या॑मु॒तते॒ नम॑÷।।

ॐ नमो भैरवरूपाय महाकाल नमो नमः।
नमो भद्रस्वरूपाय जगदाद्य नमोस्तुते।।
नमाः कल्पस्वरूपाय विकल्पाय नमो नमः।
नमाः शुद्धस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

२. आसनम्—

ॐ याते॑रुद्द्रशि॒वातनू॒रघो॒रापा॑पकाशिनी।। तया॑नस्त॒न्न्वा॒शन्त॑मया॒गिरि॑शन्ता॒भिचा॑कशीहि।।

नमः कंकालरूपाय कालरूप नमोस्तुते।
नमस्त्र्यम्बरूपाय महाकालाय ते नमः।।
नमः संसारसाराय शारदाय नमो नमः।
नमो भीषणरूपाय भैरवाय नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

३. पाद्यम्—

ॐ यामि॑षुङ्गिरिशन्त॒हस्त्ते॑बि॒भर्ष्य॑स्त्तवे।। शि॒वाङ्गि॑रित्र॒ताङ्कु॑रु॒माहि॑ꣳसी॒ꣳपुरु॑ष॒ञ्जग॑त्।।

नमः क्षेत्रनिवासाय क्षेत्रपालाय ते नमः।
क्षेत्रक्षेत्रस्वरूपाय क्षेत्रपालाय ते नमः।।

नमो कालविनाशाय भैरवाय नमो नमः।
नमो मतङ्गरूपाय भारतरूपा नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः पाद्योः पाद्यं समर्पयामि।

४. अर्घ्यम्—

ॐ शि॒वेन॒व्वच॑सात्त्वा॒गिरि॒शाच्छा॑व्वदामसि।। यथा॑नु॒ꣳसर्व॒मिज्जग॑दय॒क्ष्मꣳ सु॒मना॒ऽसत्।।

नमः सिद्धस्वरूपाय सिद्धिदाय नमो नमः।
नमः विन्दूस्वरूपाय विन्दूसिन्धुप्रकाशिने।।
नमो मङ्गलरूपाय मङ्गलाय नमो नमः।
नमः सङ्कटनाशाय शङ्कराय नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

५. आचमनम्—

ॐ अद्ध्य॑वोचदधिव॒क्क्ता प्प्र॑थ॒मो दैव्व्यो॑ भि॒षक्।। अही॑श्च॒ सर्वा॑ञ्ज॒म्भय॒न्त्सर्वा॑श्च यातुधा॒न्यो॒ध॒राची॒ꣳपरा॑सुव।।

नमो धर्मस्वरूपाय धर्मदाय नमो नमः।
नमोऽनन्तस्वरूपाय एकरूप नमोऽस्तुते।।
नमो बुद्धिस्वरूपाय वृद्धिकार नमोऽस्तुते।
नमो मोहनरूपाय मोक्षरूपाय ते नमः।।

ॐ भूर्भुवस्वः भैरवाय नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

६. स्नानीयम्—

ॐ अ॒सौयस्ता॒म्म्रोऽअ॑रु॒णऽउ॒तब॒भ्रुः सु॑म॒ङ्गलः॑।। येचै॑नꣳरु॒द्राऽअ॒भितो॑दि॒क्षु श्रि॒ताः स॑हस्र॒शोवै॑षा॒ꣳहेड॑ऽईमहे।।

नमो जलदरूपाय सोमरूप नमोस्तुते।
नमो स्थलस्वरूपाय शुद्धरूपाय ते नमः।।
नमो नीलस्वरूपाय रङ्गरूपाय ते नमः।
नमो मण्डलरूपाय मण्डलाय नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवस्वः भैरवाय नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

७. पुनराचमनीयम्—

ॐ अ॒सौयो॑व॒सर्प्प॑ति॒नील॑ग्ग्रीवो॒विलो॑हितः।। उ॒तैनं॑गो॒पाऽअ॑दृश्रन्नदृ॑श्रन्नुदहा॒र्य्यः॒ सदृ॒ष्टोमृ॑डयातिनः।।

नमो रुद्रस्वरूपाय रुद्रनाथाय ते नमः।
नमो ब्रह्मस्वरूपाय ब्रह्मवक्त्रे नमो नमः।।

नमस्त्रिशूलधाराय धाराधारिन्नमोऽस्तुते।
नमः संसारबीजाय विरूपाय नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भैरवाय नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

८. पयः स्नानम्—

ॐ पय॑÷पृथि॒व्यांपय॒ऽओष॑धीषु॒पयो॑दि॒व्य॒न्तरि॑क्षे॒पयो॑धाः।। पय॑स्वतीःप्प्र॒दिश॑÷ सन्तु॒मह्य॑म्।।

नमो विमलरूपाय भीमरूप नमो नमः।
नमो जङ्गमरूपाय जलरूप नमो नमः।।
नमः कालस्वरूपाय कालरुद्राय ते नमः।
नमो भैरवदेवाय भैरवः प्रणमाम्यऽहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः पयः स्नानं समर्पयामि।

९. दधि स्नाम्—

ॐ द॒धि॒क्राव्णो॑ऽअकारिषंजि॒ष्णोरश्व॑स्यवा॒जिन॑÷।। सु॒र॒भिनो॒मुखा॑कर॒त्प्रण॒ऽ-आयू॑ꣳषितारिषत्।।

नमः शत्रुविनाशाय भीषणाय नमो नमः।
नमः शान्ताय दान्ताय भ्रमरूप नमोऽस्तुते।।
न्यायगम्याय शुद्धाय योगिध्येयाय ते नमः।
नमः कमलकान्ताय कालवृद्धाय ते नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः दधि स्नानं समर्पयामि।

१०. घृत स्नानम्—

ॐ घृ॒तम्मि॑मिक्षेघृ॒तम॑स्य॒योनि॑र्घृ॒तेश्रि॒तोघृ॒तम्व॑स्य॒धाम॑।। अ॒नु॒ष्व॒धमाव॑ह-मा॒दय॑स्व॒ स्वाहा॑कृतंवृषभवक्षिह॒व्यम्।।

नमो ज्योति स्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः।
नमः कल्पस्वरूपाय भैरवः प्रणमाम्यऽहम्।।
नमो जगद्रूपाय जगज्जाड्य निवारिणे।
महाभूतायभूताय भूतानाम्पतये नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः घृत स्नानं समर्पयामि।

११. मधुस्नानम्—

ॐ मधु॒वाता॑ऽऋताय॒तेमधु॑क्षरन्ति॒सिन्ध॑वः।। माद्ध्वी॑र्न्नःस॒न्त्वोष॑धीः।। मधु॒ नक्त॑मु॒तोषसो॒मधु॑म॒त्पार्थि॑वꣳ॒रजः॑।। मधु॒द्यौर॑स्तुनःपि॒ता।। मधु॑मान्नो॒वन॒स्पति॒र्म्मधु॑ माँऽअस्तु॒सूर्य्य॑÷।। माद्ध्वी॒र्ग्गावो॑ भवन्तु नः।।

नमो नन्दायवृन्दाय वादिनेब्रह्मवादिने।
नमो वादस्वरूपाय न्यायप्रियाय ते नमः।।
नमो भवस्वरूपाय मायानिर्माणरूपिणे।
विश्ववन्द्यायवन्द्याय नमो विश्वम्भराय ते।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः मधु स्नानं समर्पयामि।

१२. शर्करा स्नानम्—

ॐ अपाᳪंरसमुद्द्वयसᳩंसूर्य्येसन्तᳩंसमाहितम्।। अपाᳪंरसस्ययोरसस्तंव्वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्।।

नमो नेत्रत्रितयाय नेत्ररूपिन्नमोऽस्तु ते।
नमो वरुणरूपाय भैरवाय नमो नमः।।
नमो यमस्वरूपाय वृद्धरूपाय ते नमः।
नमः कुबेररूपाय कालनाथाय ते नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि।

१३. पञ्चामृत स्नानम्—

ॐ पञ्चनद्य्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः।। सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्।।

नमः ईशानरूपाय अग्निरूपाय ते नमः।
नमो वायुस्वरूपाय विश्वरूपाय ते नमः।।
नमः प्राणस्वरूपाय प्राणाधिपतये नमः।
नमः संहाररूपाय पालकाय नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः मिलित पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।

१४. शुद्धोदक स्नानम्—

ॐ शुद्धवालःसर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतःश्येताक्षोरुणस्तेरुद्राय पशुपतयेकर्ण्णायामाऽअविलिप्तारौद्द्रानभोरूपाःपार्ज्जन्याः।।

नमश्चन्द्रस्वरूपाय चन्द्ररूपाय ते नमः।
नमो मन्दरवासाय वासिने सर्वयोगिनाम्।।
योगिगम्याय योग्याय योगिनां पतये नमः
नमो जङ्गमवासाय वामदेवाय ते नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

१५. वस्त्र निवेदनम्—

ॐ नमोस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्राक्षायमीढुषे।। अथोयेऽअस्यसत्त्वानोहन्तेब्भ्यो करन्नमः।।

नमः शत्रुविनाशाय नीलकण्ठाय ते नमः।
नमो भक्तिविनोदाय दुर्भगाय नमो नमः।।
नमो मान्यस्वरूपाय मानदाय नमो नमः।
नमो भूतिविभूषाय भूषिताय नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।

१६. वस्त्राङ्गाचमनीय जलम्—

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन।। महेरणायचक्षसे।।

नमो रजः स्वरूपाय सात्विकाय नमो नमः।
नमस्तामसरूपाय तारणाय नमो नमः।।
नमो गङ्गाविनोदाय जयसन्धारिणे नमः।
नमो भैरवरूपाय भीषणाय नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

१७. उपवस्त्र निवेदनम्—

ॐ प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयोरात्र्न्योर्ज्ज्याम्।। याश्श्चतेहस्तऽइषवःपराता भगवोव्वप।। ॐ सुजातोज्ज्योतिषासहशर्म्मव्वरूथमासदत्स्वः।। व्वासोअग्ग्नेव्विश्श्वरूपꣳ संव्ययस्वव्विभावसो।।

नमः संग्रामरूपाय संग्रामजयदायिने।
संग्रामसाररूपाय पावनाय नमोऽस्तुते।।
नमो वृद्धिस्वरूपाय वृद्धिदाय नमोऽस्तुते।
नमस्त्रिशूलहस्ताय शूलसंहारिणे नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

१८. उपवस्त्राङ्गाचमनीय जलम्—

ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः।। उशतीरिवमातरः।।

नमोद्वन्दस्वरूपाय रूपदाय नमो नमः।
नमः शत्रुविनाशाय शत्रुबुद्धिविनासिने।।
महाकालाय कालाय कालनाथाय ते नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

१९. यज्ञोपवीत निवेदनम्—

ॐ व्विज्ज्यन्धनुःकपर्द्दिनोव्विशल्ल्योबाणवाँ२।।ऽउत।। अनैशन्नस्ययाऽइषवऽ आभुरस्यनिषङ्गधिः।। ॐ यज्ञोदेवानाम्प्रत्त्येतिसुम्म्नमादित्त्यासोभवतामृडयन्तः।। आवोर्व्वाचीसुमतिर्व्ववृत्त्यादꣳहोश्श्चिद्याव्वरिवोवित्तरासदादित्त्येब्भ्यस्त्त्वा।।

नमः शुभस्वरूपाय शम्भूरूपिन्नमोऽस्तुते।
नमः कमलहस्ताय डमरुहस्ताय ते नमः।।
नमः कुक्कुरवाहाय वहनाय नमो नमः।
नमो विमलनेत्राय त्रिनेत्राय नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

२०. यज्ञोपवीताङ्गाचमनीय जलम्—

ॐ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ।। आपोजनयथा च नः।।

नमः संसाररूपाय सारमेयाय वाहिने।
संसारज्ञानरूपाय ज्ञाननाथाय ते नमः।।
नमो मङ्गलरूपाय मङ्गलाय नमो नमः।
नमो न्यायविशालाय मन्त्ररूपाय ते नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

२१. सुगन्धि द्रव्य समर्पणम्—

ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।। त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मा दमुच्च्यत।।

नमो यन्त्रस्वरूपाय यन्त्रधारिन्नमोऽस्तु ते।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।।
नमः कलङ्करूपाय कलङ्काय नमो नमः।
नमः संसारपाराय भैरवाय नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

२२. अक्षत समर्पणम्—

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत।। अस्तोषतस्वभानवोविप्प्रानविष्ठयामती योजान्विन्द्रतेहरी।।

रुण्डमालाविभूषाय भीषणाय नमो नमः।
नमो दुःखनिवाराय विहाराय नमो नमः।।
नमो दण्डस्वरूपाय क्षणरूपाय ते नमः।
नमो मुहूर्तरूपाय सर्वरूपाय ते नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

२३. पुष्पमाला समर्पणम्—

ॐ ओषधीःप्प्रतिमोदध्वंपुष्प्पवतीःप्प्रसूवरीः।। अश्वाऽइवसजित्त्वरीर्वीरुधःपारयिष्ण्णवः।।

नमो मोदस्वरूपाय श्रोत्ररूपाय ते नमः।
नमो नक्षत्ररूपाय क्षेत्ररूपाय ते नमः।।
नमो विष्णुस्वरूपाय बिन्दुरूपाय ते नमः।
नमो ब्रह्मस्वरूपाय ब्रह्मचारिन्नमोऽस्तु ते।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

२४. दूर्वा समर्पणम्—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषष्परि।। एवानोदूर्वेप्प्रतनुसहस्रेणशतेनच।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नमः कन्थानिवासाय पटवासाय ते नमः।
नमो ज्वलनरूपाय ज्वलनाय नमो नमः।।
नमो बटुकरूपाय धूर्तरूपाय ते नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।।

२५. नानापरिमल द्रव्य समर्पणम्—

ॐ अहिरिवभोगैःपर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिंप्परिबाधमानः।। हस्तघ्नोविश्श्वावयुनानि विद्वान्पुमान्पुमांसंपरिपातुविश्वतः।।

नमो वैद्यस्वरूपाय वैद्यरूपिन्नमोऽस्तु ते।
नम औषधरूपाय औषधाय नमो नमः।।
नमो व्याधिनिवाराय व्याधिरूपिन्नमोऽस्तु ते।
नमो द्वारनिवासाय ज्वररूपाय ते नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि।

२६. सिन्दूर समर्पणम्—

ॐ सिन्धोरिवप्राद्ध्वनेशूघनासोवातप्प्रमियःपतयन्तियह्वाः।। घृतस्यधाराऽअरुषो नवाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिःपिन्वमानः।।

नमो रुद्रस्वरूपाय रुद्राणां पतये नमः।
विरूपाक्षाय देवाय भैरवाय नमो नमः।।
नमो ग्रहस्वरूपाय ग्रहाणां पतये नमः।
नमः पवित्रधाराय पर्शुधाराय ते नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य।

२७. धूप समर्पणम्—

ॐ यातेहेतिम्मीढुष्टमहस्तेबभूवते धनुः।। तयास्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मयापरि

भुज।। ॐ धूरसिधूर्व्वधूर्व्वन्तंय्योऽस्मान्धूर्व्वतितंधूर्व्वयंव्वयंधूर्व्वामः।। देवानामसिव्वह्नितमꣳ सस्नितमंपप्रितमंजुष्ट्टतमंदेवहूतमम्।।

यज्ञोपवीतदेवाय देवदेव नमोऽस्तुते।
नमो यज्ञस्वरूपाय यज्ञानां फलदायिने।।
नमो गणेशरूपाय गणरूपाय ते नमः।
नमो रश्मिस्वरूपाय रश्मिरूपाय ते नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः धूपं समर्पयामि।

२८. दीप समर्पणम्—

ॐ परिंतेधन्न्वनोहेतिरस्म्मान्न्वृमक्तुविश्श्वतः।। अथोयऽइषुधिस्त्तवारेऽअस्म्मन्निधेंहितम्।। ॐ अग्ग्निज्ज्योतिज्ज्योतिरग्ग्निः स्वाहासूर्य्योज्ज्योतिज्ज्योतिःसूर्य्यःस्वाहा।। अग्ग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहासूर्य्योव्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहा।। ज्ज्योतिःसूर्य्यःसूर्य्यो ज्ज्योतिःस्वाहा।।

नमो विभक्तिरूपाय विमलाय नमो नमः।
नमो मधुररूपाय माधिपूर्णकलापिने।।
कालेश्वराय कालाय कालनाथाय ते नमः।
नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

२९. नैवेद्य समर्पणम्—

ॐ अवतत्त्यधनुष्ट्वꣳसहस्स्राक्षशतेषुधे।। निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखाशिवोनःसुमना भव।। ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्म्मिणः।। प्रप्रदातारंतारिषऊर्ज्जन्नोधेहि द्विपदेचतुष्पदे।।

नमो योनिस्वरूपाय मातृरूपाय ते नमः।
नमो भगिनीरूपाय भैरवाय नमो नमः।।
नमो वृषस्वरूपाय कर्मरूपाय ते नमः।
नमो वेदान्तवेद्याय वेदसिद्धान्तसारिणे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

३०. करोद्वर्तन समर्पणम्—

ॐ अꣳशुनातेअꣳशुःपृच्च्यतांपरुषापरुः।। गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽअच्च्युतः।।

नमः शाखाप्रकाशाय पुरुषाय नमो नमः।
नमः प्रकृतिरूपाय भैरवाय नमो नमः।।

नमो विश्वस्वरूपाय शिवरूपाय ते नमः।
नमो ज्योतिः स्वरूपाय निर्गुणाय नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

३१. ताम्बूलादि समर्पणम्—

ॐ नमस्त्तुऽआयुधायानाततायधृष्ण्णवे।। उभाब्भ्यामुततेनमोबाहुब्भ्यान्तवधन्न्वने।।

निरञ्जनाय शान्ताय निर्विकाराय ते नमः।
निर्ममाय विमोहाय विश्वनाथाय ते नमः।।
नमः कण्ठप्रकाशाय शत्रुनाथाय ते नमः।
नमः आशाप्रकाशाय आशापूरकृते नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गिफलएलालवङ्गादिसहितं ताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

३२. फलदि समर्पणम्—

ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्पायाश्चपुष्प्पिणीः।। बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानो मुञ्चत्वꣳहसः।।

नमो मत्स्यस्वरूपाय योगरूपाय ते नमः।
नमो वाराहरूपाय वामनाय नमो नमः।।
नम आनन्दरूपाय आनन्दाय नमो नमः।
नमोऽस्त्वर्घकेशाय ज्वलत्केशाय ते नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः ऋतुकालोद्भव फलानि समर्पयामि।

३३. दक्षिणा समर्पणम्—

ॐ हिरण्ण्यगर्ब्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत्। सदाधारपृथिवीद्या मुतेमांकस्म्मैदेवायहविषाविधेम्।।

नमः पापविमोक्षाय मोक्षाय च नमो नमः।
नमः कैलाशनाथाय कालनाथाय ते नमः।।
नमो बिन्दुदबिन्दाय बिन्दुभाय नमो नमः।
नमः प्रणवरूपाय भैरवाय नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः कृतायाः पूजायाः साद् गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

३४. निराजन समर्पणम्—

ॐ आरात्रिपार्थ्थिवꣳरजःपितुरप्प्रायिधामभिः।। दिवःसदाꣳसिबृहतीवितिष्ठसऽ आत्त्वेषंव्वर्त्ततेतमः।। ॐ इदꣳहविःप्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्व्वगणꣳ-

स्वस्तयें।। आत्क्मसनिंप्प्रजासनिंपशुसनिंलोकसन्न्यभयसनिं।। अग्ग्निश्प्प्रजांबहुलांमैंकरोत्वन्नं पयोरेतोंऽअस्म्मासुधत्त।।

नमो मेरुनिवासाय रक्तवासाय ते नमः।
नमः मेरुस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः।।
नमो भद्रस्वरूपाय भद्ररूपाय ते नमः।
नमो योगिस्वरूपाय योगिनां पतये नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

३५. पुष्पाञ्जलि समर्पणम्—

ॐ मानंस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषꣳ।। मानोंवीरान्रुद्र भामिनोंवधीर्हविष्म्मन्तꣳसदमित्त्वाहवामहे।।

नमो मन्त्रस्वरूपाय मित्ररूपाय ते यनमः।
नमो ब्रह्मनिवासाय काशीनाथाय ते नमः।।
नमो ब्रह्माण्डवासाय ब्रह्मवासाय ते नमः।
नमो मातङ्गवासाय सूक्ष्मवासाय ते नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलीं समर्पयामि।

३६. परिक्रमा समर्पणम्—

ॐ मानोंमहान्तमुतमानोंऽअर्ब्भकम्मानऽउक्क्षन्तमुतमानऽउक्क्षितम्।। मानोंवधीꣳ पितरम्मोतमातरम्मानंःप्प्रियास्तन्न्वोरुद्द्ररीरिषꣳ।।

नमो मातृनिवासाय भ्रातवासाय ते नमः।
नमो जगन्निवासाय जलशायिने ते नमः।।
नमः कौलनिवासाय नेत्रवासाय ते नमः।
नमो भैरवनाथाय भैरवाय नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत्, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करें।

३७. विशेषार्घ्य समर्पणम्—

नमः समुद्रवासाय वह्निवासाय ते नमः।
नमश्चन्द्रनिवासाय चन्दाधाराय ते नमः।।
नमः कर्पूरवासाय सिद्धिवासाय ते नमः।
नमः सुन्दरवासाय सिद्धिदायी नमोऽस्तु ते।।
देव देव जगन्नाथ कृपासिन्धु नमोस्तुते।
सर्वकल्याण प्राप्ताय विशेषार्घ्यं ददामि ते।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भैरवाय नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

३८. पूजन समर्पणम्—

नमः आकाशरूपाय वासिने सर्वयोगिनाम्।
नमो ब्राह्मणवासिने चातुर्वण्य नमोऽस्तु ते।।
नमोऽहङ्काररूपाय रजोरूपाय ते नमः।
नमः सत्त्वस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः अनयापूजया भैरवदेवताः प्रीयन्तान्नमम् ।।

विनियोगः—अस्य श्रीवटुकभैरव अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रमन्त्रस्य बृहदारण्यकऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीभैरवो देवता, कं बीजं, ह्रीँ शक्तिः, क्लीं कीलकं ममेष्टसिद्धये न्यासे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—भैरवऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्रीमहाभैरवाय नमः हृदये। वं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं वटुकाय शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ। श्रीभैरवाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—ह्रां वां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं वीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं वूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं वैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं वौ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—ह्रां वां हृदयाय नमः। ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं वूं शिखायै वषट्। ह्रैं वैं कवचाय हुम्। ह्रौं वौ नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः वः अस्त्राय फट् नमः।

नामावली न्यासः—

ॐ ह्रीँ अँ भैरवभूतनाथाभ्यां नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ आँ भूतात्माभूतभावनाथाभ्यां नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ इँ क्षेत्रज्ञक्षेत्रपालाभ्यां नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ ईँ क्षेत्रदक्षत्रियोविराड्भ्यो नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ उँ श्मशानवासीमांसाशीभ्यां नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ ऊँ खर्पराशीस्मरान्तकाभ्यां नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ ऋँ रक्तपपानपाभ्यां नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ ॠँ सिद्धसिद्धिदसिद्धसेवितेभ्यो नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ लृँ कङ्कलकालशमनाभ्यां नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ ॡँ कलाकाष्ठातनुकविभ्यां नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ एँ त्रिनेत्रोबहुनेत्रपिङ्गललोचनेभ्यो नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ ऐँ नमः शूलपाणिखड्गपाणिभ्यां अधरोष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ओँ कङ्कलीधूम्रलोचनाभ्यां नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ औँ अभिरुभैरविनाथाभ्यां नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अँ भूतपोयोगिनीपतिभ्यां नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अः धनदोऽधनहारीभ्यां नमः कण्ठे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ कँ धनवानप्रतिभानवानाभ्यां नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ खँ नागहारोनागपाशेभ्यो नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ गँ व्योमकेशकपालभृद्भ्यां नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ घँ कालकपालमालीभ्यां नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ङँ कमनीयकलानिधीभ्यां नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ चँ त्रिलोचनोज्वलनेत्राभ्यां नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ छँ त्रिशिखित्रिलोकपाभ्यां नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ जँ त्रिनेत्रतनयडिम्भशान्तशान्तजनप्रियेभ्यो नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ झँ वटुकबहुभेषखट्वाङ्गवरधारकेभ्यो नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ञँ भूताध्यक्षपशुपतिभ्यां नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ टँ भिक्षुकपरिचारकेभ्यो नमः दक्षोरौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ठँ धूर्तदिगम्बराभ्यां नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ डँ शौरिहरिणाभ्यां नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ढँ पाण्डुलोचनप्रशान्ताभ्यां नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ णँ शान्तिदशुद्धाभ्यां नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ तँ शङ्करप्रियबान्धवाष्टमूर्तिभ्यां नमः वामोरौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ थँ निधीशज्ञानचक्षुतपोमयाभ्यां नमः वामजानुनि न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ दँ अष्टाधारषडाधाराभ्यां नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ धँ सर्पयुक्तशिखीसखाभ्यां नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ नँ भूधरभूधराधीशाभ्यां नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ पँ भूपतिभूधरात्मजाभ्यां नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ फँ कङ्कालधारीमुण्डीभ्यां नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ बँ नागयज्ञोपवीतकज्जृम्भणाभ्यां नमः पृष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ भँ मोहनस्तम्भाभ्यां नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ मँ मारणक्षोभणाभ्यां नमः उदरे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ यँ शुद्धनीलांजनप्रख्यदैत्यहाभ्यां नमः हृदये न्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ रँ मुण्डभूषितबलिभुग्बलिभुङ्नाथाभ्यां नमः दक्षांसे न्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ लँ अबालबालपराक्रमसर्वापत्तारणाभ्यां नमः ककुदि न्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ वँ दुर्गदुष्टभूतनिषेविताभ्यां नमः वामांसे न्यस्यामि।

ॐ ह्रौँशँ कामीकलानिधिकान्तेभ्यो नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ षँ कामिनीवशकृद्वशीभ्यां नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ सँ जगद्रक्षाकराऽनन्ताभ्यां नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ हँ मायामन्त्रौषधीमयसर्वसिद्धिप्रदेभ्यो नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ लँ परमात्मने नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ क्षँ वैद्यप्रभुर्विष्णुभ्यां नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।

ध्यानम्—

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

सात्त्विकध्यानम्—

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणीनूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानाभ्।।

राजसध्यानम्—

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डोज्ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये।।

तामसध्यानम्—

वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथ सृणिं खड्गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत् किङ्किणीनूपुराढ्यम्।।

शापविमोचनम्—ॐ ह्रौं वटुकं शापं विमोचय विमोचय ह्रीं क्लीं।

मालाप्रार्थना--२१ बार जप करने के बाद माला की प्रार्थना करे।

महामाले महामाये! सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।

अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

जपमन्त्र—**ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।**

एक माला जप करके माला प्रार्थना कर यथा स्थान माला रखे—

त्वं माले! सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे! यशोवीर्यञ्च देहि मे।।

जप श्रीभैरव को समर्पित करे—**अनेन श्रीवटुकभैरवमन्त्रजपाख्येन कर्मणा श्रीवटुकभैरवः प्रीयताम्।**

समर्पण के बाद स्तोत्रपाठ करे—

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभीरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखिश्च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः शङ्करः प्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिः निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।

अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनः प्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ।।१४।।

पाठ करने के बाद श्रीभैरव को पाठ समर्पित करे—**अनेन पाठाख्येन श्रीभैरवः प्रीयताम्।**

भैरव शतनाम पाठ के बाद समस्त पाठकर्ता ब्राह्मण आत्मशोधन के लिए त्रिराचमन कर सप्तशती महास्तोत्र पाठ के लिए संकल्प करें।

●

सप्तशतीपाठविधिः

तत्त्वशोधनम्—

ॐ ऐँ आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीँ विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ क्लीँ शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्‌भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे** (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) **विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुक ऋतौ महामाङ्गल्यप्रद- मासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मानामाऽहं अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामकयजमानस्य दुःखदारि-**

क्र्यदौर्भाग्यादिसकलदोषपरिहारार्थं जन्मकुण्डल्यां, चन्द्रकुण्डल्यां, भावकुण्डल्यां ये केचन चतुर्थाष्टमषष्ठद्वादशस्थानस्थितसमस्तग्रहजन्यसकलाशुभदृष्टिसमस्तदुःखनिवृत्तिपूर्वक सकलानिष्टयोगेन शरीरे व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च समस्तविघ्नानां दुःखानां शरीरस्थितकष्टानां ज्वरादिपीड़ादीनाञ्च निवृत्त्यर्थं त्रिविधतापोपशमनार्थं भूतप्रेतपिशाचडाकिन्यादिकृतसर्वेषामन्यानां कृतयन्त्रमन्त्रतन्त्रादिकृतसमस्ताभिचारादीनाञ्च अस्मद्गृहे वास्त्वादिदोषानां सद्यःसमाप्तिपूर्वकं दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यवंशाभिवृद्धिसमस्तसुखसौभाग्यादिप्राप्त्यर्थं सकलकामनापरिपूर्तिपूर्वकसकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिणीश्रीदुर्गादेवताप्रीत्यर्थं सार्द्धनवचण्डीपुरश्चरणविहितसंख्यापूर्तये श्रीदुर्गासप्तशतीमहास्तोत्रस्य पाठमेकावृत्तिं करिष्ये।

संकल्प करने के बाद श्रीदुर्गासप्तशती महास्तोत्र का शाप-विमोचन करने के बाद उत्कीलन कर उसके बाद संजीवन की क्रिया अवश्य करे, जिससे दुर्गा की पूर्ण कृपा प्राप्त हो सके तथा उपासक के समस्त कामनाओं की पूर्ति हो सके।

शापविमोचनम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा।** मन्त्र का पाठ के आदि और अन्त में इक्कीस बार जप करके उत्कीलन करे।

उत्कीलनम्—**ॐ श्रीँ क्लीँ ह्रीँ ऐँ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः सप्तशतीचण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।** मन्त्र का पाठ के आदि और अन्त में इक्कीस बार जप करके संजीवन करे।

संजीवनम्—**ॐ श्रीँ वँ श्रीँ क्लीँ वँ क्लीँ ह्रीँ वँ ह्रीँ ऐँ वँ ऐँ क्रीँ वँ क्रीँ वँ क्रूँ वँ क्रैँ वँ क्रौँ वँ क्रः मृतसंजीवनीविद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्राँ वँ क्रीँ वँ क्रूँ वँ क्रैँ वँ क्रौँ वँ क्रः ऐँ वँ ऐँ ह्रीँ वँ ह्रीँ क्लीँ वँ क्लीँ श्रीँ वँ श्रीँ ॐ स्वाहा।** मन्त्र का पाठ के आदि और अन्त में इक्कीस बार जप करके रुद्रयामलोक्त शाप-विमोचन पाठ करे।

रुद्रयामलोक्त शाप-विमोचन—

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीचण्डिकाया ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र ऋषिः श्रीदुर्गादेवता ऐँ बीजं ह्रीँ शक्तिः क्लीँ कीलकं त्रिगुणात्मस्वरूपचण्डिकाशापविमुक्त्यर्थे जपे विनियोगः।**

ॐ ह्रीँ रेतः-स्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।१।।
ॐ श्रीँ बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुरनाशिन्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।२।।

ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै शुम्भनिशुम्भघातिन्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।३।।
ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।४।।
ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।५।।
ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।६।।
ॐ तृं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।७।।
ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।८।।
ॐ जां जातिस्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।९।।
ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।१०।।
ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।११।।
ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफलदात्र्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।१२।।
ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।१३।।
ॐ मां मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमसहितायै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।१४।।
ॐ ह्रीँ श्रीँ दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।१५।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः शिवायै अभेद्यकवचस्वरूपिण्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।१६।।
ॐ क्रीँ काल्यै ह्रीँ फट् स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।१७।।
ॐ ऐँह्रीँक्लीँ महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।।१८।।

इत्येवं हि महामन्त्रान्पठित्वा परमेश्वरः।
चण्डिपाठं दिवा रात्रौ कुर्यादेव न संशयः।।१९।।
एवं मन्त्रं न जानाति चण्डिपाठं करोति यः।
आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशयः।।२०।।

इसके बाद कवच का पाठ करे।

शापविमोचनं परिपूर्णम्

●

श्रीचण्डिकाकवचम्

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्माऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, चामुण्डा देवता, ऐँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, क्लीँ कीलकं श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशती-पाठाङ्गत्वेन पाठे विनियोगः।**

ॐ नमश्चण्डिकायै।।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद् गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह।।१।।

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने।।२।।
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।।३।।
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्।।४।।
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गा प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना।।५।।
अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः।।६।।
न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि।।७।।

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः।।८।।
प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना।।९।।
माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया।।१०।।
श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता।।११।।
इत्येता मातरः सर्वा सर्वयोगसमन्विताः।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः।।१२।।
दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम्।।१३।।
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्।।१४।।
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै।।१५।।
नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि।।१६।।
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता।।१७।।
दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी।।१८।।
उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा।।१९।।
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः।।२०।।
अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता।।२१।।
मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके।।२२।।
शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शाङ्करी।।२३।।

नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती।।२४।।
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके।।२५।।
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमंगला।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरा।।२६।।
नीलग्रीवा बहिः कण्ठे नलिकां नलकूबरी।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी।।२७।।
हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी।।२८।।
स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी।।२९।।
नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी।।३०।।
कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी।
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी।।३१।।
गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी।
पादाङ्गुलीषु श्रीरक्षेत्पादाधस्तलवासिनी।।३२।।
नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा।।३३।।
रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी।।३४।।
पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसन्धिषु।।३५।।
शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षच्छायां छत्रेश्वरी तथा।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी।।३६।।
प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना।।३७।।
रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा।।३८।।
आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।
यशस्कीर्तिञ्च लक्ष्मीञ्च धनं विद्याञ्च चक्रिणी।।३९।।

गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मी भार्यां रक्षतु भैरवी।।४०।।
पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता।।४१।।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी।।४२।।
पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति।।४३।।
तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।।४४।।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्।
निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः।।४५।।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्।
इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्।।४६।।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः।
दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः।।४७।।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः।
नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः।।४८।।
स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम्।
अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले।।४९।।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः।
सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा।।५०।।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः।
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः।।५१।।
ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः।
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते।।५२।।
मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम्।
यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले।।५३।।
जपेत्सप्तशती चण्डी कृत्वा तु कवचं पुरा।
यावद् भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम्।।५४।।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी।
देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्।।५५।।

प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः।
लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ॐ॥५६॥

श्रीचण्डीकवचपाठं श्रीचण्डिकार्पणमस्तु

◆

श्रीचण्डिका-अर्गलास्तोत्रम्

विनियोग—**ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता ऐँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, क्लीँ कीलकं श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन पाठे विनियोगः।**

ॐ नमश्चण्डिकायै॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ति मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥१॥
जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते॥२॥
मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥३॥
महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥४॥
रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥५॥
शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥६॥
वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥७॥
अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥८॥
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥९॥
स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१०॥

चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।११।।
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१२।।
विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१३।।
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१४।।
सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१५।।
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१६।।
प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१७।।
चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१८।।
कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१९।।
हिमाचलसुतानाथ संस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।२०।।
इन्द्राणिपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।२१।।
देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।२२।।
देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।२३।।
पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।।२४।।
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः।
स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम्।।२५।।

श्रीचण्डी अर्गलापाठं श्रीचण्डिकार्पणमस्तु

श्रीचण्डिका-कीलकस्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीकीलकस्तोत्रमन्त्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीमहासरस्वतीदेवता ऐँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, क्लीँ कीलकं श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन पाठे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै।।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदी दिव्यचक्षुषे।
श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे।।१।।
सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामभिकीलकम् ।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः।।२।।
सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि।
एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्ध्यति।।३।।
न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते।
विना जाप्येन सिद्ध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम्।।४।।
समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोकशङ्कामिमां हरः।
कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम्।।५।।
स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः।
समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम्।।६।।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेवं न संशयः।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टाभ्यां वा समाहितः।।७।।
ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति।
इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम्।।८।।
यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम्।
स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः।।९।।
न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते।
नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात्।।१०।।
ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति।
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः।।११।।
सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने।
तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम्।।१२।।
शनैस्तु जाप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत्।।१३।।

ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः।
शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः।।१४।।

श्रीचण्डी अर्गलापाठं श्रीचण्डिकार्पणमस्तु

●

नवार्णजपविधिः

विनियोगः—अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, ऐँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, क्लीँ कीलकं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे न्यासे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि।
ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे।
ॐ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि।
ॐ ऐँ बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः।
ॐ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ।
ॐ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—

ॐ ऐँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ क्लीँ मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यासः—

ॐ ऐँ हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा।
ॐ क्लीँ शिखायै वषट्।
ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्।

ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यासः—
ॐ ऐँ नमः शिखायाम्।
ॐ ह्रीँ नमः दक्षिणनेत्रे।
ॐ क्लीँ नमः वामनेत्रे।
ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे।
ॐ मुं नमः वामकर्णे।
ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे।
ॐ यैं नमः वामनासापुटे।
ॐ विं नमः मुखे।
ॐ च्चें नमः गुह्ये।

दिग्न्यासः—
ॐ ऐँ प्राच्यै नमः।
ॐ ऐँ आग्नेयाय नमः।
ॐ ह्रीँ दक्षिणायै नमः।
ॐ ह्रीँ नैर्ऋत्यै नमः।
ॐ क्लीँ प्रतीच्यै नमः।
ॐ क्लीँ वायव्यै नमः।
ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः।
ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै ऊर्ध्वायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्—

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजां हन्तुं मधुं कैटभम्।।१।।
अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्मजलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।२।।

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुशले चक्रं धनुः सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।३।।

मालापूजनम्—**ॐ ऐं अक्षमालिकायै नमः।**

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।१।।
अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले तु सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।२।।

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे स्वाहा। १०८ बार जप करे।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

जप देवी के दक्षिण हाथ में निवेदित करे।

सप्तशतीन्यास

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीप्रथममध्यमोत्तमचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, रक्तदन्तिका दुर्गा भ्रामयोः बीजानि, नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः, अग्निवायुसूर्यस्तत्त्वानि, ऋग्यजुस्सामवेदाः ध्यानानि, सकलकामनासिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

कराङ्गन्यासः—

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।।
अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।
तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।
मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।।
अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।
कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।
करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यासः—

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।।
हृदयाय नमः।

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।
शिरसे स्वाहा।

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।
शिखायै वषट्।

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।।
कवचाय हुम्।

ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।
नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।
अस्त्राय फट्।

ध्यानम्—

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां,
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।

हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं,
बिभ्रणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

तन्त्रोक्त रात्रिसूक्तम्—

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः।।१।।

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।।२।।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।।३।।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।।४।।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।।५।।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।।६।।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।।७।।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।।८।।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डी परिघायुधा।।९।।
सौम्यासौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।।१०।।
यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।।११।।
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।।१२।।
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।।१३।।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।।१४।।

प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ।।१५।।

रात्रिसूक्तपाठं श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

◆

अथ श्रीदुर्गासप्तशती प्रथमोध्याय:

विनियोग:—ॐ अस्य श्रीप्रथमचरित्रस्य ब्रह्माऋषि:, महाकाली देवता, गायत्री छन्द:, नन्दा शक्ति:, रक्तदन्तिका बीजं, अग्निस्तत्त्वम्, ऋग्वेद: स्वरूपम्, श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे प्रथमचरित्रपाठे विनियोग:।

महाकाली के चतु:षष्टि योगिनियों का पाठ करे।

महाकाल्याश्चतु:षष्टि योगिन्य:—

जया च विजया चैव जयन्ती चापराजिता।
दिव्यापूर्वायोगिनी च महापूर्वाथ योगिनी।।१।।
सिद्धपूर्वा योगिनी च ततस्त्वथ गणेश्वरी।
प्रेताशी डाकिनी चाथ कमला तु ततो मता।।२।।
कालरात्रि तत: प्रोक्ता ततष्टंकारिणी मता।
रौद्री चैवाऽथ वेताली हूँकारी ऊर्ध्वकेशिनी।।३।।
विरूपाक्षी च शुष्काङ्गी ततस्तु नरभोजिनी।
फेट्कारी चोरचन्द्री च धूम्राक्षी कलहप्रिया।।४।।
राक्षसी घोररक्ताक्षी विश्वरूपी भयंकरी।
चण्ड्यन्ता चण्डमारी वाराही मुण्डधारिणी।।५।।
भैरवी तत: ऊर्ध्वाक्षी दुर्मुखी प्रेतवाहिनी।
खट्वाङ्गी चैव लम्बोष्ठी मालिनी मतियोगिनी।।६।।
काली रक्ता च कंकाली ततस्तु भुवनेश्वरी।
त्रोटकी च महामारी यमदूती करालिनी।।७।।
केशिनी मेदिनी चैव रोमगङ्गाप्रवाहिनी।
विडाली चैव कान्तिश्च लोली चाथ जया स्मृता।।८।।
अधोमुखी तत: प्रोक्ता ततश्चण्डोग्रधारिणी।
व्याघ्री तत: कांक्षिणी च ततस्तु प्रेतभक्षिणी।।९।।
धूर्जटी विकटा चैव घोरा चाथ कपालिनी।
विषलम्बिनी तत: प्रोक्ता योगिन्य: सक्रमा इमा:।।१०।।

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे—

ॐ ह्रीं भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्कांली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौपधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीं ॐ।।१४।।

महाकाली ध्यानम्—

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।

नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ ऐँ मार्कण्डेय उवाच।।१।।

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।
निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम।।२।।
महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः।
स बभूव महाभाग सावर्णिस्तनयो रवेः।।३।।
स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः।
सुरथो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले।।४।।
तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान्।
बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा।।५।।
तस्य तैरभवद् युद्धमतिप्रबलदण्डिनः।
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः।।६।।
ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत्।
आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः।।७।।
अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः।
कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः।।८।।
ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः।
एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम्।।९।।
स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः।
प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम्।।१०।।
तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः।
इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे।।११।।
सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः।
मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत्।।१२।।
मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा।
न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः।।१३।।
मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते।
ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः।।१४।।
अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्।
असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम्।।१५।।

संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति।
एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः।।६।।
तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः।
स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः।।७।।
सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम्।।१८।।
प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम्।।१९।।

वैश्य उवाच।।२०।।

समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले।।२१।।
पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः।
विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम्।।२२।।
वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः।
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम्।।२३।।
प्रवृत्तिं स्वजनानाञ्च दाराणां चात्र संस्थितः।
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम्।।२४।।
कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः।।२५।।

राजोवाच।।२६।।

यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः।।२७।।
तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम्।।२८।।

वैश्य उवाच।।२९

एवमेतद्यथा प्राह भवा वचः।।३०।।
किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः।
यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः।।३१।।
पतिस्वजनहार्दं च हार्दितेष्वेव मे मनः।
किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते।।३२।।
यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु।
तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते।।३३।।
करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम्।।३४।।

मार्कण्डेय उवाच।।३५।।

ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ।।३६।।

समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः।
कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम्।।३७।।
उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ।।३८।।

राजोवाच।।३९।।

भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत्।।४०।।
दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना।
ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि।।४१।।
जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम।
अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः।।४२।।
स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति।
एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ।।४३।।
दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ।
तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि।।४४।।
ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता।।४५।।

ऋषिरुवाच।।४६।।

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे।।४७।।
विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक् पृथक्।
दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे।।४८।।
केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः।
ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किन्तु ते न हि केवलम्।।४९।।
यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः।
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम्।।५०।।
मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः।
ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान्पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु।।५१।।
कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा।
मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति।।५२।।
लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान्किं न पश्यसि।
तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्ते निपातिताः।।५३।।
महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा।
तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः।।५४।।
महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत्।
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।।५५।।

बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।
तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम्।।५६।।
सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।
सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी।।५७।।
संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी।।५८।।

राजोवाच।।५९।।

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान्।।६०।।
ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज।
यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा।।६१।।
तत्सर्व श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदांवर।।६२।।

ऋषिरुवाच।।६३।।

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम्।।६४।।
तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम।
देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा।।६५।।
उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते।
योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते।।६६।।
आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान् प्रभुः।
तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ।।६७।।
विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ।
स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः।।६८।।
दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम्।
तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः।।६९।।
विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम्।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।।७०।।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः।।७१।।

ब्रह्मोवाच।।७२।।

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।।७३।।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।
अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।।७४।।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।।७५।।

त्वयैतत्पाल्यते देवि! त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।।७६।।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।।७७।।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।।७८।।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरीस्त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।।७९।।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।।८०।।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।
सौम्यासौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।।८१।।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।
यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।।८२।।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे सदा।
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।।८३।।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।।८४।।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत्।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।।८५।।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।।८६।।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ।।८७।।

ऋषिरुवाच।।८८।।

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा।।८९।।
विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ।
नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः।।९०।।
निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः।
उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः।।९१।।
एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ।
मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ।।९२।।

क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ।
समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः।।९३।।
पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः।
तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमाहितौ।।९४।।
उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम्।।९५।।

श्रीभगवानुवाच।।९६।।

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि।।९७।।
किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम।।९८।।

ऋषिरुवाच।।९९।।

वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत्।।१००।।
विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवन् कमलेक्षणः।
आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता।।१०१।।

ऋषिरुवाच।।१०२।।

तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता।
कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः।।१०३।।
एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्।
प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ऐँ ॐ।।१०४।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

अथ श्रीदुर्गासप्तशती द्वितीयोऽध्यायः

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीमध्यमचरित्रस्य विष्णुऋषिः, महालक्ष्मीर्देवता, उष्णिक् छन्दः, शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजम्, वायुस्तत्त्वम्, यजुर्वेदस्वरूपम्, श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मध्यमचरित्रपाठे विनियोगः।

महालक्ष्म्याश्चतुःषष्टियोगिन्यः—

दक्षकर्णा राक्षसी च क्षयन्ती च तथा पुनः।
छाया क्षया पिङ्गलाक्षी अक्षया नाशिनी तथा।।१।।
इला इलावती चैव लया लीना तथा मता।
लङ्का लङ्केश्वरी चैव लरसा विमला तथा।।२।।

हुताशनी विशालाक्षी हूंकारी वडवामुखी।
महारवा महाक्रूरा क्रोधिनी च खरानना।।३।।
सर्वज्ञा तरला तारा ततः सृग्वेदिनी मता।
रौद्री तथा च सरसा ततस्तु रससंग्रहा।।४।।
शर्वरी तालजंघा च रक्ताक्षी तु ततः परम्।
विद्युज्जिह्वा करङ्किणी मेघनादा ततो मता।।५।।
चण्डोग्रा कालकर्णा च तथा चैव द्विपातना।
पद्मा पद्मावती चैव प्रपञ्चज्वलितानना।।६।।
पिचुवक्त्रा पिशाची च पिशिताशी च लोलुपा।
पार्वतीपावनी चैव तापिनीवामिनी तथा।।७।।
विकृतपूर्वाऽऽशया चैव वृहत्कुक्षिस्ततः परम्।
दंष्ट्राली विश्वरूपी च यमजिह्वा ततो मता।।८।।
जयन्ती च दुर्जया च तथा चैव यमान्तिका।
विडाला रेवती चाथ प्रेताशी विजया तथा।।९।।
महालक्ष्म्यास्तु योगिन्यश्चतुष्षष्टिः क्रमादिमाः।
पूजनीयाः प्रयत्नेन सिद्धिकामैस्तु साधकैः।।१०।।

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।

भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ।।१४।।

महालक्ष्मी ध्यानम्—

ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ ह्रीँ ऋषिरुवाच।।१।।

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा।
महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे।।२।।
तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम्।
जित्वा च सकलान्देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः।।३।।
ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम्।
पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ।।४।।
यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम्।
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम्।।५।।
सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च।
अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति।।६।।

स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि।
विचरन्ति तथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना।।७।।
एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम्।
शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम्।।८।।
इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ।।९।।
ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः।
निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च।।१०।।
अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः।
निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत।।११।।
अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम्।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम्।।१२।।
अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा।।१३।।
यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्।
याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा।।१४।।
सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्।
वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः।।१५।।
ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा।
वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका।।१६।।
तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा।
नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा।।१७।।
भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च।
अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा।।१८।।
ततः समस्तेदवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः।।१९।।
शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्।
चक्रं च दत्तवान्कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः।।२०।।
शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः।
मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी।।२१।।
वज्रमिन्द्रः समुत्पाट्य कुलिशादमराधिपः।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात्।।२२।।

कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ।
प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम्।।२३।।
समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः।
कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्यै चर्म च निर्मलम्।।२४।।
क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे।
चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च।।२५।।
अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु।
नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम्।।२६।।
अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च।
विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम्।।२७।।
अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम्।
अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम्।।२८।।
अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम्।
हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च।।२९।।
ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः।
शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम्।।३०।।
नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्।
अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा।।३१।।
सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः।।३२।।
अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्।
चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे।।३३।।
चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः।
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम्।।३४।।
तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः।
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः।।३५।।
सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः।
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः।।३६।।
अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा।।३७।।
पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम्।
क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम्।।३८।।

दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्।
ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम्।।३९।।
शस्त्रस्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम्।
महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः।।४०।।
युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः।
रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः।।४१।।
अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः।
पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः।।४२।।
अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधो रणे।
गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः।।४३।।
वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत।
विडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः।।४४।।
युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः।
अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः।।४५।।
युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः।
कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा।।४६।।
हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः।
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा।।४७।।
युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः।
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे।।४८।।
देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः।
सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका।।४९।।
लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी।
अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः।।५०।।
मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी।
सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी।।५१।।
चचारासुरसैन्येंषु वनेष्विव हुताशनः।
निःश्वासान्मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका।।५२।।
त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः।
युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः।।५३।।
नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिता।
अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खांस्तथापरे।।५४।।

मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन्युद्धमहोत्सवे।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः।।५५।।
खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान्।
पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान्।।५६।।
असुरान्भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्।
केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे।।५७।।
विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते।
वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः।।५८।।
केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि।
निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे।।५९।।
श्येनानुकारिणः प्राणान्मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः।
केषांचिद्बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ।।६०।।
शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः।
विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः।।६१।।
एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधाकृताः।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः।।६२।।
कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः।
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः।।६३।।
कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः।
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः।।६४।।
पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा।
अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः।।६५।।
शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः।
मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम्।।६६।।
क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम्।।६७।।
स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति।।६८।।
देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः।
यथैषां तुतुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॐ।।६९।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावणिकि मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

◆

अथ श्रीदुर्गासप्तशती तृतीयोध्यायः

ध्यानम्—

ॐ उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां,
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वराम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं,
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम्।।

इसके बाद भैरवशतनामस्तोत्र का पाठ करे—

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्कांली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।

सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ।।१४।।

ॐ नमश्चण्डिकायै।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच।।१।।

निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः।
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम्।।२।।
स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः।
यथा मेरुगिरेः श्रृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः।।३।।
तस्य च्छित्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्।
जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम्।।४।।
चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम्।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः।।५।।
स च्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः।।६।।
सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान्।।७।।
तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन।
ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः।।८।।
चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात्।।९।।
दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत।
तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः।।१०।।
हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ।
आजगाम गजारुढश्चामरस्त्रिदशार्दनः।।११।।
सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्।
हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम्।।१२।।
भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः।
चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत्।।१३।।
ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः।
बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा।।१४।।

युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः।।१५।।
ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा।
करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम्।।१६।।
उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः।
दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः।।१७।।
देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्।
वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम्।।१८।।
उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम्।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी।।१९।।
बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम्।।२०।।
एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः।
माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान्।।२१।।
कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्।
लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान्।।२२।।
वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च।
निःश्वासपवनेनान्यान् पातयामास भूतले।।२३।।
निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः।
सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका।।२४।।
सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः।
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च।।२५।।
वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत।
लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः।।२६।।
धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः।
श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः।।२७।।
इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत्।।२८।।
सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे।।२९।।
ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः।
छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत।।३०।।

तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः।
तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः।।३१।।
करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च।
कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत।।३२।।
ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम्।।३३।।
ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना।।३४।।
ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान्।।३५।।
सा च तान्प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः।
उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षणम्।।३६।।

देव्युवाच।।३७।।

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः।।३८।।

ऋषिरुवाच।।३९।।

एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम्।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत्।।४०।।
ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः।
अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः।।४१।।
अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्वा निपातितः।।४२।।
ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः।।४३।।
तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः।
जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॐ।।४४।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकि मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

अथ श्रीदुर्गासप्तशती चतुर्थोध्यायः

ध्यानम्—

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिंकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखाम्,
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं,
ध्यायेद्दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः।।

इसके वाद भैरवशतनामस्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्कांली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।

सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ।।१४।।

ॐ नमश्चण्डिकायै।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच।।१।।

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांशा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः।।२।।
देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः।।३।।
यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु।।४।।
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।५।।
किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु।।६।।
हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै-
र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या।।७।।
यस्याः समस्तसुरतासमुदीरणेन
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि।

स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च।।८।।
या मुक्तिहेतुरविचिन्त्य महाव्रता त्व-
मभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै
र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि।।९।।
शब्दात्मिका सुवमिलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्।
देवी त्रयी भगवती भवभावनाय
वार्त्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री।।१०।।
मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा।।११।।
ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-
बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम्।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण।।१२।।
दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल-
मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन।।१३।।
देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य।।१४।।
ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।।१५।।
धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-
ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति।

स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती प्रसादा-
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन।।१६।।
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेपजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।१७।।
एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि।।१८।।
दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
सर्वान् सुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम्।
लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी।।१९।।
खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिबहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्डं
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्।।२०।।
दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृहृतदेवपराक्रमाणां
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम्।।२१।।
केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि।।२२।।
त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-
मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते।।२३।।
शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।२४।।

प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।२५।।
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।।२६।।
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।२७।।

ऋषिरुवाच।।२८।।

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः।।२९।।
भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान्।।३०।।

देव्युवाच।।३१।।

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम्।।३२।।

देवा ऊचुः।।३३।।

भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते।।३४।।
यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः।
यदि चापि परो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि।।३५।।
संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने।।३६।।
तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके।।३७।।

ऋषिरुवाच।।३८।।

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप।।३९।।
इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी।।४०।।
पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत्।
वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः।।४१।।
रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी।
तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामिते ह्रीं ॐ।।४२।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

अथ श्रीदुर्गासप्तशती पञ्चमोध्याय:

विनियोग:—**अस्य श्रीउत्तरचरित्रस्य रुद्रऋषि:, महासरस्वती देवता, अनुष्टुप्छन्द:, भीमा शक्ति:, भ्रामरी बीजं, सूर्यस्तत्त्वं, सामवेद: स्वरूपं, महासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तरचरित्रपाठे विनियोग:।**

महासरस्वती-ध्यानम्—

ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुशले चक्रं धनु: सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।

महासरस्वत्याश्चतु:षष्टियोगिन्य:—

पिङ्गलाक्षी विशालाक्षी: समृद्धिवृद्धिरेव च।
श्रद्धास्वाहास्वधाभिक्षामाया संज्ञावसुन्धरा।।१।।
त्रैलोक्यधात्री सावित्री गायत्री त्रिपदेश्वरी।
सुरूपाबहुरूपाश्च स्कन्दमाताऽच्युतप्रिया।।२।।
विमला कमला चैव दारुणी चारुणी तथा।
प्रकृतिर्विकृतिश्चैवसृष्टि: स्थितिश्च संहृति:।।३।।
सन्ध्या माता सती हंसी तथा च मदर्जिका।
परा तथा देवमाता ततो भगवती किल।।४।।
देवकी चैव कमलालका च त्रिमुखी तथा।
सप्तमुखी ततो देवी सुरासुर विमर्दिनी।।५।।
लम्बोष्ठी उर्ध्वकेशी च ततो बहुशिरा मता।
वृकोदरी रथरेखा शशिरेखा तत: परम्।।६।।
गगनवेगा पवनवेगा भुवनपाला तथा मता।
मदनातुरा अनंगा च अनंग मदना तथा।।७।।
अनंग मेखलाऽनंग कुसुमा च ततो मता।
विश्वरूपा तथा चैवाऽसुरा पूर्वा भयंकरी।।८।।
अक्षोभ्या च तथा देवी मता वै सत्यवादिनी।
वजरूपा वज्ररेखा तथा शुचिव्रता मता।।९।।
वरदा चैव वागीशी चतु:षष्ठि क्रमेण तु।
महापूर्वा सरस्वत्या: योगिन्यस्तु मता-इमा:।।१०।।

इसके बाद भैरव शतनामस्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ।।१४।।

क्लीं ऋषिरुवाच।।१।।

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपते।
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात्।।२।।

तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम्।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च।।३।।
तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च।
ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः।।४।।
हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः।
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम्।।५।।
तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिला।
भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः।।६।।
इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्।
जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः।।७।।

देवा ऊचुः।।८।।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।९।।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः।।१०।।
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः।।११।।
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।।१२।।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।।१३।।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै।।१४।।नमस्तस्यै।।१५।।नमस्तस्यै नमो नमः।।१६।।
या देवी सर्वभूतेषु चेत्यनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै।।१७।।नमस्तस्यै।।१८।।नमस्तस्यै नमो नमः।।१९।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।२०।।नमस्तस्यै।।२१।।नमस्तस्यै नमो नमः।।२२।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।२३।। नमस्तस्यै।।२४।। नमस्तस्यै नमो नमः।।२५।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।२६।।नमस्तस्यै।।२७।।नमस्तस्यै नमो नमः।।२८।।

या देवी सर्वभूतेषु च्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।२९।।नमस्तस्यै।।३०।।नमस्तस्यै नमो नमः।।३१।।
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।३२।।नमस्तस्यै।।३३।।नमस्तस्यै नमो नमः।।३४।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।३५।।नमस्तस्यै।।३६।।नमस्तस्यै नमो नमः।।३७।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।३८।।नमस्तस्यै।।३९।।नमस्तस्यै नमो नमः।।४०।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।४१।।नमस्तस्यै।।४२।।नमस्तस्यै नमो नमः।।४३।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।४४।।नमस्तस्यै।।४५।।नमस्तस्यै नमो नमः।।४६।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।४७।।नमस्तस्यै।।४८।।नमस्तस्यै नमो नमः।।४९।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।५०।।नमस्तस्यै।।५१।।नमस्तस्यै नमो नमः।।५२।।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।५३।।नमस्तस्यै।।५४।।नमस्तस्यै नमो नमः।।५५।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।५६।।नमस्तस्यै।।५७।।नमस्तस्यै नमो नमः।।५८।।
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।५९।।नमस्तस्यै।।६०।।नमस्तस्यै नमो नमः।।६१।।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।६२।।नमस्तस्यै।।६३।।नमस्तस्यै नमो नमः।।६४।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।६५।।नमस्तस्यै।।६६।।नमस्तस्यै नमो नमः।।६७।।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।६८।।नमस्तस्यै।।६९।।नमस्तस्यै नमो नमः।।७०।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।७१।।नमस्तस्यै।।७२।।नमस्तस्यै नमो नमः।।७३।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।७४।।नमस्तस्यै।।७५।।नमस्तस्यै नमो नमः।।७६।।

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः।।७७।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै।।७८।।नमस्तस्यै।।७९।।नमस्तस्यै नमो नमः।।८०।।
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।८१।।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।।८२।।

ऋषिरुवाच।।८३।।

एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती।
स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन।।८४।।
साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का।
शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा।।८५।।
स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः।
देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः।।८६।।
शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते।।८७।।
तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती।
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया।।८८।।
ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहराम्।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः।।८९।।
ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता सातीव सुमनोहरा।
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम्।।९०।।
नैव तादृक्क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्।
ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर।।९१।।
स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति।।९२।।

यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो।
त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे।।९३।।
ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात्।
पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः।।९४।।
विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे।
रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम्।।९५।।
निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम्।।९६।।
छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि तिष्ठति।
तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः।।९७।।
मृत्योरुत्क्रान्तितदा नाम शक्तिरीशस्त्वयाहृता।
पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे।।९८।।
निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः।
वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी।।९९।।
एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते।
स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते।।१००।।

ऋषिरुवाच।।१०१।।

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम्।।१०२।।
इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु।।१०३।।
स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने।
सा देवीं तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा।।१०४।।

दूत उवाच।।१०५।।

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः।
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः।।१०६।।
अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु।
निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत्।।१०७।।
मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः।
यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक्।।१०८।।
त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः।
तथैव गजरत्नं च हृत्वा देवेन्द्रवाहनम्।।१०९।।

क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरः।
उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम्।।११०।।
यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च।
रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने।।१११।।
स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम्।।११२।।
मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्।
भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः।।११३।।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात्।
एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज।।११४।।

ऋषिरुवाच।।११५।।

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत्।।११६।।

देव्युवाच।।११७।।

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम्।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः।।११८।।
किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम्।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा।।११९।।
यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति।।१२०।।
तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु।।१२१।।

दूत उवाच।।१२२।।

अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः।
त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः।।१२३।।
अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्रीस्त्वमेकिका।।१२४।।
इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे।
शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम्।।१२५।।
सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः।
केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि।।१२६।।

देव्युवाच।।१२७।।

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान्।
किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा।।१२८।।
स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत् ॐ ।।१२९।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकि मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती षष्ठोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ नागार्धीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावलीं
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां
सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये।।

इसके वाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।

प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ।।१४।।

क्लीं ऋषिरुवाच।।१।।

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः।
समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात्।।२।।
तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः।
सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम्।।३।।
हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः।
तामानाय बलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम्।।४।।
तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः।
स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा।।५।।

ऋषिरुवाच।।६।।

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः।
वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ।।७।।
स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम्।
जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः।।८।।
न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति।
ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम्।।९।।

देव्युवाच।।१०।।

दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः।
बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम्।।११।।

ऋषिरुवाच।।१२।।

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः।
हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः।।१३।।
अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः।।१४।।
ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम्।
पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः।।१५।।
कांश्चित् करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान्।
आक्रम्य चाधरेणान्यान् स जघान महासुरान्।।१६।।
केषाञ्चित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी।
तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक्।।१७।।
विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः।।१८।।
क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना।
तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना।।१९।।
श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम्।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः।।२०।।
चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः।
आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ।।२१।।
हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ।
तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु।।२२।।
केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि।
तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम्।।२३।।
तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते।
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॐ।।२४।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती सप्तमोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजैः शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्।

कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां
मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम्।।

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीं भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावन:।
क्षेत्रज्ञ: क्षेत्रपालश्च क्षेत्रद: क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तक:।
रक्तप: पानप: सिद्ध: सिद्धिद: सिद्धसेवित:।।२।।
कङ्काल: कालशमन: कलाकाष्ठातनु: कवि:।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचन:।।३।।
शूलपाणि: खड्गपाणि: कङ्काली धूम्रलोचन:।
अभिरु: भैरविनाथो भूतपो योगिनीपति:।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेश: कपालभृत्।।५।।
काल: कपालमाली च कमनीय: कलानिधि:।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्र: त्रिशिखी च त्रिलोकप:।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भ: शान्त: शान्तजनप्रिय:।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारक:।।७।।
भूताध्यक्ष: पशुपति: भिक्षुक: परिचारक:।
धूर्तो दिगम्बर: शौरिर्हरिण: पाण्डुलोचन:।।८।।
प्रशान्त: शान्तिद: सिद्ध: शङ्करप्रियबान्धव:।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमय:।।९।।
अष्टाधार: षडाधार: सर्पयुक्त: शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मज:।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतद:।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारण: क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषित:।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रम:।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवित:।
कामी कलानिधि: कान्त: कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमय:।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्य: प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीं ॐ।।१४।।

क्लीं ऋषिरुवाच।।१।।

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः।
चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः।।२।।
ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम्।
सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने।।३।।
ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः।
आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः।।४।।
ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति।
कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा।।५।।
भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम्।
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी।।६।।
विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा।
द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा।।७।।
अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा।
निमग्ना रक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा।।८।।
सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान्।
सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम्।।९।।
पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहियोधघण्टासमन्वितान् ।
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान्।।१०।।
तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह।
निःक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम्।।११।।
एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्।
पादेनाक्रम्य चैवान्यामुरसान्यमपोथयत्।।१२।।
तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः।
मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि।।१३।।
बलिनां तद् बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्।
ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा ।।१४।।
असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिता।
जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा।।१५।।
क्षणेन तद् बलं सर्वमसुराणां निपातितम्।
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम्।।१६।।

शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः।
छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः।।१७।।
तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम्।
बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम्।।१८।।
ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी।
कालीकरालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला ।।१९।।
उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत।
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत्।।२०।।
अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा।।२१।।
हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम्।।२२।।
शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च।
प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम्।।२३।।
मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू।
युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि।।२४।।

ऋषिरुवाच।।२५।।

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ।
उवाच कालीं कल्याणीं ललितं चण्डिका वचः।।२६।।
यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि ॐ ।।२७।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावणिकि मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती अष्टमोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशबाणचापहस्ताम्।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम्।।

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीं भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराद्।।१।।

श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ।।१४।।

ॐ ऋषिरुवाच।।१।।

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते।
बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः।।२।।
ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान्।
उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह।।३।।

अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः।
कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः।।४।।
कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां स्वबलैर्वृताः।
शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया।।५।।
कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः।
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम।।६।।
इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः।
निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः।।७।।
आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम्।
ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम्।।८।।
ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान् नृप।
घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत्।।९।।
धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा।
निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना।।१०।।
तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम्।
देवीसिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः।।११।।
एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम्।
भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ।।१२।।
ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः।।१३।।
यस्य देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम्।
तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ।।१४।।
हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणि साभिधीयते।।१५।।
माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी।
महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखा विभूषणा।।१६।।
कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना।
योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी।।१७।।
तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ।।१८।।
यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः।
शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम्।।१९।।

नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः।
प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः।।२०।।
वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता।
प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा।।२१।।
ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः।
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम्।।२२।।
ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा।
चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवा शतनिनादिनी।।२३।।
सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता।
दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः।।२४।।
ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ।
ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः।।२५।।
त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ।।२६।।
बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः।
तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः।।२७।।
यतो नियुक्तो दैत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्।
शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता।।२८।।
तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः।
अमर्षापूरिता जग्मुर्यतः कात्यायनी स्थिता।।२९।।
ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः।
ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः।।३०।।
सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान्।
चिच्छेद लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः।।३१।।
तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान्।
खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा।।३२।।
कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः।
ब्रह्माणि चाकरोच्छत्रून् येन येन स्म धावति।।३३।।
माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी।
दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना।।३४।।
ऐन्द्री कुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः।
पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः।।३५।।

तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः।
वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः।।३६।।
नखैर्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान्।
नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा।।३७।।
चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः।
पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा।।३८।।
इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान्।
दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ।।३९।।
पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृगणार्दितान्।
योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः।।४०।।
रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः।
समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः।।४१।।
युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः।
ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत्।।४२।।
कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम्।
समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः।।४३।।
यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः।
तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः।।४४।।
ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः।
समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम्।।४५।।
पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा।
ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः।।४६।।
वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह।
गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम्।।४७।।
वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः।
सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरै।।४८।।
शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना।
माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम्।।४९।।
स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक्।
मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः।।५०।।
तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि।
पपात यो वै रक्तौघस्तेनासच्छतशोऽसुराः।।५१।।

तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं सजत्।
व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम्।।५२।।
तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा।
उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु।।५३।।
मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान्।
रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना।।५४।।
भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान्।
एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति।।५५।।
भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे।
इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम्।।५६।।
मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्।
ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम्।।५७।।
न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि।
तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम्।।५८।।
यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति।
मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः।।५९।।
तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्।
देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः।।६०।।
जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम्।
स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः।।६१।।
नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः।
ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप।।६२।।
तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः।।६३।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकि मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

अथ श्रीदुर्गासप्तशती नवमोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां
पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणां त्रिनेत्रा-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि।।

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ।।१४।।

क्लीं राजोवाच।।१।।

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम।
देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम्।।२।।

भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते।
चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः।।३।।

ऋषिरुवाच।।४।।

चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते।
शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे।।५।।
हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन्।
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया।।६।।
तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः।
संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः।।७।।
आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः।
निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः।।८।।
ततो युद्धमतीवासीद्देव्या शुम्भनिशुम्भयोः।
शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः।।९।।
चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः।
ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ।।१०।।
निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम्।
अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम्।।११।।
ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम्।
निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम्।।१२।।
छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिच्छेप सोऽसुरः।
तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम्।।१३।।
कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः।
आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत्।।१४।।
आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति।
सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता।।१५।।
ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम्।
आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले।।१६।।
तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे।
भ्रातर्यतीवसंक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम्।।१७।।
सरथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः।।१८।।

तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत्।
ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम्।।१९।।
पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च।
समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना।।२०।।
ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः।
पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश।।२१।।
ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत्।
कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः।।२२।।
अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह।
तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ।।२३।।
दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा।
तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः।।२४।।
शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा।
आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया।।२५।।
सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम्।
निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते।।२६।।
शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान्।
चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः।।२७।।
ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम्।
स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह।।२८।।
ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः।
आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा।।२९।।
पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः।
चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम्।।३०।।
ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी।
चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान्।।३१।।
ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम्।
अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसैन्यसमावृतः।।३२।।
तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका।
खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे।।३३।।
शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम्।
हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका।।३४।।

भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः।
महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन्।।३५।।
तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि।।३६।।
ततः सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान्।
असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान्।।३७।।
कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः।।३८।।
माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे।
वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णिकृता भुवि।।३९।।
खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः।
वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे।।४०।।
केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात्।
भक्षिताश्चापरे काली शिवदूती मृगाधिपैः ॐ।।४१।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकि मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

◆

अथ श्रीदुर्गासप्तशती दशमोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्निनेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम्।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम्।।

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।

धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रौँ ॐ।।१४।।

क्लीं ऋषिरुवाच।।१।।

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम्।
हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः।।२।।
बलाबलेपाद् दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह।
अन्यासां बलमाश्रित्य युद्ध्यसे चातिमानिनी।।३।।

देव्युवाच।।४।।

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा।
पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः।।५।।
ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखालयम्।
तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका।।६।।

देव्युवाच।।७।।

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदा स्थिता।
तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव।।८।।

ऋषिरुवाच।।९।।

ततः प्रववृते युद्धे देव्याः शुम्भस्य चोभयोः।
पश्यैतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम्।।१०।।
शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः।
तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयङ्करम्।।११।।
दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः।।१२।।
मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी।
बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः।।१३।।
ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः।
सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः।।१४।।
छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे।
चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम्।।१५।।
ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत्।
अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः।।१६।।
तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका।
धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम्।।१७।।
हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः।
जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः।।१८।।
चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः।
तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान्।।१९।।
स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः।
देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत्।।२०।।
तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले।
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः।।२१।।
उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः।
तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका।।२२।।
नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्।
चक्रतुः प्रथमं युद्धं मुनिविस्मयकारकम्।।२३।।

ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह।
उत्पाट्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले।।२४।।
स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः।
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिका निधनेच्छया।।२५।।
तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्।
जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि।।२६।।
स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः।
चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम्।।२७।।
ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि।
जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः।।२८।।
उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः।
सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते।।२९।।
ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः।
बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः।।३०।।
अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः।
ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः।।३१।।
जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्ताः दिग्जनितस्वनाः।।३२।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकि मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती एकादशोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशां भीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्।।

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।

शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ।।१४।।

क्लीं ऋषिरुवाच।।१।।

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे,
सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम्।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्,
विकासिवक्त्राब्जविकासिताशाः ।।२।।
देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद,
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं,
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।३।।

आधारभूता जगतस्त्वमेका,
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत-
दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये।।४।।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या,
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्,
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।५।।
विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः,
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्,
का ते स्तुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः।।६।।
सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः।।७।।
सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।८।।
कालाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते।।९।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।१०।।
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।।११।।
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्त्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।१२।।
हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि।
कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।१३।।
त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि।
माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते।।१४।।
मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते।।१५।।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते।।१६।।

गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते।।१७।।
नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान्कृतोद्यमे।
त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते।।१८।।
किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते।।१९।।
शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते।।२०।।
दंष्ट्रा-करालवदने शिरोमालाविभूषणे।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते।।२१।।
लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे।
महारात्रि महामाये नारायणि नमोऽस्तु ते।।२२।।
मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते।।२३।।
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।२४।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते।।२५।।
ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते।।२६।।
हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।२७।।
असुरासृग्वसापङ्कचर्चितास्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्।।२८।।
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।२९।।
एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य
धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं
कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या।।३०।।

विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे-
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे,
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम्।।३१।।
रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्।।३२।।
विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः।।३३।।
देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-
र्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्।।३४।।
प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव।।३५।।

देव्युवाच।।३६।।

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ।
तं विणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम्।।३७।।

देवा ऊचुः।।३८।।

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।।३९।।

देव्युवाच।।४०।।

वैवस्वन्तऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ।।४१।।
नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी।।४२।।
पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान्।।४३।।

भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान्।
रक्तादन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः।।४४।।
ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम्।।४५।।
भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा।।४६।।
ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः।।४७।।
ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः।
भरिष्यामिं सुरान् शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः।।४८।।
शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्।।४९।।
दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले।।५०।।
रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात्।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः।।५१।।
भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति।।५२।।
तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम्।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम्।।५३।।
भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।।५४।।
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॐ।।५५।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावणिकि मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती द्वादशोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्रणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावन:।
क्षेत्रज्ञ: क्षेत्रपालश्च क्षेत्रद: क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तक:।
रक्तप: पानप: सिद्ध: सिद्धिद: सिद्धसेवित:।।२।।
कङ्काल: कालशमन: कलाकाष्ठातनु: कवि:।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचन:।।३।।
शूलपाणि: खड्गपाणि: कङ्काली धूम्रलोचन:।
अभिरु: भैरविनाथो भूतपो योगिनीपति:।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेश: कपालभृत्।।५।।
काल: कपालमाली च कमनीय: कलानिधि:।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्र: त्रिशिखी च त्रिलोकप:।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भ: शान्त: शान्तजनप्रिय:।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारक:।।७।।
भूताध्यक्ष: पशुपति: भिक्षुक: परिचारक:।
धूर्तो दिगम्वर: शौरिर्हरिण: पाण्डुलोचन:।।८।।
प्रशान्त: शान्तिद: सिद्ध: शङ्करप्रियबान्धव:।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमय:।।९।।
अष्टाधार: षडाधार: सर्पयुक्त: शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मज:।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतक:।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारण: क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषित:।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रम:।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवित:।
कामी कलानिधि: कान्त: कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमय:।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्य: प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ।।१४।।

क्लीं देव्युवाच।।१।।

एभि: स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते य: समाहित:।
तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम्।।२।।

मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम्।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भनिशुम्भयोः।।३।।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम्।।४।।
न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः।
भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम्।।५।।
शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः।
न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भविष्यति।।६।।
तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत्।।७।।
उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम।।८।।
यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम।
सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम्।।९।।
बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे।
सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च।।१०।।
जानताऽजानता वापि बलिपूजां यथाकृताम्।
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथाकृतम्।।११।।
शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः।।१२।।
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।१३।।
श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः।
पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान्।।१४।।
रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते।
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम्।।१५।।
शन्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने।
ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम।।१६।।
उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते।।१७।।
बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम्।
संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम्।।१८।।

दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम्।।१९।।
सर्व ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम्।
पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः।।२०।।
विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्।
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या।।२१।।
प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन्सकृत्सुचरिते श्रुते।
श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति।।२२।।
रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम।
युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम्।।२३।।
तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः।।२४।।
ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम्।
अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः।।२५।।
दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः।
सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः।।२६।।
राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा।
आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे।।२७।।
पतत्सु चापि शस्त्रेण संग्रामे भृशदारुणे।
सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा।।२८।।
स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात्।
मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा।।२९।।
दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम ।।३०।।

ऋषिरुवाच।।३१।।

इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा।।३२।।
पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत।
तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा।।३३।।
यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः।
दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि।।३४।।
जगद्विध्वंसिके तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे।
निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः।।३५।।

एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः।
सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम्।।३६।।
तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते।
सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति।।३७।।
व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर।
महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया।।३८।।
सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी।।३९।।
भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे।
सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोपजायते।।४०।।
स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा।
ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम् ॐ।।४१।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

◆

अथ श्रीदुर्गासप्तशती त्रयोदशोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुशवरां भीतिं धारयन्तीं शिवां भजे।।

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।

कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रौँ ॐ।।१४।।

क्लीं ऋषिरुवाच।।१।।

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम्।
एवं प्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत्।।२।।
विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया।
तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः।।३।।
मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे।
तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्।।४।।
आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा।।५।।

मार्कण्डेय उवाच।।६।।

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः।।७।।
प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम्।
निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च।।८।।
जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने।
संदर्शनाथमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः।।९।।

स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन्।
तौ तस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम्।।१०।।
अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः।
निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ।।११।।
ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम्।
एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः।।१२।।
परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका।।१३।।

देव्युवाच।।१४।।

यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन।
मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि ते।।१५।।

मार्कण्डेय उवाच।।१६।।

ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि।
अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात्।।१७।।
सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः।
ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम्।।१८।।

देव्युवाच।।१९।।

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान्।।२०।।
हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति।।२१।।
मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः।।२२।।
सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति।।२३।।
वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः।।२४।।
तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति।।२५।।

मार्कण्डेय उवाच।।२६।।

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम्।।२७।।
बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।।२८।।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः।।२९।।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः क्लीं ॐ।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकि मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

●

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः पडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिपेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौपधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ।।१४।।

इसके बाद देवीस्तवसूक्त का पाठ करे।

पुराणोक्तं देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।१।।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः।।२।।
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः।।३।।
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।।४।।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।।५।।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।६।।
या देवी सर्वभूतेषु चेत्यनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।७।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।८।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।९।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१०।।
या देवी सर्वभूतेषु च्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।११।।
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१२।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१३।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१४।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१५।।

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१६।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१७।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१८।।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१९।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२०।।
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२१।।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२२।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२३।।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२४।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२५।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२६।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः।।२७।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२८।।
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।२९।।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।

या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।।३०।।

श्रीदेव्याः स्तुतिपाठं श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

नवार्णजपविधिः

इसके बाद नवार्ण मन्त्र न्यास जप करे।

विनियोगः—**अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, ऐँ बीजं, ह शक्तिः, क्लीँ कीलकं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे न्यासे ज विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि।
ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे।
ॐ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि।
ॐ ऐँ बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः।
ॐ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ।
ॐ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—

ॐ ऐँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ क्लीँ मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यासः—

ॐ ऐँ हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा।
ॐ क्लीँ शिखायै वषट्।

ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्।
ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यासः—

ॐ ऐं नमः शिखायाम्।
ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे।
ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे।
ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे।
ॐ मुं नमः वामकर्णे।
ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे।
ॐ यैं नमः वामनासापुटे।
ॐ विं नमः मुखे।
ॐ च्चें नमः गुह्ये।

दिङ्न्यासः—

ॐ ऐं प्राच्यै नमः।
ॐ ऐं आग्नेयाय नमः।
ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः।
ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः।
ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः।
ॐ क्लीं वायव्यै नमः।
ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः।
ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै ऊर्ध्वायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्—

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
यां हन्तुं मधुकैटभौ जलजभूस्तुष्टाव सुप्ते हरौ
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम्।।१।।
अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्मजलजं घण्टां सुराभाजनम्।

शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।२।।
घण्टाशूलहलानिशङ्खमुशले चक्रं धनुः सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।३।।

मालापूजनम्—

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अक्षमालिकायै नमः।

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुवर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।१।।
अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले तु सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।२।।

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे स्वाहा। १०८ बार जप करे।

जप देवी के दक्षिण हाथ में निवेदित करे—

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

इसके बाद परदेवीसूक्त का अष्टोत्तर जप करे।

परदेवीसूक्तम्

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीपरदेवीसूक्तमालामन्त्रस्य मार्कण्डेयमेधसौ ऋषिः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि, त्रिशक्तिरूपिणी चण्डिका देवता, ऐँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, क्लीँ कीलकं सकलमनोरथसिद्ध्यर्थे न्यासे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ मार्कण्डेयमेधसऋषिभ्यां नमः शिरसि।

ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे।

ॐ श्रीत्रिशक्तिरूपिणीचण्डिकादेवतायै नमः हृदि।

ॐ ऐँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ श्रीत्रिशक्तिरूपिणीचण्डिकादेवतायै नमः सर्वाङ्गे।

ध्यानम् —

ॐ योगाढ्यामरकायनिर्गतमहातेजःसमुत्पत्तनी,
भास्वत् पूर्णशशाङ्कचारुधवला लीलोल्लसत् भ्रूलता।
गौरी तुङ्गकुचद्वया तदुपरि स्फूर्जत्प्रभामण्डला,
बन्धूकारुणकायकान्तिविलसच्छ्रीचण्डिका सर्वतः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ साँ हूँ ह्साँ स्हाँ स्त्राँ महालक्ष्मी जगदाद्यबीजे सुरासुरत्रिभुवननिदाने दयाकरे सर्वसर्वतेजोरूपिणी महामहामहिमे महामहारूपिणी महामहामाये महामायास्वरूपिणी विरञ्चिसंस्तुते विधिवरदेचिदानन्दे विष्णुदेहावृते महामोहिनि मधुकैटभजिघांसिनि नित्यवरदानतत्परे महासुधाब्धिवासिनि महामहातेजोधारिणी सर्वाधारि सर्वकारणकारणे अचिन्त्यरूपे इन्द्रादिनिखिलनिर्जरसेदि.ते सामगानगायिनी पूर्णेन्द्रियकारिणि विजये जयन्ति अपराजिते सर्वसुन्दरी रक्तांशुके सूर्यकोऽटिसङ्काशे चन्द्रकोटिसुशीतले अग्निकोटिदहनशीले यमकोटिक्रूरे वायुकोटिवहनशीले ओँकारनादरूपिणी निगमागममार्गदायिनी महिषासुरनिर्दलिनी धूम्रलोचनक्षयपरायणे चण्डमुण्डादिशिरश्छेदिनी रक्तबीजादिरुधिरशोषिणी रक्तपानप्रिये महायोगिनी भूतवेतालभैरवादितुष्टिविधायिनी शुम्भनिशुम्भशिरच्छेदिनी निखिलासुरखलखादिनी त्रिदशराज्यदायिनी सर्वस्त्रीरत्नरूपिणी दिव्यदेहे निर्गुणे सदसद्रूपधारिणी स्कन्दवरदे भक्तत्राणतत्परे वरे वरदे सहस्राक्षरे अयुताक्षरे सप्तकोटिचामुण्डारूपिणि नवकोटिकात्यायनीस्वरूपे अनेकशक्त्यालक्ष्यालक्ष्यस्वरूपे इन्द्राणी ब्रह्माणी रुद्राणी कौमारी वैष्णवी वाराही शिवदूती ईशानी भीमे भ्रामरी नारसिंही त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवसेविते अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायिके चतुरशीतिलक्षमुनिजनसंस्तुते सप्तकोटिमन्त्रस्वरूपे महाकालरात्रिप्रकाशे कलाकाष्ठादिरूपिणि चतुर्दशभुवनविभवकारिणि गरुड़गामिनि क्रौँकार हौँकार ह्रौँकर श्रीँकार क्लौँकार जूँकार सौँकार ऐँ-ह्रीँ-क्लीँकार क्रीँकार ह्सौँकार नानाबीजकूटनिर्मितशरीरे नानाबीजमन्त्रराजविराजिते सकलसुन्दरीगणसेविते चरणारविन्दे श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीकामेशदयिते करणैकरसकल्लोलिनी कल्पवृक्षाधःस्थिते चिन्तामणि द्वीपावस्थिते मणिमन्दिरनिवासे चापिनी खड्गिनी चक्रिणी दण्डिनी शङ्खिनी पद्मिनी निखिलभैरवाराधिनी समस्तयोगिनीपरिवृते कालिके काली तारे तरले सुतारे ज्वालामुखि छिन्नमस्तिके भुवनेश्वरी त्रिपुरे लोकजननी विष्णुवक्षस्थलाऽलङ्करिणी अजिते अमिते अमराधिपे अनूपचरिते गर्भवासदुःखापहारिणी मुक्तिक्षेत्राधिष्ठायिनी शिवे शान्तिकुमारी रूपे देवी!

सूक्तदशशताक्षरे चन्द्रि चामुण्डे महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीत्रयीविग्रहे प्रसीद प्रसीद सर्वमनोरथान् पूरय पूरय सर्वारिष्टविघ्नांश्छेदय छेदय सर्वग्रह-पीड़ा ज्वरग्रहभयं विध्वंसय विध्वंसय सर्वत्र त्रिभुवनजीवजातं वश्य वश्य मोक्ष-मार्गान् दर्शय दर्शय ज्ञानमार्गं प्रकाशय प्रकाशय अज्ञान तमसो नाशय नाशय धनधान्यादिवृद्धिं कुरु कुरु सर्वकल्याणिनी कल्पय कल्पय मां रक्ष रक्ष सर्वा-पद्भ्यो निस्तारय निस्तारय मम वज्रशरीरं साधय साधय ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे स्वाहा। नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॐ।।

परं देव्या इदं सूक्तं य पठेत्प्रयतो नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत्।।१।।
संग्रामेषु जयेच्छत्रून् मातङ्गानिव केशरी।
वशयेन्निखिलाल्लोकान् विशेषेण महीपतीन्।।२।।
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं देव्याः सूक्तमिदं परम्।
तस्य विघ्नाः प्रलीयन्ते ग्रहपीडाश्च दारुणाः।।३।।
पराभिचारशमनं परकृत्यानिवारणम्।
सर्वकल्याणनिलयं देव्याः सन्तोषकारणम्।।४।।
सहस्रावृत्ति देवि मनोरथसमृद्धिदम्।
सहस्रावृत्ति जपात्सर्वसङ्कटनाशनम्।।५।।
त्रिसहस्रवृत्तितस्तु वशं कुर्याद्राजयोषिताम्।
शतत्रयं जपेद्यस्तु वर्षत्रयमतिन्द्रियः।।६।।
पश्येत्स चण्डिकां साक्षाद्वरदानकृतोद्यताम्।
इदं रहस्यं परमं गोपनीयं प्रयत्नतः।।७।।
न वाच्यं कस्यचिद् देवि! निधानमिव सुन्दरी।।८।।

रहस्यत्रयपाठः

इसके बाद रहस्यत्रय का पाठ करे।

विनियोग:—ॐ अस्य श्रीसप्तशतीरहस्यत्रयस्य नारायणऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवता, त्रिशक्तिचामुण्डाप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

प्राधानिकं रहस्यम्

राजोवाच

भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः।
एतषां प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं वक्तुमर्हसि।।१।।

आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज।
विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे।।२।।

ऋषिरुवाच

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते।
भक्तोऽसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप।।३।।
सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी।
लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता।।४।।

मातुलुङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रती।
नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्द्धनि।।५।।
तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा।
शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा।।६।।
शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी।
बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि।।७।।
सा भिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राङ्कितवरानना।
विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा।।८।।
खड्गपात्रशिरःखेटैरलंकृतचतुर्भुजा ।
कबन्धहारं शिरसा ब्रिभ्राणाऽहिशिरःस्रजम्।।९।।
सा प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम्।
नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः।।१०।।
तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम्।
ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते।।११।।
महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा।
निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया।।१२।।
इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः।
एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम्।।१३।।
तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप।
सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनन्दुप्रभं दधौ।।१४।।
अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी।
सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ।।१५।।
महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती।
आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा सुरेश्वरी।।१६।।

अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम्।
युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः।।१७।।
इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम्।
हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ।।१८।।
ब्रह्मन् विद्ये विरिञ्चेति धातरित्याह तन्नरम्।
श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता स्त्रियं च ताम्।।१९।।
महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह।
एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते।।२०।।
नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम्।
जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम्।।२१।।
स रुद्रः शङ्करः स्थाणुः कपर्दि च त्रिलोचनः।
त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा।।२२।।
सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप।
जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते।।२३।।
विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः।
उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा।।२४।।
एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे।
चक्षुष्मन्तोऽनुपश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः।।२५।।
ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम्।
रुद्राय गौरी वरदां वासुदेवाय च श्रियम्।।२६।।
स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत्।
बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान्।।२७।।
अण्डमध्ये प्रधानादिकार्यजातमभून्नृप।
महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम्।।२८।।
पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः।
संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः।।२९।।
महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी।
निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत्।।३०।।
नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित् ॐ।।३१।।

प्राधानिकं रहस्यं श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

◆

वैकृतिकं रहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्वयोदिता।
सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते।।१।।
योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा।
मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः।।२।।
दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया।।३।।
स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप।
रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियाम्।।४।।
खड्गबाणगदाशूलचक्रखड्गभुशुण्डिभृत् ।
परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ।।५।।
एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया।
आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम्।।६।।
सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा।
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी।।७।।
श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला।
रक्तमध्या रक्तपादा नालजङ्घोरुरुन्मदा।।८।।
सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा।
चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी।।९।।
अष्टदशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती।
आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधः करक्रमात्।।१०।।
अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा।
चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः।।११।।
शक्तिर्दण्डश्चर्मचापं पानपात्रं कमण्डलुः।
अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनम्।।१२।।
सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप।
पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत्।।१३।।
गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया।
साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी।।१४।।
दधौ चाष्टभुजा बाणान् मुशलं शूलचक्रभृत्।
शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप।।१५।।

एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति।
निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी।।१६।।
इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव।
उपासनं जग्न्मातुः पृथगासां निशामय।।१७।।
महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती।
दक्षिणयोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम्।।१८।।
विरिञ्चिः स्वरयोर्मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे।
वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम्।।१९।।
अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना।
दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत्।।२०।।
अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप।
दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा।।२१।।
कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये।
यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी।।२२।।
नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ।
नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत्।।२३।।
अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः।
अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी।।२४।।
महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती।
ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी।।२५।।
महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः।
पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्।।२६।।
अर्घ्यादिभिरलंकारैर्गन्धपुष्पैस्तथाक्षतैः ।
धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः।।२७।।
रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप।
बलिमांसादिपूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता।।२८।।
तेषां किल सुरामांसैर्नोक्ता पूजा नृप क्वचित्।
प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना।।२९।।
सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः।
वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम्।।३०।।
पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया।
दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम्।।३१।।

वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम्।
कुर्याच्च स्तवनं धीमांस्तस्या एकाग्रमानसः।।३२।।
ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः।
एकेन वा मध्यमेन नैकेनोत्तरयोरिह।।३३।।
चरितार्धं तु न जपेज्जपंश्छिद्रमवाप्नुयात्।
प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः।।३४।।
क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः।
प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा।।३५।।
जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः।
नमो नमःपदैर्देवीं पूजयेत्सुसमाहितः।।३६।।
प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्राणानारोप्य चात्मनि।
सुचिरं भावयेद्देवीं चण्डिकां तन्मयो भवेत्।।३७।।
एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम्।
भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्।।३८।।
यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्।
भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी।।३९।।
तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम्।
यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि।।४०।।

वैकृतिकं रहस्यं श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

◆

मूर्तिरहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा।
स्तुता सम्पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम्।।१।।
कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिः कनकाम्बरा।
देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा।।२।।
कमलाङ्कुशपाशाब्जैरलंकृतचतुर्भुजा ।
इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्रीरुक्माम्बुजासना।।३।।
या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ।
तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम्।।४।।

रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा।
रक्तयुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा।।५।।
रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका।
पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम्।।६।।
वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी।
दीर्धौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ।।७।।
कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी।
भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ।।८।।
खड्गं पात्रं च मुशलं लाङ्गलं च बिभर्ति सा।
आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च।।९।।
अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम्।
इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम्।।१०।।
भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्।
अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुंस्तवम्।।११।।
तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना।
शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना।।१२।।
गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी ।
सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी ।।१३।।
मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया।
पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम्।।१४।।
काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युभयापहम्।
कार्मुकं च स्फुरत्कान्तिं बिभर्ति परमेश्वरी।।१५।।
शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता।
विशोका दुष्टदमनी शमनी दुरितापदाम्।।१५।।
उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती।
शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायञ्जपन् सम्पूजयन्नमन्।।१६।।
अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम्।
भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा।।१७।।
विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा।
चन्द्रहासं च डमरुं शिरःपात्रं च बिभ्रती।।१८।।
एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता।
तेजोमण्डलदुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत्।।१९।।

चित्रानुलेपना देवी चित्राभरणभूषिता।
चित्रभ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते।।२०।।
इत्येता मूर्तयो देव्या व्याख्याता वसुधाधिप।
जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः।।२१।।
इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया।
व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम्।।२२।।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम्।
सप्तजन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि ।।२३।।
पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्वकिल्विषैः।
देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं महत्।।२४।।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम्।
एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि।।२५।।
सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।।२६।।

मूर्तिरहस्यपाठं श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

अर्धपाठविधिः

उपर्युक्त विधि से नव पाठ करने के बाद आधा पाठ अवश्य करे।

मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम्।
शक्रादिस्तुतिरेवातो देवीसूक्तं पुनस्तथा।।
नारायणी स्तुतिश्चैव फलानुकीर्तनं तथा।
ततो वरप्रदानं च ह्यर्धपाठोऽयमुच्यते।।

सर्वप्रथम मधुकैटभ वध अर्थात् प्रथम अध्याय, फिर महिषासुर वध अर्थात् तृतीय अध्याय शक्रादिस्तुति अर्थात् चौथा अध्याय फिर देवीसूक्त अर्थात् पञ्चम अध्याय फिर नारायणीस्तुति अर्थात् एकादश अध्याय फलानुकीर्तन अर्थात् द्वादश अध्याय वरप्रदान अर्थात् त्रयोदश अध्याय का पाठ ही अर्ध पाठ कहलाता है। यह पाठ ही इस पुरश्चरण का अनिवार्य अङ्ग है। नव पाठ पूरा कर लेने के बाद अर्ध पाठ अवश्य करना चाहिए। इसलिए अर्ध पाठ स्वतन्त्र रूप से यहाँ दिया जा रहा है, जिससे पाठ में कोई भ्रम या असुविधा न हो और पूर्ण रूप से पुरश्चरण को पूरा कर

सके एवं अभीष्ट कार्य की सिद्धि प्राप्त कर अपने को सुखी बना सके। पाठ के पूर्व कवचादि पाठ पूर्ववत् ही किये जायेंगे।

सप्तशतीन्यासः

विनियोगः—**ॐ अस्य श्री प्रथममध्यमोत्तमचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि, नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः, अग्निवायुसूर्यस्तत्त्वानि, ऋग्यजुःसामवेदाः ध्यानानि, सकलकामनासिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

करान्ङ्गन्यासः—

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डी परिघायुधा।।
अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।
तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरिः।।
मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षस्मांस्तथा भुवम्।।
अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।
कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।
करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यासः—

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्गिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।।
हृदयाय नमः।

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।
शिरसे स्वाहा।

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरीः।।
शिखायै वषट्।

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षस्मांस्तथा भुवम्।।
कवचाय हुम्।

ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।
नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।
अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां,
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं,
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः।।१।।

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।।२।।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा।।३।।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।।४।।

विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।।५।।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।।६।।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।।७।।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।।८।।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।।९।।
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।।१०।।
यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाऽखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।।११।।
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।।१२।।
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।।१३।।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।।१४।।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ।।१५।।

रात्रिसूक्तपाठं श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती प्रथमोध्यायः

विनियोगः—ॐ **अस्य श्रीदुर्गासप्तशती महास्तोत्रस्यार्धपाठस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुपश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, रक्त दन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि, नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः, अग्निवायु सूर्यस्तत्त्वानि, ऋग्यजुः सामवेदाः ध्यानानि, सकलकामनासिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।**

विनियोग करने के बाद महाकाली के चतु:षष्ठियोगिनीयों का पाठ करे।

महाकाल्याश्चतु:षष्टियोगिन्य:—

जया च विजया चैव जयन्ती चापराजिता।
दिव्यपूर्वायोगिनी च महापूर्वाथ योगिनी।।१।।
सिद्धपूर्वा योगिनी च ततस्त्वथ गणेश्वरी।
प्रेताशी डाकिनी चाथ कमला तु ततो मता।।२।।
कालरात्री ततः प्रोक्ता ततष्टङ्कारिणी मता।
रौद्रीचैवाऽथ वेताली हूँकारी उर्ध्वकेशिनी।।३।।
विरूपाक्षी च शुष्काङ्गी ततस्तु नरभोजिनी।
फेट्कारी चोरचन्द्री च धूम्राक्षी कलहप्रिया।।४।।
राक्षसी घोररक्ताक्षी विश्वरूपी भयङ्करी।
चण्ड्यन्ता चण्डमारी च वाराही मुण्डधारिणी।।५।।
भैरवी ततः ऊर्ध्वाक्षी दुर्मुखी प्रेतवाहिनी।
खट्वाङ्गी चैव लम्बोष्ठी मालिनी मति योगिनी।।६।।
काली रक्ता च कङ्काली ततस्तु भुवनेश्वरी।
त्रोटकी च महामारी यमदूती करालिनी।।७।।
केशिनी मेदिनी चैव रोमगङ्गा प्रवाहिनी।
विडाली चैव कान्तिश्च लोली चाथ जया स्मृता।।८।।
अधोमुखी ततः प्रोक्ता ततश्चण्डोग्रधारिणी।
व्याघ्री ततः कांक्षिणी च ततस्तु प्रेतभक्षिणी।।९।।
धूर्जटी विकटा चैव घोरा चाथ कपालिनी।
विषलम्बिनी ततः प्रोक्ता योगिन्यः सक्रममिमाः।।१०।।

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्कांली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योंगिनीपतिः।।४।।

धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिङ्भुनाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ।।१४।।

महाकाली ध्यानम्—

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ ऐं मार्कण्डेय उवाच।।१।।

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।
निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम।।२।।
महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः।
स बभूव महाभाग सावर्णिस्तनयो रवेः।।३।।

स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः।
सुरथो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले।।४।।
तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान्।
बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा।।५।।
तस्य तैरभवद् युद्धमतिप्रबलदण्डिनः।
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः।।६।।
ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत्।
आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः।।७।।
अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः।
कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः।।८।।
ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः।
एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम्।।९।।
स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः।
प्रशान्तश्वापदाकीर्ण मुनिशिष्योपशोभितम्।।१०।।
तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः।
इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे।।११।।
सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः।
मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत्।।१२।।
मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा।
न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः।।१३।।
मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते।
ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः।।१४।।
अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्।
असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम्।।१५।।
संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति।
एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः।।१६।।
तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः।
स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः।।१७।।
सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम्।।१८।।
प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम्।।१९।।

वैश्य उवाच।।२०।।

समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले।।२१।।
पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः।
विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम्।।२२।।
वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः।
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम्।।२३।।
प्रवृत्तिं स्वजनानाञ्च दाराणां चात्र संस्थितः।
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम्।।२४।।
कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः।।२५।।

राजोवाच।।२६।।

यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः।।२७।।
तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम्।।२८।।

वैश्य उवाच।।२९।।

एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः।।३०।।
किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः।
यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः।।३१।।
पतिस्वजनहार्दं च हार्दितेष्वेव मे मनः।
किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते।।३२।।
यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु।
तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते।।३३।।
करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम्।।३४।।

मार्कण्डेय उवाच।।३५।।

ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ।।३६।।
समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः।
कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम्।।३७।।
उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ।।३८।।

राजोवाच।।३९।।

भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत्।।४०।।
दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना।
ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि।।४१।।

जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम।
अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः।।४२।।
स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति।
एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ।।४३।।
दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ।
तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि।।४४।।
ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता।।४५।।

ऋषिरुवाच।।४६।।

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे।।४७।।
विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक् पृथक्।
दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे।।४८।।
केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः।
ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किन्नु ते न हि केवलम्।।४९।।
यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः।
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम्।।५०।।
मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः।
ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान्पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु।।५१।।
कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा।
मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति।।५२।।
लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान्किं न पश्यसि।
तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्ते निपातिताः।।५३।।
महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा।
तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः।।५४।।
महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत्।
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।।५५।।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।
तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम्।।५६।।
सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।
सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी।।५७।।
संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी।।५८।।

राजोवाच।।५९।।

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान्।।६०।।
ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज।
यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा।।६१।।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदांवर।।६२।।

ऋषिरुवाच।।६३।।

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम्।।६४।।
तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम।
देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा।।६५।।
उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते।
योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते।।६६।।
आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान् प्रभुः।
तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ।।६७।।
विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ।
स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः।।६८।।
दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम्।
तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः।।६९।।
विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम्।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।।७०।।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः।।७१।।

ब्रह्मोवाच।।७२।।

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।।७३।।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।
अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।।७४।।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।।७५।।
त्वयैतत्पाल्यते देवि! त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।।७६।।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।।७७।।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।।७८।।

कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरीस्त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।।७९।।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।।८०।।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।
सौम्यासौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ।।८१।।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।
यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।।८२।।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे सदा।
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।।८३।।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।।८४।।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत्।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।।८५।।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।।८६।।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ।।८७।।

ऋषिरुवाच।।८८।।

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा।।८९।।
विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ।
नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ।।९०।।
निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः।
उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः।।९१।।
एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ।
मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ।।९२।।
क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ।
समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः।।९३।।
पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः।
तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमाहितौ।।९४।।
उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम्।।९५।।

श्रीभगवानुवाच।।९६।।

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि।।९७।।
किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम।।९८।।

ऋषिरुवाच।।९९।।

वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत्।।१००।।
विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवन् कमलेक्षणः।
आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता।।१०१।।

ऋषिरुवाच।।१०२।।

तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता।
कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः।।१०३।।
एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्।
प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ऐँ ॐ।।१०४।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावणिकि मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

●

प्रथम अध्याय पाठ के बाद महालक्ष्मी के चतुःषष्टियोगिनियों का पाठ करें।

महालक्ष्मी ध्यान

ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।

ॐ नमश्चण्डिकायै

महालक्ष्म्याश्चतुःषष्टियोगिन्यः—

दक्षकर्णा राक्षसी च क्षयन्ती च तथा पुनः।
छाया क्षया पिङ्गलाक्षी अक्षया नाशिनी तथा।।१।।
इला इलावती चैव लया लीना तथा मता।
लङ्का लङ्केश्वरी चैव लरसा विमला तथा।।२।।
हुताशनी विशालाक्षी हूंकारी वडवामुखी।
महारवा महाक्रूरा क्रोधिनी च खरानना।।३।।
सर्वज्ञा तरला तारा ततः शृग्वेदिनी मता।
रौद्री तथा च सरसा ततस्तु रससंग्रहा।।४।।

शर्वरी तालजंघा च रक्ताक्षी तु ततः परम्।
विद्युज्जिह्वाकरङ्किणी मेघनादा ततोमता।।५।।
चण्डोग्रा कालकर्णा च तथा चैव द्विपातना।
पद्मा पद्मावती चैव प्रपञ्चा ज्वलितानना।।६।।
पिचुवक्त्रा पिशाची च पिशिताशी च लोलुपा।
पार्वती पावनी चैव तापिनी कामिनी तथा।।७।।
विकृतपूर्वाऽऽशया चैव वृहत्कुक्षिस्ततः परम्।
दंष्ट्राली विश्वरूपी च यमजिह्वा ततोमता।।८।।
जयन्ती च दुर्जया च तथा चैव यमान्तिका।
विडाला रेवती चाथ प्रेताशी विजया तथा।।९।।
महालक्ष्म्यास्तु योगिन्यश्चतुश्षष्ठिः क्रमादिमाः।
पूजनीयाः प्रयत्नेन सिद्धि कामैस्तु साधकैः।।१०।।

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।

अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रौँ ॐ।।१४।।

अथ श्रीदुर्गासप्तशती तृतीयोध्यायः

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच।।१।।

निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः।
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम्।।२।।
स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः।
यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः।।३।।
तस्य च्छित्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्।
जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम्।।४।।
चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम्।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः।।५।।
स च्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः।।६।।
सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान्।।७।।
तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन।
ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः।।८।।
चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रविविम्बमिवाम्बरात्।।९।।
दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत।
तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः।।१०।।

हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ।
आजगाम गजारुढश्चामरस्त्रिदशार्दनः।।११।।
सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्।
हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम्।।१२।।
भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः।
चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत्।।१३।।
ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः।
बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा।।१४।।
युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः।।१५।।
ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा।
करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम्।।१६।।
उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः।
दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः।।१७।।
देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्।
वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम्।।१८।।
उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम्।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी।।१९।।
बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम्।।२०।।
एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः।
माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान्।।२१।।
कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्।
लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान्।।२२।।
वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च।
निःश्वासपवनेनान्यान् पातयामास भूतले।।२३।।
निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः।
सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका।।२४।।
सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः।
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च।।२५।।
वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत।
लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः।।२६।।

धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः।
श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः।।२७।।
इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत्।।२८।।
सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे।।२९।।
ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः।
छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत।।३०।।
तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः।
तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः।।३१।।
करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च।
कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत।।३२।।
ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम्।।३३।।
ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना।।३४।।
ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान्।।३५।।
सा च तान्प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः।
उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षणम्।।३६।।

देव्युवाच।।३७।।

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः।।३८।।

ऋषिरुवाच।।३९।।

एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम्।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत्।।४०।।
ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः।
अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः।।४१।।
अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्वा निपातितः।।४२।।
ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः।।४३।।

तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः।
जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॐ।।४४।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

◆

अथ श्रीदुर्गासप्तशती चतुर्थोध्यायः

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीं भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।

सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ।।१४।।

ॐ नमश्चण्डिकायै।।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच।।१।।

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांशा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः।।२।।
देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः।।३।।
यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
व्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु।।४।।
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।५।।
किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु।।६।।
हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषैः-
र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या।।७।।
यस्याः समस्तसुरतासमुदीरणेन,
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि।

स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च।।८।।
या मुक्तिहेतुरविचिन्त्य महाव्रता त्व-
मभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै-
र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि।।९।।
शब्दात्मिका सुवमिलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्।
देवी त्रयी भगवती भवभावनाय
वार्त्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री।।१०।।
मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा।।११।।
ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-
बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम्।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण।।१२।।
दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल-
मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन।।१३।।
देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य।।१४।।
ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।।१५।।
धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-
ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति।

स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती प्रसादा-
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन॥१६॥
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता॥१७॥
एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि॥१८॥
दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
सर्वान् सुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम्।
लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी॥१९॥
खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिबहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्डं
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्॥२०॥
दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृहृतदेवपराक्रमाणां
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम्॥२१॥
केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि॥२२॥
त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन,
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-
मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते॥२३॥

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥२४॥

प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।२५।।
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।।२६।।
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।२७।।

ऋषिरुवाच।।२८।।

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः।।२९।।
भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान्।।३०।।

देव्युवाच।।३१।।

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाच्छितम्।।३२।।

देवा ऊचुः।।३३।।

भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते।।३४।।
यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः।
यदि चापि परो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि।।३५।।
संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने।।३६।।
तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके।।३७।।

ऋषिरुवाच।।३८।।

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप।।३९।।
इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी।।४०।।
पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत्।
वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः।।४१।।
रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी।
तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामिते ह्रीँ ॐ।।४२।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

अथ श्रीदुर्गासप्तशती पञ्चमोध्यायः

महासरस्वती ध्यान

ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।

महासरस्वत्याश्चतुःषष्टियोगिन्यः—

पिङ्गलाक्षी विषालाक्षीः समृद्धिवृद्धिरेव च।
श्रद्धास्वाहास्वधाभिक्षामाया संज्ञावसुन्धरा।।१।।
त्रैलोक्यधात्री सावित्री गायत्री त्रिपदेश्वरी।
सुरूपाबहुरूपाश्च स्कन्दमाताऽच्युतप्रिया।।२।।
विमला कमला चैव दारुणी चारुणी तथा।
प्रकृतिर्विकृतिश्चैवसृष्टिः स्थितिश्च संहृतिः।।३।।
सन्ध्या माता सती हंसी तथा च मदर्जिका।
परा तथा देवमाता ततो भगवती किल।।४।।
देवकी चैव कमलालका च त्रिमुखी तथा।
सप्तमुखी ततो देवी सुरासुर विमर्दिनी।।५।।
लम्बोष्ठी उर्ध्वकेशी च ततो बहुशिरा मता।
वृकोदरी रथरेखा शशिरेखा ततः परम्।।६।।
गगनवेगा पवनवेगा भुवनपाला तथा मता।
मदनातुरा अनंगा च अनंग मदना तथा।।७।।
अनंग मेखलाऽनंग कुसुमा च ततो मता।
विश्वरूपा तथा चैवाऽसुरा पूर्वा भयंकरी।।८।।
अक्षोभ्या च तथा देवी मता वै सत्यवादिनी।
वजरूपा वज्ररेखा तथा शुचिव्रता मता।।९।।
वरदा चैव वागीशी चतुःषष्ठि क्रमेण तु।
महापूर्वा सरस्वत्याः योगिन्यस्तु मता-इमाः।।१०।।

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।

श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ।।१४।।

क्लीं ऋषिरुवाच।।१।।

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपते।
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात्।।२।।
तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम्।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च।।३।।

तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च।
ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः।।४।।
हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः।
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम्।।५।।
तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिला।
भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः।।६।।
इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्।
जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः।।७।।

देवा ऊचुः।।८।।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।९।।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः।।१०।।
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः।।११।।
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।।१२।।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।।१३।।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै।।१४।।नमस्तस्यै।।१५।।नमस्तस्यै नमो नमः।।१६।।
या देवी सर्वभूतेषु चेत्यनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै।।१७।।नमस्तस्यै।।१८।।नमस्तस्यै नमो नमः।।१९।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।२०।।नमस्तस्यै।।२१।।नमस्तस्यै नमो नमः।।२२।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।२३।। नमस्तस्यै।।२४।। नमस्तस्यै नमो नमः।।२५।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।२६।।नमस्तस्यै।।२७।।नमस्तस्यै नमो नमः।।२८।।
या देवी सर्वभूतेषु च्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।२९।।नमस्तस्यै।।३०।।नमस्तस्यै नमो नमः।।३१।।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।३२।।नमस्तस्यै।।३३।।नमस्तस्यै नमो नमः।।३४।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।३५।।नमस्तस्यै।।३६।।नमस्तस्यै नमो नमः।।३७।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।३८।।नमस्तस्यै।।३९।।नमस्तस्यै नमो नमः।।४०।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।४१।।नमस्तस्यै।।४२।।नमस्तस्यै नमो नमः।।४३।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।४४।।नमस्तस्यै।।४५।।नमस्तस्यै नमो नमः।।४६।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।४७।।नमस्तस्यै।।४८।।नमस्तस्यै नमो नमः।।४९।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।५०।।नमस्तस्यै।।५१।।नमस्तस्यै नमो नमः।।५२।।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।५३।।नमस्तस्यै।।५४।।नमस्तस्यै नमो नमः।।५५।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।५६।।नमस्तस्यै।।५७।।नमस्तस्यै नमो नमः।।५८।।
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।५९।।नमस्तस्यै।।६०।।नमस्तस्यै नमो नमः।।६१।।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।६२।।नमस्तस्यै।।६३।।नमस्तस्यै नमो नमः।।६४।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।६५।।नमस्तस्यै।।६६।।नमस्तस्यै नमो नमः।।६७।।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।६८।।नमस्तस्यै।।६९।।नमस्तस्यै नमो नमः।।७०।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।७१।।नमस्तस्यै।।७२।।नमस्तस्यै नमो नमः।।७३।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै।।७४।।नमस्तस्यै।।७५।।नमस्तस्यै नमो नमः।।७६।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः।।७७।।

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै।।७८।।नमस्तस्यै।।७९।।नमस्तस्यै नमो नमः।।८०।।

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।८१।।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।।८२।।

ऋषिरुवाच।।८३।।

एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती।
स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन।।८४।।
साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का।
शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा।।८५।।
स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः।
देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः।।८६।।
शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते।।८७।।
तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती।
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया।।८८।।
ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहराम्।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः।।८९।।
ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता सातीव सुमनोहरा।
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम्।।९०।।
नैव तादृक्क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्।
ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर।।९१।।
स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति।।९२।।
यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो।
त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे।।९३।।

ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात्।
पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः।।९४।।
विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे।
रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम्।।९५।।
निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम्।।९६।।
छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि तिष्ठति।
तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः।।९७।।
मृत्योरुत्क्रान्तितदा नाम शक्तिरीशस्त्वयाहृता।
पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे।।९८।।
निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः।
वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी।।९९।।
एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते।
स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते।।१००।।

ऋषिरुवाच।।१०१।।

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम्।।१०२।।
इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु।।१०३।।
स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने।
सा देवीं तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा।।१०४।।

दूत उवाच।।१०५।।

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः।
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः।।१०६।।
अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु।
निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत्।।१०७।।
मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः।
यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक्।।१०८।।
त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः।
तथैव गजरत्नं च हृत्वा देवेन्द्रवाहनम्।।१०९।।

क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः।
उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम्।।११०।।
यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च।
रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने।।१११।।
स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम्।।११२।।
मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्।
भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः।।११३।।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात्।
एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज।।११४।।

ऋषिरुवाच।।११५।।

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत्।।११६।।

देव्युवाच।।११७।।

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम्।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः।।११८।।
किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम्।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा।।११९।।
यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति।।१२०।।
तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु।।१२१।।

दूत उवाच।।१२२।।

अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः।
त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः।।१२३।।
अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्रीस्त्वमेकिका।।१२४।।
इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे।
शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम्।।१२५।।
सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः।
केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि।।१२६।।

देव्युवाच।।१२७।।

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान्।
किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा।।१२८।।
स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत् ॐ।।१२९।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

अथ श्रीदुर्गासप्तशती एकादशोऽध्यायः

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।

कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
वलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रौँ ॐ।।१४।।

क्लीं ऋषिरुवाच।।१।।

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे,
सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम्।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्,
विकासिवक्त्राब्जविकासिताशाः ।।२।।
देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद,
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं,
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।३।।
आधारभूता जगतस्त्वमेका,
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत-
दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये।।४।।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या,
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्,
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।५।।
विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः,
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्,
का ते स्तुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः।।६।।
सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः।।७।।

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।८।।
कालाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते।।९।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।१०।।
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।।११।।
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्त्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।१२।।
हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि।
कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।१३।।
त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि।
माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते।।१४।।
मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते।।१५।।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते।।१६।।
गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते।।१७।।
नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान्कृतोद्यमे।
त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते।।१८।।
किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते।।१९।।
शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते।।२०।।
दंष्ट्रा-करालवदने शिरोमालाविभूषणे।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते।।२१।।
लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे।
महारात्रि महामाये नारायणि नमोऽस्तु ते।।२२।।
मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते।।२३।।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।२४।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते।।२५।।
ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते।।२६।।
हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।२७।।
असुरासृग्वसापङ्कचर्चितास्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्।।२८।।
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा,
रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां,
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।२९।।
एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य,
धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं
कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या।।३०।।
विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे-
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे,
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम्।।३१।।
रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा,
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये,
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्।।३२।।
विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं,
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति,
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः।।३३।।
देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-
र्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः।

पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु,
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्।।३४।।
प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव।।३५।।

देव्युवाच।।३६।।

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ।
तं विणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम्।।३७।।

देवा ऊचुः।।३८।।

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।।३९।।

देव्युवाच।।४०।।

वैवस्वन्तऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ।।४१।।
नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी।।४२।।
पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान्।।४३।।
भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान्।
रक्तादन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः।।४४।।
ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम्।।४५।।
भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा।।४६।।
ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः।।४७।।
ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः।
भरिष्यामि सुरान् शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः।।४८।।
शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्।।४९।।
दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले।।५०।।

रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात्।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः।।५१।।
भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति।।५२।।
तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम्।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम्।।५३।।
भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।।५४।।
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॐ।।५५।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकि मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती द्वादशोऽध्यायः

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।

अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौपधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्लौँ ॐ।।१४।।

क्लीं देव्युवाच।।१।।

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः।
तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम्।।२।।
मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम्।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भनिशुम्भयोः।।३।।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम्।।४।।
न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः।
भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम्।।५।।
शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः।
न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भविष्यति।।६।।
तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत्।।७।।
उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम।।८।।
यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम।
सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम्।।९।।
बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे।
सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च।।१०।।
जानताऽजानता वापि बलिपूजां यथाकृताम्।
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथाकृतम्।।११।।

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः।।१२।।
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।१३।।
श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः।
पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान्।।१४।।
रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते।
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम्।।१५।।
शन्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने।
ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम।।१६।।
उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते।।१७।।
बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम्।
संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम्।।१८।।
दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम्।।१९।।
सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम्।
पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः।।२०।।
विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्।
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या।।२१।।
प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन्सकृत्सुचरिते श्रुते।
श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति।।२२।।
रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम।
युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम्।।२३।।
तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः।।२४।।
ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम्।
अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः।।२५।।
दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः।
सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः।।२६।।
राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा।
आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे।।२७।।

पतत्सु चापि शस्त्रेण संग्रामे भृशदारुणे।
सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा।।२८।।
स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात्।
मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा।।२९।।
दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम ।।३०।।

ऋषिरुवाच।।३१।।

इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा।।३२।।
पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत।
तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा।।३३।।
यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः।
दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि।।३४।।
जगद्विध्वंसिके तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे।
निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः।।३५।।
एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः।
सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम्।।३६।।
तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते।
सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति।।३७।।
व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर।
महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया।।३८।।
सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी।।३९।।
भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे।
सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोपजायते।।४०।।
स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा।
ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम् ॐ।।४१।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकि मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती त्रयोदशोऽध्यायः

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीं भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिंभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीं ॐ।।१४।।

क्लीं ऋषिरुवाच।।१।।

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम्।
एवं प्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत्।।२।।

विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया।
तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः।।३।।
मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे।
तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्।।४।।
आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा।।५।।

मार्कण्डेय उवाच।।६।।

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः।।७।।
प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम्।
निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च।।८।।
जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने।
संदर्शनाथमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः।।९।।
स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन्।
तौ तस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम्।।१०।।
अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः।
निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ।।११।।
ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम्।
एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः।।१२।।
परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका।।१३।।

देव्युवाच।।१४।।

यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन।
मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि ते।।१५।।

मार्कण्डेय उवाच।।१६।।

ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि।
अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात्।।१७।।
सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः।
ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम्।।१८।।

देव्युवाच।।१९।।

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान्।।२०।।
हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति।।२१।।
मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः।।२२।।

सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति।।२३।।
वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः।।२४।।
तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति।।२५।।

मार्कण्डेय उवाच।।२६।।

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम्।।२७।।
बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।।२८।।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः।।२९।।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः क्लीं ॐ।।

श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकि मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

●

इसके बाद भैरवशतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्।।१।।
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः।।२।।
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।।
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।।
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्।।५।।
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।।
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खद्वाङ्गवरधारकः।।७।।
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।।

प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।।
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।।
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।।
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः।।१२।।
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी।।१३।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ।।१४।।

इसके वाद देवीस्तव सूक्त का पाठ करे।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।१।।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः।।२।।
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः।।३।।
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।।४।।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।।५।।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।६।।
या देवी सर्वभूतेषु चेत्यनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।७।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।८।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।९।।

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१०।।
या देवी सर्वभूतेषु च्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।११।।
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१२।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१३।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१४।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१५।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१६।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१७।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१८।।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१९।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२०।।
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२१।।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२२।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२३।।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२४।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२५।।

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२६।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः।।२७।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२८।।
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।२९।।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।।३०।।

श्रीदेव्या स्तुतिपाठं श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

◆

नवार्णजपविधिः

इसके बाद नवार्ण मन्त्र न्यास जप करे।

विनियोगः—अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, ऐँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, क्लीँ कीलकं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे न्यासे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि।

ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे।

ॐ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि।

ॐ ऐँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—

ॐ ऐँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ क्लीँ मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यासः—

ॐ ऐँ हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा।
ॐ क्लीँ शिखायै वषट्।
ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्।
ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यासः—

ॐ ऐँ नमः शिखायाम्।
ॐ ह्रीँ नमः दक्षिणनेत्रे।
ॐ क्लीँ नमः वामनेत्रे।
ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे।
ॐ मुं नमः वामकर्णे।
ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे।
ॐ यैं नमः वामनासापुटे।
ॐ विं नमः मुखे।
ॐ च्चें नमः गुह्ये।

दिङ्न्यासः—

ॐ ऐँ प्राच्यै नमः।
ॐ ऐँ आग्नेय्यै नमः।
ॐ ह्रीँ दक्षिणायै नमः।
ॐ ह्रीँ नैर्ऋत्यै नमः।
ॐ क्लीँ प्रतीच्यै नमः।
ॐ क्लीँ वायव्यै नमः।

ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः।
ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै ऊर्ध्वायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्—

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजां हन्तुं मधुकैटभम्।।१।।
अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्मजलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।२।।
घण्टाशूलहलानि शङ्खमुशले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।३।।

मालापूजनम्—

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अक्षमालिकायै नमः।

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।१।।
अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले तु सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।२।।

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे स्वाहा। १०८ बार जप करे।

जप देवी के दक्षिण हाथ में निवेदित करे।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं ग्रहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसान्महेश्वरि।।

क्षमा प्रार्थना—

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।१।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि।।२।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।३।।
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः।।४।।
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु।।५।।
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।६।।
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि।।७।।
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि।।८।।

श्रीदेव्यामहास्त्रोत्रपाठं श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

●

हवनप्रकरणम्

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं अस्मिन् सार्द्धनवचण्डीकर्मणि पञ्चभूःसंस्कारपूर्वकं अग्निस्थापनं करिष्ये।**

पञ्चभूः संस्कारः—चतुरस्र वेदी का निर्माण करके पञ्चभूः संस्कार करे।

कुशैः परिसमूह्य। कुशाओं से भूमि को झाड़ दे।
तान्कुशानैशान्यां परित्यज्य। उन कुशाओं को ईशान कोण में फेंक दे।
गोमयोदकेनोपलिप्य। गाय के गोबर और जल से लेपन करे।
स्रुव मूलेन त्रिः उल्लिख्य। स्रुवा के मूल से तीन रेखा खींचे।
अनामिकाङ्गुष्ठेन मृदं उद्धृत्य। अनामिका और अङ्गुष्ठ से मिट्टी को ग्रहण करे।
जलेनाऽभ्युक्ष्य। जल से सिंचन करे।

अग्निस्थापनम्—ॐ अ॒ग्निंदू॒तंपुरोद॑धेहव्य॒वाह॒मुप॑ब्रुवे।। दे॒वाँ२।।आसा॑दयादि॒ह।।

अग्निस्थापन करे; पश्चात् ग्रहमण्डल का निर्माण करके ग्रहमण्डलस्थ देवताओं का स्थापन-पूजन करे।

सङ्कल्प—पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं अस्मिन्सार्द्धनवचण्डीकर्मणि ग्रहाणां अधिदेवताप्रत्यधिदेवता-पञ्चलोकपालानाञ्च स्थापनं पूजनं करिष्ये।

ग्रहमण्डलपूजनम्

सर्वप्रथम ग्रहमण्डल का निर्माण करके सुपाडी रख कर देवताओं की स्थापना कर षोडशोपचार पूजन करे।

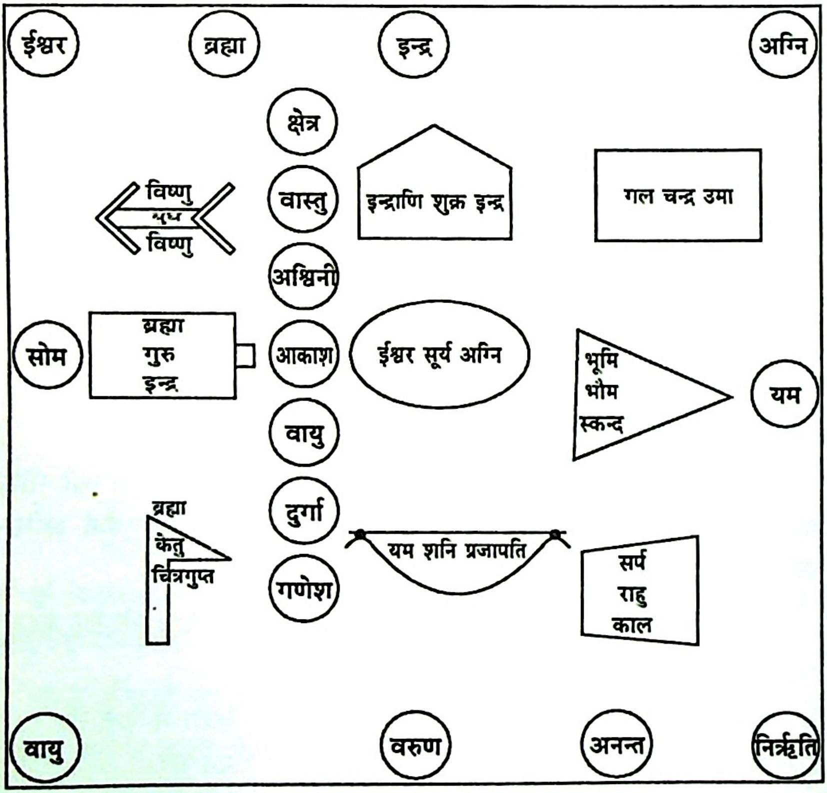
ईश्वर
ब्रह्मा
इन्द्र
अग्नि
क्षेत्र
विष्णु
बुध
विष्णु
वास्तु
इन्द्राणि शुक्र इन्द्र
गल चन्द्र उमा
अश्विनी
सोम
ब्रह्मा
गुरु
इन्द्र
आकाश
ईश्वर सूर्य अग्नि
भूमि
भौम
स्कन्द
यम
वायु
ब्रह्मा
केतु
चित्रगुप्त
दुर्गा
यम शनि प्रजापति
सर्प
राहु
काल
गणेश
वायु
वरुण
अनन्त
निर्ऋति

सूर्य्यावाहनम्—ॐ आकृ॒ष्णेन॒रज॑सा॒वर्त॑मानोनिवे॒शय॑न्न॒मृतं॒मर्त्त्यँच।। हि॒रण्ययेन॑सवि॒तारथे॒नादे॒वोया॑ति॒भुव॑नानि॒पश्य॑न्।।

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ, इह तिष्ठ सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।

सोमावाहनम्—**ॐ इमंदेवाऽअसपत्कꣳसुवद्ध्वंमहतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठ्यायमहते जानराज्ज्यास्येन्द्रियाय॥ इममुमुष्ष्यपुत्रममुष्ष्यैपुत्रमस्यैविशऽएषवोऽमीराजासोमोऽस्माकंब्ब्राह्मणानाꣳराजा॥**

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ, इह तिष्ठ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

भौमावाहनम्—**ॐ अग्निर्म्मूर्द्धादिवःककुत्पतिःपृथिव्याऽअयम्॥ अपाꣳरेताꣳसिजिन्न्वति॥**

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः अवन्तिकादेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छ, इह तिष्ठ भौमाय नमः भौममावाहयामि स्थापयामि।

बुधावाहनम्—**ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्त्तेसꣳसृजेथामयञ्च॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्श्वेदेवायजमानश्चसीदत॥**

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र हरितवर्ण भो बुध! इहागच्छ, इह तिष्ठ बुधाय नमः बुधमावाहयामि स्थापयामि।

बृहस्पत्यावाहनम्—**ॐ बृहस्पतेऽअतिदुर्य्योऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्क्रतुमज्जनेषु॥ यद्दिदयच्छ्वसऽऋतप्प्रजाततदस्म्मासुद्द्रविणंधेहिचित्रम्॥**

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते! इहागच्छ, इह तिष्ठ बृहस्पतये नमः बृहस्पतीं आवाहयामि स्थापयामि।

शुक्रावाहनम्—**ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसंब्ब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रंपयःसोमंप्प्रजा-**

पतिः।। ऋतेनसत्त्यमिन्द्रियंविपानꣳशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोऽमृतंमधु।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ, इह तिष्ठ शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।

शन्यावाहनम्—ॐ शंन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये।। शंय्योरभिस्रवन्तुनः।।

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ, इह तिष्ठ शनैश्चराय नमः शनैश्चरं आवाहयामि स्थापयामि।

राह्वावाहनम्—ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधःसखा।। कयाशचिष्ठयाऽवृता।।

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वैराठिनसपुरोदेशोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहु! इहागच्छ, इह तिष्ठ राहवे नमः राहुं आवाहयामि स्थापयामि।

केत्वावाहनम्—ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे।। समुषद्भिरजायथाः।।

पलाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र धूम्रवर्ण भो केतो! इहागच्छ, इह तिष्ठ केतवे नमः केतुमावाहयामि स्थापयामि।

ग्रहदक्षिणपार्श्वेऽधिदेवतास्थापनम्—

शङ्करावाहनम्—ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम्।। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो ईश्वर इहागच्छ, इह तिष्ठ ईश्वराय नमः ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि।

उमावाहनम्—ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्।। इष्णमन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्वलोकम्मऽइषाण।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो उमे इहागच्छ, इह तिष्ठ उमायै नमः उमावाहयामि स्थापयामि।

स्कन्दावाहनम्—ॐ यदक्क्रन्दꣳप्प्रथमंजायमानऽउद्यन्तसमुद्द्रादुतवापुरीषात्।। श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्त्यंमहिजातंतेऽअर्व्वन्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः भो स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

विष्ण्वावाहनम्—ॐ इदंविष्ष्णुर्व्विचक्क्रमेत्रेधानिदधेपदम्।। समूढमस्यपाꣳसुरेस्वाहा।।

ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मावाहनम्—ॐ आब्ब्रह्मन्ब्ब्राह्मणोब्ब्रह्मवर्च्चसीजायतामाराष्ट्रेराजन्न्यꣳशूरऽइषव्व्योतिव्व्याधीमहारथोजायतान्दोग्ग्ध्रीधेनुर्व्वोढानड्वानाशुꣳसप्प्तिꣳपुरन्धिर्व्योषाजिष्णूरथेष्ठाःसभेयोयुवास्ययजमानस्यावीरोजायतान्निकामेनिकामेनꣳपर्ज्जन्न्योवर्षतुफलवत्त्योनओऽषधयꣳपच्च्यन्तांय्योगक्षेमोनꣳकल्प्पताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मा इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रावाहनम्—ॐ सजोषाऽइन्द्रसगणोमरुद्भिःसोमंपिबव्वृत्रहाशूरव्विद्वान्।। जहिशत्रूँ२।। रपमृधोनुदस्वाथाभयंकृणुहिव्विश्श्वतोनꣳ।।

ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

यमावाहनम्—ॐ यमायत्त्वङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा।। स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मꣳपित्रे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः यम इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

कालावाहनम्—ॐ कार्षिरसिसमुद्द्रस्यत्त्वाऽक्षित्त्याऽउन्नयामि।। समापोऽअद्भिरग्ग्मतसमोषधीभिरोषधीꣳ।।

ॐ भूर्भुवःस्वः काल इहागच्छ इह तिष्ठ कालाय नमः कालमावाहयामि स्थापयामि।

चित्रगुप्तावाहनम्—ॐ चित्रावसोस्वस्तितेपारमशीय।।

ॐ भूर्भुवःस्वः चित्रगुप्त इहागच्छ इह तिष्ठ चित्रागुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि।

ग्रहाणां वामपार्श्वे प्रत्यधिदेवतास्थापनम्—

अग्न्यावाहनम्—ॐ अ॒ग्निंदू॒तंपु॒रोद॑धेहव्य॒वाह॒मुप॑ब्रुवे।। दे॒वाँ२।।आसा॑दयादि॒ह।।

ॐ भूर्भुवःस्वः अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

अबावाहनम्—ॐ आपो॒हिष्ठाम॑यो॒ भु॒वस्तान॑ऽऊर्जे द॑धातन।। म॒हेरणा॑य॒ चक्ष॑से।।

ॐ शूर्भुवःस्वः अप इहागच्छ इह तिष्ठ अद्भ्यो नमः अप-आवाहयामि स्थापयामि।

पृथिव्यावाहनम्—ॐ स्यो॒नापृ॑थिविनोभवानृक्ष॒रानि॒वेशनी।। यक्षा॑नु॒ꣳशर्म्म॑सु॒प्प्रथा॑ꣳ।।

ॐ भूर्भुवःस्वः पृथिवि इहागच्छ इह तिष्ठ पृथिव्यै नमः पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि।

विष्ण्वावाहनम्—ॐ व्विष्ष्णो॑रु॒रराट॑मसि॒व्विष्ष्णो॒ꣳश्नप्त्रे॑स्स्थो॒व्विष्ष्णो॒ꣳस्स्यूर॑सि॒व्विष्ष्णो॑र्ध्रु॒वो॒सि।। व्वै॒ष्ष्णव॒म॑सि॒व्विष्ष्ण॑वेत्त्वा।।

ॐ भूर्भुवःस्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रावाहनम्—ॐ इन्द्र॑ऽआसांने॒ताबृह॒स्प्पति॒र्द्दक्षि॑णाय॒ज्ञःपु॒रऽए॑तु॒सोम॑ः।। दे॒व॒सेना॑नामभिभञ्जती॒नांजय॑न्तीनांम॒रुतो॑य॒न्त्वग्ग्र॑म्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राय इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्राण्यावाहनम्—ॐ आदि॑त्त्यै॒रास्स्ना॑सीन्द्रा॒ण्ण्याऽउ॒ष्ष्णीष॑ः।। पू॒षासि॑घ॒र्म्मा॑य॒दीष्ष्व।।

ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राणि इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राण्यै नमः इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रजापत्यावाहनम्—ॐ प्रजा॑पते॒नत्वदे॒तान्न्य॒न्न्योव्विश्श्वा॑रू॒पाणि॒परि॒ता ब॑भूव।। यत्का॑मास्तजुहु मस्तन्नो॑ऽअस्तुव्व॒यꣳस्या॑म॒पत॑योरयी॒णाम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः प्रजापते इहागच्छ इह तिष्ठ प्रजापतये नमः प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि।

सर्पावाहनम्—ॐ नमो॑ऽस्तुस॒र्प्पेब्भ्यो॒येकेच॑पृथि॒वीमनु॑।। येऽअ॒न्तरि॑क्षे॒येदि॒वितेब्भ्य॑ःस॒र्प्पेब्भ्यो॒ नम॑ः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पाः इहागच्छ इह तिष्ठ सर्पेभ्यो नमः सर्पानावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मावाहनम्—ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनआवः।। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

पञ्चलोकपालादिस्थापनम्—

गणेशावाहनम्—ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहेवसोमम।। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् ।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

दुर्गावाहनम्—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन।। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

वाय्वावाहनम्—ॐ वायोयेतेसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि।। नियुत्त्वान्त्सोमपीतये।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वायो इहागच्छ इह तिष्ठ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

आकाशावाहनम्—ॐ घृतंघृतपावानःपिबतवसांवसापावानःपिबन्तान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा।। दिशःप्प्रदिशऽआदिशोविदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यःस्वाहा।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आकाश इहागच्छ इह तिष्ठ आकाशाय नमः आकाशमावाहयामि स्थापयामि।

अश्विनीकुमारावाहनम्—ॐ यावांकशा मधुमत्याश्श्विनासूनृतावती।। तया यज्ञंमिमिक्षतम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः अश्विनौ इहागच्छ इह तिष्ठ अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

वास्तोस्पत्यावाहनम्—ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः।। यत्त्वेमहेप्रतितन्नोजुषस्वशंनोभवद्विपदे शंचतुष्पदे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वास्तोष्पते इहागच्छ इह तिष्ठ वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

क्षेत्रपालावाहनम्—ॐ न॒हिस्प्पश॒मवि॑दन्न॒न्यम॒स्माद्वै॑श्वान॒रात्पु॒रऽए॒तार॑म॒ग्नेः॥
एमै॑नमवृधन्न॒मृता॒ऽअम॑र्त्त्यंवै॑श्वान॒रंक्षैत्र॑जित्त्यायदे॒वाः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः क्षेत्राधिपते इहागच्छ इह तिष्ठ क्षेत्राधिपतये नमः क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि।

दशदिक्पालानां स्थापनम्—

इन्द्रावाहनम्—ॐ त्रा॒तार॒मिन्द्र॑मवि॒तार॒मिन्द्र॒ꣳहवे॑हवेसु॒हव॒ꣳशूर॒मिन्द्र॑म्॥ ह्वया॑मिश॒क्रंपु॑रुहू॒तमिन्द्र॒ꣳस्व॒स्तिनो॑म॒घवा॑धा॒त्त्विन्द्रः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रेहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

अग्न्यावाहनम्—ॐ त्वन्नो॑ऽअग्ने॒तव॑पा॒युभि॒र्म्म॒घोनो॑रक्षत॒न्व॒श्चवन्द्य॥ त्रा॒तातो॒कस्य॒तन॑ये॒गवा॑म॒स्यनि॑मेष॒ꣳरक्ष॑माण॒स्तव॑व्र॒ते॥

ॐ भूर्भुवःस्वः अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

यमावाहनम्—ॐ य॒माय॒त्वाङ्गि॑रस्वतेपितृ॒मते॒ स्वाहा॑॥ स्वाहा॑ घ॒र्म्माय॒ स्वाहा॑ घ॒र्म्मः पि॒त्रे॥

ॐ भूर्भुवःस्वः यम इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

निर्ऋत्यावाहनम्—ॐ अ॒सु॑न्वन्त॒मय॑जमानमिच्छस्ते॒नस्ये॒त्यामन्वि॑हि॒तस्क॑रस्य॥ अ॒न्यम॒स्मदि॑च्छ॒सात॑ऽइ॒त्या नमो॑ देवि निर्ऋते॒ तुब्भ्य॑मस्तु॥

ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋते इहागच्छ इह तिष्ठ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

वरुणावाहनम्—ॐ तत्त्वा॑यामि॒ब्रह्म॑णा॒वन्द॑मान॒स्तदाशा॑स्ते॒यज॑मानोह॒विर्भिः॥ अहे॑डमानोवरुणेह॒बो॒द्ध्युरु॑श॒ꣳस॒मान॒ऽआयुः॒प्रमो॑षीः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

वाय्वावाहनम्—ॐ आनो॑नि॒युद्भिः॑श॒तिनी॑भिरध्व॒रꣳसह॒स्रिणी॑भि॒रुप॑याहिय॒ज्ञम्॥ वायो॑ऽअ॒स्मिन्त्सव॑नेमादयस्वयू॒यंपा॑तस्व॒स्तिभिः॒सदा॑नः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः वायो इहागच्छ इह तिष्ठ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

सोमावाहनम्—ॐ व्वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः।। प्रजावन्तःसचेमहि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सोमहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

ईशानावाहनम्—ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिंधियञ्जिन्वमवसेहूमहेव्वयम्।। पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये।।

ॐ भूर्भुवःस्वः ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मावाहनम्—ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्व्वतासोवृत्रहत्येभरहूतौसजोषाः।। यःशꣳसंतेस्तुवतेधायिपज्ज्रऽइन्द्रज्ज्येष्ठाऽअस्म्माँ२।।ऽअवन्तुदेवाः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मन्निहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

अनन्तावाहनम्—ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी।। यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः अनन्त इहागच्छ इह तिष्ठ अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु।। विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

सूर्याद्यनन्तादिवता आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः स्थापिताः भवन्तु।।

१. ध्यानम्—ॐ सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात्।। सभूमिꣳसर्व्वतस्प्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

२. आसनम्—ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वंय्यद्भूतंयच्चभाव्यम्।। उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

३. पाद्यम्—ॐ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्श्चपूरुषः।। पादोऽस्यविश्श्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पाद्योः पाद्यं समर्पयामि।

४. अर्घ्यम्—ॐ त्रिपादूर्द्ध्वऽउदैत्पुरुषःपादोऽस्येहाभवत्पुनः।। ततोविष्ष्वङ्व्व्यक्क्रामत्साशनानशनेऽअभि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

५. आचमनम्—ॐ ततोविराडजायतविराजोऽअधिपूरुषः।। स जातोऽअत्यरिच्च्यतपश्श्चाद्भूमिमथोपुरः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

६. स्नानीयम्—ॐ तस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतःसम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्।। पशूँस्ताँश्श्चक्क्रेव्वायव्यानारण्याग्राम्म्याश्श्चये।।

ॐ भूर्भुव.स्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

७. पुनराचमनीयम्—ॐ तस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतऽऋचःसामानिजज्ञिरे।। छन्दाᳪसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्म्मादजायत।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

८. पयःस्नानम्—ॐ पयःपृथिव्व्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः।। पयस्वतीःप्प्रदिशःसन्तुमह्य्यम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

९. दधिस्नानम्—ॐ दधिक्क्राव्ण्णोऽअकारिषंजिष्ण्णोरश्श्वस्यव्वाजिनः।। सुरभिनोमुखाकरत्त्प्रणऽआयूᳪषितारिषत्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

१०. घृतस्नानम्—ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्म्वस्यधाम।। अनुष्ष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंव्वृषभव्वक्षिहव्व्यम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

११. मधुस्नानम्—ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः।। माद्ध्वीर्न्नः-

स॒न्त्वोष॑धीः।। मधु॒ नक्त॑मु॒तोषसो॒मधु॑म॒त्पार्त्थि॑वꣳ॒रजः॑।। मधु॒द्यौर॑स्तुनः॒पिता।। मधु॑मान्नो॒व्व॒न॒स्प्पति॒र्म्मधु॑माँऽअस्तु॒सूर्य्यः॑।। माद्ध्वी॒र्ग्गावो॑ भवन्तुनः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

१२. शर्क्करास्नानम्—ॐ अ॒पाꣳरस॒मुद्व॑यस॒ꣳसूर्य्ये॒सन्त॑ꣳस॒माहि॑तम्।। अ॒पाꣳरस॑स्य॒योरस॒स्तंव्वो॑गृह्णाम्म्यु॒त्तम॑मुपया॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑यत्त्वा॒जुष्ट॑ङ्गृह्णाम्म्ये॒षते॒योनि॒रिन्द्रा॑यत्वा॒जुष्ट॑तमम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शर्क्करास्नानं समर्पयामि।

१३. पञ्चामृतस्नानम्—ॐ पञ्च॑न॒द्यः॒सर॑स्वती॒मपि॑यन्ति॒सस्रो॑तसः।। सर॑स्वती॒तुप॑ञ्च॒धासोदे॒शेभ॑वत्स॒रित्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

१४. शुद्धोदकस्नानम्—ॐ शु॒द्धवा॑लः॒सर्व॑शुद्धवालोमणि॒वाल॒स्तऽआ॑श्विनाः॒श्येतः॑श्येता॒क्षो॒रु॒णस्तेरु॒द्राय॑पशु॒पत॑येक॒र्ण्णा॑या॒माऽअ॑विलि॒प्तारौ॒द्रानभो॑रूपाः॒पार्ज्ज॒न्याः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

१५. वस्त्रनिवेदनम्—ॐ तस्मा॒दश्श्वा॑ऽअजायन्त॒येकेचो॑भ॒याद॑तः।। गावो॑हजज्ञि॒रे॒तस्म्मा॒त्तस्म्मा॑ज्ज्जा॒ताऽअ॑जा॒वय॑ः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

१६. वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—ॐ आपो॒हिष्ठाम॑यो॒भुव॒स्तान॑ऽऊ॒र्ज्जेद॑धातन।। म॒हेरणा॑य॒चक्ष॑से।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

१७. उपवस्त्रनिवेदनम्—ॐ तंय्य॒ज्ञम्ब॒र्हिषि॒प्प्रौक्ष॒न्पुरु॑षञ्जा॒तम॑ग्ग्र॒तः।। तेन॑दे॒वाऽअ॑यजन्तसा॒ध्याऽऋष॑यश्श्च॒ये।। ॐ सुजा॑तो॒ज्ज्योति॑षास॒हशर्म्म॒व्वरू॑थ॒मास॑दु॒त्त्स्वः॑।। व्वासो॑अग्ग्ने॒व्विश्श्व॑रूप॒ꣳसंव्व्य॑यस्वव्विभावसो।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नम उपवस्त्रं समर्पयामि।

१८. उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—ॐ योव॑ःशि॒वत॑मो॒रस॒स्तस्य॑भाजयते॒हनः॑।। उ॒श॒तीरि॑वमा॒तरः॑।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

१९. यज्ञोपवीतनिवेदनम्—ॐ य॒त्पुरु॑षं॒व्य्यद॑धुःकति॒धाव्य्य॑कल्पयन्।। मुख॒ङ्किम॑स्यासी॒त्किम्बा॒हूकिमू॒रूपादा॑ऽउच्च्येते।। ॐ य॒ज्ञोदे॒वाना॒म्प्रत्त्यै॑तिसु॒म्म्नमादि॑त्त्यासो॒भव॑तामृड॒यन्तः॑।। आवो॒र्व्वाची॑सुम॒तिर्व्वृ॑त्त्याद॒ꣳहोश्चि॒द्द्याव॑रिवो॒वित्त॒रास॑दादि॒त्त्येभ्य॑स्त्वा।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

२०. यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयजलम्—ॐ तस्मा॒ऽअर॑ङ्गमामवो॒यस्य॒क्षया॑य॒जिन्न्व॑थ।। आपो॑ज॒नय॑था च नः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

२१. सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—ॐ त्वाङ्ग॑न्ध॒र्व्वाऽअ॑खनँ॒स्त्वामिन्द्र॒स्त्वाम्बृह॒स्पति॑ः।। त्वामो॑षधे॒सोमो॒राजा॑वि॒द्वान्न्यक्ष्मा॑दमुच्च्यत।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

२२. अक्षतसमर्पणम्—ॐ अक्ष॒न्नमी॑मदन्त॒ह्यव॑प्प्रि॒याऽअ॑धूषत।। अस्तो॑षत॒स्वभा॑नवो॒विप्प्रा॒नवि॑ष्ठयाम॒तीयोजा॒न्न्वि॒न्द्रते॒हरी॑।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

२३. पुष्पमालासमर्पणम्—ॐ ओष॑धीः॒प्प्रति॑मोदद्ध्वं॒पुष्प्य॑वतीःप्र॒सूव॑रीः।। अश्श्वा॑ऽइवस॒जित्त्व॑रीर्व्वी॒रुधः॑पारयि॒ष्ण्णवः॑।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

२४. दूर्वासमर्पणम्—ॐ काण्डा॑त्काण्डात्प्र॒रोह॑न्ती॒परु॑षःपरुषु॒ष्प्परि॑।। ए॒वानो॑दूर्व्वे॒प्प्रत॑नुस॒हस्रे॑ण श॒तेन॑ च।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

२५. नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—ॐ अहि॑रिवभो॒गैःपर्य्ये॑तिबा॒हुंज्याया॑हे॒तिंप्परि॒बाध॑मानः।। हस्त॒घ्नोविश्वा॑व॒युना॑निवि॒द्वान्पुमा॒न्पुमा॑ꣳसंपरि॑पातुवि॒श्वतः॑।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

२६. सिन्दूरसमर्पणम्—ॐ सिन्धो॑रिवप्राद्ध्व॒नेशू॒घ॒नासो॒वात॑प्प्रमियःपतयन्तिय॒ह्वाः।। घृ॒तस्य॒धारा॑ऽअरु॒षोनवा॒जीकाष्ठा॑भि॒न्दन्नू॒र्म्मिभिः॒पिन्व॑मानः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य—

२७. धूपसमर्पणम्—ॐ ब्रा॒ह्म॒णो॒ऽस्य॒मुख॑मासीद्बा॒हूरा॑ज॒न्यः॒कृतः।। ऊ॒रूतद॑स्य॒यद्वैश्यः॑प॒द्भ्याꣳशू॒द्रोऽअ॑जायत।। ॐ धूर॑सि॒धूर्व॒धूर्व॑न्तं॒य्यो॒ऽस्मान्धूर्व॑ति॒तंधूर्व॒यंव॒यंधूर्वा॑मः।। दे॒वाना॑मसि॒वह्नि॑तम॒ꣳसस्नि॑तमं॒पप्रि॑तमं॒जुष्ट॑तमंदे॒व॒हूत॑मम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

२८. दीपसमर्पणम्—ॐ अ॒ग्निर्ज्ज्योति॒र्ज्ज्योति॑र॒ग्निःस्वाहा॒सूर्य्यो॒ज्ज्योति॒र्ज्ज्योतिः॒सूर्य्यः॒स्वाहा॑।। अ॒ग्निर्व्वर्च्चो॒ज्ज्योति॒र्व्वर्च्चः॒स्वाहा॒सूर्य्यो॒व्वर्च्चो॒ज्ज्योति॒र्व्वर्च्चः॒स्वाहा॑।। ज्ज्योतिः॒सूर्य्यः॒सूर्य्यो॒ज्ज्योतिः॒स्वाहा॑।। ॐ च॒न्द्रमा॒मन॑सोजा॒तश्श्चक्षोः॒सूर्य्यो॑ऽअजायत।। श्श्रोत्रा॑द्वा॒युश्च॑प्प्रा॒णश्च॒मुखा॑द॒ग्निर॑जायत।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

२९. नैवेद्यसमर्पणम्—ॐ अन्न॑प॒तेऽन्न॑स्यनोदेह्यनमी॒वस्य॑शु॒ष्मिणः॑।। प्रप्र॑दा॒तारं॑तारिष॒ऊर्ज्जं॑नोधेहिद्वि॒पदे॒चतु॑ष्पदे।। ॐ नाभ्या॑ऽआसीद॒न्तरि॑क्षꣳशी॒र्ष्णोद्यौःसम॑वर्त्तत।। प॒द्भ्याम्भूमि॒र्द्दिशः॒श्श्रोत्रा॒त्तथा॑लो॒काँ२।।ऽअ॑कल्प्पयन्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

३०. करोद्वर्तनसमर्पणम्—ॐ अ॒ꣳशुना॑तेअ॒ꣳशुः॒पृच्च्यतां॒परु॑षा॒परुः॑।। ग॒न्धस्ते॒सोम॑मवतु॒मदा॑य॒रसो॒ऽअच्च्युतः॑।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

३१. ताम्बूलादिसमर्पणम्—ॐ यत्पुरु॑षेणह॒विषा॑दे॒वाय॒ज्ञमत॑न्वत।। व॒स॒न्तो॒ऽस्यासी॒दाज्ज्यं॑ग्ग्री॒ष्मऽइ॒ध्मःश॒रद्ध॒विः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलपत्रं पूगीफलं एलालवङ्गादिकञ्च समर्पयामि।

३२. फलादिसमर्पणम्—ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः।। बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

३३. दक्षिणासमर्पणम्—ॐ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत्। सदाधारपृथिवीद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

३४. नीराजनसमर्पणम्—ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजःपितुरप्प्रायिधामभिः।। दिवःसदाꣳसिबृहतीवितिष्ठसऽआत्वेषंवर्त्ततेतमः।। ॐ इदꣳहविःप्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्वगणꣳस्वस्तये।। आत्मसनिप्प्रजासनिपशुसनिलोकसन्न्यभयसनि।। अग्निःप्प्रजांबहुलांमेकरोत्वन्नंपयोरेतोऽअस्म्मासुधत्त।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

३५. पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन्।। तेहनाकम्महिमानःसचन्तयत्रपूर्वेसाध्याःसन्तिदेवाः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलीं समर्पयामि।

३६. परिक्रमासमर्पणम्—ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधःकृताः।। देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि सभी द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

३७. पुष्पाञ्जलिः—ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयोव्यन्तोविप्प्रायमतिम्।। तेषांविशिप्प्रियाणांवोऽहमिष मूर्ज्जꣳसमग्ग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्त्वाजुष्टं तमम्।।

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।।

३८. पूजनसमर्पणम्—अनया पूजया आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताः प्रीयन्तां न मम।।

ग्रहमण्डलस्थदेवानामावाहनं परिपूर्णम्

●

असङ्ख्यातरुद्रपूजनम्

आवाहनम्—ॐ असङ्ख्यातासहस्राणि ये रुद्राऽअधिभूम्म्याम्।। तेषांसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः असंख्यातरुद्रान् आवाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु।। विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

असंख्यातरुद्रदेवताः सुप्रतिष्ठिता भवत।।

१. ध्यानम्—ॐ नमस्ते रुद्रमन्न्यवऽउतोतऽअषवे नमः।। बाहुब्भ्यामुतते नमः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि सम-र्पयामि।

२. आसनम्—ॐ यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी।। तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

३. पाद्यम्—ॐ यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे।। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिꣳसीःपुरुषञ्जगत्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

४. अर्घ्यम्—ॐ शिवेनवचसात्त्वागिरिशाच्छावदामसि।। यथानःसर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसुमनाऽसत्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

५. आचमनम्—ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्प्रथमोदैव्योभिषक्।। अहीँश्च्चसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाँश्च्चयातुधान्योधराचीःपरासुव।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

६. स्नानीयम्—ॐ अ॒सौयस्त्ता॒म्म्राऽअ॑रु॒णऽउ॒तबब्भ्रुःसु॑मु॒ङ्गल॑ः॥ येचैनꣳरु॒द्रा॒ऽअ॒भितो॑दि॒क्षुश्श्रि॒ताःस॑हस्र॒शोवै॑षा॒ꣳहेड॑ऽईमहे॥

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

७. पुनराचमनीयम्—ॐ अ॒सौयो॑व॒सर्प्प॑ति॒नील॑ग्ग्रीवो॒विलो॑हितः॥ उ॒तैन॑ङ्गो॒पाऽअ॑दृश्श्र॒न्नदृ॑श्श्रन्नुदहा॒र्य्युः॒सदृ॒ष्टोमृ॑डयातिनः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

८. पयःस्नानम्—ॐ पय॑ःपृथि॒व्यांपय॒ऽओष॑धीषु॒पयो॑दि॒व्य॒न्तरि॑क्षे॒पयो॑धाः॥ पय॑स्वतीः॒प्प्र॒दिश॑ःसन्तु॒मह्य॑म्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

९. दधिस्नानम्—ॐ द॒धि॒क्राव्ण्णो॑ऽअकारिषं॑जि॒ष्ण्णोरश्व॑स्यवा॒जिन॑ः॥ सु॒र॒भिनो॒मुखा॑कर॒त्प्रण॒ऽआयू॑ꣳषितारिषत्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

१०. घृतस्नानम्—ॐ घृ॒तम्मि॑मिक्षेघृ॒तम॑स्य॒योनि॑र्घृ॒तेश्रि॒तोघृ॒तम्व॑स्य॒धाम॑॥ अ॒नु॒ष्व॒धमाव॑हमा॒दय॑स्व॒स्वाहा॑कृतंवृषभवक्षिह॒व्यम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

११. मधुस्नानम्—ॐ मधु॒वाता॑ऽऋताय॒तेमधु॑क्षरन्ति॒सिन्ध॑वः॥ माद्ध्वी॑र्न्नःस॒न्त्वोष॑धीः॥ मधु॒नक्त॑मु॒तोषसो॒मधु॑म॒त्पार्त्थि॑व॒ꣳरज॑ः॥ मधु॒द्यौर॑स्तुनःपि॒ता॥ मधु॑मान्नो॒वन॒स्प्पति॒र्म्मधु॑माँऽअस्तु॒सूर्य्य॑ः॥ माद्ध्वी॒र्ग्गावो॑ भवन्तु नः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

१२. शर्करास्नानम्—ॐ अ॒पाꣳरस॒मुद्व॑यस॒ꣳसूर्य्ये॒सन्त॑ꣳस॒माहि॑तम्॥ अ॒पाꣳरस॑स्य॒योरस॒स्तंवो॑गृह्णाम्म्युत्त॒ममु॑पया॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑यत्त्वा॒जुष्ट॑ङ्गृह्णाम्म्ये॒षते॒योनि॒रिन्द्रा॑यत्वा॒जुष्ट॑तमम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

१३. पञ्चामृतस्नानम्—ॐ पञ्च॑न॒द्यः॒सर॑स्वती॒मपि॑यन्ति॒सस्रो॑तसः॥ सर॑स्वती॒तुप॑ञ्च॒धासोदे॒शेभ॑वत्स॒रित्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

१४. शुद्धोदकस्नानम्—**ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्तेरुद्रायपशुपतयेकर्णायामाऽअवलिप्तारौद्रानभोरूपाः पार्जन्याः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

१५. वस्त्रनिवेदनम्—**ॐ नमोस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्राक्षायमीढुषे।। अथोयेऽअस्यसत्त्वानोहन्तेभ्योकरन्नमः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

१६. वस्त्राङ्गाचमनीयं जलम्—**ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन।। महेरणायचक्षसे।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

१७. उपवस्त्रनिवेदनम्—**ॐ प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्ज्याम्।। याश्चतेहस्तऽइषवः परातभगवोवप।। ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः।। वासोअग्ग्नेविश्वरूपꣳसंव्ययस्वविभावसो।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

१८. उपवस्त्राङ्गाचमनीयं जलम्—**ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः।। उशतीरिवमातरः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

१९. यज्ञोपवीतनिवेदनम्—**ॐ विज्ज्यन्धनुःकपर्द्दिनोविशल्ल्योबाणवाँ२।। ऽउत।। अनेशन्नस्ययाऽइषवऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः।। ॐ यज्ञोदेवानाम्प्रत्त्येतिसुम्म्नमादित्त्यासोभवतामृडयन्तः।। आवोर्वाचीसुमतिर्वृवृत्त्यादꣳहोश्चिद्याव्वरिवोवित्तरासदादित्त्येभ्यस्त्वा।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

२०. यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयं जलम्—**ॐ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ।। आपोजनयथा च नः।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

२१. सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—**ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।। त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

२२. अक्षतसमर्पणम्—ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत।। अस्तौषतस्वभानवोव्विप्प्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

२३. पुष्पमालासमर्पणम्—ॐ ओषधीःप्प्रतिमोदद्ध्वंपुष्प्पवतीःप्रसूवरीः।। अश्श्वाऽइवसजित्त्वरीर्व्वीरुधःपारयिष्ण्णवः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

२४. दूर्वासमर्पणम्—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषस्प्परि।। एवानोदूर्व्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

२५. नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—ॐ अहिरिवभोगैःपर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिंप्परिबाधमानः।। हस्तग्घ्नोविश्श्वाव्वयुनानिव्विद्द्वान्पुमान्पुमाꣳसंपरिपातुव्वि-श्वतः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

२६. सिन्दूरसमर्पणम्—ॐ सिन्धोरिवप्प्राद्ध्वनेशूघनासोव्वातप्प्रमियःपतयन्तियह्वाः।। घृतस्यधाराऽअरुषोनव्वाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिःपिन्न्वमानः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य—

२७. धूपसमर्पणम्—ॐ यातेहेतिर्म्मीढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः।। तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मयापरिभुज।। ॐ धूरसिधूर्व्वधूर्व्वन्तंध्योऽस्मान्धूर्व्वतितंधूर्व्वयंव्वयंधूर्व्वामः।। देवानामसिवह्नितमꣳसस्नितमंपप्रितमंजुष्टतमंदेवहूतमम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

२८. दीपसमर्पणम्—ॐ परितेधन्न्वनोहेतिरस्म्मान्न्वृमक्तुव्विश्श्वतः।। अथोयऽइषुधिस्तवारेऽअस्म्मन्निधेहितम्।। ॐ अग्ग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्ग्निः स्वाहासूर्य्योज्ज्योतिर्ज्ज्योतिःसूर्य्यःस्वाहा।। अग्ग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहासूर्य्योव्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहा।। ज्ज्योतिःसूर्य्यःसूर्य्यो ज्ज्योतिःस्वाहा।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

२९. नैवेद्यसमर्पणम्—ॐ अवतत्त्यधनुष्ट्वꣳसहस्राक्क्षशतेषुधे।। निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखाशिवोनः सुमनाभव।। ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः।। प्रप्रदातारंतारिषऊर्ज्जन्नो धेहिद्विपदेचतुष्पदे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

३०. करोद्वर्तनसमर्पणम्—ॐ अ॒ꣳशुना॑तेअ॒ꣳशुःपृ॑च्च्यतां॒परु॑षा॒परुः॑।। ग॒न्धस्ते॒सोम॑मवतु॒मदा॑य॒रसो॒ऽअच्च्युतः॑।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

३१. ताम्बूलादिसमर्पणम्—ॐ नम॑स्त॒ऽआयु॑धायाना॑तताय धृ॒ष्णवे॑।। उ॒भाभ्या॑मु॒तते॒नमो॑बा॒हुभ्या॑न्त॒वधन्व॑ने।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलपत्रं पूगीफलं एलालवङ्गादिकञ्च समर्पयामि।

३२. फलादिसमर्पणम्—ॐ याःफ॒लिनी॒र्य्या॑ऽअ॑फ॒लाऽअ॑पु॒ष्पायाश्च॑पु॒ष्पिणीः॑।। बृह॒स्पति॑प्रसू॒ता॒स्तानो॑मुञ्च॒त्वꣳह॑सः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

३३. दक्षिणासमर्पणम्—ॐ हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भःसम॑वर्त्त॒ताग्रे॑भू॒तस्य॑जा॒तःपति॒रेक॑ऽआसीत्। सदा॑धारपृथि॒वीद्यामु॒तेमांकस्मै॑दे॒वाय॑ह॒विषा॑विधेम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

३४. नीराजनसमर्पणम्—ॐ आरा॑त्रि॒पार्थि॑वꣳरजः॑पि॒तुर॑प्रायि॒धाम॑भिः।। दि॒वःसदा॑ꣳसिबृह॒तीवि॑तिष्ठस॒ऽआत्त्वे॒षंव॑र्त्तते॒तमः॑।। ॐ इ॒दꣳह॒विःप्र॒जन॑नंमे॑ऽअस्तु॒दश॑वीर॒ꣳसर्व॑गणꣳस्व॒स्तये॑।। आ॒त्म॒सनि॑प्रजा॒सनि॑पशु॒सनि॑लोक॒सन्य॑भय॒सनि॑।। अ॒ग्निःप्र॒जांब॑हु॒लांमे॑करो॒त्वन्नं॑पयो॒रेतो॑ऽअ॒स्मासु॑धत्त।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

३५. पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—ॐ मान॑स्तो॒केतन॑येमान॒ऽआयु॑षि॒मानो॒गोषु॒मानो॒ऽअश्वे॑षुरीरिषः।। मानो॑वी॒रान्रु॑द्रभा॒मिनो॑वधीर्ह॒विष्म॑न्तः॒सद॒मित्त्वा॑हवामहे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलीं समर्पयामि।

३६. परिक्रमासमर्पणम्—ॐ मानो॑म॒हान्त॑मु॒तमानो॑ऽअर्भ॒कम्मान॒ऽउक्ष॑न्तमु॒तमान॑ऽउक्षि॒तम्।। मानो॑वधीःपि॒तरम्मो॒तमा॒तरम्मानः॑प्प्रि॒यास्त॒न्वो॑रुद्ररीरिषः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

३७. पूजनसमर्पण—**अनयापूजया असंख्यातरुद्रदेवताः प्रीयन्तान्न मम।**

पूजन के बाद कुशकण्डिका करे।

असंख्यातरुद्राणां पूजनं परिपूर्णम्

●

कुशकण्डिकाविधिः

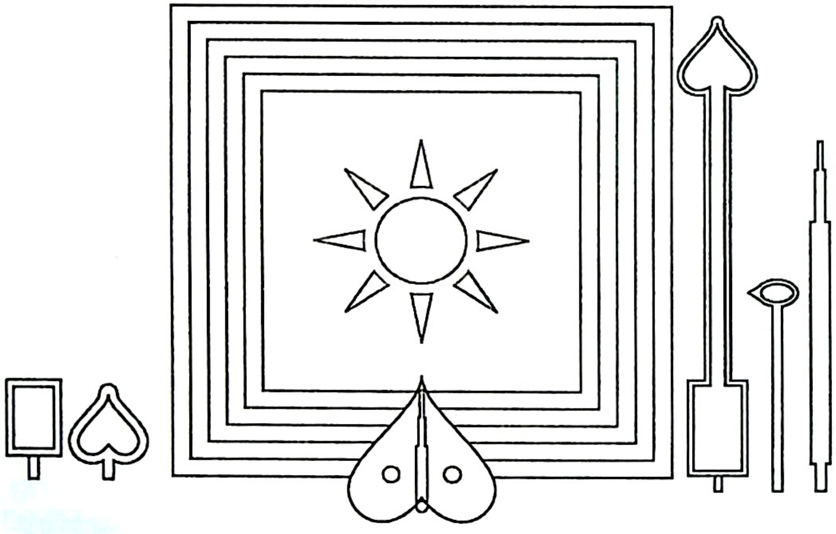

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मणः स्थापनार्थं ब्रह्मासनम्। अग्नि के दक्षिण ब्रह्मा के लिए आसन रखे।

अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। अग्नि के उत्तर प्रणीता-प्रोक्षणी के लिए दो आसन रखे।

ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। ब्रह्मासन पर ब्रह्मा को स्थापित करे।

यजमान बोले—**यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव।**

ब्रह्मा पद पर वर्णित ब्रह्मा बोले—**भवामि।**

ततो ब्रह्मणाऽनुज्ञातः प्रणीता प्रणयनम्। ब्रह्मा के आदेश से प्रणीता प्रणयन करे।

तद्यथा—प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य, द्वितीयासने निदध्यात्। प्रणीता पात्र में जल

भर करके कुशाओं से ढ़क करके पहले प्रथम आसन पर रख कर ब्रह्मा का मुख देख करके दूसरे आसन पर रखे।

ईशानादि पूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम्। ईशान कोण तथा पूर्व की तरफ कुश का अग्र भाग करके कुण्ड के चारो तरफ परिस्तरण करे।

तद्यथा—**ततो बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय आग्नेयादीशानान्तम्, उदगग्रैर्वा। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रागग्रैः, इतरथा वृत्तिः।**

जैसे—बर्हिमात्र कुशा का चतुर्थ भाग लेकर पूर्व दिशा में उत्तराग्र कुश बिछाये, उत्तर दिशा अग्नि से प्रणीतापात्र के बीच में पूर्वाग्र कुशाओं को बिछाये, पश्चिम दिशा मे नैर्ऋत्य कोण से वायव्य कोण तक उत्तराग्र कुशा बिछाये, दक्षिण में नैर्ऋत्य कोण से ब्रह्मा के बीच पूर्वाग्र तथा ब्रह्मा से अग्नि कोण तक पूर्वाग्र कुशाओं को बिछाये इसी प्रकार पुनः दूसरी आवृत्ति से परिस्तरण करे।

पात्रासादनं कुर्यात्। तद्यथा त्रीणि पवित्रे द्वे। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। उपकल्पनीयानि वृषनिष्क्रयदक्षिणा। उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय।

पात्रासादन—पवित्री बनाने के लिए तीन कुशा तथा दो कुशा रखे, प्रोक्षणी पात्र, घृत पात्र, चरु पात्र, सम्मार्जन के लिए पाँच कुशा, उपयमन के लिए सात कुशा, तीन सीधी वितस्त मात्र समिधा, स्रुवा, घृत, चावल, पूर्णपात्र, कल्पित बैल का मूल्य, अन्य हवनीय पदार्थ सभी क्रम से रखे।

पवित्रच्छेदनानि—**द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय। द्वौ मेलेन प्रदक्षिणीकृत्य, सर्वान् युगपदनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां धृत्वा। त्रिभिश्छिद्य। द्वौ ग्राह्यौ, त्रिस्त्याज्यः। प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य, त्रिः पूर्णं, पवित्राभ्यामुत्पवनम्। प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम्। दक्षिणेनोद्दिङ्गनम्।**

पवित्री छेदन—दो कुशा पर तीन कुशा को रख कर, दो कुशा को मिला कर प्रदक्षिणा क्रम से घुमाकर सभी को अनामिका अङ्गुष्ठ से पकड़कर तीन कुशा का छेदन कर, तीन कुशा का त्याग कर, दो कुशा को ग्रहण कर पवित्री बना कर पवित्री से प्रणीता के पात्र से प्रोक्षणी पात्र का तीन बार सिंचन कर जल भर कर उसमें पवित्री रख दे। प्रोक्षणी पात्र को बाँयें हाथ में रख कर दाहिने हाथ से ढ़क कर यथास्थान रखे।

ततः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्। प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम्। चरुस्थाल्याः प्रोक्षणम्। सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। तण्डुलानां

प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्षणम्। असञ्चरे प्रोक्षणीं निधाय।

प्रणीता के जल से प्रोक्षणी का प्रोक्षण कर, प्रोक्षणी पात्र में प्रणीता पात्र से जल ग्रहण कर प्रोक्षणी पात्र के जल से पवित्री के द्वारा घृतपात्र, चरुस्थाली, सम्मार्जन कुशा, उपयमन कुशा, समिधा, स्रुवा, घृत, चावल, पूर्ण पात्रा, तथा अन्य सभी सामग्रियों का प्रोक्षण करके प्रोक्षणी पात्र को यथास्थान रखे।

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकोत्सेचनपूर्वकं तण्डुलप्रक्षेपः। ब्रह्मणो दक्षिणत आज्याधिश्रयणम्। चरोरधिश्रयणं स्वयमाज्यस्योत्तरतः। ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। उदकस्पर्शः। अर्धश्रिते चरौ, अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम्। सम्मार्जनकुशैः स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम्। अग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवस्य समृज्य। प्रणीतोदकेनाऽभ्युक्षणम्। सम्मार्जनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः।

घृतपात्र में घृत निकाल ले, चरुस्थाली का प्रणीता के जल से सिंचन करके उसमें खीर बनाने के लिए चावल निकाले, ब्रह्मा के दक्षिण से लाकर घृत को अग्नि के दक्षिण रखे, चरु को पकने के लिए अग्नि पर रखे, जलती हुई लकड़ी लेकर ईशान कोण से प्रारम्भ कर ईशान-पर्यन्त घुमाकर पुनः विपरीत क्रम से घुमा कर अग्नि में डाल दे, आधे पके चरु को चलाये, स्रुवा को नीचे की तरफ मुख करके तपा कर, सम्मार्जन कुशा के द्वारा प्रणीता के जल से ऊर्ध्वमुख स्रुवा का मार्जन कर, स्रुवा के अग्रभाग को कुशाग्र से तथा स्रुवमूल का कुशमूल से मर्दन कर प्रणीता के जल से अभ्युक्षण कर फिर से तपा कर अग्नि-ब्रह्मा के मध्य रखे तथा सम्मार्जन कुशा का अग्नि में प्रक्षेप करे।

पुनः प्रतपनं, दक्षिणदेशे निधनम्। आज्यस्योद्वासनम्। चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नेरुत्तरतः स्थापयेत्। चरोरुद्वासनम्। अग्नेरुत्तरत एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य, आज्यस्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत्।

घृत को लाकर अग्नि के उत्तर में रखे, चरु को अग्नि से उतार कर अग्नि की प्रदक्षिणा करते हुए दक्षिण में रखे तथा घृत को भी प्रदक्षिणा क्रम से लाकर चरु के उत्तर रखे।

आज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्यनिरसनम्। पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम्। वामहस्ते उपयमनकुशामादाय। उत्तिष्ठन् समिधआदाय, घृताक्ताः समिधस्तिस्रः अग्नौ क्षिपेत्। प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रहस्तेन ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्षणम्। इतरथावृतिः। पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम्। दक्षिणं आन्वाच्य, ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः। समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्यहोमः।

घृतपात्र में घृत निकाले तथा निरीक्षण कर अपद्रव्य निकाले, पुनः प्रोक्षणी के जल से सिंचन करे। बाँयें हाथ में उपयमन कुशा लेकर, खड़े होकर तीन समिधाओं को घृत में वोर कर मौन ही अग्नि में प्रक्षेप करे। पवित्री के सहित प्रोक्षणी को लेकर जल गिराते हुए ईशान कोण से प्रारम्भ कर ईशान-पर्यन्त घुमाकर पुनः विपरीत क्रम से घुमा कर यथास्थान रखे। पवित्री को प्रणीता में रखे। ब्रह्मा को कुशाओं से स्पर्श कर स्रुवा से घृत आहुति प्रदान करे।

अग्नेरुत्तरभागे—अग्नि के उत्तर भाग में आहुति प्रदान करे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। एक बूँद प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करे।

अग्नेर्दक्षिणभागे—अग्नि के दक्षिण भाग में आहुति प्रदान करे।

ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम। एक बूँद प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करे।

समिद्धतमे—अग्नि के मध्य समिधा में आहुति प्रदान करे।

ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम। एक बूँद प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम। एक बूँद प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करे।

ततः सूर्यादिग्रहाणां तथा च अधिदेवताप्रत्याधिदेवतापञ्चलोकपालवास्तोष्पतिक्षेत्रपालदेवतानां इन्द्रादिदशदिक्पालदेवतानां प्रधानदेवतानां तथा च आवाहितदेवतानां प्रत्येकं सम्मिलिततिलादिद्रव्यैः जुहुयात्।

सङ्कल्पः—**अस्मिन् सार्द्धनवचण्डीपुरश्चरणकर्मणि इमानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम।**

यजमान बोले—**पुनः यथादैवतानि सन्तु।**

सूर्यादिग्रहाणां हवनम्

घी से गणेश तथा अम्बिका को आहुती प्रदान करे—

ॐ ग॒णाना॑न्त्वाग॒णप॑तिꣳहवामहे प्प्रि॒याणा॑न्त्वाप्प्रि॒यप॑तिꣳहवामहे निधी॒नान्त्वा॑निधि॒पति॑ꣳहवामहे व्वसोमम।। आहम॑जानि गर्ब्भ॒धमात्त्वम॑जासि गर्ब्भ॒धम्।।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒ न मा॑नयति॒ कश्श्च॒न।। सस॑स्त्यश्श्व॒कः सुभद्रि॒काङ्काम्पील॑वा॒सिनी॑म्।।

ॐ आकृ॒ष्णेन॒रज॑सा॒वर्त॑मानोनिवे॒शय॑न्न॒मृतं॒मर्त्त्यं॑च।। हि॒रण्ण्ये॑नसवि॒तार॑थे॒नादे॒वो या॑ति॒भुव॑नानि॒पश्य॑न्।। सूर्याय स्वाहा।।

ॐ इ॒मंदे॑वाऽअसप॒त्नꣳसु॑वद्ध्वंमह॒तेक्ष॒त्त्राय॑मह॒तेज्यैष्ठ्या॑यमह॒तेजान॑राज्ज्या॒स्येन्द्रि॒याय॑।। इ॒मम॒मुष्ष्य॑पु॒त्रम॒मुष्ष्यै॑पु॒त्रम॒स्यैवि॒शऽए॒षवो॑ऽमी॒राजा॒सोमो॒ऽस्माकं॑ ब्ब्राह्मणाना॒ꣳ राजा॑।। सोमाय स्वाहा।।

ॐ अग्निर्म्मूर्द्धादिवःककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्।। अपाꣳरेताꣳसिजिन्वति।। भौमाय स्वाहा।।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्त्तेसꣳसृजेथामयञ्च।। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्श्वेदेवायजमानश्चसीदत।। बुधाय स्वाहा।।

ॐ बृहस्पतेऽअतिदर्य्योऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्क्रतुमज्जनेषु।। यद्दिदयच्छवसऽऋतप्प्रजाततदस्म्मासुद्द्रविणंधेहिचित्रम्।। बृहस्पतये स्वाहा।।

ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसंब्ब्रह्मणाव्व्यपिबत्क्षत्रंपयःसोमंप्प्रजापतिः।। ऋतेनसत्त्यमिन्द्रियंव्विपानꣳशुक्क्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोऽमृतंमधु शुक्रायस्वाहा।

ॐ शंन्नोदेवीरभिष्ट्टयऽआपोभवन्तुपीतये।। शंय्योरभिस्रवन्तुनः।। शनैश्चराय स्वाहा।।

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधःसखा।। कयाशचिष्ठयाऽवृता।। राहवे स्वाहा।।

ॐ केतुंकृण्ण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे।। समुषद्भिरजायथाः।। केतवे स्वाहा।।

ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम्।। उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। ईश्वराय स्वाहा।।

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्।। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण।। उमायै स्वाहा।।

ॐ यदक्क्रन्दःप्प्रथमंजायमानऽउद्यन्त्समुद्द्रादुतवापुरीषात्।। श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्त्यंमहिजातंतेऽअर्व्वन्।। स्कन्दाय स्वाहा।।

ॐ इदव्विष्ण्णुर्व्विचक्क्रमेत्रेधानिदधेपदम्।। समूढमस्यपाꣳसुरे स्वाहा।। विष्णवे स्वाहा।।

ॐ आब्ब्रह्मन्ब्ब्राह्मणोब्ब्रह्मवर्च्चसीजायतामाराष्ट्रेराजन्न्यःशूरऽइषव्व्योतिव्व्याधीमहारथोजायतान्दोग्ध्रीधेनुर्व्वोढानड्वानाशुःसप्प्तिःपुरन्धिर्य्योषाजिष्ण्णूरथेष्ठाःसभेयोयुवास्ययजमानस्या व्वीरोजायतान्निकामेनिकामेनःपर्ज्जन्न्योव्वर्षतुफलवत्त्योनओऽषधयः पच्च्यन्तांय्योगक्षेमोनःकल्प्पताम्।। ब्रह्मणे स्वाहा।।

ॐ सजोषाऽइन्द्रसगणोमरुद्भिःसोमंपिबव्वृत्रहाशूरव्विद्वान्।। जहिशत्रूँ२।।रपमृधोनुदस्वाथाभयंकृणुहिव्विश्श्वतोनः।। इन्द्राय स्वाहा।।

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा।। स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मःपित्रे।। यमाय स्वाहा।।

ॐ कार्षिरसिसमुद्द्रस्यत्त्वाऽक्षित्त्याऽउन्नयामि।। समापोऽअद्भिरग्ग्मतसमोषधीभिरोषधीः।। कालाय स्वाहा।।

ॐ चि॒त्रा॑वसोस्व॒स्तिते॑पा॒रम॑शीय।। चित्रागुप्ताय स्वाहा।।

ॐ अ॒ग्निंदू॒तंपुरो॑दधेहव्य॒वाह॒मुप॑ब्रुवे।।दे॒वाँ२।। आसा॑दया दि॒ह।। अग्ग्नये स्वाहा।।

ॐ आपो॒हिष्ठाम॑यो॒भुव॒स्तान॑ऽऊर्जेद॑धातन।। म॒हेरणा॑य॒चक्ष॑से।। अद्भ्यः स्वाहा।।

ॐ स्यो॒नापृ॑थिविनोभवानृक्ष॒रानि॒वेशनी।। यक्षा॑न॒ःशर्म्म॑स॒प्प्रथा॑ꣳ।। पृथिव्यै स्वाहा।।

ॐ व्विष्णो॑र॒राट॑मसि॒व्विष्णो॒ःश्नप्त्रे॑स्त्थो॒व्विष्णो॒ःस्यूर॑सि॒व्विष्णो॑र्द्ध्रु॒वो॑सि।। व्वैष्ण॒वम॑सि॒व्विष्ण॑वेत्त्वा।। विष्णवे स्वाहा।।

ॐ इन्द्र॑ऽआसां॑ने॒ताबृह॒स्प्पति॒र्द्दक्षि॑णाय॒ज्ञःपु॒रऽए॑तु॒सोम॑ः।। दे॒व॒से॒नाना॑मभिभ॒ञ्जती॒नांजय॑न्तीनांम॒रुतो॑य॒न्त्वग्ग्र॑म्।। इन्द्राय स्वाहा।।

ॐ आदि॑त्त्यै॒रास्स्ना॑सीन्द्रा॒ण्ण्याऽउ॒ष्ण्णीष॑ः।। पू॒षासि॑घ॒र्म्माय॑दीष्ष्व।। इन्द्राण्यै स्वाहा।।

ॐ प्रजा॑पते॒नत्वदे॒तान्न्य॒न्न्योव्विश्श्वा॑रू॒पाणि॒परि॒ताब॑भूव।। यत्का॑मास्तजुहुमस्तन्नो॑ऽअस्तुव्व॒यꣳस्या॑म॒पत॑योरयी॒णाम्।। प्रजापतये स्वाहा।।

ॐ नमो॑स्तुस॒र्प्पेब्भ्यो॒येकेच॑पृथि॒वीमनु।। येऽअ॒न्तरि॑क्षे॒येदि॒वि तेब्भ्य॑ः स॒र्प्पेब्भ्यो॒ नम॑ः।। सर्पेभ्यः स्वाहा।।

ॐ ब्रह्म॑जज्ञा॒नम्प्र॑थ॒मम्पु॒रस्त्ता॒द्विसी॑म॒तःसु॒रुचो॑वे॒न आव॑ꣳ।। सबु॒द्धन्न्या॒ऽउप॒माऽअ॑स्यव्वि॒ष्ठाःस॒तश्च॒योनि॒मस॑तश्च॒व्विव॑ः।। ब्रह्मणे स्वाहा।।

ॐ ग॒णाना॑न्त्वाग॒णप॑तिꣳहवामहेप्प्रि॒याणा॑न्त्वाप्प्रि॒यप॑तिꣳहवामहेनिधी॒नान्त्वा॑ नि॒धिप॑तिꣳहवामहेव्वसोमम।। आहम॑जानिगर्ब्भ॒धमात्त्वम॑जासिगर्ब्भ॒धम्।। गणपतये स्वाहा।।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न।। सस॑स्त्त्यश्श्व॒कःसुभ॑द्द्रिकाङ्काम्पीलवा॒सिनी॑म्।। दुर्गायै स्वाहा।।

ॐ व्वायो॒येते॑सह॒स्रिणो॒रथा॑स॒स्तेभि॒राग॑हि।। नि॒युत्त्वा॒न्त्सोम॑पीतये ।। वायवे स्वाहा।।

ॐ घृ॒तंघृ॑तपावानःपिबत॒व्वसा॑व्वसापावानःपिबन्ता॒न्तरि॑क्षस्यह॒विर॑सि॒स्वाहा॑।। दिश॑ःप्प्र॒दिश॑ऽआ॒दिशो॑व्वि॒दिश॑ऽउ॒द्दिशो॑दिग्ग्भ्यःस्वाहा॑।। आकाशाय स्वाहा।।

ॐ यावा॒ंकशा॒मधु॑मत्याश्श्वि॑नासू॒नृता॑वती।। तया॑य॒ज्ञंमि॑मिक्षतम्।। अश्विभ्यां स्वाहा।।

ॐ वास्तोष्प्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः।। यत्त्वेमहेप्रतितन्नोजुपस्वशंनोभवद्विपदेशंचतुष्प्पदे।। वास्तोष्प्पतये स्वाहा।।

ॐ नहिस्प्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्श्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः।। एमेनमवृधन्नमृताऽ अमर्त्त्यंवैश्श्वानरंक्षैत्रजित्त्यायदेवाः।। क्षेत्राधिपतये स्वाहा।।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम्।। ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्त्विन्द्रः।। इन्द्रायस्वाहा।।

ॐ त्वन्नोऽअग्ग्नेतवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्न्वश्श्चवन्द्य।। त्रातातोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणस्तवव्व्रते।। अग्ग्नये स्वाहा।।

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।। स्वाहाघर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे।। यमाय स्वाहा।।

ॐ असुन्न्वन्तमयजमानमिच्च्छस्तेनस्येत्यामन्न्विहितस्करस्य।। अन्न्यमस्म्मदिच्च्छसातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुब्भ्यमस्तु।। निर्ऋतये स्वाहा।।

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्त्तदाशास्त्तेयजमानोहविर्ब्भिः।। अहेडमानोव्वरुणेहबोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुꣳप्प्रमोषीꣳ।। वरुणाय स्वाहा।।

ॐ आनोनियुद्भिःशतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्।। व्वायोऽअस्म्मिनत्सवनेमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिःसदानः।। वायवे स्वाहा।।

ॐ व्वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्त्तनूषुबिब्भ्रतꣳ।। प्रजावन्तꣳसचेमहि।। सोमाय स्वाहा।।

ॐ तमीशानंजगतस्त्तस्थुषस्प्पतिंधियञ्जिन्न्वमवसेहूमहेव्वयम्।। पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये।। ईशानाय स्वाहा।।

ॐ अस्मेरुद्द्रामेहनापर्व्वतासोव्वृत्रहत्येभरहूतौसजोषाः।। यःशꣳसतेस्तुवतेधायिपज्ज्रऽइन्द्रज्ज्येष्ठाऽअस्म्माँ२।।ऽअवन्तुदेवाः।। ब्रह्मणे स्वाहा।।

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी।। यक्षानःशर्म्मसप्प्रथाꣳ।। अनन्ताय स्वाहा।।

असंख्यातरुद्रहवनम्—

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा।। १०८ आहुति हवन करे।

प्रधानदेवतानां हवनम्

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम।। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्।। गणपतये स्वाहा।। १०८ आहुति हवन करे।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन।। ससस्त्यश्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।। महागौर्यै स्वाहा।। १०८ आहुति हवन करे।

ॐ इ॒दंवि॒ष्णु॒र्विच॑क्रमे॒त्रे॒धानिद॑धेप॒दम्।। समू॑ढमस्यपाꣳसु॒रेस्वाहा।। विष्णवे स्वाहा।। १०८ आहुति हवन करे।

ॐ उदु॒त्त्यञ्जा॒तवे॑दसन्दे॒वंव॑हन्तिके॒तव॑÷।। दृ॒शेविश्श्वा॑य॒सूर्य्य॑म्।। आदित्याय स्वाहा।। १०८ आहुति हवन करे।

ॐ नम॑स्तेरुद्द्रम॒न्न्यव॑ऽउ॒तोत॒ऽइष॑वे॒नम॑÷।। बा॒हुब्भ्या॑मु॒तते॒नम॑÷ शिवाय स्वाहा।। १०८ आहुति हवन करे।

नवार्णहवनविधिः

विनियोगः—**अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, ऐँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, क्लीँ कीलकं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे न्यासे हवने विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि।
ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे।
ॐ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि।
ॐ ऐँ बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः।
ॐ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ।
ॐ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—

ॐ ऐँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ क्लीँ मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यासः—

ॐ ऐँ हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा।
ॐ क्लीँ शिखायै वषट्।
ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्।

ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यासः—

ॐ ऐँ नमः शिखायाम्।
ॐ ह्रीँ नमः दक्षिणनेत्रे।
ॐ क्लीँ नमः वामनेत्रे।
ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे।
ॐ मुं नमः वामकर्णे।
ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे।
ॐ यैं नमः वामनासापुटे।
ॐ विं नमः मुखे।
ॐ च्चें नमः गुह्ये।

दिङ्न्यासः—

ॐ ऐँ प्राच्यै नमः।
ॐ ऐँ आग्नेयाय नमः।
ॐ ह्रीँ दक्षिणायै नमः।
ॐ ह्रीँ नैर्ऋत्यै नमः।
ॐ क्लीँ प्रतीच्यै नमः।
ॐ क्लीँ वायव्यै नमः।
ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः।
ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै ऊर्ध्वायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्—

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजां हन्तुं मधुं कैटभम्।।१।।
अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्मजलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।२।।

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुशले चक्रं धनुः सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।३।।

मालापूजनम्—ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अक्षमालिकायै नमः।

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुवर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।१।।
अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले तु सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।२।।

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे स्वाहा। १०८ बार हवनकरे।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं हुतम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

जप देवी को हवन निवेदन करे।

सप्तशतीन्यासः

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीप्रथममध्यमोत्तमचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुपश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि, नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः, अग्निवायुसूर्यस्तत्त्वानि, ऋग्यजुस्सामवेदाः ध्यानानि, सकलकामनासिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः।

कराङ्गन्यासः—

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।।
अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।
तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरी।।
मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।।
अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।
कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।
करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यासः—

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।।
हृदयाय नमः।

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।
शिरसे स्वाहा।

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरीः।।
शिखायै वषट्।

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।।
कवचाय हुम्।

ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।
नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।
अस्त्राय फट्।

ध्यानम्—

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां,
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं,
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

तन्त्रोक्त रात्रिसूक्तपाठः—

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः।।१।।

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।।२।।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।।३।।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।।४।।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।।५।।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।।६।।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।।७।।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।।८।।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।।९।।
सौम्यासौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।।१०।।
यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।।११।।
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।।१२।।

विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।।१३।।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।।१४।।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ।।१५।।

रात्रिसूक्तपाठं श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

अथ श्रीदुर्गासप्तशती प्रथमोध्यायः

विनियोगः—ॐ अस्यश्री प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, महाकाली देवता, गायत्री छन्दः, नन्दा शक्तिः, रक्तदन्तिका बीजं, अग्निस्तत्त्वम्, ऋग्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे प्रथमचरित्रहवने विनियोगः।

विनियोग करने के बाद महाकाली के चतु:षष्टियोगिनियों का हवन करे।

महाकाल्याश्चतु:षष्टियोगिनीनां हवनम्—

१.ॐ जयायोगिन्यै स्वाहा।
२.ॐ विजयायोगिन्यै स्वाहा।
३.ॐ जयन्तियोगिन्यै स्वाहा।
४.ॐ अपराजितायोगिन्यै स्वाहा।
५.ॐ दिव्यायोगिन्यै स्वाहा।
६.ॐ पूर्वायोगिन्यै स्वाहा।
७.ॐ महापूर्वायोगिन्यै स्वाहा।
८.ॐ सिद्धपूर्वायोगिन्यै स्वाहा।
९.ॐ गणेश्वरीयोगिन्यै स्वाहा।
१०.ॐ प्रेताशीयोगिन्यै स्वाहा।
११.ॐ डाकिनीयोगिन्यै स्वाहा।
१२.ॐ कमलायोगिन्यै स्वाहा।
१३.ॐ कालरात्रियोगिन्यै स्वाहा।
१४.ॐ तष्टंकारिणीयोगिन्यै स्वाहा।
१५.ॐ रौद्रीयोगिन्यै स्वाहा।
१६.ॐ वेतालीयोगिन्यै स्वाहा।
१७.ॐ हूँकारीयोगिन्यै स्वाहा।
१८.ॐ ऊर्ध्वकेशीयोगिन्यै स्वाहा।
१९.ॐ विरूपाक्षीयोगिन्यै स्वाहा।
२०.ॐ शुष्काङ्गीयोगिन्यै स्वाहा।
२१.ॐ नरभोजिनीयोगिन्यै स्वाहा।
२२.ॐ फेट्कारीयोगिन्यै स्वाहा।
२३.ॐ चोरचन्द्रीयोगिन्यै स्वाहा।
२४.ॐ धूम्राक्षीयोगिन्यै स्वाहा।
२५.ॐ कलहप्रियायोगिन्यै स्वाहा।
२६.ॐ राक्षसीयोगिन्यै स्वाहा।
२७.ॐ घोररक्ताक्षीयोगिन्यै स्वाहा।
२८.ॐ विश्वरूपीयोगिन्यै स्वाहा।
२९.ॐ भयंकरीयोगिन्यै स्वाहा।
३०.ॐ चण्ड्यान्तायोगिन्यै स्वाहा।

३१.ॐ चण्डमारीयोगिन्यै स्वाहा।
३२.ॐ वाराहीयोगिन्यै स्वाहा।
३३.ॐ मुण्डधारिणीयोगिन्यै स्वाहा।
३४.ॐ भैरवीयोगिन्यै स्वाहा।
३५.ॐ ऊर्ध्वाक्षीयोगिन्यै स्वाहा।
३६.ॐ दुर्मुखीयोगिन्यै स्वाहा।
३७.ॐ प्रेतवाहिनीयोगिन्यै स्वाहा।
३८.ॐ खट्वाङ्गीयोगिन्यै स्वाहा।
३९.ॐ लम्बोष्ठीयोगिन्यै स्वाहा।
४०.ॐ मालिनीमतियोगिन्यै स्वाहा।
४१.ॐ रक्तकालीयोगिन्यै स्वाहा।
४२.ॐ कंकालीयोगिन्यै स्वाहा।
४३.ॐ भुवनेश्वरीयोगिन्यै स्वाहा।
४४.ॐ त्रोटकीयोगिन्यै स्वाहा।
४५.ॐ महामारीयोगिन्यै स्वाहा।
४६.ॐ यमदूतीयोगिन्यै स्वाहा।
४७.ॐ करालिनीयोगिन्यै स्वाहा।
४८.ॐ केशिनीयोगिन्यै स्वाहा।
४९.ॐ मेदिनीयोगिन्यै स्वाहा।
५०.ॐ रोमगङ्गप्रवाहिनीयोगिन्यै स्वाहा।
५१.ॐ विडालीयोगिन्यै स्वाहा।
५२.ॐ कान्तियोगिन्यै स्वाहा।
५३.ॐ लोलीयोगिन्यै स्वाहा।
५४.ॐ जयास्मृतायोगिन्यै स्वाहा।
५५.ॐ अधोमुखीयोगिन्यै स्वाहा।
५६.ॐ चण्डोग्रधारिणीयोगिन्यै स्वाहा।
५७.ॐ व्याघ्रीयोगिन्यै स्वाहा।
५८.ॐ कांक्षिणीयोगिन्यै स्वाहा।
५९.ॐ प्रेतभक्षिणीयोगिन्यै स्वाहा।
६०.ॐ धूर्जटीयोगिन्यै स्वाहा।
६१.ॐ विकटायोगिन्यै स्वाहा।
६२.ॐ घोरायोगिन्यै स्वाहा।
६३.ॐ कपालिनीयोगिन्यै स्वाहा।
६४.ॐ विषलम्बिनीयोगिन्यै स्वाहा।

इसके बाद भैरवशतनाम से हवन करे।

१.ॐ ह्रीँ भैरवाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रीँ भूतनाथाय स्वाहा।
३.ॐ ह्रीँ भूतात्मने स्वाहा।
४.ॐ ह्रीँ भूतभावनाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रीँ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
६.ॐ ह्रीँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७.ॐ ह्रीँ क्षेत्रदाय स्वाहा।
८.ॐ ह्रीँ क्षत्रियाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रीँ विराजे स्वाहा।
१०.ॐ ह्रीँ श्मशानवासिने स्वाहा।
११.ॐ ह्रीँ मांसाशिने स्वाहा।
१२.ॐ ह्रीँ खर्पराशिने स्वाहा।
१३.ॐ ह्रीँ स्मरान्तकाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रीँ रक्तपाय स्वाहा।
१५.ॐ ह्रीँ पानपाय स्वाहा।
१६.ॐ ह्रीँ सिद्धाय स्वाहा।
१७.ॐ ह्रीँ सिद्धिदाय स्वाहा।
१८.ॐ ह्रीँ सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९.ॐ ह्रीँ कंकालाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्रीँ कालशमनाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्रीँ कलाकाष्ठातनवे स्वाहा।
२२.ॐ ह्रीँ कवये स्वाहा।
२३.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्राय स्वाहा।
२४.ॐ ह्रीँ बहुनेत्राय स्वाहा।
२५.ॐ ह्रीँ पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्रीँ शूलपाणये स्वाहा।

२७.ॐ ह्रीँ खड्गपाणये स्वाहा।
२८.ॐ ह्रीँ कंकालिने स्वाहा।
२९.ॐ ह्रीँ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३०.ॐ ह्रीँ अभीरवे स्वाहा।
३१.ॐ ह्रीँ भैरवीनाथाय स्वाहा।
३२.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
३३.ॐ ह्रीँ योगिनीपतये स्वाहा।
३४.ॐ ह्रीँ धनदाय स्वाहा।
३५.ॐ ह्रीँ अधनहारिणे स्वाहा।
३६.ॐ ह्रीँ धनवते स्वाहा।
३७.ॐ ह्रीँ पतिभानवते स्वाहा।
३८.ॐ ह्रीँ नागहाराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्रीँ नागपाशाय स्वाहा।
४०.ॐ ह्रीँ व्योमकेशाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्रीँ कपालभृते स्वाहा।
४२.ॐ ह्रीँ कालाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्रीँ कपालमालिने स्वाहा।
४४.ॐ ह्रीँ कमनीयाय स्वाहा।
४५.ॐ ह्रीँ कलानिधये स्वाहा।
४६.ॐ ह्रीँ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रीँ ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८.ॐ ह्रीँ त्रिशिखिने स्वाहा।
४९.ॐ ह्रीँ त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रीँ डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२.ॐ ह्रीँ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
५३.ॐ ह्रीँ बटुकाय स्वाहा।
५४.ॐ ह्रीँ बहुवेषाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रीँ खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रीँ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रीँ पशुपतये स्वाहा।
५८.ॐ ह्रीँ भिक्षुकाय स्वाहा।
५९.ॐ ह्रीँ परिचारकाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रीँ धूर्ताय स्वाहा।
६१.ॐ ह्रीँ दिगम्बराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रीँ शूराय स्वाहा।
६३.ॐ ह्रीँ हरिणाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रीँ पाण्डुलोचनाय स्वाहा।
६५.ॐ ह्रीँ प्रशान्ताय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रीँ शन्तिदाय स्वाहा।
६७.ॐ ह्रीँ शुद्धाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रीँ शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रीँ अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०.ॐ ह्रीँ निधीशाय स्वाहा।
७१.ॐ ह्रीँ ज्ञानचक्षुषे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रीँ तपोमयाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रीँ अष्टाधाराय स्वाहा।
७४.ॐ ह्रीँ षडाधाराय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रीँ सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रीँ शिखीसखाय स्वाहा।
७७.ॐ ह्रीँ भूधराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रीँ भूधराधीशाय स्वाहा।
७९.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
८०.ॐ ह्रीँ भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१.ॐ ह्रीँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
८२.ॐ ह्रीँ मुण्डिने स्वाहा।
८३.ॐ ह्रीँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते स्वाहा।
८४.ॐ ह्रीँ जृम्भणाय स्वाहा।
८५.ॐ ह्रीँ मोहनाय स्वाहा।
८६.ॐ ह्रीँ स्तम्भिने स्वाहा।
८७.ॐ ह्रीँ मारणाय स्वाहा।
८८.ॐ ह्रीँ क्षोभणाय स्वाहा।
८९.ॐ ह्रीँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
९०.ॐ ह्रीँ दैत्यघ्ने स्वाहा।

९१.ॐ ह्रीँ मुण्डभूषिताय स्वाहा।
९२.ॐ ह्रीँ बलिभुजे स्वाहा।
९३.ॐ ह्रीँ बलिभुङ्नाथाय स्वाहा।
९४.ॐ ह्रीँ बालाय स्वाहा।
९५.ॐ ह्रीँ अबालपराक्रमाय स्वाहा।
९६.ॐ ह्रीँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।
९७.ॐ ह्रीँ दुर्गाय स्वाहा।
९८.ॐ ह्रीँ दुष्टभूतनिपेविताय स्वाहा।
९९.ॐ ह्रीँ कामिने स्वाहा।
१००.ॐ ह्रीँ कलानिधिकान्ताय स्वाहा।
१०१.ॐ ह्रीँ कामिनीवशकृते स्वाहा।
१०२.ॐ ह्रीँ वशिने स्वाहा।
१०३.ॐ ह्रीँ जगद्रक्षाकराय स्वाहा।
१०४.ॐ ह्रीँ अनन्ताय स्वाहा।
१०५.ॐ ह्रीँ मायामन्त्रौषधीमयाय स्वाहा।
१०६.ॐ ह्रीँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
१०७.ॐ ह्रीँ वैद्याय स्वाहा।
१०८.ॐ ह्रीँ प्रभविष्णवे स्वाहा।

महाकाली-ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजां हन्तुं मधुं कैटभम्।।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ ऐँ मार्कण्डेय उवाच

ॐ ऐँ श्रीँ आद्यायै स्वाहा।।१।।

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।
निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम।।

ॐ ऐँ ह्रीँ काल्यै स्वाहा।।२।।

महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः।
स बभूव महाभाग सावर्णिस्तनयो रवेः।।

ॐ ऐँ क्लीँ कराल्यै स्वाहा।।३।।

स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः।
सुरथो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले।।

ॐ ऐँ श्रीँ महाकाल्यै स्वाहा।४।।

तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान्।
बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा।।

ॐ ऐँ प्रीं कल्याण्यै स्वाहा।।५।।

तस्य तैरभवद् युद्धमतिप्रबलदण्डिनः।
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिनस्तदा।।

ॐ ऐँ ह्रां कलावत्यै स्वाहा।।६।।

ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत्।
आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः।।
ॐ ऐँ ह्रीं महाकाल्यै स्वाहा।।७।।
अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः।
कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः।।
ॐ ऐँ स्रों कलिदर्पघ्न्यै स्वाहा।।८।।
ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः।
एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम्।।
ॐ ऐँ प्रें कपर्दीशकृपान्वितायै स्वाहा।।९।।
स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः।
प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम्।।
ॐ ऐँ म्रीं कालिकायै स्वाहा।।१०।।
तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः।
इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे।।
ॐ ऐँ ह्लीं कालमात्रायै स्वाहा।।११।।
सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः।
मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत्।।
ॐ ऐँ म्लीं कालानलसमाद्युत्यै स्वाहा।।१२।।
मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा।
न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः।।
ॐ ऐँ स्त्रीं कपर्दीन्यै स्वाहा।।१३।।
मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते।
ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः।।
ॐ ऐँ क्रां करालास्यायै स्वाहा।।१४।।
अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्।
असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम्।।
ॐ ऐँ ह्स्लीं करुणामृतसागरायै स्वाहा।।१५।।
संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति।
एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः।।
ॐ ऐँ क्रीं कृपामय्यै स्वाहा।।१६।।
तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः।
स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः।।
ॐ ऐँ चां कृपाधारायै स्वाहा।।१७।।

सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम्।।
ॐ ऐँ भें कृपाधारायै स्वाहा।।१८।।
प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम्।।
ॐ ऐँ क्रीं कृपापारायै स्वाहा।।१९।।

वैश्य उवाच।।

ॐ ऐँ वैं कुशान्वै स्वाहा।।२०।।
समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले।।
ॐ ऐँ ह्रौं कपिलायै स्वाहा।।२१।।
पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः।
विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम्।।
ॐ ऐँ युं कृष्णायै स्वाहा।।२२।।
वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः।
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम्।।
ॐ ऐँ जुं कृष्णानन्दविवर्द्धिन्यै स्वाहा।।२३।।
प्रवृत्तिं स्वजनानाञ्च दाराणां चात्र संस्थितः।
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम्।।
ॐ ऐँ हं कालरात्र्यै स्वाहा।।२४।।
कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः।।
ॐ ऐँ शं कामरूपायै स्वाहा।।२५।।

राजोवाच।।

ॐ ऐँ रों कामपाशविमोचिन्यै स्वाहा।।२६।।
यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः।।
ॐ ऐँ यं कादम्बिन्यै स्वाहा।।२७।।
तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम्।।
ॐ ऐँ विं कलाधरायै स्वाहा।।२८।।

वैश्य उवाच।।

ॐ ऐँ वैं कलिकल्मषनाशिन्यै स्वाहा।।२९।।
एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः।।
ॐ ऐँ चें कुमारीपूजनप्रीतायै स्वाहा।।३०।।
किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः।
यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः।।
ॐ ऐँ ह्रीं कुमारीपूजकालयायै स्वाहा।।३१।।

पतिस्वजनहार्दं च हार्दितेष्वेव मे मनः।
किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते।।
ॐ ऐँ क्लूं कुमारीभोजनानन्दायै स्वाहा।।३२।।
यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु।
तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते।।
ॐ ऐँ सं कुमारीरूपधारिण्यै स्वाहा।।३३।।
करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम्।।
ॐ ऐँ कं कदम्बवनसंचारायै स्वाहा।।३४।।
मार्कण्डेय उवाच।।
ॐ ऐँ श्रां कदम्बवनवासिन्यै स्वाहा।।३५।।
ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ।।
ॐ ऐँ व्रों कदम्बपुष्पसन्तोषायै स्वाहा।।३६।।
समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः।
कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम्।।
ॐ ऐँ स्त्रां कदम्बपुष्पमालिन्यै स्वाहा।।३७।।
उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ।।
ॐ ऐँ ज्यं किशोर्यै स्वाहा।।३८।।
राजोवाच।।
ॐ ऐँ रौं कालकण्ठायै स्वाहा।।३९।।
भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत्।।
ॐ ऐँ द्रां कलनादनिनादिन्यै स्वाहा।।४०।।
दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना।
ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि।।
ॐ ऐँ द्रों कादम्बरीपानरतायै स्वाहा।।४१।।
जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम।
अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः।।
ॐ ऐँ ह्लां कादम्बरीप्रियायै स्वाहा।।४२।।
स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति।
एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ।।
ॐ ऐँ द्रूं कपालपात्रनिरतायै स्वाहा।।४३।।
दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ।
तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि।।
ॐ ऐँ शां कंकालमाल्यधारिण्यै स्वाहा।।४४।।

ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता।।
ॐ ऐँ मीं कमलासनसन्तुष्टायै स्वाहा।।४५।।
ऋषिरुवाच।।
ॐ ऐँ श्रौं कमलासनवासिन्यै स्वाहा।।४६।।
ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे।।
ॐ ऐँ जुं कमलालयमध्यस्थायै स्वाहा।।४७।।
विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक् पृथक्।
दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे।।
ॐ ऐँ ह्ल्रूं कमलामोदमोदिन्यै स्वाहा।।४८।।
केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः।
ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं तु ते न हि केवलम्।।
ॐ ऐँ श्रूं कलहंसगत्यै स्वाहा।।४९।।
यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः।
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम्।।
ॐ ऐँ प्रीं क्लैव्यनाशिन्यै स्वाहा।।५०।।
मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः।
ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान्पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु।।
ॐ ऐँ रं कामरूपिण्यै स्वाहा।।५१।।
कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा।
मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति।।
ॐ ऐँ वं कामरूपकृतावासायै स्वाहा।।५२।।
लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान्किं न पश्यसि।
तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्ते निपातिताः।।
ॐ ऐँ व्रीं कामपीठविलासिन्यै स्वाहा।।५३।।
महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा।
तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः।।
ॐ ऐँ ब्लूं कमनीयायै स्वाहा।।५४।।
महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत्।
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।।
ॐ ऐँ स्त्रौं कल्पलतायै स्वाहा।।५५।।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।
तयाा विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम्।।
ॐ ऐँ ल्वां कमनीयविभूषणायै स्वाहा।।५६।।

सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।
सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी।।
ॐ ऐँ लूं कमनीयगुणाराध्यायै स्वाहा।।५७।।
संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी।।
ॐ ऐँ सां कोमलाङ्ग्यै स्वाहा।।५८।।
राजोवाच।।
ॐ ऐँ रौं कृशोदर्यै स्वाहा।।५९।।
भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान्।।
ॐ ऐँ स्हौं कारणामृतसन्तोषायै स्वाहा।।६०।।
ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज।
यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा।।
ॐ ऐँ क्रूं कारणानन्दसिद्धिदायै स्वाहा।।६१।।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वरम्।।
ॐ ऐँ शौं कारणानन्दजापिष्ठ्यायै स्वाहा।।६२।।
ऋषिरुवाच।।
ॐ ऐँ श्रौं कारणार्चितहर्षितायै स्वाहा।।६३।।
नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम्।।
ॐ ऐँ वं कारणार्णवसमग्रायै स्वाहा।।६४।।
तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम।
देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा।।
ॐ ऐँ त्रूं कारणव्रतपालिन्यै स्वाहा।।६५।।
उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते।
योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते।।
ॐ ऐँ क्रौं कस्तूरीसौरभामोदायै स्वाहा।।६६।।
आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान् प्रभुः।
तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ।।
ॐ ऐँ क्लूं कस्तूरीतिलकोज्ज्वलायै स्वाहा।।६७।।
विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ।
स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः।।
ॐ ऐँ क्लीं कस्तूरीपूजनरतायै स्वाहा।।६८।।
दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम्।
तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः।।
ॐ ऐँ श्रीं कस्तूरीपूजकप्रियायै स्वाहा।।६९।।

विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम्।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।।
ॐ ऐँ ब्लूं कस्तूरीदाहजनन्यै स्वाहा।।७०।।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः।।
ॐ ऐँ ठां कस्तूरीमृगतोषिण्यै स्वाहा।।७१।।
ब्रह्मोवाच।।
ॐ ऐँ ठ्रीं कस्तूरीभोजनप्रीतायै स्वाहा।।७२।।
त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।।
ॐ ऐँ स्रां कर्पूरचन्दनाक्षितायै स्वाहा।।७३।।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।
अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।।
ॐ ऐँ स्लूं कर्पूरकारणाह्लादायै स्वाहा।।७४।।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।।
ॐ ऐँ क्रैं कर्पूरामृतपायिन्यै स्वाहा।।७५।।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।।
ॐ ऐँ चां कर्पूरसागरस्नातायै स्वाहा।।७६।।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।।
ॐ ऐँ फ्रां कर्पूरसागरलयायै स्वाहा।।७७।।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।।
ॐ ऐँ जीं कूर्चबीजजपप्रीतायै स्वाहा।।७८।।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।।
ॐ ऐँ लूं कूर्चजापपरायणायै स्वाहा।।७९।।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।।
ॐ ऐँ स्लूं कुलीनायै स्वाहा।।८०।।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।
सौम्यासौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ।।
ॐ ऐँ नों कौलिकाऽराध्यायै स्वाहा।।८१।।

परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।
यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।।
ॐ ऐँ स्त्रीं कौलिकप्रियकारिण्यै स्वाहा।।८२।।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।।
ॐ ऐँ प्रीं कुलाचारायै स्वाहा।।८३।।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।।
ॐ ऐँ स्त्रूं कौतुकिन्यै स्वाहा।।८४।।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत्।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।।
ॐ ऐँ ज्रां कुलमार्गप्रदर्शिन्यै स्वाहा।।८५।।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।।
ॐ ऐँ वां काशीश्वर्यै स्वाहा।।८६।।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ।।
ॐ ऐँ ओं कष्टहन्त्र्यै स्वाहा।।८७।।
ऋषिरुवाच।।
ॐ ऐँ श्रौं काशीशवरदायिन्यै स्वाहा।।८८।।
एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा।।
ॐ ऐँ ॠं काशीश्वरकृतमोदायै स्वाहा।।८९।।
विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ।
नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ।।
ॐ ऐँ रुं काशीश्वरमनोरमायै स्वाहा।।९०।।
निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः।
उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः।।
ॐ ऐँ क्लीं कलमंजीरचरणायै स्वाहा।।९१।।
एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ।
मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ।।
ॐ ऐँ दुं क्वणत्काञ्चीविभूषणायै स्वाहा।।९२।।
क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ।
समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः।।
ॐ ऐँ ह्रीं कांचनाद्रिकृतागारायै स्वाहा।।९३।।

पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः।
तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमाहितौ।।
ॐ ऐँ गूं कांचनाचलकौमुद्यै स्वाहा।।९४।।
उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम्।।
ॐ ऐँ लां कामबीजजपानन्दायै स्वाहा।।९५।।
श्रीभगवानुवाच।।
ॐ ऐँ क्लीं ह्रीं कामबीजस्वरूपिण्यै स्वाहा।।९६।।
भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि।।
ॐ ऐँ गं कुमतिघ्न्यै स्वाहा।।९७।।
किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम।।
ॐ ऐँ ऐं कुलीनार्तिनाशिन्यै स्वाहा।।९८।।
ऋषिरुवाच।।
ॐ ऐँ श्रौं कुलकामिन्यै स्वाहा।।९९।।
वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत्।।
ॐ ऐँ जूं ऐंकारायै स्वाहा।।१००।।
विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवन् कमलेक्षणः।
आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता।।
ॐ ऐँ डें महाकराल्यायै स्वाहा।।१०१।।
ऋषिरुवाच।।
ॐ ऐँ श्रौं महापिङ्गलायै स्वाहा।।१०२।।
तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता।
कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः।।
ॐ ऐँ छ्रां कालकाल्यै स्वाहा।।१०३।।
एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्।
प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ऐँ ॐ।।
ॐ ऐँ क्रीं ह्रीं क्लीं कालकंटकघातिन्यै स्वाहा।।१०४।।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्च॒न।। सस॑स्त्यश्व॒कःसुभ॑द्रिकाङ्काम्पीलवा॒सिनी॑म्।। ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै त्रिगुणात्मिकायै पराम्बायै प्रथमचरित्राऽधिष्ठायै श्रीमहाकाल्यै नमः महाहुतीं समर्पयामि स्वाहा।। ॐ अम्बायै स्वाहा।। ॐ अम्बिकायै स्वाहा।। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।।

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती द्वितीयोऽध्यायः

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीमध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिः, महालक्ष्मीर्देवता, उष्णिक् छन्दः, शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजम्, वायुः तत्त्वम्, यजुर्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मध्यमचरित्रहवने विनियोगः।**

महालक्ष्म्याश्चतु:षष्टियोगिनीनां हवनम्—

१.ॐ दक्षकर्णायोगिन्यै स्वाहा।
२.ॐ राक्षसीयोगिन्यै स्वाहा।
३.ॐ क्षयन्तीयोगिन्यै स्वाहा।
४.ॐ छायायोगिन्यै स्वाहा।
५.ॐ क्षयायोगिन्यै स्वाहा।
६.ॐ पिङ्गलाक्षीयोगिन्यै स्वाहा।
७.ॐ अक्षयायोगिन्यै स्वाहा।
८.ॐ नाशिनीयोगिन्यै स्वाहा।
९.ॐ इलायोगिन्यै स्वाहा।
१०.ॐ इलावतीयोगिन्यै स्वाहा।
११.ॐ लयायोगिन्यै स्वाहा।
१२.ॐ लीनायोगिन्यै स्वाहा।
१३.ॐ लङ्कायोगिन्यै स्वाहा।
१४.ॐ लङ्केश्वरीयोगिन्यै स्वाहा।
१५.ॐ लरसायोगिन्यै स्वाहा।
१६.ॐ विमलायोगिन्यै स्वाहा।
१७.ॐ हुताशनीयोगिन्यै स्वाहा।
१८.ॐ हूंकारीयोगिन्यै स्वाहा।
१९.ॐ वडवामुखीयोगिन्यै स्वाहा।
२०.ॐ महारवायोगिन्यै स्वाहा।
२१.ॐ महाक्रूरायोगिन्यै स्वाहा।
२२.ॐ क्रोधिनीयोगिन्यै स्वाहा।
२३.ॐ खराननायोगिन्यै स्वाहा।
२४.ॐ सर्वज्ञायोगिन्यै स्वाहा।
२५.ॐ तरलायोगिन्यै स्वाहा।
२६.ॐ तारायोगिन्यै स्वाहा।
२७.ॐ शृग्वेदिनीयोगिन्यै स्वाहा।
२८.ॐ रौद्रीयोगिन्यै स्वाहा।
२९.ॐ सरसायोगिन्यै स्वाहा।
३०.ॐ रससंग्रहायोगिन्यै स्वाहा।
३१.ॐ शर्वरीयोगिन्यै स्वाहा।
३२.ॐ तालजंघायोगिन्यै स्वाहा।
३३.ॐ रक्ताक्षीयोगिन्यै स्वाहा।
३४.ॐ विद्युज्जिह्वायोगिन्यै स्वाहा।
३५.ॐ करकिंणीयोगिन्यै स्वाहा।
३६.ॐ मेघनादायोगिन्यै स्वाहा।
३७.ॐ चण्डोग्रायोगिन्यै स्वाहा।
३८.ॐ कालकर्णायोगिन्यै स्वाहा।
३९.ॐ द्विपातनायोगिन्यै स्वाहा।
४०.ॐ पद्मायोगिन्यै स्वाहा।
४१.ॐ पद्मावतीयोगिन्यै स्वाहा।
४२.ॐ प्रपञ्चीयोगिन्यै स्वाहा।
४३.ॐ ज्वलिताननायोगिन्यै स्वाहा।
४४.ॐ पिचुवक्त्रायोगिन्यै स्वाहा।
४५.ॐ पिशाचीयोगिन्यै स्वाहा।
४६.ॐ पिशिताशीयोगिन्यै स्वाहा।
४७.ॐ लोलुपायोगिन्यै स्वाहा।
४८.ॐ पार्वतीयोगिन्यै स्वाहा।
४९.ॐ पावनीयोगिन्यै स्वाहा।
५०.ॐ तापिनीयोगिन्यै स्वाहा।
५१.ॐ कामिनीयोगिन्यै स्वाहा।
५२.ॐ विकृतयोगिन्यै स्वाहा।

५३.ॐ पूर्वायोगिन्यै स्वाहा।
५४.ॐ बृहत्कुक्षीयोगिन्यै स्वाहा।
५५.ॐ दंष्ट्रालीयोगिन्यै स्वाहा।
५६.ॐ विश्वरूपीयोगिन्यै स्वाहा।
५७.ॐ यमजिह्वायोगिन्यै स्वाहा।
५८.ॐ जयन्तीयोगिन्यै स्वाहा।
५९.ॐ दुर्जयायोगिन्यै स्वाहा।
६०.ॐ यमान्तिकायोगिन्यै स्वाहा।
६१.ॐ विडालायोगिन्यै स्वाहा।
६२.ॐ रेवतीयोगिन्यै स्वाहा।
६३.ॐ प्रेताशीयोगिन्यै स्वाहा।
६४.ॐ विजयायोगिन्यै स्वाहा।

इसके बाद भैरवशतनाम से हवन करे।

१.ॐ ह्रीँ भैरवाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रीँ भूतनाथाय स्वाहा।
३.ॐ ह्रीँ भूतात्मने स्वाहा।
४.ॐ ह्रीँ भूतभावनाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रीँ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
६.ॐ ह्रीँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७.ॐ ह्रीँ क्षेत्रदाय स्वाहा।
८.ॐ ह्रीँ क्षत्रियाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रीँ विराजे स्वाहा।
१०.ॐ ह्रीँ श्मशानवासिने स्वाहा।
११.ॐ ह्रीँ झंसासिने स्वाहा।
१२.ॐ ह्रीँ खर्पराशिने स्वाहा।
१३.ॐ ह्रीँ स्मरान्तकाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रीँ रक्तपाय स्वाहा।
१५.ॐ ह्रीँ पानपाय स्वाहा।
१६.ॐ ह्रीँ सिद्धाय स्वाहा।
१७.ॐ ह्रीँ सिद्धिदाय स्वाहा।
१८.ॐ ह्रीँ सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९.ॐ ह्रीँ कंकालाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्रीँ कालशमनाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्रीँ कालाकाष्ठातनवे स्वाहा।
२२.ॐ ह्रीँ कवये स्वाहा।
२३.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्राय स्वाहा।
२४.ॐ ह्रीँ बहुनेत्राय स्वाहा।
२५.ॐ ह्रीँ पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्रीँ शूलपाणये स्वाहा।
२७.ॐ ह्रीँ खड्गपाणये स्वाहा।
२८.ॐ ह्रीँ कंकालिने स्वाहा।
२९.ॐ ह्रीँ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३०.ॐ ह्रीँ अभिरवे स्वाहा।
३१.ॐ ह्रीँ भैरवीनाथाय स्वाहा।
३२.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
३३.ॐ ह्रीँ योगिनीपतये स्वाहा।
३४.ॐ ह्रीँ धनदाय स्वाहा।
३५.ॐ ह्रीँ अधनहारिणे स्वाहा।
३६.ॐ ह्रीँ धनवते स्वाहा।
३७.ॐ ह्रीँ पतिभानवते स्वाहा।
३८.ॐ ह्रीँ नागहाराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्रीँ नागपाशाय स्वाहा।
४०.ॐ ह्रीँ व्योमकेशाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्रीँ कपालभृते स्वाहा।
४२.ॐ ह्रीँ कालाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्रीँ कपालमालिने स्वाहा।
४४.ॐ ह्रीँ कमनीयाय स्वाहा।
४५.ॐ ह्रीँ कलानिधये स्वाहा।
४६.ॐ ह्रीँ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रीँ ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८.ॐ ह्रीँ त्रिशिखिने स्वाहा।

४९.ॐ ह्रीँ त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रीँ डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२.ॐ ह्रीँ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
५३.ॐ ह्रीँ बटुकाय स्वाहा।
५४.ॐ ह्रीँ बहुवेषाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रीँ खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रीँ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रीँ पशुपतये स्वाहा।
५८.ॐ ह्रीँ भिक्षुकाय स्वाहा।
५९.ॐ ह्रीँ परिचारकाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रीँ धूर्ताय स्वाहा।
६१.ॐ ह्रीँ दिगम्बराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रीँ शूराय स्वाहा।
६३.ॐ ह्रीँ हरिणाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रीँ पाण्डुलोचनाय स्वाहा।
६५.ॐ ह्रीँ प्रशान्ताय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रीँ शन्तिदाय स्वाहा।
६७.ॐ ह्रीँ शुद्धाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रीँ शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रीँ अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०.ॐ ह्रीँ निधीशाय स्वाहा।
७१.ॐ ह्रीँ ज्ञानचक्षुषे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रीँ तपोमयाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रीँ अष्टाधाराय स्वाहा।
७४.ॐ ह्रीँ षडाधाराय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रीँ सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रीँ शिखीसखाय स्वाहा।
७७.ॐ ह्रीँ भूधराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रीँ भूधराधीशाय स्वाहा।
७९.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
८०.ॐ ह्रीँ भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१.ॐ ह्रीँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
८२.ॐ ह्रीँ मुण्डिने स्वाहा।
८३.ॐ ह्रीँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते स्वाहा।
८४.ॐ ह्रीँ जृम्भणाय स्वाहा।
८५.ॐ ह्रीँ मोहनाय स्वाहा।
८६.ॐ ह्रीँ स्तम्भिने स्वाहा।
८७.ॐ ह्रीँ मारणाय स्वाहा।
८८.ॐ ह्रीँ क्षोभणाय स्वाहा।
८९.ॐ ह्रीँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
९०.ॐ ह्रीँ दैत्यघ्ने स्वाहा।
९१.ॐ ह्रीँ मुण्डभूषिताय स्वाहा।
९२.ॐ ह्रीँ बलिभुजे स्वाहा।
९३.ॐ ह्रीँ बलिभुङ्नाथाय स्वाहा।
९४.ॐ ह्रीँ बालाय स्वाहा।
९५.ॐ ह्रीँ अबालपराक्रमाय स्वाहा।
९६.ॐ ह्रीँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।
९७.ॐ ह्रीँ दुर्गाय स्वाहा।
९८.ॐ ह्रीँ दुष्टभूतनिषेविताय स्वाहा।
९९.ॐ ह्रीँ कामिने स्वाहा।
१००.ॐ ह्रीँ कलानिधिकान्ताय स्वाहा।
१०१.ॐ ह्रीँ कामिनीवशकृते स्वाहा।
१०२.ॐ ह्रीँ वशिने स्वाहा।
१०३.ॐ ह्रीँ जगद्रक्षाकराय स्वाहा।
१०४.ॐ ह्रीँ अनन्ताय स्वाहा।
१०५.ॐ ह्रीँ मायामन्त्रौषधीमयाय स्वाहा।
१०६.ॐ ह्रीँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
१०७.ॐ ह्रीँ वैद्याय स्वाहा।
१०८.ॐ ह्रीँ प्रभविष्णवे स्वाहा।

महालक्ष्मी ध्यानम्—

ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्मजलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधती हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ ह्रीँ ऋषिरुवाच।।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महालक्ष्म्यै स्वाहा।।१।।

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा।
महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे।।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दुर्गायै स्वाहा।।२।।

तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम्।
जित्वा च सकलान्देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ह्सौँ महागौर्यै स्वाहा।।३।।

ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम्।
पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ हौँ चण्डिकायै स्वाहा।।४।।

यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम्।
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ह्रीँ सर्वज्ञायै स्वाहा।।५।।

सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च।
अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति।।
ॐ ऐँ ह्रीँ अं सर्वलोकेशायै स्वाहा।।६।।

स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि।
विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सर्वकर्मफलप्रदायै स्वाहा।।७।।

एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम्।
शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ चां सर्वतीर्थमयायै स्वाहा।।८।।

इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ मुं पुण्यायै स्वाहा।।९।।

ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः।
निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च।।
ॐ ऐँ ह्रीँ डां देवयोन्यै स्वाहा।।१०।।

अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः।
निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत।।
ॐ ऐँ ह्रीँ यैं अयोनिजायै स्वाहा।।११।।

अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम्।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ वीं भूमिजायै स्वाहा।।१२।।

अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ चें सूर्यसमप्रभायै स्वाहा।।१३।।

यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्।
याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ई महामात्रे स्वाहा।।१४।।

सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्।
वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ सौं तेजोवत्यै स्वाहा।।१५।।

ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा।
वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका।।
ॐ ऐँ ह्रीँ रां विन्ध्यवासिन्यै स्वाहा।।१६।।

तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा।
नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ त्रों वह्नीशायै स्वाहा।।१७।।

भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च।
अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ लूं देवमात्रे स्वाहा।।१८।।

ततः समस्तेदवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ वं कमलायै स्वाहा।।१९।।

शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्।
चक्रं च दत्तवान्कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ह्रां सर्वविद्याधिदेवतायै स्वाहा।।२०।।

शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः।
मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वाण्यै स्वाहा।।२१।।

वज्रमिन्द्रः समुत्पाट्य कुलिशादमराधिपः।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात्।।
ॐ ऐं ह्रीं सौं सर्वलोकप्रियायै स्वाहा।।२२।।

कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ।
प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम्।।
ॐ ऐं ह्रीं यं सर्वगर्वविमर्दिन्यै स्वाहा।।२३।।

समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः।
कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम्।।
ॐ ऐं ह्रीं ऐं निरहंकारायै स्वाहा।।२४।।

क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे।
चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च।।
ॐ ऐं ह्रीं मूं निर्गुणायै स्वाहा।।२५।।

अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु।
नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम्।।
ॐ ऐं ह्रीं सः अनैश्वर्यै स्वाहा।।२६।।

अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च।
विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम्।।
ॐ ऐं ह्रीं हं आधारशक्त्यै स्वाहा।।२७।।

अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम्।
अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम्।।
ॐ ऐं ह्रीं सं निर्गुणायै स्वाहा।।२८।।

अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम्।
हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च।।
ॐ ऐं ह्रीं सौं सर्वकर्मविवर्जितायै स्वाहा।।२९।।

ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः।
शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम्।।
ॐ ऐं ह्रीं म्ब्लीं यूं धर्मनिष्ठायै स्वाहा।।३०।।

नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्।
अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा।।
ॐ ऐं ह्रीं त्रूं धर्मज्ञानायै स्वाहा।।३१।।

सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ स्त्रीं सर्वसंहारकारिण्यै स्वाहा।।३२।।
अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्।
चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे।।
ॐ ऐँ ह्रीँ आं कान्तायै स्वाहा।।३३।।
चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः।
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ प्रें कर्मज्ञानाप्रदायै स्वाहा।।३४।।
तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः।
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ शं गुणत्रयविवर्जितायै स्वाहा।।३५।।
सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः।
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ह्रां गुणमध्यायै स्वाहा।।३६।।
अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ स्मूं गुणत्रयायै स्वाहा।।३७।।
पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम्।
क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ऊं सर्वरूपिण्यै स्वाहा।।३८।।
दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्।
ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ गुं परोजसे स्वाहा।।३९।।
शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम्।
महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रूं वह्निरूपायै स्वाहा।।४०।।
युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः।
रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ढूं देवतायै स्वाहा।।४१।।
अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः।
पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ भैं शाङ्कर्यै स्वाहा।।४२।।

अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधो रणे।
गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ह्रां शाम्भव्यै स्वाहा।।४३।।

वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत।
बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्रूं शान्तायै स्वाहा।।४४।।

युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः।
अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ मूं चन्द्रसूर्याग्निलोचनायै स्वाहा।।४५।।

युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः।
कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ लृं सुजातायै स्वाहा।।४६।।

हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः।
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रां जयभूमिष्ठायै स्वाहा।।४७।।

युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः।
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ड्रूं जाह्नव्यै स्वाहा।।४८।।

देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः।
सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका।।
ॐ ऐँ ह्रीँ द्धुं जनपूजितायै स्वाहा।।४९।।

लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी।
अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ह्स्लौं शस्त्रायै स्वाहा।।५०।।

मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी।
सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्रां शस्त्रमयायै स्वाहा।।५१।।

चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः।
निःश्वासान्मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका।।
ॐ ऐँ ह्रीँ स्हौं नित्यायै स्वाहा।।५२।।

त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः।
युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ म्लूं शुभायै स्वाहा।।५३।।

नाशयन्तोसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः।
अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खांस्तथापरे।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चन्द्रार्धमस्तकायै स्वाहा।।५४।।

मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन्युद्धमहोत्सवे।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः।।
ॐ ऐं ह्रीं गैं भारत्यै स्वाहा।।५५।।

खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान्।
पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान्।।
ॐ ऐं ह्रीं क्रूं भ्रामर्यै स्वाहा।।५६।।

असुरान्भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्।
केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे।।
ॐ ऐं ह्रीं त्रीं कल्याण्यै स्वाहा।।५७।।

विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते।
वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः।।
ॐ ऐं ह्रीं क्स्त्रीं कराल्यै स्वाहा।।५८।।

केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि।
निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे।।
ॐ ऐं ह्रीं कं योगनिष्ठायै स्वाहा।।५९।।

सेनानुकारिणः प्राणान्मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः।
केषांचिद्बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ।।
ॐ ऐं ह्रीं प्रों कालसंहारकारिण्यै स्वाहा।।६०।।

शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः।
विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः।।
ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं कलातीतायै स्वाहा।।६१।।

एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधा कृताः।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः।।
ॐ ऐं ह्रीं शां कात्यायन्यै स्वाहा।।६२।।

कबन्धाः युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः।
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः।।
ॐ ऐं ह्रीं क्ष्म्रीं कमलालयायै स्वाहा।।६३।।

कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः।
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः।।
ॐ ऐं ह्रीं रों कामिन्यै स्वाहा।।६४।।

पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा।
अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ गं ब्रह्माण्डकोटिसंस्थानायै स्वाहा।।६५।।

शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः।
मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीं जगत्सृष्ट्यादिकारिण्यै स्वाहा।।६६।।

क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीं महामायायै स्वाहा।।६७।।

स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति।।
ॐ ऐँ ह्रीँ सां इन्दिरायै स्वाहा।।६८।।

देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः।
यथैषां तुतुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॐ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ त्रों ज्येष्ठायै स्वाहा।।६९।।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन।। ससस्त्यश्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।। ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै त्रिगुणात्मिकायै पराम्बायै मध्यमचरित्राऽधिष्ठात्र्यै श्रीमहालक्ष्म्यै नमः महाहुतीं समर्पयामि स्वाहा।। ॐ अम्बायै स्वाहा।। ॐ अम्बिकायै स्वाहा।। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।।

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती तृतीयोध्यायः

ध्यानम्—

ॐ उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां,
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं,
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम्।।

इसके बाद भैरवशतनाम से हवन करे।

१.ॐ ह्रीँ भैरवाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रीँ भूतनाथाय स्वाहा।

३.ॐ ह्रौँ भूतात्मने स्वाहा।
४.ॐ ह्रौँ भूतभावनाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रौँ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
६.ॐ ह्रौँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७.ॐ ह्रौँ क्षेत्रदाय स्वाहा।
८.ॐ ह्रौँ क्षत्रियाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रौँ विराजे स्वाहा।
१०.ॐ ह्रौँ श्मशानवासिने स्वाहा।
११.ॐ ह्रौँ मांसासिने स्वाहा।
१२.ॐ ह्रौँ खर्पराशिने स्वाहा।
१३.ॐ ह्रौँ स्मरान्तकाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रौँ रक्तपाय स्वाहा।
१५.ॐ ह्रौँ पानपाय स्वाहा।
१६.ॐ ह्रौँ सिद्धाय स्वाहा।
१७.ॐ ह्रौँ सिद्धिदाय स्वाहा।
१८.ॐ ह्रौँ सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९.ॐ ह्रौँ कंकालाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्रौँ कालशमनाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्रौँ कालाकाष्ठातनवे स्वाहा।
२२.ॐ ह्रौँ कवये स्वाहा।
२३.ॐ ह्रौँ त्रिनेत्राय स्वाहा।
२४.ॐ ह्रौँ बहुनेत्राय स्वाहा।
२५.ॐ ह्रौँ पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्रौँ शूलपाणये स्वाहा।
२७.ॐ ह्रौँ खड्गपाणये स्वाहा।
२८.ॐ ह्रौँ कंकालिने स्वाहा।
२९.ॐ ह्रौँ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३०.ॐ ह्रौँ अभिरवे स्वाहा।
३१.ॐ ह्रौँ भैरवीनाथाय स्वाहा।
३२.ॐ ह्रौँ भूतपाय स्वाहा।
३३.ॐ ह्रौँ योगिनीपतये स्वाहा।
३४.ॐ ह्रौँ धनदाय स्वाहा।
३५.ॐ ह्रौँ अधनहारिणे स्वाहा।
३६.ॐ ह्रौँ धनवते स्वाहा।
३७.ॐ ह्रौँ पतिभानवते स्वाहा।
३८.ॐ ह्रौँ नागहाराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्रौँ नागपाशाय स्वाहा।
४०.ॐ ह्रौँ व्योमकेशाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्रौँ कपालभृते स्वाहा।
४२.ॐ ह्रौँ कालाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्रौँ कपालमालिने स्वाहा।
४४.ॐ ह्रौँ कमनीयाय स्वाहा।
४५.ॐ ह्रौँ कलानिधये स्वाहा।
४६.ॐ ह्रौँ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रौँ ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८.ॐ ह्रौँ त्रिशिखिने स्वाहा।
४९.ॐ ह्रौँ त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रौँ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रौँ डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२.ॐ ह्रौँ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
५३.ॐ ह्रौँ बटुकाय स्वाहा।
५४.ॐ ह्रौँ बहुवेषाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रौँ खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रौँ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रौँ पशुपतये स्वाहा।
५८.ॐ ह्रौँ भिक्षुकाय स्वाहा।
५९.ॐ ह्रौँ परिचारकाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रौँ धूर्ताय स्वाहा।
६१.ॐ ह्रौँ दिगम्बराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रौँ शूराय स्वाहा।
६३.ॐ ह्रौँ हरिणाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रौँ पाण्डुलोचनाय स्वाहा।
६५.ॐ ह्रौँ प्रशान्ताय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रौँ शन्तिदाय स्वाहा।

६७.ॐ ह्रीँ शुद्धाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रीँ शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रीँ अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०.ॐ ह्रीँ निधीशाय स्वाहा।
७१.ॐ ह्रीँ ज्ञानचक्षुषे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रीँ तपोमयाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रीँ अष्टाधाराय स्वाहा।
७४.ॐ ह्रीँ षडाधाराय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रीँ सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रीँ शिखीसखाय स्वाहा।
७७.ॐ ह्रीँ भूधराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रीँ भूधराधीशाय स्वाहा।
७९.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
८०.ॐ ह्रीँ भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१.ॐ ह्रीँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
८२.ॐ ह्रीँ मुण्डिने स्वाहा।
८३.ॐ ह्रीँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते स्वाहा।
८४.ॐ ह्रीँ जृम्भणाय स्वाहा।
८५.ॐ ह्रीँ मोहनाय स्वाहा।
८६.ॐ ह्रीँ स्तम्भिने स्वाहा।
८७.ॐ ह्रीँ मारणाय स्वाहा।
८८.ॐ ह्रीँ क्षोभणाय स्वाहा।
८९.ॐ ह्रीँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
९०.ॐ ह्रीँ दैत्यघ्ने स्वाहा।
९१.ॐ ह्रीँ मुण्डभूषिताय स्वाहा।
९२.ॐ ह्रीँ बलिभुजे स्वाहा।
९३.ॐ ह्रीँ बलिभुङ्नाथाय स्वाहा।
९४.ॐ ह्रीँ बालाय स्वाहा।
९५.ॐ ह्रीँ अबालपराक्रमाय स्वाहा।
९६.ॐ ह्रीँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।
९७.ॐ ह्रीँ दुर्गाय स्वाहा।
९८.ॐ ह्रीँ दुष्टभूतनिषेविताय स्वाहा।
९९.ॐ ह्रीँ कामिने स्वाहा।
१००.ॐ ह्रीँ कलानिधिकान्ताय स्वाहा।
१०१.ॐ ह्रीँ कामिनीवशकृते स्वाहा।
१०२.ॐ ह्रीँ वशिने स्वाहा।
१०३.ॐ ह्रीँ जगद्रक्षाकराय स्वाहा।
१०४.ॐ ह्रीँ अनन्ताय स्वाहा।
१०५.ॐ ह्रीँ मायामन्त्रौपधीमयाय स्वाहा।
१०६.ॐ ह्रीँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
१०७.ॐ ह्रीँ वैद्याय स्वाहा।
१०८.ॐ ह्रीँ प्रभविष्णवे स्वाहा।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

ॐ ह्रीं ऋपिरुवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ ह्लूं भावुकायै स्वाहा।।१।।

निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः।
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लूं कुशलायै स्वाहा।।२।।

स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः।
यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्रां भद्रायै स्वाहा।।३।।

तस्य च्छित्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्।
जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ल्लूं शस्त्रायै स्वाहा।।४।।
चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम्।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ फ्रें भद्रायै स्वाहा।।५।।
सच्छन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्रीं वीरमर्दिन्यै स्वाहा।।६।।
सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ म्लूं देव्यै स्वाहा।।७।।
तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन।
ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ध्रें वैकुण्ठवासिन्यै स्वाहा।।८।।
चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रौं धनदायै स्वाहा।।९।।
दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत।
तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ह्रौं सुखदायै स्वाहा।।१०।।
हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ।
आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ वृं शुभदायै स्वाहा।।११।।
सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्।
हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ह्रीँ शिवदायै स्वाहा।।१२।।
भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः।
चिक्षेच चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ त्रौं विष्णुवल्लभायै स्वाहा।।१३।।
ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः।
बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ह्रौं देवदेव्यै स्वाहा।।१४।।

युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः।।
ॐ ऐं ह्रीं गीं कामदायै स्वाहा।।१५।।

ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा।
करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम्।।
ॐ ऐं ह्रीं यं अर्थदायै स्वाहा।।१६।।

उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः।
दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः।।
ॐ ऐं ह्रीं ह्लीं भक्तप्रियायै स्वाहा।।१७।।

देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्।
वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम्।।
ॐ ऐं ह्रीं ह्लूं भक्त्यै स्वाहा।।१८।।

उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम्।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रौं बुद्धिदायै स्वाहा।।१९।।

बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम्।।
ॐ ऐं ह्रीं वों धनप्रदायै स्वाहा।।२०।।

एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः।
माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान्।।
ॐ ऐं ह्रीं अं अर्थप्रदायै स्वाहा।।२१।।

कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्।
लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान्।।
ॐ ऐं ह्रीं म्लौं महादेव्यै स्वाहा।।२२।।

वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च।
निःश्वासपवनेनान्यान् पातयामास भूतले।।
ॐ ऐं ह्रीं प्रीं दण्डपाणिप्रियायै स्वाहा।।२३।।

निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः।
सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दण्डपाणिमात्रे स्वाहा।।२४।।

सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः।
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च।।
ॐ ऐं ह्रीं त्रों दण्डनिधये स्वाहा।।२५।।

वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत।
लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ह्सौं दण्डपाणिसमाराध्यायै स्वाहा।।२६।।
धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः।
श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीं दण्डपाणिप्रपूजितायै स्वाहा।।२७।।
इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीं दण्डपाणिगुहासक्तायै स्वाहा।।२८।।
सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे।।
ॐ ऐँ ह्रीँ स्त्रीं दण्डपाणिप्रियंवदायै स्वाहा।।२९।।
तत. सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः।
छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिःरदृश्यत।।
ॐ ऐँ ह्रीँ प्लूं दण्डपाणिप्रियतमायै स्वाहा।।३०।।
तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः।
तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ स्त्रीं दण्डपाणिमनोहरायै स्वाहा।।३१।।
करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च।
कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत।।
ॐ ऐँ ह्रीँ व्रीं दण्डपाणिहृतप्राणायै स्वाहा।।३२।।
ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ लूं दण्डपाणिसुसिद्धिदायै स्वाहा।।३३।।
ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना।।
ॐ ऐँ ह्रीँ द्रां दण्डपाणिपरामृतायै स्वाहा।।३४।।
ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्ष्मीं दण्डपाणिप्रहर्षितायै स्वाहा।।३५।।
सा च तान्प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः।
उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षणम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ स्कं दण्डपाणिविघ्नहरायै स्वाहा।।३६।।

देव्युवाच।।

ॐ ऐं ह्रीं त्रूं नारायण्यै स्वाहा।।३७।।

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः।।

ॐ ऐं ह्रीं द्रीं दण्डपाणिशिरोद्धतायै स्वाहा।।३८।।

ऋषिरुवाच।।

ॐ ऐं ह्रीं म्लूं वाराह्यै स्वाहा।।३९।।

एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम्।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत्।।

ॐ ऐं ह्रीं शां दण्डपाणिप्राप्तचर्चायै स्वाहा।।४०।।

ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः।
अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः।।

ॐ ऐं ह्रीं ल्लीं दण्डपाणिप्राप्तपदायै स्वाहा।।४१।।

अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः।।

ॐ ऐं ह्रीं लूं दण्डपाण्युन्मुखायै स्वाहा।।४२।।

ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रुं दण्डपाणिवरोन्मुख्यै स्वाहा।।४३।।

तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः।
जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॐ।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लां दण्डहस्तायै स्वाहा।।४४।।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्च॒न।। स॑सस्त्यश्व॒कः॑सुभद्रिकाङ्काम्पीलवा॒सिनीम्।। ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै त्रिगुणात्मिकायै पराम्बायै मध्यमचरित्राऽधिष्ठात्र्यै श्रीमहालक्ष्म्यै नमः महाहुतीं समर्पयामि स्वाहा।। ॐ अम्बायै स्वाहा।। ॐ अम्बिकायै स्वाहा।। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।।

* * *

अथ श्रीदुर्गासप्तशती चतुर्थोध्यायः

ध्यानम्—

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखाम्,
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं,
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः।।

इसके बाद भैरवशतनाम से हवन करे।

१.ॐ ह्रीँ भैरवाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रीँ भूतनाथाय स्वाहा।
३.ॐ ह्रीँ भूतात्मने स्वाहा।
४.ॐ ह्रीँ भूतभावनाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रीँ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
६.ॐ ह्रीँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७.ॐ ह्रीँ क्षेत्रदाय स्वाहा।
८.ॐ ह्रीँ क्षत्रियाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रीँ विराजे स्वाहा।
१०.ॐ ह्रीँ श्मशानवासिने स्वाहा।
११.ॐ ह्रीँ मांसासिने स्वाहा।
१२.ॐ ह्रीँ खर्पराशिने स्वाहा।
१३.ॐ ह्रीँ स्मरान्तकाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रीँ रक्तपाय स्वाहा।
१५.ॐ ह्रीँ पानपाय स्वाहा।
१६.ॐ ह्रीँ सिद्धाय स्वाहा।
१७.ॐ ह्रीँ सिद्धिदाय स्वाहा।
१८.ॐ ह्रीँ सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९.ॐ ह्रीँ कंकालाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्रीँ कालशमनाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्रीँ कालाकाष्ठातनवे स्वाहा।
२२.ॐ ह्रीँ कवये स्वाहा।
२३.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्राय स्वाहा।
२४.ॐ ह्रीँ बहुनेत्राय स्वाहा।
२५.ॐ ह्रीँ पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्रीँ शूलपाणये स्वाहा।
२७.ॐ ह्रीँ खड्गपाणये स्वाहा।
२८.ॐ ह्रीँ कंकालिने स्वाहा।
२९.ॐ ह्रीँ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३०.ॐ ह्रीँ अभिरवे स्वाहा।
३१.ॐ ह्रीँ भैरवीनाथाय स्वाहा।
३२.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
३३.ॐ ह्रीँ योगिनीपतये स्वाहा।
३४.ॐ ह्रीँ धनदाय स्वाहा।
३५.ॐ ह्रीँ अधनहारिणे स्वाहा।
३६.ॐ ह्रीँ धनवते स्वाहा।
३७.ॐ ह्रीँ पतिभानवते स्वाहा।
३८.ॐ ह्रीँ नागहाराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्रीँ नागपाशाय स्वाहा।
४०.ॐ ह्रीँ व्योमकेशाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्रीँ कपालभृते स्वाहा।
४२.ॐ ह्रीँ कालाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्रीँ कपालमालिने स्वाहा।
४४.ॐ ह्रीँ कमनीयाय स्वाहा।
४५.ॐ ह्रीँ कलानिधये स्वाहा।
४६.ॐ ह्रीँ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रीँ ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८.ॐ ह्रीँ त्रिशिखिने स्वाहा।

४९.ॐ ह्रीँ त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रीँ डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२.ॐ ह्रीँ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
५३.ॐ ह्रीँ बटुकाय स्वाहा।
५४.ॐ ह्रीँ बहुवेषाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रीँ खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रीँ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रीँ पशुपतये स्वाहा।
५८.ॐ ह्रीँ भिक्षुकाय स्वाहा।
५९.ॐ ह्रीँ परिचारकाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रीँ धूर्ताय स्वाहा।
६१.ॐ ह्रीँ दिगम्बराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रीँ शूराय स्वाहा।
६३.ॐ ह्रीँ हरिणाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रीँ पाण्डुलोचनाय स्वाहा।
६५.ॐ ह्रीँ प्रशान्ताय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रीँ शन्तिदाय स्वाहा।
६७.ॐ ह्रीँ शुद्धाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रीँ शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रीँ अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०.ॐ ह्रीँ निधीशाय स्वाहा।
७१.ॐ ह्रीँ ज्ञानचक्षुषे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रीँ तपोमयाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रीँ अष्टाधाराय स्वाहा।
७४.ॐ ह्रीँ षडाधाराय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रीँ सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रीँ शिखीसखाय स्वाहा।
७७.ॐ ह्रीँ भूधराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रीँ भूधराधीशाय स्वाहा।

ॐ नमश्चण्डिकायै।।

७९.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
८०.ॐ ह्रीँ भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१.ॐ ह्रीँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
८२.ॐ ह्रीँ मुण्डिने स्वाहा।
८३.ॐ ह्रीँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते स्वाहा।
८४.ॐ ह्रीँ जृम्भणाय स्वाहा।
८५.ॐ ह्रीँ मोहनाय स्वाहा।
८६.ॐ ह्रीँ स्तम्भिने स्वाहा।
८७.ॐ ह्रीँ मारणाय स्वाहा।
८८.ॐ ह्रीँ क्षोभणाय स्वाहा।
८९.ॐ ह्रीँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
९०.ॐ ह्रीँ दैत्यघ्ने स्वाहा।
९१.ॐ ह्रीँ मुण्डभूषिताय स्वाहा।
९२.ॐ ह्रीँ बलिभुजे स्वाहा।
९३.ॐ ह्रीँ बलिभुङ्नाथाय स्वाहा।
९४.ॐ ह्रीँ बालाय स्वाहा।
९५.ॐ ह्रीँ अबालपराक्रमाय स्वाहा।
९६.ॐ ह्रीँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।
९७.ॐ ह्रीँ दुर्गाय स्वाहा।
९८.ॐ ह्रीँ दुष्टभूतनिषेविताय स्वाहा।
९९.ॐ ह्रीँ कामिने स्वाहा।
१००.ॐ ह्रीँ कलानिधिकान्ताय स्वाहा।
१०१.ॐ ह्रीँ कामिनीवशकृते स्वाहा।
१०२.ॐ ह्रीँ वशिने स्वाहा।
१०३.ॐ ह्रीँ जगद्रक्षाकराय स्वाहा।
१०४.ॐ ह्रीँ अनन्ताय स्वाहा।
१०५.ॐ ह्रीँ मायामन्त्रौषधीमयाय स्वाहा।
१०६.ॐ ह्रीँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
१०७.ॐ ह्रीँ वैद्याय स्वाहा।
१०८.ॐ ह्रीँ प्रभविष्णवे स्वाहा।

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ वों दधीचिप्रीतायै स्वाहा।।१।।

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये,
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।
तां तुष्टुवुः प्रणति नम्र शिरोधरां सा,
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लूं वरदायिन्यै स्वाहा।।२।।

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या,
निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां,
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ नें दधीचीष्टदेवतायै स्वाहा।।३।।

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो,
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय,
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु।।

ॐ ऐँ ह्रीँ ह्स्लीं दधीचिमोक्षदायिन्यै स्वाहा।।४।।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ प्रें पद्मावत्यै स्वाहा।।५।।

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्,
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि,
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु।।

ॐ ऐँ ह्रीँ औं विशालाक्ष्यै स्वाहा।।६।।

हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषैः,
न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतं,
अव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या।।

ॐ ऐँ ह्रीँ म्लूं नागाख्यै स्वाहा।।७।।

यस्याः समस्तसुरतासमुदीरणेन,
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च।।
ॐ ऐं ह्रीं नों दत्तधनायै स्वाहा।।८।।

या मुक्तिहेतुरविचिन्त्य महाव्रता त्व-
मभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै-
र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि।।
ॐ ऐं ह्रीं सौं पीतवासायै स्वाहा।।९।।

शब्दात्मिका सुवमिलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्।
देवी त्रयी भगवती भवभावनाय
वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री।।
ॐ ऐं ह्रीं स्लीं जयमालायै स्वाहा।।१०।।

मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा,
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा,
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा।।
ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं मंगलाक्ष्यै स्वाहा।।११।।

ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-
बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम्।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि,
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण।।
ॐ ऐं ह्रीं फ्रूं सर्वमङ्गलायै स्वाहा।।१२।।

दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल-
मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं,
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन।।
ॐ ऐं ह्रीं श्लीं दत्तदारिद्र्यनाशिन्यै स्वाहा।।१३।।

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय,
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।

विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्रीं सिद्ध्यै स्वाहा।।१४।।

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां,
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा,
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ह्लौं त्रैलोक्यमोहिन्यै स्वाहा।।१५।।

धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-
ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती प्रसादा-
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन।।
ॐ ऐँ ह्रीँ स्ल्लीं देवानां हितकारिण्यै स्वाहा।।१६।।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीं कमलायै स्वाहा।।१७।।

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते,
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु,
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ह्रौं सूक्ष्मायै स्वाहा।।१८।।

दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म,
सर्वान् सुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम्।
लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता,
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ह्रीँ श्रां महाबलायै स्वाहा।।१९।।

खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः,
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्डं,
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ह्सूं मोहिन्यै स्वाहा।।२०।।

दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं,
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृहृतदेवपराक्रमाणां,
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्स्लीं सर्वमंगलायै स्वाहा।।२१।।

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य,
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्ट्वा,
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि।।
ॐ ऐँ ह्रीँ स्तूं प्रियायै स्वाहा।।२२।।

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन,
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-
मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ स्हौं भुक्तिप्रदायिन्यै स्वाहा।।२३।।

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ग्लौं आर्तपरित्राणायै स्वाहा।।२४।।

प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।
ॐ ऐँ ह्रीँ म्लीं वैष्णव्यै स्वाहा।।२५।।

सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ज्स्ह्रीं वाराह्यै स्वाहा।।२६।।

खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ स्तुं नारसिंह्यै स्वाहा।।२७।।

ऋषिरुवाच।।
ॐ ऐँ ह्रीँ ल्लूं लक्ष्म्यै स्वाहा।।२८।।

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्ष्म्रीं नारायण्यै स्वाहा।।२९।।

भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान्।।
ॐ ऐं ह्रीं हौं विश्वमायायै स्वाहा।।३०।।

देव्युवाच।।
ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं महामायायै स्वाहा।।३१।।

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाच्छितम्।।
ॐ ऐं ह्रीं ई महिषासुरमर्दिन्यै स्वाहा।।३२।।

देवा ऊचुः।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुखकर्यै स्वाहा।।३३।।

भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते।।
ॐ ऐं ह्रीं क्रूं भक्तप्रियायै स्वाहा।।३४।।

यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः।
यदि चापि परो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि।।
ॐ ऐं ह्रीं सः धनधान्यप्रदायै स्वाहा।।३५।।

संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने।।
ॐ ऐं ह्रीं स्लूं भक्तरक्षिकायै स्वाहा।।३६।।

तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके।।
ॐ ऐं ह्रीं प्रें भोगदायै स्वाहा।।३७।।

ऋषिरुवाच।।
ॐ ऐं ह्रीं सूं ऋद्धिप्रदायै स्वाहा।।३८।।

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप।।
ॐ ऐं ह्रीं प्लीं वृद्धिप्रदायै स्वाहा।।३९।।

इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी।।
ॐ ऐं ह्रीं ओं विष्णुमायायै स्वाहा।।४०।।

पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत्।
वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः।।
ॐ ऐं ह्रीं औं सर्वमोहिन्यै स्वाहा।।४१।।

रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी।
तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते ह्रीं ॐ।।
ॐ ऐं ह्रीं ह्लौं वरदायै स्वाहा।।४२।।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बालिके॒नमानयति॒कश्श्च॒न।। ससस्त्यश्श्व॒कःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवा॒सिनीम्।। ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै त्रिगुणात्मिकायै पराम्बायै मध्यमचरित्राऽधिष्ठात्र्यै श्रीमहालक्ष्म्यै नमः महाहुतीं समर्पयामि स्वाहा।। ॐ अम्बायै स्वाहा।। ॐ अम्बिकायै स्वाहा।। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।।

◆

अथ श्रीदुर्गासप्तशती पञ्चमोध्यायः

विनियोगः—अस्य श्रीउत्तरचरित्रस्य रुद्रऋषिः, महासरस्वती देवता, अनुष्टुप्छन्दः, भीमा शक्तिः, भ्रामरी बीजं, सूर्यस्तत्त्वं, सामवेदः स्वरूपं, महासरस्वतीप्रीत्यर्थे हवने विनियोगः।

महासरस्वती ध्यानम्—

ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा,
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।

महासरस्वती के चतुःषष्टि योगिनी का हवन—

१.ॐ पिङ्गलाक्षीयोगिन्यै स्वाहा।
२.ॐ विशालाक्षीयोगिन्यै स्वाहा।
३.ॐ समृद्धियोगिन्यै स्वाहा।
४.ॐ वृद्धियोगिन्यै स्वाहा।
५.ॐ श्रद्धायोगिन्यै स्वाहा।
६.ॐ स्वाहायोगिन्यै स्वाहा।
७.ॐ स्वधायोगिन्यै स्वाहा।
८.ॐ इच्छायोगिन्यै स्वाहा।
९.ॐ मायायोगिन्यै स्वाहा।
१०.ॐ संज्ञायोगिन्यै स्वाहा।
११.ॐ वसुन्धरायोगिन्यै स्वाहा।
१२.ॐ त्रैलोक्यधात्रीयोगिन्यै स्वाहा।
१३.ॐ सावित्रीयोगिन्यै स्वाहा।
१४.ॐ गायत्रीत्रिपदेश्वरीयोगिन्यै स्वाहा।
१५.ॐ सुरूपायोगिन्यै स्वाहा।
१६.ॐ वहुरूपायोगिन्यै स्वाहा।
१७.ॐ स्कन्दमातायोगिन्यै स्वाहा।
१८.ॐ अच्युतप्रियायोगिन्यै स्वाहा।

१९.ॐ विमलायोगिन्यै स्वाहा।
२०.ॐ कमलायोगिन्यै स्वाहा।
२१.ॐ दारुणीयोगिन्यै स्वाहा।
२२.ॐ आरुणीयोगिन्यै स्वाहा।
२३.ॐ प्रकृतियोगिन्यै स्वाहा।
२४.ॐ विकृतियोगिन्यै स्वाहा।
२५.ॐ सृष्टियोगिन्यै स्वाहा।
२६.ॐ स्थितियोगिन्यै स्वाहा।
२७.ॐ संहतियोगिन्यै स्वाहा।
२८.ॐ सन्ध्यायोगिन्यै स्वाहा।
२९.ॐ सत्यमातायोगिन्यै स्वाहा।
३०.ॐ हंसीयोगिन्यै स्वाहा।
३१.ॐ मदर्जिकायोगिन्यै स्वाहा।
३२.ॐ परायोगिन्यै स्वाहा।
३३.ॐ देवमातायोगिन्यै स्वाहा।
३४.ॐ भगवतीयोगिन्यै स्वाहा।
३५.ॐ देवकीयोगिन्यै स्वाहा।
३६.ॐ कमलालकायोगिन्यै स्वाहा।
३७.ॐ त्रिमुखीयोगिन्यै स्वाहा।
३८.ॐ सप्तमुखीयोगिन्यै स्वाहा।
३९.ॐ असुरविमर्दिनीयोगिन्यै स्वाहा।
४०.ॐ लम्बोष्ठीयोगिन्यै स्वाहा।
४१.ॐ उर्ध्वकेशीयोगिन्यै स्वाहा।
४२.ॐ वहुशिरायोगिन्यै स्वाहा।
४३.ॐ वृकोदरीयोगिन्यै स्वाहा।
४४.ॐ रथरेखायोगिन्यै स्वाहा।
४५.ॐ शशिरेखायोगिन्यै स्वाहा।
४६.ॐ गगनवेगायोगिन्यै स्वाहा।
४७.ॐ पवनवेगायोगिन्यै स्वाहा।
४८.ॐ भुवनपालायोगिन्यै स्वाहा।
४९.ॐ मदनातुरायोगिन्यै स्वाहा।
५०.ॐ अनंगायोगिन्यै स्वाहा।
५१.ॐ अनंगमदनायोगिन्यै स्वाहा।
५२.ॐ अनंगमेखलायोगिन्यै स्वाहा।
५३.ॐ कुसुमायोगिन्यै स्वाहा।
५४.ॐ विश्वरूपायोगिन्यै स्वाहा।
५५.ॐ सुरापूर्वायोगिन्यै स्वाहा।
५६.ॐ भयंकरीयोगिन्यै स्वाहा।
५७.ॐ अक्षोभ्यायोगिन्यै स्वाहा।
५८.ॐ देवमातायोगिन्यै स्वाहा।
५९.ॐ सत्यवादिनीयोगिन्यै स्वाहा।
६०.ॐ वज्ररूपायोगिन्यै स्वाहा।
६१.ॐ वज्ररेखायोगिन्यै स्वाहा।
६२.ॐ शुचिव्रतायोगिन्यै स्वाहा।
६३.ॐ वरदायोगिन्यै स्वाहा।
६४.ॐ वागीशीयोगिन्यै स्वाहा।

इसके बाद भैरवशतनाम से हवन करे।

१.ॐ ह्रीँ भैरवाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रीँ भूतनाथाय स्वाहा।
३.ॐ ह्रीँ भूतात्मने स्वाहा।
४.ॐ ह्रीँ भूतभावनाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रीँ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
६.ॐ ह्रीँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७.ॐ ह्रीँ क्षेत्रदाय स्वाहा।
८.ॐ ह्रीँ क्षत्रियाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रीँ विराजे स्वाहा।
१०.ॐ ह्रीँ श्मशानवासिने स्वाहा।
११.ॐ ह्रीँ मांसासिने स्वाहा।
१२.ॐ ह्रीँ खर्पराशिने स्वाहा।
१३.ॐ ह्रीँ स्मरान्तकाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रीँ रक्तपाय स्वाहा।

१५.ॐ ह्रीँ पानपाय स्वाहा।
१६.ॐ ह्रीँ सिद्धाय स्वाहा।
१७.ॐ ह्रीँ सिद्धिदाय स्वाहा।
१८.ॐ ह्रीँ सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९.ॐ ह्रीँ कंकालाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्रीँ कालशमनाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्रीँ कालाकाष्ठातनवे स्वाहा।
२२.ॐ ह्रीँ कवये स्वाहा।
२३.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्राय स्वाहा।
२४.ॐ ह्रीँ बहुनेत्राय स्वाहा।
२५.ॐ ह्रीँ पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्रीँ शूलपाणये स्वाहा।
२७.ॐ ह्रीँ खड्गपाणये स्वाहा।
२८.ॐ ह्रीँ कंकालिने स्वाहा।
२९.ॐ ह्रीँ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३०.ॐ ह्रीँ अभिरवे स्वाहा।
३१.ॐ ह्रीँ भैरवीनाथाय स्वाहा।
३२.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
३३.ॐ ह्रीँ योगिनीपतये स्वाहा।
३४.ॐ ह्रीँ धनदाय स्वाहा।
३५.ॐ ह्रीँ अधनहारिणे स्वाहा।
३६.ॐ ह्रीँ धनवते स्वाहा।
३७.ॐ ह्रीँ पतिभानवते स्वाहा।
३८.ॐ ह्रीँ नागहाराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्रीँ नागपाशाय स्वाहा।
४०.ॐ ह्रीँ व्योमकेशाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्रीँ कपालभृते स्वाहा।
४२.ॐ ह्रीँ कालाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्रीँ कपालमालिने स्वाहा।
४४.ॐ ह्रीँ कमनीयाय स्वाहा।
४५.ॐ ह्रीँ कलानिधये स्वाहा।
४६.ॐ ह्रीँ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रीँ ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८.ॐ ह्रीँ त्रिशिखिने स्वाहा।
४९.ॐ ह्रीँ त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रीँ डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२.ॐ ह्रीँ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
५३.ॐ ह्रीँ बटुकाय स्वाहा।
५४.ॐ ह्रीँ बहुवेषाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रीँ खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रीँ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रीँ पशुपतये स्वाहा।
५८.ॐ ह्रीँ भिक्षुकाय स्वाहा।
५९.ॐ ह्रीँ परिचारकाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रीँ धूर्ताय स्वाहा।
६१.ॐ ह्रीँ दिगम्बराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रीँ शूराय स्वाहा।
६३.ॐ ह्रीँ हरिणाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रीँ पाण्डुलोचनाय स्वाहा।
६५.ॐ ह्रीँ प्रशान्ताय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रीँ शन्तिदाय स्वाहा।
६७.ॐ ह्रीँ शुद्धाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रीँ शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रीँ अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०.ॐ ह्रीँ निधीशाय स्वाहा।
७१.ॐ ह्रीँ ज्ञानचक्षुषे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रीँ तपोमयाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रीँ अष्टाधाराय स्वाहा।
७४.ॐ ह्रीँ षडाधाराय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रीँ सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रीँ शिखीसखाय स्वाहा।
७७.ॐ ह्रीँ भूधराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रीँ भूधराधीशाय स्वाहा।

७९.ॐ ह्रीं भूतपाय स्वाहा।
८०.ॐ ह्रीँ भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१.ॐ ह्रीँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
८२.ॐ ह्रीँ मुण्डिने स्वाहा।
८३.ॐ ह्रीँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते स्वाहा।
८४.ॐ ह्रीँ जृम्भणाय स्वाहा।
८५.ॐ ह्रीँ मोहनाय स्वाहा।
८६.ॐ ह्रीँ स्तम्भिने स्वाहा।
८७.ॐ ह्रीँ मारणाय स्वाहा।
८८.ॐ ह्रीँ क्षोभणाय स्वाहा।
८९.ॐ ह्रीँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
९०.ॐ ह्रीँ दैत्यघ्ने स्वाहा।
९१.ॐ ह्रीँ मुण्डभूषिताय स्वाहा।
९२.ॐ ह्रीँ बलिभुजे स्वाहा।
९३.ॐ ह्रीँ बलिभुङ्नाथाय स्वाहा।
९४.ॐ ह्रीं बालाय स्वाहा।
९५.ॐ ह्रीँ अबालपराक्रमाय स्वाहा।
९६.ॐ ह्रीँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।
९७.ॐ ह्रीँ दुर्गाय स्वाहा।
९८.ॐ ह्रीँ दुष्टभूतनिषेविताय स्वाहा।
९९.ॐ ह्रीं कामिने स्वाहा।
१००.ॐ ह्रीँ कलानिधिकान्ताय स्वाहा।
१०१.ॐ ह्रीँ कामिनीवशकृते स्वाहा।
१०२.ॐ ह्रीँ वशिने स्वाहा।
१०३.ॐ ह्रीँ जगद्रक्षाकराय स्वाहा।
१०४.ॐ ह्रीँ अनन्ताय स्वाहा।
१०५.ॐ ह्रीँ मायामन्त्रौषधीमयाय स्वाहा।
१०६.ॐ ह्रीँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
१०७.ॐ ह्रीँ वैद्याय स्वाहा।
१०८.ॐ ह्रीँ प्रभविष्णवे स्वाहा।

ॐ क्लीं ऋषिरुवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रौं दिव्यरूपायै स्वाहा।।१।।

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपते।
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ओं महातेजायै स्वाहा।।२।।

तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम्।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ लृं योगिन्यै स्वाहा।।३।।

तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च।
ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रीं सिद्धयोगिन्यै स्वाहा।।४।।

हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः।
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं योगेश्वर्यै स्वाहा।।५।।

तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिलाः।
भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हूं हाकिन्यै स्वाहा।।६।।

इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्।
जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ रौं महाघोरायै स्वाहा।।७।।

देवा ऊचुः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ म्लीं कालरात्र्यै स्वाहा।।८।।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्हौं कालिकायै स्वाहा।।९।।

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ग्लूं सिंहवाहिन्यै स्वाहा।।१०।।

कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सौं ब्रह्माण्यै स्वाहा।।११।।

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ल्लूं चर्चिकायै स्वाहा।।१२।।

अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्सां चण्ड्यै स्वाहा।।१३।।

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ग्ल्मौं गौर्य्यै स्वाहा।।१४।।

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्क्लूं दोषहारिण्यै स्वाहा।।१५।।

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रों शिवायै स्वाहा।।१६।।

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्लीं वत्सलायै स्वाहा।।१७।।

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ लीं दोषाकरवधुप्राणायै स्वाहा।।१८।।

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्त्रूं महोदर्यै स्वाहा।।१९।।

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ लीं दुर्गायै स्वाहा।।२०।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सं क्षान्त्यै स्वाहा।।२१।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रूं शैलिन्यै स्वाहा।।२२।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ जूं सावित्र्यै स्वाहा।।२३।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्लीं दोषाकरवध्वे स्वाहा।।२४।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्ररूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्कीं कपालिन्यै स्वाहा।।२५।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रूं कात्यायन्यै स्वाहा।।२६।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हूं महादेव्यै स्वाहा।।२७।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्त्रूं कालरात्र्यै स्वाहा।।२८।।
या देवी सर्वभूतेषु च्छायारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रों दण्डपाण्यै स्वाहा।।२९।।
या देवी सर्वभूतेषु च्छायारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूं वसुन्धरायै स्वाहा।।३०।।
या देवी सर्वभूतेषु च्छायारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सं शिवदूत्यै स्वाहा।।३१।।
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ल्स्त्रां दरान्तकृते स्वाहा।।३२।।
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ फ्रीं महातेजायै स्वाहा।।३३।।
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्लां दोषापूज्यायै स्वाहा।।३४।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ फ्रें दण्डदोषकायै स्वाहा।।३५।।

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ओं विश्वेश्वर्यै स्वाहा।।३६।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रां माहेन्द्र्यै स्वाहा।।३७।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नं रौद्र्यै स्वाहा।।३८।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ वं रुद्राण्यै स्वाहा।।३९।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ भं दण्डिखण्डकनाशिन्यै स्वाहा।।४०।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रां दस्युरतायै स्वाहा।।४१।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ लं क्षमायै स्वाहा।।४२।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ल्लूं उमायै स्वाहा।।४३।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ईं सारंगिण्यै स्वाहा।।४४।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लीं गङ्गायै स्वाहा।।४५।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्लीं दस्युपूज्यायै स्वाहा।।४६।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्ष्मलृं इन्द्राण्यै स्वाहा।।४७।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ पूं ईश्वर्यै स्वाहा।।४८।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रौं दस्युद्रविणदायिन्यै स्वाहा।।४९।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रौं स्वधायै स्वाहा।।५०।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ भ्रूं दस्युवर्गकृताहार्यै स्वाहा।।५१।।

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्स्त्रीं कौमार्यै स्वाहा।।५२।।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ आं शंकर्य्यै स्वाहा।।५३।।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रूं दस्युनिर्णाशिन्यै स्वाहा।।५४।।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ त्रूं खड्गिने स्वाहा।।५५।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ उं दस्युकुलनिर्णाशिन्यै स्वाहा।।५६।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ जां वामनेत्र्यै स्वाहा।।५७।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्लूं दस्युप्रियकर्य्यै स्वग्हा।।५८।।
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ फ्रौं दस्य्वीश्वर्यै स्वाहा।।५९।।
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रौं दस्युनृत्यदर्शनतत्परायै स्वाहा।।६०।।
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ कीं गायत्र्यै स्याहा।।६१।।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ग्लूं दुष्टदण्डकर्यै स्वाहा।।६२।।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं महामेधायै स्वाहा।।६३।।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ रं दुष्टवर्गविद्राविण्यै स्वाहा।।६४।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्लूं मोहिन्यै स्वाहा।।६५।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्सैं कामाक्षायै स्वाहा।।६६।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्हूं दुष्टवर्गनिग्रहार्हायै स्वाहा।।६७।।

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्र्श्रीं दूषकप्राणनाशिन्यै स्वाहा।।६८।।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ओं त्रिनेत्रायै स्वाहा।।६९।।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ लूं दूषकोत्तापजनन्यै स्वाहा।।७०।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्लूं डाकिन्यै स्वाहा।।७१।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ल्लूं दूषकारिष्टकारिण्यै स्वाहा।।७२।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्खौं दूषकद्वेषणकर्य्यै स्वाहा।।७३।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्भ्रौं कालिकायै स्वाहा।।७४।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्ष्म्लीं दाहिकायै स्वाहा।।७५।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ब्रीं कपालिन्यै स्वाहा।।७६।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तयैदेव्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सीं दहनात्मिकायै स्वाहा।।७७।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत् नमस्तस्यै।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ भूं चामुण्डायै स्वाहा।।७८।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् नमस्तस्यै।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ल्क्रीं ज्ञानरूपायै स्वाहा।।७९।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्लृं निराकारायै स्वाहा।।८०।।
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविताः।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्ष्म्लृं भक्ताभीष्ट फलप्रदायै स्वाहा।।८१।।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ पूं भूतात्मिकायै स्वाहा।।८२।।

ऋषिरुवाच।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रौं भूतमात्रे स्वाहा।।८३।।
एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती।
स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रूं भूतेशायै स्वाहा।।८४।।
साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का।
शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूता ब्रवीच्छिवा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्षं भूतधारिण्यै स्वाहा।।८५।।
स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः।
देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ओं स्वधानारिमध्यगतायै स्वाहा।।८६।।
शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रौं षडाधारादिवर्तिन्यै स्वाहा।।८७।।
तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वति।
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्ष्म्क्लृं मोहदायै स्वाहा।।८८।।
ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहराम्।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ वां अंशुभवायै स्वाहा।।८९।।
ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अनीव सुमनोहरा।
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रूं शुभ्रायै स्वाहा।।९०।।
नैव तादृक्क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्।
ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ग्लूं सूक्ष्मायै स्वाहा।।९१।।
स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ लृं सर्वगतायै स्वाहा।।९२।।
यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो।
त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रें सर्वदायै स्वाहा।।९३।।

ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात्।
पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हूं दुर्लभरूपिण्यै स्वाहा।।९४।।

विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे।
रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम्।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं सत्यायै स्वाहा।।९५।।

निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम्।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दें अनन्तायै स्वाहा।।९६।।

छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि तिष्ठति।
तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नूं सर्वज्ञानप्रदायै स्वाहा।।९७।।

मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वयाहृता।
पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आं परायै स्वाहा।।९८।।

निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः।
वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रां हरायै स्वाहा।।९९।।

एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते।
स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं नित्यानन्दायै स्वाहा।।१००।।

ऋषिरुवाच।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दं नीलसंकाशायै स्वाहा।।१०१।।

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम्।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रीं निम्नगायै स्वाहा।।१०२।।

इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्लीं निरालसायै स्वाहा।।१०३।।

स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने।
सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुराया गिरा।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं गूं मात्रायै स्वाहा।।१०४।।

दूत उवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रौँ लक्ष्म्यै स्वाहा।।१०५।।

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः।
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सां पद्मायै स्वाहा।।१०६।।

अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु।
निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीं पद्मालयायै स्वाहा।।१०७।।

मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः।
यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ जुं कमलालयायै स्वाहा।।१०८।।

त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः।
तथैव गजरत्नं च हृत्वा देवेन्द्रवाहनम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हूं श्रियै स्वाहा।।१०९।।

क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः।
उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सं हरिप्रियायै स्वाहा।।११०।।

यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च।
रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीं राघवप्रियायै स्वाहा।।१११।।

स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सौं रमायै स्वाहा।।११२।।

मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्।
भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ दीं परमायै स्वाहा।।११३।।

परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात्।
एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रें शोभनायै स्वाहा।।११४।।

ऋषिरुवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ यां पद्मवासायै स्वाहा।।११५।।

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ रूं विष्णुप्रियायै स्वाहा।।११६।।
देव्युवाच।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ भं कृष्णप्रियायै स्वाहा।।११७।।
सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम्।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सूं रामप्रियायै स्वाहा।।११८।।
किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम्।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रां शौरिप्रियायै स्वाहा।।११९।।
यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ओं जिष्णुप्रियायै स्वाहा।।१२०।।
तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ लूं माधवप्रियायै स्वाहा।।१२१।।
दूत उवाच।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ डूं क्षीरोदतनयायै स्वाहा।।१२२।।
अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः।
त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ जूं कमलवासिन्यै स्वाहा।।१२३।।
अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्रीः त्वमेकिका।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ धूं क्षीराब्धितनयायै स्वाहा।।१२४।।
इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे।
शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ त्रें नारायण्यै स्वाहा।।१२५।।
सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः।
केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीं शुभायै स्वाहा।।१२६।।

देव्युवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं शिवायै स्वाहा।।१२७।।

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान्।
किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ई कल्याण्यै स्वाहा।।१२८।।

स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत् ॐ।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रां क्षेमायै स्वाहा।।१२९।।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न।। सस॑स्त्यश्श्व॒कःऽसुभद्रिकाङ्काम्पीलवा॒सिनी॑म्।। ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। साङ्गयै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै त्रिगुणात्मिकायै पराम्बायै उत्तमचरित्राऽधिष्ठात्र्यै श्रीमहासरस्वत्यै नमः महाहुतीं समर्पयामि स्वाहा।। ॐ अम्बायै स्वाहा।। ॐ अम्बिकायै स्वाहा।। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।।

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती षष्ठोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावलीं,
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां,
सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये।।

इसके बाद भैरवशतनाम से हवन करे।

१.ॐ ह्रीँ भैरवाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रीँ भूतनाथाय स्वाहा।
३.ॐ ह्रीँ भूतात्मने स्वाहा।
४.ॐ ह्रीँ भूतभावनाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रीँ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
६.ॐ ह्रीँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७.ॐ ह्रीँ क्षेत्रदाय स्वाहा।
८.ॐ ह्रीँ क्षत्रियाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रीँ विराजे स्वाहा।
१०.ॐ ह्रीँ श्मशानवासिने स्वाहा।
११.ॐ ह्रीँ मांसासिने स्वाहा।
१२.ॐ ह्रीँ खर्पराशिने स्वाहा।
१३.ॐ ह्रीँ स्मरान्तकाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रीँ रक्तपाय स्वाहा।

१५.ॐ ह्रीँ पानपाय स्वाहा।
१६.ॐ ह्रीँ सिद्धाय स्वाहा।
१७.ॐ ह्रीँ सिद्धिदाय स्वाहा।
१८.ॐ ह्रीँ सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९.ॐ ह्रीँ कंकालाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्रीँ कालशमनाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्रीँ कालाकाष्ठातनवे स्वाहा।
२२.ॐ ह्रीँ कवये स्वाहा।
२३.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्राय स्वाहा।
२४.ॐ ह्रीँ बहुनेत्राय स्वाहा।
२५.ॐ ह्रीँ पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्रीँ शूलपाणये स्वाहा।
२७.ॐ ह्रीँ खड्गपाणये स्वाहा।
२८.ॐ ह्रीँ कंकालिने स्वाहा।
२९.ॐ ह्रीँ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३०.ॐ ह्रीँ अभिरवे स्वाहा।
३१.ॐ ह्रीँ भैरवीनाथाय स्वाहा।
३२.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
३३.ॐ ह्रीँ योगिनीपतये स्वाहा।
३४.ॐ ह्रीँ धनदाय स्वाहा।
३५.ॐ ह्रीँ अधनहारिणे स्वाहा।
३६.ॐ ह्रीँ धनवते स्वाहा।
३७.ॐ ह्रीँ पतिभानवते स्वाहा।
३८.ॐ ह्रीँ नागहाराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्रीँ नागपाशाय स्वाहा।
४०.ॐ ह्रीँ व्योमकेशाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्रीँ कपालभृते स्वाहा।
४२.ॐ ह्रीँ कालाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्रीँ कपालमालिने स्वाहा।
४४.ॐ ह्रीँ कमनीयाय स्वाहा।
४५.ॐ ह्रीँ कलानिधये स्वाहा।
४६.ॐ ह्रीँ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रीँ ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८.ॐ ह्रीँ त्रिशिखिने स्वाहा।
४९.ॐ ह्रीँ त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रीँ डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२.ॐ ह्रीँ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
५३.ॐ ह्रीँ बटुकाय स्वाहा।
५४.ॐ ह्रीँ बहुवेषाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रीँ खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रीँ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रीँ पशुपतये स्वाहा।
५८.ॐ ह्रीँ भिक्षुकाय स्वाहा।
५९.ॐ ह्रीँ परिचारकाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रीँ धूर्ताय स्वाहा।
६१.ॐ ह्रीँ दिगम्बराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रीँ शूराय स्वाहा।
६३.ॐ ह्रीँ हरिणाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रीँ पाण्डुलोचनाय स्वाहा।
६५.ॐ ह्रीँ प्रशान्ताय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रीँ शन्तिदाय स्वाहा।
६७.ॐ ह्रीँ शुद्धाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रीँ शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रीँ अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०.ॐ ह्रीँ निधीशाय स्वाहा।
७१.ॐ ह्रीँ ज्ञानचक्षुपे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रीँ तपोमयाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रीँ अष्टाधाराय स्वाहा।
७४.ॐ ह्रीँ षडाधाराय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रीँ सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रीँ शिखीसखाय स्वाहा।
७७.ॐ ह्रीँ भूधराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रीँ भूधराधीशाय स्वाहा।

७९.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
८०.ॐ ह्रीँ भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१.ॐ ह्रीँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
८२.ॐ ह्रीँ मुण्डिने स्वाहा।
८३.ॐ ह्रीँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते स्वाहा।
८४.ॐ ह्रीँ जृम्भणाय स्वाहा।
८५.ॐ ह्रीँ मोहनाय स्वाहा।
८६.ॐ ह्रीँ स्तम्भिने स्वाहा।
८७.ॐ ह्रीँ मारणाय स्वाहा।
८८.ॐ ह्रीँ क्षोभणाय स्वाहा।
८९.ॐ ह्रीँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
९०.ॐ ह्रीँ दैत्यघ्ने स्वाहा।
९१.ॐ ह्रीँ मुण्डभूषिताय स्वाहा।
९२.ॐ ह्रीँ बलिभुजे स्वाहा।
९३.ॐ ह्रीँ बलिभुङ्गनाथाय स्वाहा।
९४.ॐ ह्रीँ बालाय स्वाहा।
९५.ॐ ह्रीँ अबालपराक्रमाय स्वाहा।
९६.ॐ ह्रीँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।
९७.ॐ ह्रीँ दुर्गाय स्वाहा।
९८.ॐ ह्रीँ दुष्टभूतनिषेविताय स्वाहा।
९९.ॐ ह्रीँ कामिने स्वाहा।
१००.ॐ ह्रीँ कलानिधिकान्ताय स्वाहा।
१०१.ॐ ह्रीँ कामिनीवशकृते स्वाहा।
१०२.ॐ ह्रीँ वशिने स्वाहा।
१०३.ॐ ह्रीँ जगद्रक्षाकराय स्वाहा।
१०४.ॐ ह्रीँ अनन्ताय स्वाहा।
१०५.ॐ ह्रीँ मायामन्त्रौषधीमयाय स्वाहा।
१०६.ॐ ह्रीँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
१०७.ॐ ह्रीँ वैद्याय स्वाहा।
१०८.ॐ ह्रीँ प्रभविष्णवे स्वाहा।

ॐ ऋषिरुवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रौं दर्भतनवे स्वाहा।।१।।

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः।
समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ लां दारिकारिनिहन्त्र्यै स्वाहा।।२।।

तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः।
सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रौं योगिन्यै स्वाहा।।३।।

हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः।
तामानाय बलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्हें दारुकेशरपूजितायै स्वाहा।।४।।

तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः।
स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं पतङ्गयै स्वाहा।।५।।

ऋषिरुवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीं गणेश्वर्य्यै स्वाहा।।६।।

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः।
वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ रुं दारुकेश्वरवन्दितायै स्वाहा।।७।।
स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम्।
जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ च्छूं शैलायै स्वाहा।।८।।
न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति।
ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ फ्रें दारुकेशरमात्र्यै स्वाहा।।९।।
देव्युवाच।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्लूं दर्भहस्तायै स्वाहा।।१०।।
दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः।
बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रें दर्भयुतायै स्वाहा।।११।।
ऋषिरुवाच।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सां दर्भकर्मविवर्जितायै स्वाहा।।१२।।
इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः।
हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं कृष्णवर्णायै स्वाहा।।१३।।
अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ऐं दर्भमय्यै स्वाहा।।१४।।
ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम्।
पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रों यमदूत्यै स्वाहा।।१५।।
कांश्चित् करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान्।
आक्रम्य चाधरेणान्यान् स जघान महासुरान्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ त्रूं दर्भसर्वस्वरूपिण्यै स्वाहा।।१६।।
केषाञ्चित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी।
तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रौं दर्भकर्माचाररतायै स्वाहा।।१७।।

विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रौं भद्रकाल्यै स्वाहा।।१८।।

क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना।
तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ त्रीं दर्भहस्तकृतार्हणायै स्वाहा।।१९।।

श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम्।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ल्लूं दर्भानुकूलायै स्वाहा।।२०।।

चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः।
आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सौं दर्भदेहसमुन्नतायै स्वाहा।।२१।।

हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ।
तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्लौं दर्भोत्पन्नायै स्वाहा।।२२।।

केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि।
तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रुं दर्भशिखरायै स्वाहा।।२३।।

तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते।
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॐ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सौं दर्भग्रहणकर्य्यै स्वाहा।।२४।।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न।। सस॑स्त्यश्श्व॒कः॑सुभद्रिकाङ्का॒म्पीलवा॒सिनी॑म्।। ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै त्रिगुणात्मिकायै पराम्बायै उत्तमचरित्राऽधिष्ठात्र्यै श्रीमहासरस्वत्यै नमः महाहुतीं समर्पयामि स्वाहा।। ॐ अम्बायै स्वाहा।। ॐ अम्बिकायै स्वाहा।। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।।

◆

अथ श्रीदुर्गासप्तशती सप्तमोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं,
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां,
मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम्।।

इसके बाद भैरवशतनाम से हवन करे।

१.ॐ ह्रीँ भैरवाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रीँ भूतनाथाय स्वाहा।
३.ॐ ह्रीँ भूतात्मने स्वाहा।
४.ॐ ह्रीँ भूतभावनाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रीँ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
६.ॐ ह्रीँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७.ॐ ह्रीँ क्षेत्रदाय स्वाहा।
८.ॐ ह्रीँ क्षत्रियाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रीँ विराजे स्वाहा।
१०.ॐ ह्रीँ श्मशानवासिने स्वाहा।
११.ॐ ह्रीँ मांसासिने स्वाहा।
१२.ॐ ह्रीँ खर्पराशिने स्वाहा।
१३.ॐ ह्रीँ स्मरान्तकाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रीँ रक्तपाय स्वाहा।
१५.ॐ ह्रीँ पानपाय स्वाहा।
१६.ॐ ह्रीँ सिद्धाय स्वाहा।
१७.ॐ ह्रीँ सिद्धिदाय स्वाहा।
१८.ॐ ह्रीँ सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९.ॐ ह्रीँ कंकालाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्रीँ कालशमनाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्रीँ कालाकाष्ठातनवे स्वाहा।
२२.ॐ ह्रीँ कवये स्वाहा।
२३.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्राय स्वाहा।
२४.ॐ ह्रीँ बहुनेत्राय स्वाहा।
२५.ॐ ह्रीँ पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्रीँ शूलपाणये स्वाहा।
२७.ॐ ह्रीँ खड्गपाणये स्वाहा।
२८.ॐ ह्रीँ कंकालिने स्वाहा।
२९.ॐ ह्रीँ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३०.ॐ ह्रीँ अभिरवे स्वाहा।
३१.ॐ ह्रीँ भैरवीनाथाय स्वाहा।
३२.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
३३.ॐ ह्रीँ योगिनीपतये स्वाहा।
३४.ॐ ह्रीँ धनदाय स्वाहा।
३५.ॐ ह्रीँ अधनहारिणे स्वाहा।
३६.ॐ ह्रीँ धनवते स्वाहा।
३७.ॐ ह्रीँ पतिभानवते स्वाहा।
३८.ॐ ह्रीँ नागहाराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्रीँ नागपाशाय स्वाहा।
४०.ॐ ह्रीँ व्योमकेशाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्रीँ कपालभृते स्वाहा।
४२.ॐ ह्रीँ कालाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्रीँ कपःलमालिने स्वाहा।
४४.ॐ ह्रीँ कमनीयाय स्वाहा।
४५.ॐ ह्रीँ कलानिधये स्वाहा।
४६.ॐ ह्रीँ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रीँ ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८.ॐ ह्रीँ त्रिशिखिने स्वाहा।

४९.ॐ ह्रीँ त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रीँ डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२.ॐ ह्रीँ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
५३.ॐ ह्रीँ बटुकाय स्वाहा।
५४.ॐ ह्रीँ बहुवेषाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रीँ खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रीँ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रीँ पशुपतये स्वाहा।
५८.ॐ ह्रीँ भिक्षुकाय स्वाहा।
५९.ॐ ह्रीँ परिचारकाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रीँ धूर्ताय स्वाहा।
६१.ॐ ह्रीँ दिगम्बराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रीँ शूराय स्वाहा।
६३.ॐ ह्रीँ हरिणाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रीँ पाण्डुलोचनाय स्वाहा।
६५.ॐ ह्रीँ प्रशान्ताय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रीँ शन्तिदाय स्वाहा।
६७.ॐ ह्रीँ शुद्धाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रीँ शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रीँ अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०.ॐ ह्रीँ निधीशाय स्वाहा।
७१.ॐ ह्रीँ ज्ञानचक्षुषे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रीँ तपोमयाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रीँ अष्टाधाराय स्वाहा।
७४.ॐ ह्रीँ षडाधाराय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रीँ सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रीँ शिखीसखाय स्वाहा।
७७.ॐ ह्रीँ भूधराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रीँ भूधराधीशाय स्वाहा।
७९.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
८०.ॐ ह्रीँ भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१.ॐ ह्रीँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
८२.ॐ ह्रीँ मुण्डिने स्वाहा।
८३.ॐ ह्रीँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते स्वाहा।
८४.ॐ ह्रीँ जृम्भणाय स्वाहा।
८५.ॐ ह्रीँ मोहनाय स्वाहा।
८६.ॐ ह्रीँ स्तम्भिने स्वाहा।
८७.ॐ ह्रीँ मारणाय स्वाहा।
८८.ॐ ह्रीँ क्षोभणाय स्वाहा।
८९.ॐ ह्रीँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
९०.ॐ ह्रीँ दैत्यघ्ने स्वाहा।
९१.ॐ ह्रीँ मुण्डभूषिताय स्वाहा।
९२.ॐ ह्रीँ बलिभुजे स्वाहा।
९३.ॐ ह्रीँ बलिभुङ्नाथाय स्वाहा।
९४.ॐ ह्रीँ बालाय स्वाहा।
९५.ॐ ह्रीँ अबालपराक्रमाय स्वाहा।
९६.ॐ ह्रीँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।
९७.ॐ ह्रीँ दुर्गाय स्वाहा।
९८.ॐ ह्रीँ दुष्टभूतनिषेविताय स्वाहा।
९९.ॐ ह्रीँ कामिने स्वाहा।
१००.ॐ ह्रीँ कलानिधिकान्ताय स्वाहा।
१०१.ॐ ह्रीँ कामिनीवशकृते स्वाहा।
१०२.ॐ ह्रीँ वशिने स्वाहा।
१०३.ॐ ह्रीँ जगद्रक्षाकराय स्वाहा।
१०४.ॐ ह्रीँ अनन्ताय स्वाहा।
१०५.ॐ ह्रीँ मायामन्त्रौषधीमयाय स्वाहा।
१०६.ॐ ह्रीँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
१०७.ॐ ह्रीँ वैद्याय स्वाहा।
१०८.ॐ ह्रीँ प्रभविष्णवे स्वाहा।

ॐ ऋषिरुवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रौँ युगेश्वर्यै स्वाहा।।१।।

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः।
चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रीं सरस्वत्यै स्वाहा।।२।।
ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम्।
सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं दाम्भर्यायै स्वाहा।।३।।
ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः।
आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रौं यमदूत्यै स्वाहा।।४।।
ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति।
कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रौं दर्भकर्माचार रतायै स्वाहा।।५।।
भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम्।
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ओं दर्भानुकूलायै स्वाहा।।६।।
विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमाला विभूषणा।
द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीं सरस्वत्यै स्वाहा।।७।।
अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा।
निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रां दाम्भर्यै स्वाहा।।८।।
सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान्।
सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हूंकृत्यै स्वाहा।।९।।
पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहियोध घण्टा समन्वितान्।
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ छ्रां दर्वीपात्रानुदामिन्यै स्वाहा।।१०।।
तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह।
निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ल्लूं दमघोषप्रपूज्यायै स्वाहा।।११।।
एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्।
पादेनाक्रम्य चैवान्यामुरसान्यमपोथयत्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सौं शिवायै स्वाहा।।१२।।

तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः।
मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्लौं दमघोषसमाराध्यायै स्वाहा।।१३।।

बलिनां तद् बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्।
ममर्दा भक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रूं यक्षाण्यै स्वाहा।।१४।।

असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्ग ताडिता।
जग्मुर्विनशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सौं दमघोषवरप्रदायै स्वाहा।।१५।।

क्षणेन तद् बलं सर्वमसुराणां निपाततम्।
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ कुं दावाग्निरूपिण्यै स्वाहा।।१६।।

शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः।
छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्लीं हूंकारकारिण्यै स्वाहा।।१७।।

तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम्।
बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रूं दत्तचर्चितहस्तिकायै स्वाहा।।१८।।

ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी।
काली करालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ मूं सहस्राक्ष्यै स्वाहा।।१९।।

उत्थाय च महासिं हं देवी चण्डमधावत।
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रां जयन्त्यै स्वाहा।।२०।।

अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्सूं द्वारवासिन्यै स्वाहा।।२१।।

हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रीं आकर्षिण्यै स्वाहा।।२२।।

शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च।
प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ लूं भैरव्यै स्वाहा।।२३।।

मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू।
युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्लूं मृडान्यै स्वाहा।।२४।।

ऋषिरुवाच।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ शां दम्भहन्त्र्यै स्वाहा।।२५।।

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ।
उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्स्व्रीं धृत्यै स्वाहा।।२६।।

यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि ॐ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्स्त्रीं कामदायै स्वाहा।।२७।।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्च॒न।। सस॑स्त्यश्व॒कः॑सुभद्रिकाङ्का॒म्पीलवा॒सिनीम्।। ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै त्रिगुणात्मिकायै पराम्बायै उत्तमचरित्राऽधिष्ठात्र्यै श्रीमहासरस्वत्यै नमः महाहुतीं समर्पयामि स्वाहा।। ॐ अम्बायै स्वाहा।। ॐ अम्बिकायै स्वाहा।। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।।

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती अष्टमोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ अरुणां करुणां तरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशबाणचापहस्ताम्।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम्।।

इसके बाद भैरवशतनाम से हवन करे।

१.ॐ ह्रीँ भैरवाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रीँ भूतनाथाय स्वाहा।
३.ॐ ह्रीँ भूतात्मने स्वाहा।
४.ॐ ह्रीँ भूतभावनाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रीँ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
६.ॐ ह्रीँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७.ॐ ह्रीँ क्षेत्रदाय स्वाहा।
८.ॐ ह्रीँ क्षत्रियाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रीँ विराजे स्वाहा।
१०.ॐ ह्रीँ श्मशानवासिने स्वाहा।
११.ॐ ह्रीँ मांसासिने स्वाहा।
१२.ॐ ह्रीँ खर्पराशिने स्वाहा।
१३.ॐ ह्रीँ स्मरान्तकाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रीँ रक्तपाय स्वाहा।

१५.ॐ ह्रीं पानपाय स्वाहा।
१६.ॐ ह्रीं सिद्धाय स्वाहा।
१७.ॐ ह्रीं सिद्धिदाय स्वाहा।
१८.ॐ ह्रीं सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९.ॐ ह्रीं कंकालाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्रीं कालशमनाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्रीं कालाकाष्ठातनवे स्वाहा।
२२.ॐ ह्रीं कवये स्वाहा।
२३.ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय स्वाहा।
२४.ॐ ह्रीं बहुनेत्राय स्वाहा।
२५.ॐ ह्रीं पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्रीं शूलपाणये स्वाहा।
२७.ॐ ह्रीं खड्गपाणये स्वाहा।
२८.ॐ ह्रीं कंकालिने स्वाहा।
२९.ॐ ह्रीं धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३०.ॐ ह्रीं अभिरवे स्वाहा।
३१.ॐ ह्रीं भैरवीनाथाय स्वाहा।
३२.ॐ ह्रीं भूतपाय स्वाहा।
३३.ॐ ह्रीं योगिनीपतये स्वाहा।
३४.ॐ ह्रीं धनदाय स्वाहा।
३५.ॐ ह्रीं अधनहारिणे स्वाहा।
३६.ॐ ह्रीं धनवते स्वाहा।
३७.ॐ ह्रीं पतिभानवते स्वाहा।
३८.ॐ ह्रीं नागहाराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्रीं नागपाशाय स्वाहा।
४०.ॐ ह्रीं व्योमकेशाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्रीं कपालभृते स्वाहा।
४२.ॐ ह्रीं कालाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्रीं कपालमालिने स्वाहा।
४४.ॐ ह्रीं कमनीयाय स्वाहा।
४५.ॐ ह्रीं कलानिधये स्वाहा।
४६.ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रीं ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८.ॐ ह्रीं त्रिशिखिने स्वाहा।
४९.ॐ ह्रीं त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रीं त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रीं डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२.ॐ ह्रीं शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
५३.ॐ ह्रीं बटुकाय स्वाहा।
५४.ॐ ह्रीं बहुवेषाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रीं खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रीं भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रीं पशुपतये स्वाहा।
५८.ॐ ह्रीं भिक्षुकाय स्वाहा।
५९.ॐ ह्रीं परिचारकाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रीं धूर्ताय स्वाहा।
६१.ॐ ह्रीं दिगम्बराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रीं शूराय स्वाहा।
६३.ॐ ह्रीं हरिणाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रीं पाण्डुलोचनाय स्वाहा।
६५.ॐ ह्रीं प्रशान्ताय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रीं शन्तिदाय स्वाहा।
६७.ॐ ह्रीं शुद्धाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रीं शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रीं अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०.ॐ ह्रीं निधीशाय स्वाहा।
७१.ॐ ह्रीं ज्ञानचक्षुषे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रीं तपोमयाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रीं अष्टाधाराय स्वाहा।
७४.ॐ ह्रीं षडाधाराय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रीं सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रीं शिखीसखाय स्वाहा।
७७.ॐ ह्रीं भूधराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रीं भूधराधीशाय स्वाहा।

७९.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
८०.ॐ ह्रीँ भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१.ॐ ह्रीँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
८२.ॐ ह्रीँ मुण्डिने स्वाहा।
८३.ॐ ह्रीँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते स्वाहा।
८४.ॐ ह्रीँ जृम्भणाय स्वाहा।
८५.ॐ ह्रीँ मोहनाय स्वाहा।
८६.ॐ ह्रीँ स्तम्भिने स्वाहा।
८७.ॐ ह्रीँ मारणाय स्वाहा।
८८.ॐ ह्रीँ क्षोभणाय स्वाहा।
८९.ॐ ह्रीँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
९०.ॐ ह्रीँ दैत्यघ्ने स्वाहा।
९१.ॐ ह्रीँ मुण्डभूषिताय स्वाहा।
९२.ॐ ह्रीँ बलिभुजे स्वाहा।
९३.ॐ ह्रीँ बलिभुङ्नाथाय स्वाहा।
९४.ॐ ह्रीँ बालाय स्वाहा।
९५.ॐ ह्रीँ अबालपराक्रमाय स्वाहा।
९६.ॐ ह्रीँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।
९७.ॐ ह्रीँ दुर्गाय स्वाहा।
९८.ॐ ह्रीँ दुष्टभूतनिषेविताय स्वाहा।
९९.ॐ ह्रीँ कामिने स्वाहा।
१००.ॐ ह्रीँ कलानिधिकान्ताय स्वाहा।
१०१.ॐ ह्रीँ कामिनीवशकृते स्वाहा।
१०२.ॐ ह्रीँ वशिने स्वाहा।
१०३.ॐ ह्रीँ जगद्रक्षाकराय स्वाहा।
१०४.ॐ ह्रीँ अनन्ताय स्वाहा।
१०५.ॐ ह्रीँ मायामन्त्रौषधीमयाय स्वाहा।
१०६.ॐ ह्रीँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
१०७.ॐ ह्रीँ वैद्याय स्वाहा।
१०८.ॐ ह्रीँ प्रभविष्णवे स्वाहा।

ॐ ऋषिरुवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रौं दत्तस्वर्गायै स्वाहा।।१।।

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते।
बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्लूं विन्ध्यवासिन्यै स्वाहा।।२।।

ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान्।
उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्लीं दम्भदात्र्यै स्वाहा।।३।।

अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः।
कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अं दम्भलोकविमोहिन्यै स्वाहा।।४।।

कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां स्वबलैर्वृताः।
शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ म्लीं दम्भशीलायै स्वाहा।।५।।

कालका दौहृदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः।
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रां गन्धायै स्वाहा।।६।।

इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः।
निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सौं दम्भहरायै स्वाहा।।७।।

आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम्।
ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रौं चण्डिकायै स्वाहा।।८।।

ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान् नृप।
घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रीं दम्भवत्यारिमर्दिन्यै स्वाहा।।९।।

धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा।
निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ म्ह्लीं विरूपाक्ष्यै स्वाहा।।१०।।

तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यदैन्यैश्चतुर्दिशम्।
देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रूं दम्भरूपायै स्वाहा।।११।।

एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम्।
भवायामरसिंहानामतिवीर्य बलान्विताः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ऐ महामायायै स्वाहा।।१२।।

ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रों दम्भकर्यै स्वाहा।।१३।।

यस्य देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम्।
तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ इं संहारिण्यै स्वाहा।।१४।।

हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणि साभिधीयते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ऐं दम्भसन्तानदारिण्यै स्वाहा।।१५।।

माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी।
महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखा विभूषणा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ लृं कुलेश्वर्यै स्वाहा।।१६।।

कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना।
योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ फ्रौं दत्तमोक्षायै स्वाहा।।१७।।

तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रूं नागिन्यै स्वाहा।।१८।।

यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः।
शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रतीं तनुम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ फ्रौं दत्तारोग्यायै स्वाहा।।१९।।

नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः।
प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौं मुद्रायै स्वाहा।।२०।।

वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता।
प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्मौं दम्भिकायै स्वाहा।।२१।।

ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः।
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीं दत्तपुत्रायै स्वाहा।।२२।।

ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा।
चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्हौं पिनाकिन्यै स्वाहा।।२३।।

सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता।
दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ख्सें दत्तदारायै स्वाहा।।२४।।

ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ।
ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्ष्म्लीं रक्ताङ्ग्यै स्वाहा।।२५।।

त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रौं दत्तहारायै स्वाहा।।२६।।

बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः।
तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ वीं महाघोरायै स्वाहा।।२७।।

यतो नियुक्तो दैत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्।
शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ लूं दारिकायै स्वाहा।।२८।।

तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः।
अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ब्लीं द्वारवासायै स्वाहा।।२९।।

ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः।
ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ त्स्त्रों जलेश्वर्यै स्वाहा।।३०।।

सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान्।
चिच्छेद लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ब्रूं दत्तभोगायै स्वाहा।।३१।।

तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान्।
खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्क्लीं सर्वसिद्ध्यै स्वाहा।।३२।।

कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः।
ब्रह्माणि चाकरोच्छत्रून् येन येन स्म धावति।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रूं दत्तशोकायै स्वाहा।।३३।।

माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी।
दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ शीं दत्तहस्त्यादिवाहनायै स्वाहा।।३४।।

ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः।
पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लीं योगिन्यै स्वाहा।।३५।।

तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः।
वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लौं दत्तमत्यै स्वाहा।।३६।।

नखैर्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान्।
नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रूं दत्तभार्यायै स्वाहा।।३७।।

चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः।
पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लूं भवान्यै स्वाहा।।३८।।

इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान्।
दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ तां दत्तशस्त्राववोधिकायै स्वाहा।।३९।।

पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृगणार्दितान्।
योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ म्लूं भद्रायै स्वाहा।।४०।।
रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः।
समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हं दत्तपाणायै स्वाहा।।४१।।
युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः।
ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्लूं निकृत्यै स्वाहा।।४२।।
कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम्।
समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ओं दत्तदानायै स्वाहा।।४३।।
यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः।
तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्लौं विघ्ननासिन्यै स्वाहा।।४४।।
ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः।
समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ यां क्षमाकर्यै स्वाहा।।४५।।
पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा।
ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्ष्लीं दत्तसौधावनीवासायै स्वाहा।।४६।।
वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह।
गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्लीं दुर्गायै स्वाहा।।४७।।
वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः।
सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौं दासदायै स्वाहा।।४८।।
शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना।
माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रौं शान्तिकर्यै स्वाहा।।४९।।
स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक्।
मातॄः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रां दास्यतुष्टायै स्वाहा।।५०।।

तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि।
पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लीं दास्यहरायै स्वाहा।।५१।।

तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत्।
व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्लूं गौर्य्यै स्वाहा।।५२।।

तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा।
उवाच काली चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं दासदासिशतप्रदायै स्वाहा।।५३।।

मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान्।
रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हैं दम्पतीष्टायै स्वाहा।।५४।।

भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान्।
एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ भ्रं विश्वहन्त्रै स्वाहा।।५५।।

भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे।
इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सौँ वरुणायै स्वाहा।।५६।।

मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्।
ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीं दम्पत्यै स्वाहा।।५७।।

न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि।
तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्सूं विश्वसंहारकारिण्यै स्वाहा।।५८।।

यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति।
मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रौं द्वाररूपायै स्वाहा।।५९।।

तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्।
देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्स्नां धात्र्यै स्वाहा।।६०।।

जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम्।
स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्स्लीं द्वारवासायै स्वाहा।।६१।।

नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः।
ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्स्लां रक्तशोषिण्यै स्वाहा।।६२।।
तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्ल्लृं मातृतुष्टायै स्वाहा।।६३।।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न।। सस॑स्त्यश्श्व॒कःसुभ॑द्रिकाङ्का॒म्पील॑वा॒सिनीम्।। ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।। साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै त्रिगुणात्मिकायै परम्बायै उत्तमचरित्राऽधिष्ठात्र्यै श्रीमहासरस्वत्यै नमः महाहुतीं समर्पयामि स्वाहा।। ॐ अम्बायै स्वाहा।। ॐ अम्बिकायै स्वाहा।। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।।

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती नवमोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां,
पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणां त्रिनेत्रा-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि।।

इसके बाद भैरव शतनामस्तोत्र से आहुती प्रदान करे।

१.ॐ ह्रीं भैरवाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रीं भूतनाथाय स्वाहा।
३.ॐ ह्रीं भूतात्मने स्वाहा।
४.ॐ ह्रीं भूतभावनाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
६.ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७.ॐ ह्रीं क्षेत्रदाय स्वाहा।
८.ॐ ह्रीं क्षत्रियाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रीं विराजे स्वाहा।
१०.ॐ ह्रीं श्मशानवासिने स्वाहा।
११.ॐ ह्रीं मांसासिने स्वाहा।
१२.ॐ ह्रीं खर्पराशिने स्वाहा।
१३.ॐ ह्रीं स्मरान्तकाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रीं रक्तपाय स्वाहा।
१५.ॐ ह्रीं पानपाय स्वाहा।
१६.ॐ ह्रीं सिद्धाय स्वाहा।
१७.ॐ ह्रीं सिद्धिदाय स्वाहा।
१८.ॐ ह्रीं सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९.ॐ ह्रीं कंकालाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्रीं कालशमनाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्रीं कालाकाष्ठातनवे स्वाहा।
२२.ॐ ह्रीं कवये स्वाहा।

२३.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्राय स्वाहा।
२४.ॐ ह्रीँ बहुनेत्राय स्वाहा।
२५.ॐ ह्रीँ पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्रीँ शूलपाणये स्वाहा।
२७.ॐ ह्रीँ खड्गपाणये स्वाहा।
२८.ॐ ह्रीँ कंकालिने स्वाहा।
२९.ॐ ह्रीँ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३०.ॐ ह्रीँ अभिरवे स्वाहा।
३१.ॐ ह्रीँ भैरवीनाथाय स्वाहा।
३२.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
३३.ॐ ह्रीँ योगिनीपतये स्वाहा।
३४.ॐ ह्रीँ धनदाय स्वाहा।
३५.ॐ ह्रीँ अधनहारिणे स्वाहा।
३६.ॐ ह्रीँ धनवते स्वाहा।
३७.ॐ ह्रीँ पतिभानवते स्वाहा।
३८.ॐ ह्रीँ नागहाराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्रीँ नागपाशाय स्वाहा।
४०.ॐ ह्रीँ व्योमकेशाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्रीँ कपालभृते स्वाहा।
४२.ॐ ह्रीँ कालाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्रीँ कपालमालिने स्वाहा।
४४.ॐ ह्रीँ कमनीयाय स्वाहा।
४५.ॐ ह्रीँ कलानिधये स्वाहा।
४६.ॐ ह्रीँ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रीँ ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८.ॐ ह्रीँ त्रिशिखिने स्वाहा।
४९.ॐ ह्रीँ त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रीँ डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२.ॐ ह्रीँ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
५३.ॐ ह्रीँ बटुकाय स्वाहा।
५४.ॐ ह्रीँ बहुवेषाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रीँ खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रीँ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रीँ पशुपतये स्वाहा।
५८.ॐ ह्रीँ भिक्षुकाय स्वाहा।
५९.ॐ ह्रीँ परिचारकाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रीँ धूर्ताय स्वाहा।
६१.ॐ ह्रीँ दिगम्बराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रीँ शूराय स्वाहा।
६३.ॐ ह्रीँ हरिणाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रीँ पाण्डुलोचनाय स्वाहा।
६५.ॐ ह्रीँ प्रशान्ताय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रीँ शन्तिदाय स्वाहा।
६७.ॐ ह्रीँ शुद्धाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रीँ शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रीँ अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०.ॐ ह्रीँ निधीशाय स्वाहा।
७१.ॐ ह्रीँ ज्ञानचक्षुषे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रीँ तपोमयाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रीँ अष्टाधाराय स्वाहा।
७४.ॐ ह्रीँ षडाधाराय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रीँ सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रीँ शिखीसखाय स्वाहा।
७७.ॐ ह्रीँ भूधराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रीँ भूधराधीशाय स्वाहा।
७९.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
८०.ॐ ह्रीँ भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१.ॐ ह्रीँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
८२.ॐ ह्रीँ मुण्डिने स्वाहा।
८३.ॐ ह्रीँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते स्वाहा।
८४.ॐ ह्रीँ जृम्भणाय स्वाहा।
८५.ॐ ह्रीँ मोहनाय स्वाहा।
८६.ॐ ह्रीँ स्तम्भिने स्वाहा।

८७.ॐ ह्रीँ मारणाय स्वाहा।
८८.ॐ ह्रीँ क्षोभणाय स्वाहा।
८९.ॐ ह्रीँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
९०.ॐ ह्रीँ दैत्यघ्ने स्वाहा।
९१.ॐ ह्रीँ मुण्डभूषिताय स्वाहा।
९२.ॐ ह्रीँ बलिभुजे स्वाहा।
९३.ॐ ह्रीँ बलिभुङ्नाथाय स्वाहा।
९४.ॐ ह्रीँ बालाय स्वाहा।
९५.ॐ ह्रीँ अबालपराक्रमाय स्वाहा।
९६.ॐ ह्रीँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।
९७.ॐ ह्रीँ दुर्गाय स्वाहा।
९८.ॐ ह्रीँ दुष्टभूतनिषेविताय स्वाहा।
९९.ॐ ह्रीँ कामिने स्वाहा।
१००.ॐ ह्रीँ कलानिधिकान्ताय स्वाहा।
१०१.ॐ ह्रीँ कामिनीवशकृते स्वाहा।
१०२.ॐ ह्रीँ वशिने स्वाहा।
१०३.ॐ ह्रीँ जगद्रक्षाकराय स्वाहा।
१०४.ॐ ह्रीँ अनन्ताय स्वाहा।
१०५.ॐ ह्रीँ मायामन्त्रौषधीमयाय स्वाहा।
१०६.ॐ ह्रीँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
१०७.ॐ ह्रीँ वैद्याय स्वाहा।
१०८.ॐ ह्रीँ प्रभविष्णवे स्वाहा।

ॐ राजोवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ रौं द्वारवासि हृदास्पदायै स्वाहा।।१।।

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम।
देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लीं कामिन्यै स्वाहा।।२।।

भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते।
चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ म्लौं द्वारवासिजनाराध्यायै स्वाहा।।३।।

ऋषिरुवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ग्लीं द्वारवासिजनप्रियायै स्वाहा।।४।।

चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते।
शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्हौं द्वारवासिविनिर्मितायै स्वाहा।।५।।

हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन्।
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ईं विद्यायै स्वाहा।।६।।

तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः।
संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ वूं द्वारवासिसमर्चितायै स्वाहा।।७।।

आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः।
निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ल्लूं द्वारवास्याहृतप्राणायै स्वाहा।।८।।

ततो युद्धमतीवासीद्देव्या शुम्भनिशुम्भयोः।
शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ आं सन्ध्यायै स्वाहा।।९।।
चिच्छेदांस्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः।
ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीं द्वारवास्यारिनासिन्यै स्वाहा।।१०।।
निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम्।
अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रौं विरूपाक्ष्यै स्वाहा।।११।।
ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम्।
निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रूं द्वारवासिविघ्नहरायै स्वाहा।।१२।।
छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिच्छेप सोऽसुरः।
तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ त्रीं शान्त्यै स्वाहा।।१३।।
कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः।
आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ भ्रूं द्वारवासिविमुक्तिदायै स्वाहा।।१४।।
आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति।
सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रौं शुभप्रदायै स्वाहा।।१५।।
ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम्।
आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रीं द्वाराग्निरूपिण्यै स्वाहा।।१६।।
तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे।
भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ म्लीं त्रिनेत्रायै स्वाहा।।१७।।
स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ग्लूं द्वारायै स्वाहा।।१८।।
तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत्।
ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीवदुःसहम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्लीं द्वारकार्यऽरिनासिन्यै स्वाहा।।१९।।

पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च।
समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रौं घोरायै स्वाहा।।२०।।
ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः।
पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हस्त्रां दाडिमीवृक्षवासिन्यै स्वाहा।।२१।।
ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत्।
कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्हौं वसुधायै स्वाहा।।२२।।
अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह।
तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ल्लूं दाडिमीवृक्षरूपायै स्वाहा।।२३।।
दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा।
तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीं दाडिमीवनवासिन्यै स्वाहा।।२४।।
शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा।
आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ च्रूँ दक्षिणायै स्वाहा।।२५।।
सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम्।
निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ वीं सदाघनायै स्वाहा।।२६।।
शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान्।
चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्ष्लूं दक्षिणारूपायै स्वाहा।।२७।।
ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनभिजघानतम्।
स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्लूं धियै स्वाहा।।२८।।
ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः।
आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रूं दक्षिणरूपधारिण्यै स्वाहा।।२९।।
पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः।
चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रां कामेश्वर्यै स्वाहा।।३०।।

ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी।
चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रौं दक्षकन्यायै स्वाहा।।३१।।
ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम्।
अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसैन्यसमावृतः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रां महातपायै स्वाहा।।३२।।
तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका।
खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्क्ष्लीं दक्षपुत्र्यै स्वाहा।।३३।।
शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम्।
हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ भ्रूं अघोरायै स्वाहा।।३४।।
भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः।
महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं दक्षगोत्रायै स्वाहा।।३५।।
तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ब्लूं खड्गहस्तायै स्वाहा।।३६।।
ततः सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान्।
असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं दक्षसुतायै स्वाहा।।३७।।
कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ फ्रें दक्षमात्रे स्वाहा।।३८।।
माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे।
वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्क्ष्लीं शूलहस्तायै स्वाहा।।३९।।
खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः।
वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ मूं चन्द्रहस्तायै स्वाहा।।४०।।
केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात्।
भक्षिताश्चापरे काली शिवदूतीमृगाधिपैः ॐ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ फूं शिवदूत्यै स्वाहा।।४१।।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बालि॒के॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न।। ससस्त्यश्श्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवा॒सि॒नीम्।। ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै त्रिगुणात्मिकात्र्यै पराम्बायै उत्तमचरित्राऽधिष्ठायै श्रीमहासरस्वत्यै नमः महाहुतीं समर्पयामि स्वाहा।। ॐ अम्बायै स्वाहा।। ॐ अम्बिकायै स्वाहा।। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।।

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती दशमोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि-
नेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम्।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां,
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम्।।

इसके बाद भैरव शतनाम से आहुती प्रदान करे।

१.ॐ ह्रीँ भैरवाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रीँ भूतनाथाय स्वाहा।
३.ॐ ह्रीँ भूतात्मने स्वाहा।
४.ॐ ह्रीँ भूतभावनाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रीँ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
६.ॐ ह्रीँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७.ॐ ह्रीँ क्षेत्रदाय स्वाहा।
८.ॐ ह्रीँ क्षत्रियाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रीँ विराजे स्वाहा।
१०.ॐ ह्रीँ श्मशानवासिने स्वाहा।
११.ॐ ह्रीँ मांसासिने स्वाहा।
१२.ॐ ह्रीँ खर्पराशिने स्वाहा।
१३.ॐ ह्रीँ स्मरान्तकाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रीँ रक्तपाय स्वाहा।
१५.ॐ ह्रीँ पानपाय स्वाहा।
१६.ॐ ह्रीँ सिद्धाय स्वाहा।
१७.ॐ ह्रीँ सिद्धिदाय स्वाहा।
१८.ॐ ह्रीँ सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९.ॐ ह्रीँ कंकालाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्रीँ कालशमनाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्रीँ कालाकाष्ठातनवे स्वाहा।
२२.ॐ ह्रीँ कवये स्वाहा।
२३.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्राय स्वाहा।
२४.ॐ ह्रीँ बहुनेत्राय स्वाहा।
२५.ॐ ह्रीँ पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्रीँ शूलपाणये स्वाहा।
२७.ॐ ह्रीँ खड्गपाणये स्वाहा।
२८.ॐ ह्रीँ कंकालिने स्वाहा।
२९.ॐ ह्रीँ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३०.ॐ ह्रीँ अभिरवे स्वाहा।
३१.ॐ ह्रीँ भैरवीनाथाय स्वाहा।
३२.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।

३३.ॐ ह्रौँ योगिनीपतये स्वाहा।
३४.ॐ ह्रौँ धनदाय स्वाहा।
३५.ॐ ह्रौँ अधनहारिणे स्वाहा।
३६.ॐ ह्रौँ धनवते स्वाहा।
३७.ॐ ह्रौँ पतिभानवते स्वाहा।
३८.ॐ ह्रौँ नागहाराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्रौँ नागपाशाय स्वाहा।
४०.ॐ ह्रौँ व्योमकेशाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्रौँ कपालभृते स्वाहा।
४२.ॐ ह्रौँ कालाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्रौँ कपालमालिने स्वाहा।
४४.ॐ ह्रौँ कमनीयाय स्वाहा।
४५.ॐ ह्रौँ कलानिधये स्वाहा।
४६.ॐ ह्रौँ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रौँ ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८.ॐ ह्रौँ त्रिशिखिने स्वाहा।
४९.ॐ ह्रौँ त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रौँ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रौँ डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२.ॐ ह्रौँ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
५३.ॐ ह्रौँ बटुकाय स्वाहा।
५४.ॐ ह्रौँ बहुवेषाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रौँ खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रौँ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रौँ पशुपतये स्वाहा।
५८.ॐ ह्रौँ भिक्षुकाय स्वाहा।
५९.ॐ ह्रौँ परिचारकाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रौँ धूर्ताय स्वाहा।
६१.ॐ ह्रौँ दिगम्बराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रौँ शूराय स्वाहा।
६३.ॐ ह्रौँ हरिणाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रौँ पाण्डुलोचनाय स्वाहा।
६५.ॐ ह्रौँ प्रशान्ताय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रौँ शन्तिदाय स्वाहा।
६७.ॐ ह्रौँ शुद्धाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रौँ शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रौँ अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०.ॐ ह्रौँ निधीशाय स्वाहा।
७१.ॐ ह्रौँ ज्ञानचक्षुपे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रौँ तपोमयाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रौँ अष्टाधाराय स्वाहा।
७४.ॐ ह्रौँ षडाधाराय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रौँ सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रौँ शिखीसखाय स्वाहा।
७७.ॐ ह्रौँ भूधराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रौँ भूधराधीशाय स्वाहा।
७९.ॐ ह्रौँ भूतपाय स्वाहा।
८०.ॐ ह्रौँ भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१.ॐ ह्रौँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
८२.ॐ ह्रौँ मुण्डिने स्वाहा।
८३.ॐ ह्रौँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते स्वाहा।
८४.ॐ ह्रौँ जृम्भणाय स्वाहा।
८५.ॐ ह्रौँ मोहनाय स्वाहा।
८६.ॐ ह्रौँ स्तम्भिने स्वाहा।
८७.ॐ ह्रौँ मारणाय स्वाहा।
८८.ॐ ह्रौँ क्षोभणाय स्वाहा।
८९.ॐ ह्रौँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
९०.ॐ ह्रौँ दैत्यघ्ने स्वाहा।
९१.ॐ ह्रौँ मुण्डभूषिताय स्वाहा।
९२.ॐ ह्रौँ बलिभुजे स्वाहा।
९३.ॐ ह्रौँ बलिभुङ्नाथाय स्वाहा।
९४.ॐ ह्रौँ बालाय स्वाहा।
९५.ॐ ह्रौँ अबालपराक्रमाय स्वाहा।
९६.ॐ ह्रौँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।

९७.ॐ ह्रीँ दुर्गाय स्वाहा।
९८.ॐ ह्रीँ दुष्टभूतनिषेविताय स्वाहा।
९९.ॐ ह्रीँ कामिने स्वाहा।
१००.ॐ ह्रीँ कलानिधिकान्ताय स्वाहा।
१०१.ॐ ह्रीँ कामिनीवशकृते स्वाहा।
१०२.ॐ ह्रीँ वशिने स्वाहा।
१०३.ॐ ह्रीँ जगद्रक्षाकराय स्वाहा।
१०४.ॐ ह्रीँ अनन्ताय स्वाहा।
१०५.ॐ ह्रीँ मायामन्त्रौषधीमयाय स्वाहा।
१०६.ॐ ह्रीँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
१०७.ॐ ह्रीँ वैद्याय स्वाहा।
१०८.ॐ ह्रीँ प्रभविष्णवे स्वाहा।

ॐ ऋषिरुवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीं प्रसन्नकाल्यै स्वाहा।।१।।

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम्।
हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ म्लूं तपस्विन्यै स्वाहा।।२।।

बलावलेपाद् दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह।
अन्यासां बलमाश्रित्य युद्ध्यसे चातिमानिनी।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रौं दक्षयज्ञविनाशिन्यै स्वाहा।।३।।

देव्युवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं द्वारधात्र्यै स्वाहा।।४।।

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा।
पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ग्लीं दक्षयज्ञान्तकारिण्यै स्वाहा।।५।।

ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखालयम्।
तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हं द्वारदेशनिवासिन्यै स्वाहा।।६।।

देव्युवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ऐं दक्षप्रसूत्यै स्वाहा।।७।।

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदा स्थिता।
तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हूं द्वारसंस्थायै स्वाहा।।८।।

ऋषिरुवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रौं दक्षेज्जायै स्वाहा।।९।।

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः।
पश्यैतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीं द्वारसंस्थितायै स्वाहा।।१०।।

शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः।
तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयङ्करम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ त्रूं दक्षवंशैकपावन्यै स्वाहा।।११।।

दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ब्रूं दक्षात्मजायै स्वाहा।।१२।।

मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी।
बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ फ्रें द्वाररूपायै स्वाहा।।१३।।

ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः।
सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रां दक्षसूनवे स्वाहा।।१४।।

छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे।
चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ जुं द्वारवासिन्यै स्वाहा।।१५।।

ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत्।
अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सौः दक्षजायै स्वाहा।।१६।।

तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका।
धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्लूं द्वारपालप्रियायै स्वाहा।।१७।।

हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः।
जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रें दक्षजातिकायै स्वाहा।।१८।।

चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः।
तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्स्वां दक्षिणाचारसंसिद्ध्यै स्वाहा।।१९।।

समुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः।
देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रीं दक्षजन्मने स्वाहा।।२०।।

तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले।
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ फ्रां दक्षदेहसमुद्भवायै स्वाहा।।२१।।

उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः।
तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं दक्षिणाचारसुसिद्धायै स्वाहा।।२२।।

नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्।
चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम्।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं दुर्गमायै स्वाहा।।२३।।

ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह।
उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां दुर्गमध्यानायै स्वाहा।।२४।।

स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः।
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सः दुर्गमात्मस्वरूपिण्यै स्वाहा।।२५।।

तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्।
जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं दुर्गमागमसंधानायै स्वाहा।।२६।।

स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः।
चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम्।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्ह्लीं दोषहरायै स्वाहा।।२७।।

ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि।
जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सं सर्वदोषशमन्यै स्वाहा।।२८।।

उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः।
सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं देवहर्षितायै स्वाहा।।२९।।

ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः।
बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रें हर्षकारिण्यै स्वाहा।।३०।।

अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः।
ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं इं प्रभाकरिण्यै स्वाहा।।३१।।

जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्ताः दिग्जनितस्वनाः।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ज्स्ह्लृं सर्वव्याप्तायै स्वाहा।।३२।।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन।। ससस्त्यश्श्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।। ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै त्रिगुणात्मिकायै पराम्बायै उत्तमचरित्राऽधिष्ठात्र्यै श्रीमहासरस्वत्यै नमः महाहुतीं समर्पयामि स्वाहा।। ॐ अम्बायै स्वाहा।। ॐ अम्बिकायै स्वाहा।। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।।

अथ श्रीदुर्गासप्तशती एकादशोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्।।

इसके बाद भैरवशतनाम से हवन करे।

१.ॐ ह्रीँ भैरवाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रीँ भूतनाथाय स्वाहा।
३.ॐ ह्रीँ भूतात्मने स्वाहा।
४.ॐ ह्रीँ भूतभावनाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रीँ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
६.ॐ ह्रीँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७.ॐ ह्रीँ क्षेत्रदाय स्वाहा।
८.ॐ ह्रीँ क्षत्रियाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रीँ विराजे स्वाहा।
१०.ॐ ह्रीँ श्मशानवासिने स्वाहा।
११.ॐ ह्रीँ मांसासिने स्वाहा।
१२.ॐ ह्रीँ खर्पराशिने स्वाहा।
१३.ॐ ह्रीँ स्मरान्तकाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रीँ रक्तपाय स्वाहा।
१५.ॐ ह्रीँ पानपाय स्वाहा।
१६.ॐ ह्रीँ सिद्धाय स्वाहा।
१७.ॐ ह्रीँ सिद्धिदाय स्वाहा।
१८.ॐ ह्रीँ सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९.ॐ ह्रीँ कंकालाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्रीँ कालशमनाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्रीँ कालाकाष्ठातनवे स्वाहा।
२२.ॐ ह्रीँ कवये स्वाहा।
२३.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्राय स्वाहा।
२४.ॐ ह्रीँ बहुनेत्राय स्वाहा।
२५.ॐ ह्रीँ पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्रीँ शूलपाणये स्वाहा।
२७.ॐ ह्रीँ खड्गपाणये स्वाहा।
२८.ॐ ह्रीँ कंकालिने स्वाहा।
२९.ॐ ह्रीँ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३०.ॐ ह्रीँ अभिरवे स्वाहा।
३१.ॐ ह्रीँ भैरवीनाथाय स्वाहा।
३२.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
३३.ॐ ह्रीँ योगिनीपतये स्वाहा।
३४.ॐ ह्रीँ धनदाय स्वाहा।
३५.ॐ ह्रीँ अधनहारिणे स्वाहा।
३६.ॐ ह्रीँ धनवते स्वाहा।

३७.ॐ ह्रीँ पतिभानवते स्वाहा।
३८.ॐ ह्रीँ नागहाराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्रीँ नागपाशाय स्वाहा।
४०.ॐ ह्रीँ व्योमकेशाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्रीँ कपालभृते स्वाहा।
४२.ॐ ह्रीँ कालाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्रीँ कपालमालिने स्वाहा।
४४.ॐ ह्रीँ कमनीयाय स्वाहा।
४५.ॐ ह्रीँ कलानिधये स्वाहा।
४६.ॐ ह्रीँ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रीँ ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८.ॐ ह्रीँ त्रिशिखिने स्वाहा।
४९.ॐ ह्रीँ त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रीँ डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२.ॐ ह्रीँ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
५३.ॐ ह्रीँ बटुकाय स्वाहा।
५४.ॐ ह्रीँ वहुवेषाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रीँ खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रीँ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रीँ पशुपतये स्वाहा।
५८.ॐ ह्रीँ भिक्षुकाय स्वाहा।
५९.ॐ ह्रीँ परिचारकाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रीँ धूर्ताय स्वाहा।
६१.ॐ ह्रीँ दिगम्बराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रीँ शूराय स्वाहा।
६३.ॐ ह्रीँ हरिणाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रीँ पाण्डुलोचनाय स्वाहा।
६५.ॐ ह्रीँ प्रशान्ताय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रीँ शन्तिदाय स्वाहा।
६७.ॐ ह्रीँ शुद्धाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रीँ शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रीँ अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०.ॐ ह्रीँ निधीशाय स्वाहा।
७१.ॐ ह्रीँ ज्ञानचक्षुषे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रीँ तपोमयाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रीँ अष्टाधाराय स्वाहा।
७४.ॐ ह्रीँ षडाधाराय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रीँ सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रीँ शिखीसखाय स्वाहा।
७७.ॐ ह्रीँ भूधराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रीँ भूधराधीशाय स्वाहा।
७९.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
८०.ॐ ह्रीँ भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१.ॐ ह्रीँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
८२.ॐ ह्रीँ मुण्डिने स्वाहा।
८३.ॐ ह्रीँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते स्वाहा।
८४.ॐ ह्रीँ जृम्भणाय स्वाहा।
८५.ॐ ह्रीँ मोहनाय स्वाहा।
८६.ॐ ह्रीँ स्तम्भिने स्वाहा।
८७.ॐ ह्रीँ मारणाय स्वाहा।
८८.ॐ ह्रीँ क्षोभणाय स्वाहा।
८९.ॐ ह्रीँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
९०.ॐ ह्रीँ दैत्यघ्ने स्वाहा।
९१.ॐ ह्रीँ मुण्डभूषिताय स्वाहा।
९२.ॐ ह्रीँ बलिभुजे स्वाहा।
९३.ॐ ह्रीँ बलिभुङ्नाथाय स्वाहा।
९४.ॐ ह्रीँ बालाय स्वाहा।
९५.ॐ ह्रीँ अबालपराक्रमाय स्वाहा।
९६.ॐ ह्रीँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।
९७.ॐ ह्रीँ दुर्गाय स्वाहा।
९८.ॐ ह्रीँ दुष्टभूतनिषेविताय स्वाहा।
९९.ॐ ह्रीँ कामिने स्वाहा।
१००.ॐ ह्रीँ कलानिधिकान्ताय स्वाहा।

१०१.ॐ ह्रीँ कामिनीवशकृते स्वाहा।
१०२.ॐ ह्रीँ वशिने स्वाहा।
१०३.ॐ ह्रीँ जगद्रक्षाकराय स्वाहा।
१०४.ॐ ह्रीँ अनन्ताय स्वाहा।
१०५.ॐ ह्रीँ मायामन्त्रौषधीमयाय स्वाहा।
१०६.ॐ ह्रीँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
१०७.ॐ ह्रीँ वैद्याय स्वाहा।
१०८.ॐ ह्रीँ प्रभविष्णवे स्वाहा।

ॐ ऋषिरुवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रौं दुर्गमाचारपूजितायै स्वाहा।।१।।

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे,
सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम्।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्,
विकासिवक्त्राब्जविकासिताशाः ।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ व्रें दक्षिणाचारमोक्षाप्त्यै स्वाहा।।२।।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद,
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं,
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ इं दक्षिणाचारवन्दितायै स्वाहा।।३।।

आधारभूता जगतस्त्वमेका,
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत-
दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रूं दुर्गनाड्यारोहणायै स्वाहा।।४।।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या,
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्,
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीं दीनायै स्वाहा।।५।।

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः,
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्,
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ल्लीं दनुजान्तकर्य्यै स्वाहा।।६।।

सर्वभूता यदा देवि स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रें दरीकृततपस्यायै स्वाहा।।७।।
सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सौं दनुसन्तानदारिण्यै स्वाहा।।८।।
कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रूं बुद्ध्यै स्वाहा।।९।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लीं शक्त्यै स्वाहा।।१०।।
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्क्लीं त्र्यम्बक्यै स्वाहा।।११।।
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्त्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रीं गुणाश्रयायै स्वाहा।।१२।।
हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि।
कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्ह्रीं ब्रह्माण्यै स्वाहा।।१३।।
त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि।
माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्तौं महेश्वर्य्यै स्वाहा।।१४।।
मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ जीं कौमार्यै स्वाहा।।१५।।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रूं ऐन्द्र्यै स्वाहा।।१६।।
गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रूं नारसिंह्यै स्वाहा।।१७।।

नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान्कृतोद्यमे।
त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं चामुण्डायै स्वाहा।।१८।।
किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रूं दुर्गायै स्वाहा।।१९।।
शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ई कात्यायन्यै स्वाहा।।२०।।
दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ जुं भद्रकाल्यै स्वाहा।।२१।।
लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे।
महारात्रि महामाये नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ त्रैं घण्टायै स्वाहा।।२२।।
मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रूं चण्डिकायै स्वाहा।।२३।।
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रौं रोगहरायै स्वाहा।।२४।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लीं अम्बिकायै स्वाहा।।२५।।
ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सूं जगदम्बिकायै स्वाहा।।२६।।
हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्व्रं विश्वेशवन्ध्यायै स्वाहा।।२७।।
असुरासृग्वसापङ्कचर्चितास्ते करोज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ब्रूं देव्यै स्वाहा।।२८।।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा,
रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां,
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्फ्रूं विश्वार्तिहारिण्यै स्वाहा।।२९।।
एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य,
धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं,
कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं दक्षिणाचारशरणायै स्वाहा।।३०।।
विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे-
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे,
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ लं वरदायै स्वाहा।।३१।।
रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा,
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये,
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्सौं दक्षिणाचारवन्दितायै स्वाहा।।३२।।
विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं,
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति,
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सें अखिलेश्वर्यै स्वाहा।।३३।।

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-
र्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु,
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं शुम्भदैत्यविमर्दिन्यै स्वाहा।।३४।।
प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं निशुम्भासुरनाशिन्यै स्वाहा।।३५।।

देव्युवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ विं विन्ध्याचलवासिन्यै स्वाहा।।३६।।

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्लीं रौद्ररूपिण्यै स्वाहा।।३७।।

देवा ऊचुः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्ष्म्क्लीं रक्तदन्तिकायै स्वाहा।।३८।।

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ त्स्त्रां स्तुत्यै स्वाहा।।३९।।

देव्युवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रं अयोनिजायै स्वाहा।।४०।।

वैवस्वन्तऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लौं अयोनिजायै स्वाहा।।४१।।

नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लौं शताक्ष्यै स्वाहा।।४२।।

पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रूं पालिन्यै स्वाहा।।४३।।

भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान्।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्ष्मां शाङ्कर्यै स्वाहा।।४४।।

ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्तूं दुर्गायै स्वाहा।।४५।।

भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लौं शताक्ष्यै स्वाहा।।४६।।

ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सूं पालिन्यै स्वाहा।।४७।।

ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्कूं प्राणरक्षिकायै स्वाहा।।४८।।

शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्मां शाकम्भर्यै स्वाहा।।४९।।

दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्तूं दुर्गायै स्वाहा।।५०।।

रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात्।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्ह्रीं मुनिनां त्राणकर्यै स्वाहा।।५१।।

भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं भीमायै स्वाहा।।५२।।

तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम्।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम्।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं महाबाधा विनासिन्यै स्वाहा।।५३।।

भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां भ्रामर्यै स्वाहा।।५४।।

तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॐ।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं अरिनाशिन्यै स्वाहा।।५५।।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न।। सस॑स्त्यश्श्व॒कःसुभद्रि॑काङ्का म्पीलवा॒सिनी॑म्।। ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै त्रिगुणात्मिकायै पराम्बायै उत्तमचरित्राऽधिष्ठात्र्यै श्रीमहासरस्वत्यै नमः महाहुतीं समर्पयामि स्वाहा।। ॐ अम्बायै स्वाहा।। ॐ अम्बिकायै स्वाहा।। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।।

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती द्वादशोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां,
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं,
बिभ्रणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

इसके बाद भैरवशतनाम से हवन करे।

१.ॐ ह्रौँ भैरवाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रौँ भूतनाथाय स्वाहा।
३.ॐ ह्रौँ भूतात्मने स्वाहा।
४.ॐ ह्रौँ भूतभावनाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रौँ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
६.ॐ ह्रौँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७.ॐ ह्रौँ क्षेत्रदाय स्वाहा।
८.ॐ ह्रौँ क्षत्रियाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रौँ विराजे स्वाहा।
१०.ॐ ह्रौँ श्मशानवासिने स्वाहा।
११.ॐ ह्रौँ मांसासिने स्वाहा।
१२.ॐ ह्रौँ खर्पराशिने स्वाहा।
१३.ॐ ह्रौँ स्मरान्तकाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रौँ रक्तपाय स्वाहा।
१५.ॐ ह्रौँ पानपाय स्वाहा।
१६.ॐ ह्रौँ सिद्धाय स्वाहा।
१७.ॐ ह्रौँ सिद्धिदाय स्वाहा।
१८.ॐ ह्रौँ सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९.ॐ ह्रौँ कंकालाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्रौँ कालशमनाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्रौँ कालाकाष्ठातनवे स्वाहा।
२२.ॐ ह्रौँ कवये स्वाहा।
२३.ॐ ह्रौँ त्रिनेत्राय स्वाहा।
२४.ॐ ह्रौँ बहुनेत्राय स्वाहा।
२५.ॐ ह्रौँ पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्रौँ शूलपाणये स्वाहा।
२७.ॐ ह्रौँ खड्गपाणये स्वाहा।
२८.ॐ ह्रौँ कंकालिने स्वाहा।
२९.ॐ ह्रौँ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३०.ॐ ह्रौँ अभिरवे स्वाहा।
३१.ॐ ह्रौँ भैरवीनाथाय स्वाहा।
३२.ॐ ह्रौँ भूतपाय स्वाहा।
३३.ॐ ह्रौँ योगिनीपतये स्वाहा।
३४.ॐ ह्रौँ धनदाय स्वाहा।
३५.ॐ ह्रौँ अधनहारिणे स्वाहा।
३६.ॐ ह्रौँ धनवते स्वाहा।
३७.ॐ ह्रौँ पतिभानवते स्वाहा।
३८.ॐ ह्रौँ नागहाराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्रौँ नागपाशाय स्वाहा।
४०.ॐ ह्रौँ व्योमकेशाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्रौँ कपालभृते स्वाहा।
४२.ॐ ह्रौँ कालाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्रौँ कपालमालिने स्वाहा।
४४.ॐ ह्रौँ कमनीयाय स्वाहा।
४५.ॐ ह्रौँ कलानिधये स्वाहा।
४६.ॐ ह्रौँ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रौँ ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८.ॐ ह्रौँ त्रिशिखिने स्वाहा।

४९.ॐ ह्रीँ त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रीँ डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२.ॐ ह्रीँ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
५३.ॐ ह्रीँ बटुकाय स्वाहा।
५४.ॐ ह्रीँ बहुवेषाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रीँ खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रीँ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रीँ पशुपतये स्वाहा।
५८.ॐ ह्रीँ भिक्षुकाय स्वाहा।
५९.ॐ ह्रीँ परिचारकाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रीँ धूर्ताय स्वाहा।
६१.ॐ ह्रीँ दिगम्बराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रीँ शूराय स्वाहा।
६३.ॐ ह्रीँ हरिणाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रीँ पाण्डुलोचनाय स्वाहा।
६५.ॐ ह्रीँ प्रशान्ताय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रीँ शन्तिदाय स्वाहा।
६७.ॐ ह्रीँ शुद्धाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रीँ शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रीँ अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०.ॐ ह्रीँ निधीशाय स्वाहा।
७१.ॐ ह्रीँ ज्ञानचक्षुषे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रीँ तपोमयाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रीँ अष्टाधाराय स्वाहा।
७४.ॐ ह्रीँ षडाधाराय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रीँ सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रीँ शिखीसखाय स्वाहा।
७७.ॐ ह्रीँ भूधराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रीँ भूधराधीशाय स्वाहा।
७९.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
८०.ॐ ह्रीँ भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१.ॐ ह्रीँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
८२.ॐ ह्रीँ मुण्डिने स्वाहा।
८३.ॐ ह्रीँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते स्वाहा।
८४.ॐ ह्रीँ जृम्भणाय स्वाहा।
८५.ॐ ह्रीँ मोहनाय स्वाहा।
८६.ॐ ह्रीँ स्तंम्भिने स्वाहा।
८७.ॐ ह्रीँ मारणाय स्वाहा।
८८.ॐ ह्रीँ क्षोभणाय स्वाहा।
८९.ॐ ह्रीँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
९०.ॐ ह्रीँ दैत्यघ्ने स्वाहा।
९१.ॐ ह्रीँ मुण्डभूषिताय स्वाहा।
९२.ॐ ह्रीँ बलिभुजे स्वाहा।
९३.ॐ ह्रीँ बलिभुङ्नाथाय स्वाहा।
९४.ॐ ह्रीँ बालाय स्वाहा।
९५.ॐ ह्रीँ अबालपराक्रमाय स्वाहा।
९६.ॐ ह्रीँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।
९७.ॐ ह्रीँ दुर्गाय स्वाहा।
९८.ॐ ह्रीँ दुष्टभूतनिषेविताय स्वाहा।
९९.ॐ ह्रीँ कामिने स्वाहा।
१००.ॐ ह्रीँ कलानिधिकान्ताय स्वाहा।
१०१.ॐ ह्रीँ कामिनीवशकृते स्वाहा।
१०२.ॐ ह्रीँ वशिने स्वाहा।
१०३.ॐ ह्रीँ जगद्रक्षाकराय स्वाहा।
१०४.ॐ ह्रीँ अनन्ताय स्वाहा।
१०५.ॐ ह्रीँ मायामन्त्रौषधीमयाय स्वाहा।
१०६.ॐ ह्रीँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
१०७.ॐ ह्रीँ वैद्याय स्वाहा।
१०८.ॐ ह्रीँ प्रभविष्णवे स्वाहा।

ॐ देव्युवाच।।

ॐ ऐं ह्रीँ क्लीँ क्रूं भयनाशिन्यै स्वाहा।।१।।

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः।
तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रूं स्वस्त्ययन्यै स्वाहा।।२।।
मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम्।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भनिशुम्भयोः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रां महामारीहर्य्यै स्वाहा।।३।।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ फें बलिप्रियायै स्वाहा।।४।।
न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः।
भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हं शरत्पूज्यायै स्वाहा।।५।।
शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः।
न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भविष्यति।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चें निर्भयप्रदायै स्वाहा।।६।।
तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सूं रिपुनाशिन्यै स्वाहा।।७।।
उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रीं ग्रहपीड़ाहर्य्यै स्वाहा।।८।।
यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम।
सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ब्लूं उपसर्गप्रशमन्यै स्वाहा।।९।।
बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे।
सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ आं बालानां शान्तिकारिण्यै स्वाहा।।१०।।
जानताऽजानता वापि बलिपूजां यथाकृताम्।
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथाकृतम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ओं दुर्वृत्तनाशिन्यै स्वाहा।।११।।
शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं देवीलोकप्रदायिन्यै स्वाहा।।१२।।

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रीं विप्रप्रियायै स्वाहा।।१३।।

श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः।
पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रां मन्त्रप्रियायै स्वाहा।।१४।।

रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते।
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीं पापहरायै स्वाहा।।१५।।

शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने।
ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्लीं अभयप्रदायै स्वाहा।।१६।।

उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लीं देववन्दितायै स्वाहा।।१७।।

बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम्।
संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं बन्धनमोचिन्यै स्वाहा।।१८।।

दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ब्लीं पतितोद्धारिण्यै स्वाहा।।१९।।

सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम्।
पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ त्रों संकटहारिण्यै स्वाहा।।२०।।

विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्।
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ओं दस्युवर्गविनाशिन्यै स्वाहा।।२१।।

प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन्सकृत्सुचरिते श्रुते।
श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रौं ज्ञानदायै स्वाहा।।२२।।

रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम।
युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ऐं भगवत्यै स्वाहा।।२३।।

तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ द्रूं दैत्यनाशिन्यै स्वाहा।।२४।।
ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम्।
अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ल्लूं रिपूणां भयदायिन्यै स्वाहा।।२५।।
दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः।
सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ औं नित्यायै स्वाहा।।२६।।
राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा।
आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चें महामारीस्वरूपिण्यै स्वाहा।।२७।।
पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे।
सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रूं अजयायै स्वाहा।।२८।।
स्मरन्ममैच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात्।
मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ब्रीं मेधायै स्वाहा।।२९।।
दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं परमेश्वर्य्यै स्वाहा।।३०।।
ऋषिरुवाच।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीं भोगापवर्गदायै स्वाहा।।३१।।
इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्लीं तपोरूपायै स्वाहा।।३२।।
पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत।
तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्लीं तपोरूपायै स्वाहा।।३३।।
यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः।
दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ आं अम्बायै स्वाहा।।३४।।
जगद्विध्वंसिनि तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे।
निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सौं महीमय्यै स्वाहा।।३५।।

एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः।
सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं जगद्धात्र्ये स्वाहा।।३६।।

तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते।
सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्रीं देव्यै स्वाहा।।३७।।

व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर।
महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रं सर्वजननायै स्वाहा।।३८।।

सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ षौं सर्वज्ञानदायै स्वाहा।।३९।।

भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे।
सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोपजायते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्लीं सर्वभोगप्रदायै स्वाहा।।४०।।

स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धदिभिस्तथा।
ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम् ॐ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्षां सर्वदायै स्वाहा।।४१।।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन।। ससस्त्यश्श्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।। ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकालीकपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै त्रिगुणात्मिकायै पराम्बायै उत्तमचरित्राऽधिष्ठात्र्यै श्रीमहासरस्वत्यै नमः महाहुतीं समर्पयामि स्वाहा।। ॐ अम्बायै स्वाहा।। ॐ अम्बिकायै स्वाहा।। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।।

●

अथ श्रीदुर्गासप्तशती त्रयोदशोऽध्यायः

ध्यानम्—

ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे।।

इसके बाद भैरवशतनाम से हवन करे।

१.ॐ ह्रौँ भैरवाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रौँ भूतनाथाय स्वाहा।
३.ॐ ह्रौँ भूतात्मने स्वाहा।
४.ॐ ह्रौँ भूतभावनाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रौँ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
६.ॐ ह्रौँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७.ॐ ह्रौँ क्षेत्रदाय स्वाहा।
८.ॐ ह्रौँ क्षत्रियाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रौँ विराजे स्वाहा।
१०.ॐ ह्रौँ श्मशानवासिने स्वाहा।
११.ॐ ह्रौँ मांसासिने स्वाहा।
१२.ॐ ह्रौँ खर्पराशिने स्वाहा।
१३.ॐ ह्रौँ स्मरान्तकाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रौँ रक्तपाय स्वाहा।
१५.ॐ ह्रौँ पानपाय स्वाहा।
१६.ॐ ह्रौँ सिद्धाय स्वाहा।
१७.ॐ ह्रौँ सिद्धिदाय स्वाहा।
१८.ॐ ह्रौँ सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९.ॐ ह्रौँ कंकालाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्रौँ कालशमनाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्रौँ कालाकाष्ठातनवे स्वाहा।
२२.ॐ ह्रौँ कवये स्वाहा।
२३.ॐ ह्रौँ त्रिनेत्राय स्वाहा।
२४.ॐ ह्रौँ बहुनेत्राय स्वाहा।
२५.ॐ ह्रौँ पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्रौँ शूलपाणये स्वाहा।
२७.ॐ ह्रौँ खड्गपाणये स्वाहा।
२८.ॐ ह्रौँ कंकालिने स्वाहा।
२९.ॐ ह्रौँ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३०.ॐ ह्रौँ अभिरवे स्वाहा।
३१.ॐ ह्रौँ भैरवीनाथाय स्वाहा।
३२.ॐ ह्रौँ भूतपाय स्वाहा।
३३.ॐ ह्रौँ योगिनीपतये स्वाहा।
३४.ॐ ह्रौँ धनदाय स्वाहा।
३५.ॐ ह्रौँ अधनहारिणे स्वाहा।
३६.ॐ ह्रौँ धनवते स्वाहा।
३७.ॐ ह्रौँ पतिभानवते स्वाहा।
३८.ॐ ह्रौँ नागहाराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्रौँ नागपाशाय स्वाहा।
४०.ॐ ह्रौँ व्योमकेशाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्रौँ कपालभृते स्वाहा।
४२.ॐ ह्रौँ कालाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्रौँ कपालमालिने स्वाहा।
४४.ॐ ह्रौँ कमनीयाय स्वाहा।
४५.ॐ ह्रौँ कलानिधये स्वाहा।
४६.ॐ ह्रौँ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रौँ ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८.ॐ ह्रौँ त्रिशिखिने स्वाहा।
४९.ॐ ह्रौँ त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रौँ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रौँ डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२.ॐ ह्रौँ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
५३.ॐ ह्रौँ बटुकाय स्वाहा।
५४.ॐ ह्रौँ बहुवेषाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रौँ खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रौँ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रौँ पशुपतये स्वाहा।
५८.ॐ ह्रौँ भिक्षुकाय स्वाहा।
५९.ॐ ह्रौँ परिचारकाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रौँ धूर्ताय स्वाहा।
६१.ॐ ह्रौँ दिगम्बराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रौँ शूराय स्वाहा।
६३.ॐ ह्रौँ हरिणाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रौँ पाण्डुलोचनाय स्वाहा।

६५.ॐ ह्रौँ प्रशान्ताय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रौँ शन्तिदाय स्वाहा।
६७.ॐ ह्रौँ शुद्धाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रौँ शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रौँ अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०.ॐ ह्रौँ निधीशाय स्वाहा।
७१.ॐ ह्रौँ ज्ञानचक्षुषे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रौँ तपोमयाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रौँ अष्टाधाराय स्वाहा।
७४.ॐ ह्रौँ षडाधाराय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रौँ सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रौँ शिखीसखाय स्वाहा।
७७.ॐ ह्रौँ भूधराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रौँ भूधराधीशाय स्वाहा।
७९.ॐ ह्रौँ भूतपाय स्वाहा।
८०.ॐ ह्रौँ भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१.ॐ ह्रौँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
८२.ॐ ह्रौँ मुण्डिने स्वाहा।
८३.ॐ ह्रौँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते स्वाहा।
८४.ॐ ह्रौँ जृम्भणाय स्वाहा।
८५.ॐ ह्रौँ मोहनाय स्वाहा।
८६.ॐ ह्रौँ स्तम्भिने स्वाहा।
८७.ॐ ह्रौँ मारणाय स्वाहा।
८८.ॐ ह्रौँ क्षोभणाय स्वाहा।
८९.ॐ ह्रौँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
९०.ॐ ह्रौँ दैत्यघ्ने स्वाहा।
९१.ॐ ह्रौँ मुण्डभूषिताय स्वाहा।
९२.ॐ ह्रौँ बलिभुजे स्वाहा।
९३.ॐ ह्रौँ बलिभुङ्नाथाय स्वाहा।
९४.ॐ ह्रौँ बालाय स्वाहा।
९५.ॐ ह्रौँ अबालपराक्रमाय स्वाहा।
९६.ॐ ह्रौँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।
९७.ॐ ह्रौँ दुर्गाय स्वाहा।
९८.ॐ ह्रौँ दुष्टभूतनिषेविताय स्वाहा।
९९.ॐ ह्रौँ कामिने स्वाहा।
१००.ॐ ह्रौँ कलानिधिकान्ताय स्वाहा।
१०१.ॐ ह्रौँ कामिनीवशकृते स्वाहा।
१०२.ॐ ह्रौँ वशिने स्वाहा।
१०३.ॐ ह्रौँ जगद्रक्षाकराय स्वाहा।
१०४.ॐ ह्रौँ अनन्ताय स्वाहा।
१०५.ॐ ह्रौँ मायामन्त्रौषधीमयाय स्वाहा।
१०६.ॐ ह्रौँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
१०७.ॐ ह्रौँ वैद्याय स्वाहा।
१०८.ॐ ह्रौँ प्रभविष्णवे स्वाहा।

ॐ ऋषिरुवाच।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रौं सर्वज्ञायै स्वाहा।।१।।

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम्।
एवं प्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ व्रीं चण्डिकायै स्वाहा।।२।।

विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया।
तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ओं वरप्रदायै स्वाहा।।३।।

मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे।
तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्।।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ औं मुनिप्रियायै स्वाहा।।४।।

आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्लीं उत्साहकरण्यै स्वाहा।।५।।
मार्कण्डेय उवाच।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्वाहा।।६।।
इनि तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लीं भवशापविमोचिन्यै स्वाहा।।७।।
प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम्।
निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ल्लीं देवदेव्यै स्वाहा।।८।।
जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने।
संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रूं राज्यप्रदायै स्वाहा।।९।।
स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन्।
तौ तस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं रजस्वलितायै स्वाहा।।१०।।
अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः।
निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ त्रूं जनन्यै स्वाहा।।११।।
ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम्।
एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रूं मन्त्ररूपायै स्वाहा।।१२।।
परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं वाच्छितप्रदायै स्वाहा।।१३।।
देव्युवाच।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्लीं कामदायै स्वाहा।।१४।।
यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन।
मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि ते।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीं सर्वसिद्ध्यै स्वाहा।।१५।।
मार्कण्डेय उवाच।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रीं ज्ञानप्रदायै स्वाहा।।१६।।
ततो वव्रे 'नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि।
अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ श्रीं सुन्दर्य्यै स्वाहा।।१७।।

सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः।
ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ल्लीं अभयप्रदायै स्वाहा।।१८।।

देव्युवाच।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्वाहा।।१९।।

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ उं वाण्यै स्वाहा।।२०।।
हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्त्रूं विद्याप्रदायै स्वाहा।।२१।।
मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्मदेवाद्विवस्वतः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हूं क्रोधायै स्वाहा।।२२।।
सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रां रक्षाकरिण्यै स्वाहा।।२३।।
वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्वाहा।।२४।।
तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रीं प्रीत्यै स्वाहा।।२५।।

मार्कण्डेय उवाच।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सूं अभिस्तुतायै स्वाहा।।२६।।

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम्।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्लौं लषितप्रदायै स्वाहा।।२७।।
बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ आं सर्वविमोहिन्यै स्वाहा।।२८।।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ओं मनुरूपायै स्वाहा।।२९।।

एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः क्लीं ॐ।।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ हसौँ सहौँ हसौँ पराशक्तये स्वाहा।।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बालिके॒नमानयति॒कश्श्च॒न।। ससस्त्यश्श्व॒कःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवा॒सिनीम्।। ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा

शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै त्रिगुणात्मिकायै पराम्बायै उत्तमचरित्राऽधिष्ठात्र्यै श्रीमहासरस्वत्यै नमः महाहुतीं समर्पयामि स्वाहा।। ॐ अम्बायै स्वाहा।। ॐ अम्बिकायै स्वाहा।। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।।

इसके बाद भैरवशतनाम से हवन करे।

१.ॐ ह्रीँ भैरवाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रीँ भूतनाथाय स्वाहा।
३.ॐ ह्रीँ भूतात्मने स्वाहा।
४.ॐ ह्रीँ भूतभावनाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रीँ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
६.ॐ ह्रीँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७.ॐ ह्रीँ क्षेत्रदाय स्वाहा।
८.ॐ ह्रीँ क्षत्रियाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रीँ विराजे स्वाहा।
१०.ॐ ह्रीँ श्मशानवासिने स्वाहा।
११.ॐ ह्रीँ मांसासिने स्वाहा।
१२.ॐ ह्रीँ खर्पराशिने स्वाहा।
१३.ॐ ह्रीँ स्मरान्तकाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रीँ रक्तपाय स्वाहा।
१५.ॐ ह्रीँ पानपाय स्वाहा।
१६.ॐ ह्रीँ सिद्धाय स्वाहा।
१७.ॐ ह्रीँ सिद्धिदाय स्वाहा।
१८.ॐ ह्रीँ सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९.ॐ ह्रीँ कंकालाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्रीँ कालशमनाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्रीँ कालाकाष्ठातनवे स्वाहा।
२२.ॐ ह्रीँ कवये स्वाहा।
२३.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्राय स्वाहा।
२४.ॐ ह्रीँ बहुनेत्राय स्वाहा।
२५.ॐ ह्रीँ पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्रीँ शूलपाणये स्वाहा।
२७.ॐ ह्रीँ खड्गपाणये स्वाहा।
२८.ॐ ह्रीँ कंकालिने स्वाहा।
२९.ॐ ह्रीँ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३०.ॐ ह्रीँ अभिरवे स्वाहा।
३१.ॐ ह्रीँ भैरवीनाथाय स्वाहा।
३२.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
३३.ॐ ह्रीँ योगिनीपतये स्वाहा।
३४.ॐ ह्रीँ धनदाय स्वाहा।
३५.ॐ ह्रीँ अधनहारिणे स्वाहा।
३६.ॐ ह्रीँ धनवते स्वाहा।
३७.ॐ ह्रीँ पतिभानवते स्वाहा।
३८.ॐ ह्रीँ नागहाराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्रीँ नागपाशाय स्वाहा।
४०.ॐ ह्रीँ व्योमकेशाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्रीँ कपालभृते स्वाहा।
४२.ॐ ह्रीँ कालाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्रीँ कपालमालिने स्वाहा।
४४.ॐ ह्रीँ कमनीयाय स्वाहा।
४५.ॐ ह्रीँ कलानिधये स्वाहा।
४६.ॐ ह्रीँ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रीँ ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८.ॐ ह्रीँ त्रिशिखिने स्वाहा।
४९.ॐ ह्रीँ त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रीँ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रीँ डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२.ॐ ह्रीँ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।

५३.ॐ ह्रीँ बटुकाय स्वाहा।
५४.ॐ ह्रीँ बहुवेषाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रीँ खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रीँ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रीँ पशुपतये स्वाहा।
५८.ॐ ह्रीँ भिक्षुकाय स्वाहा।
५९.ॐ ह्रीँ परिचारकाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रीँ धूर्ताय स्वाहा।
६१.ॐ ह्रीँ दिगम्बराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रीँ शूराय स्वाहा।
६३.ॐ ह्रीँ हरिणाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रीँ पाण्डुलोचनाय स्वाहा।
६५.ॐ ह्रीँ प्रशान्ताय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रीँ शन्तिदाय स्वाहा।
६७.ॐ ह्रीँ शुद्धाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रीँ शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रीँ अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०.ॐ ह्रीँ निधीशाय स्वाहा।
७१.ॐ ह्रीँ ज्ञानचक्षुषे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रीँ तपोमयाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रीँ अष्टाधाराय स्वाहा।
७४.ॐ ह्रीँ षडाधाराय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रीँ सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रीँ शिखीसखाय स्वाहा।
७७.ॐ ह्रीँ भूधराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रीँ भूधराधीशाय स्वाहा।
७९.ॐ ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।
८०.ॐ ह्रीँ भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१.ॐ ह्रीँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
८२.ॐ ह्रीँ मुण्डिने स्वाहा।
८३.ॐ ह्रीँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते स्वाहा।
८४.ॐ ह्रीँ जृम्भणाय स्वाहा।
८५.ॐ ह्रीँ मोहनाय स्वाहा।
८६.ॐ ह्रीँ स्तम्भिने स्वाहा।
८७.ॐ ह्रीँ मारणाय स्वाहा।
८८.ॐ ह्रीँ क्षोभणाय स्वाहा।
८९.ॐ ह्रीँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
९०.ॐ ह्रीँ दैत्यघ्ने स्वाहा।
९१.ॐ ह्रीँ मुण्डभूषिताय स्वाहा।
९२.ॐ ह्रीँ बलिभुजे स्वाहा।
९३.ॐ ह्रीँ बलिभुङ्नाथाय स्वाहा।
९४.ॐ ह्रीँ बालाय स्वाहा।
९५.ॐ ह्रीँ अबालपराक्रमाय स्वाहा।
९६.ॐ ह्रीँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।
९७.ॐ ह्रीँ दुर्गाय स्वाहा।
९८.ॐ ह्रीँ दुष्टभूतनिषेविताय स्वाहा।
९९.ॐ ह्रीँ कामिने स्वाहा।
१००.ॐ ह्रीँ कलानिधिकान्ताय स्वाहा।
१०१.ॐ ह्रीँ कामिनीवशकृते स्वाहा।
१०२.ॐ ह्रीँ वशिने स्वाहा।
१०३.ॐ ह्रीँ जगद्रक्षाकराय स्वाहा।
१०४.ॐ ह्रीँ अनन्ताय स्वाहा।
१०५.ॐ ह्रीँ मायामन्त्रौषधीमयाय स्वाहा।
१०६.ॐ ह्रीँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
१०७.ॐ ह्रीँ वैद्याय स्वाहा।
१०८.ॐ ह्रीँ प्रभविष्णवे स्वाहा।

हवन के बाद देवीस्तव सूक्त का पाठ करे—

देवी-सूक्तम्—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।१।।

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः।।२।।
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः।।३।।
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।।४।।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।।५।।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।६।।
या देवी सर्वभूतेषु चेत्यनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।७।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।८।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।९।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१०।।
या देवी सर्वभूतेषु च्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।११।।
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१२।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१३।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१४।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१५।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१६।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१७।।

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१८।।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।१९।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२०।।
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२१।।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२२।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२३।।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२४।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२५।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२६।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः।।२७।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।२८।।
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविताः।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी,
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।२९।।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः,
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।।३०।।

श्रीदेव्या स्तुतिपाठं श्रीजगदम्बार्पणमस्तु

●

नवार्णहवनविधिः

इसके बाद नवार्ण मन्त्र न्यास हवन करे।

विनियोग:—अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, ऐँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, क्लीँ कीलकं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे न्यासे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः—

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि।

ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे।

ॐ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि।

ॐ ऐँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास:—

ॐ ऐँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ क्लीँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास:—

ॐ ऐँ हृदयाय नमः।

ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा।

ॐ क्लीँ शिखायै वषट्।

ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्।

ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यास:—

ॐ ऐँ नमः शिखायाम्।

ॐ ह्रीँ नमः दक्षिणनेत्रे।
ॐ क्लीँ नमः वामनेत्रे।
ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे।
ॐ मुं नमः वामकर्णे।
ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे।
ॐ यैं नमः वामनासापुटे।
ॐ विं नमः मुखे।
ॐ च्चें नमः गुह्ये।

दिङ्न्यासः—
ॐ ऐँ प्राच्यै नमः।
ॐ ऐँ आग्नेयाय नमः।
ॐ ह्रीँ दक्षिणायै नमः।
ॐ ह्रीँ नैर्ऋत्यै नमः।
ॐ क्लीँ प्रतीच्यै नमः।
ॐ क्लीँ वायव्यै नमः।
ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः।
ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै ऊर्ध्वायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्—

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।१।।
अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्मजलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।२।।
घण्टाशूलहलानिशङ्खमुशले चक्रं धनुः सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा,
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।३।।

मालापूजनम्—

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अक्षमालिकायै नमः।

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।१।।
अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले तु सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।२।।

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे स्वाहा। १०८ बार हवन करे।

आहुति प्रदान करने के बाद पञ्चाङ्गाद्यावाहित देवताओं को आहुति प्रदान करे।

आवाहितदेवानां होमः

गणेशाम्बिकावरुणषोडशमातृकासप्तघृतमातृकासर्वतोभद्रदेवानां हवनम्—

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम।। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् गणपतये स्वाहा।।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन।। ससस्त्यश्श्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् अम्बिकायै स्वाहा ।।

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः।। अहेडमानो व्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः वरुणाय स्वाहा।।

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम।। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् गणेशाय स्वाहा।।

ॐ आयङ्गौःपृश्श्निरक्क्रमीदसदन्मातरम्पुरः।। पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः गौर्यै स्वाहा।।

ॐ हिरण्यरूपाऽउषसोव्विरोकऽउभाविन्द्राऽउदिथःसूर्य्यश्श्च।। आरोहतंव्वरुण मित्रगर्त्तन्ततश्श्चक्षाथामदितिन्दितिञ्चमित्रोऽसिव्वरुणोऽसि पद्मायै स्वाहा।।

ॐ निवेशनःसङ्गमनोव्वसूनांव्विश्श्वारूपाभिचष्टेशचीभिः।। देवऽइवसविता सत्त्यधर्म्मेन्द्रोनतस्त्थौसमरेपथीनाम् शच्यै स्वाहा।।

ॐ मेधाम्मेव्वरुणोददातुमेधामग्ग्निःप्प्रजापतिः।। मेधामिन्द्रश्श्चव्वायुश्श्चमेधां धातादददातुमेस्वाहा मेधायै स्वाहा।।

ॐ सवितात्त्वासवानाꣳसुवतामग्ग्निर्ग्गृहपतिनाꣳसोमोव्वनस्प्पतीनाम्।। बृहस्प्पतिर्व्वाचधर्मपतीनाम् सावित्र्यै स्वाहा।।

ॐ विज्ज्यन्धतुःकपर्दिनोविशल्योबाणवाँ२।।उत।। अनैशन्नस्ययाऽषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः विजयायै स्वाहा।।

ॐ वह्वीनांपिताबहुरस्यपुत्रश्चिश्चाकृणोतिसमनावगत्त्य।। इषुधिःसङ्काःपृतनाश्चसर्वाःपृष्ठेनिनद्धोजयतिप्प्रसूतः जयायै स्वाहा।।

ॐ इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्द्दक्षिणायज्ञःपुरएतुसोमः।। देवसेनानामभिभञ्जतीनांजयन्तीनांमरुतोयन्त्वग्ग्रम् देवसेनायै स्वाहा।।

ॐ पितृभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमःपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमःप्प्रतितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः।। अक्षन्न्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपितरःपितरःशुन्धद्ध्वम् स्वधायै स्वाहा।।

ॐ स्वाहाप्प्राणेभ्यःसाधिपतिकेभ्यः।। पृथिव्यै स्वाहाग्ग्नयेस्वाहान्तरिक्षायस्वाहाव्वायवेस्वाहा।। दिवेस्वाहासूर्य्यायस्वाहा स्वाहायै स्वाहा।।

ॐ आपोऽअस्म्मान्मातरःशुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्प्वःपुनन्तु।। विश्वꣳहिरिप्प्रंप्रवहन्तिदेविरुदिदाभ्यःशुचिरापूतऽएमि।। दीक्षातपसोस्तनूरसितांत्वाशिवाꣳशग्ग्मांपरिदधेभद्रंव्वर्णपुष्ष्यन् मातृभ्यः स्वाहा।।

ॐ रयिश्चमेरायश्चमेपुष्टंचमेपुष्टिश्चमेव्विभुचमेप्रभुचमेपूर्ण्णंचमेपूर्ण्णतरंचमेकुयवञ्चमेऽक्षितञ्चमेऽन्नंच्चमेऽक्षुच्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् लोकमातृभ्यः स्वाहा।।

ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्चयज्ज्योतिरन्तरमृतंप्प्रजासु।। यस्मान्नऽऋतेकिञ्चनकर्म्मक्क्रियतेतन्मेमनःशिवसङ्कल्प्पमस्तु धृत्यै स्वाहा।।

ॐ अङ्गान्न्यात्मन्न्भिषजातदश्विनात्मानमङ्गैःसमधात्त्सरस्वती।। इन्द्रस्यरूपꣳशतमानमायुश्चन्द्रेणज्ज्योतिरमृतंदधानाः पुष्ट्यै स्वाहा।।

ॐ जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः। सनः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः तुष्ट्यै स्वाहा।।

ॐ प्प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्यानायस्वाहा।। चक्षुषेस्वाहाश्रोत्रायस्वाहा व्वाचेस्वाहामनसेस्वाहा आत्मनः कुलदेवतायै स्वाहा।।

ॐ मनसःकाममाकूतिंव्वाचःसत्त्यमशीय।। पशूनाꣳरूपमन्नस्यरसोयशःश्रीःश्रयतांमयिस्वाहा श्रियै स्वाहा।।

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्।। इष्ण्णंनिषाणामुंमऽइषाणसर्व्वलोकंमऽइषाण लक्ष्म्यै स्वाहा।।

ॐ भद्रङ्कर्ण्णेभिःश्शृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः।। स्त्थिरैरङ्गैस्त्तुष्टुवाꣳसस्त्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः धृत्यै स्वाहा।।

ॐ मेधांमेव्वरुणोददातुमेधामग्ग्निःप्प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्चव्वायुश्चव्वायुश्चमेधांधाताददातुमेस्वाहा मेधायै स्वाहा।।

ॐ प्प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहा।। चक्षुषेस्वाहाश्श्रोत्रायस्वाहा व्वाचेस्वाहामनसेस्वाहा स्वाहायै स्वाहा।।

ॐ आयंगौःपृश्निरक्क्रमीदसदन्मातरंपुरः।। पितरंचप्प्रयन्त्स्वा÷प्रज्ञायै स्वाहा।।

ॐ पावमानःसरस्वतीव्वाजैभिर्व्वाजिनीवतियज्ञंव्वष्टुधियावसुःसरस्वत्यै स्वाहा।।

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्त्ताद्विसीमतऽसुरुचोव्वेनआवः।। सबुद्धन्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाऽसुतश्चयोनिमसतश्चव्विवं÷ ब्रह्मणे स्वाहा।।

ॐ व्वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्त्तनूषु बिब्भ्रतः।। प्रजावन्तꣳसचेमहि सोमाय स्वाहा।।

ॐ तमीशानंजगतस्त्तस्त्थुषस्प्पतिंधियंजिन्न्वमवसेहूमहेव्वयम्।। पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धयें ईशानाय स्वाहा।।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम्।। ह्वयामिशक्क्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्त्विन्द्र÷ इन्द्राय स्वाहा।।

ॐ त्वन्नोऽअग्ग्नेतवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्न्वश्श्चव्वन्द्य।। त्रातातोकस्यतनये गवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणस्तवव्व्रते अग्ग्नये स्वाहा।।

ॐ यमायत्त्वङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा।। स्वाहाघर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्त्रे यमाय स्वाहा।।

ॐ असुन्न्वन्तमयजमानमिच्च्छस्तेनस्येत्त्यामन्न्विहितस्करस्य।। अन्न्यमस्मदिच्चछसातऽइत्त्या नमो देवि निर्ऋते तुब्भ्यमस्तु निर्ऋतये स्वाहा।।

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्त्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भि÷।। अहेडमानो व्वरुणेहबोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुꣳप्प्रमोषीꣳ वरुणाय स्वाहा।।

ॐ आनोनियुद्भि÷शतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्।। व्वायोऽअस्स्मिन्नत्सवनेमादयस्वयूयंपात स्वस्तिभिः सदा नः वायवे स्वाहा।।

ॐ व्वसुब्भ्यस्त्वारुद्द्रेब्भ्यस्त्वाऽऽदित्येब्भ्यस्त्वासञ्जानाथांद्यावापृथिवीमित्रा वरुणौत्वाव्वृष्ट्यावताम्।। व्यन्तुव्वयोक्तꣳरिहाणामरुतांपृषतीर्ग्गच्छव्वशापृश्निर्ब्भूत्वा दिवंगच्छततोनोव्वृष्टिमावह।। चक्षुष्प्पाऽअग्ग्नेऽसिचक्षुर्म्मेपाहि अष्टवसुभ्यः स्वाहा।।

ॐ नमस्तेरुद्द्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवेनम÷।। बाहुब्भ्यामुततेनम÷ एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा।।

ॐ यज्ञोदेवानांप्रत्यैतिसुम्म्नमादित्यासोभवतामृडयन्त÷।। आवोऽर्व्वाचीसुमतिर्व्वृत्त्यादꣳहोश्श्चिद्याव्वरिवोवित्तरासत् द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा।।

ॐ अश्विनातेजसाचक्षु÷प्प्राणेनसरस्वतीव्वीर्य्यम् ।। व्वाचेन्द्रोबलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् अश्विभ्यां स्वाहा।।

ॐ वि॒श्श्वे॑देवास॒ऽआग॑तश्शृणु॒ताम॑ऽइ॒मꣳहव॑म्।। एदंब॒र्हिर्न्निषी॑दत।। उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसिव्विश्श्वे॑ब्भ्यस्त्वादे॒वेब्भ्य॑ऽएषते॒यो॒ति॒र्व्विश्श्वे॑ब्भ्यस्त्वादे॒वेब्भ्यः॑ सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।।

ॐ अ॒भित्यंदे॒वꣳस॑वि॒तार॑मो॒ण्योः॑क॒विक्र॑तु॒मर्च्चा॑मिस॒त्त्यस॑वꣳरत्न॒धाम॒भि प्प्रि॒यंम॒तिंक॒विम्।। ऊ॒र्द्ध्वायस्या॒ऽमति॒र्भाऽअदि॑द्युत॒त्सवी॑मनि॒हिर॑ण्यपाणिरमिमीत सु॒क्रतुः॑कृ॒पास्वः॑।। प्र॒जाब्भ्य॑स्त्वाप्प्र॒जास्त्वा॑नु॒प्प्राण॑न्तुप्र॒जास्त्वम॑नु॒प्प्राणि॑हि सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा।।

ॐ नमो॑स्तुस॒र्प्पेब्भ्यो॒येकेच॑पृथि॒वीमनु॑। येऽअ॒न्तरि॑क्षे॒ येदि॒वि तेब्भ्यः॑ स॒र्प्पेब्भ्यो॒ नमः॑ भूतनागेभ्यः स्वाहा।।

ॐ ऋ॒ता॒षाडृ॒तधा॑मा॒ग्ग्निर्ग्ग॑न्ध॒र्व्वस्तस्यौष॑धयोप्प्स॒रसो॒मुदो॒नाम॑।। सनः॑ऽइ॒दम्ब्रह्म॑क्ष॒त्रम्पा॑तु॒तस्मै॒ स्वाहा॒ व्वाट्ताब्भ्य॒ꣳ स्वाहा॑ गन्धर्वाऽप्सरोभ्यः स्वाहा।।

ॐ यदक्र॑न्दः प्प्रथ॒मंजाय॑मानऽउ॒द्यन्त्स॑मु॒द्रादु॒तवा॒पुरी॑षात्।। श्ये॒नस्य॑प॒क्षा ह॑रि॒णस्य॑बाहूऽउ॑प॒स्तुत्त्यंम॑हिजा॒तंते॑ऽअर्व्वन् स्कन्दाय स्वाहा।।

ॐ आ॒शुःशिशा॑नाव्वृष॒भोनभी॒मोघ॑नाघ॒नःक्षोभ॑णश्श्चर्ष॒णीनाम्।। स॒ङ्क्रन्द॑नोऽनिमि॒षऽए॑कवी॒रःश॒तꣳसेना॑ऽअचयत्त्सा॒कमिन्द्रः॑ नन्दीश्वराय स्वाहा।।

ॐ का॒र्षि॑रसिसमु॒द्रस्य॒त्त्वाक्षि॑त्त्या॒ऽउन्न॑यामि।। समापो॑ऽअ॒द्भिरग्ग्म॑त॒समोष॑धी भि॒रोष॑धीः शूलाय स्वाहा।।

ॐ का॒र्षि॑रसिसमु॒द्रस्य॒त्त्वाक्षि॑त्त्या॒ऽउन्न॑यामि।। समापो॑ऽअ॒द्भिरग्ग्म॑त॒समोष॑धी भि॒रोष॑धीः महाकालाय स्वाहा।।

ॐ शु॒क्रज्ज्योति॑श्श्चचि॒त्रज्ज्योति॑श्श्चस॒त्यज्ज्योति॑श्श्च॒ज्ज्योति॑ष्म्माँश्श्च।। शु॒क्रश्श्च॑ऽऋत॒पाश्श्चात्य॑ꣳहाः सप्तप्रजापतिभ्यः स्वाहा।।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्श्च॒न।। सस॑स्त्यश्श्व॒कःसु॒भद्रि॑ङ्काम्पीलवासिनीम् दुर्गायै स्वाहा।।

ॐ इ॒दं व्विष्णु॒र्व्विच॑क्रमे॒त्रेधा॒निद॑धेप॒दम्।। समू॑ढमस्य पाꣳसु॒रे स्वाहा॑ विष्णवे स्वाहा।।

ॐ पि॒तृब्भ्यः॑ स्वधा॒यिब्भ्यः॑ स्व॒धानमः॑ पिताम॒हेब्भ्यः॑ स्वधा॒यिब्भ्यः॑ स्व॒धानमः प्प्रति॑तामहेब्भ्यः स्वधा॒यिब्भ्यः॑ स्व॒धानमः॑।। अक्ष॒न्पि॒तरोऽमी॑मदन्त पि॒तरोऽती॑तृपन्तपि॒तरः॒पित॑रः॒शुन्ध॑द्ध्वम् स्वधासहितपितृभ्यः स्वाहा।।

ॐ परं॑मृत्योऽअनु॒परे॑हि॒पन्था॒य्यस्ते॑ऽअ॒न्यऽइत॑रोदेव॒याना॑त्।। चक्षु॑ष्म्मते शृण्व॒तेते॑ब्ब्रवीमि॒मानः॑प्प्र॒जाꣳरी॑रिषो॒मोतव्वी॒रान् मृत्युरोगाभ्यां स्वाहा।।

ॐ ग॒णाना॑न्त्वाग॒णप॑तिꣳहवामहेप्प्रि॒याणा॑न्त्वाप्प्रि॒यप॑तिꣳहवामहेनिधी॒नान्त्वा॑ निधि॒पति॑ꣳहवामहेव्वसोमम।। आहम॑जानिगब्भ॒र्धमात्त्वम॑जासिगब्भ॒र्धम् गणपतये स्वाहा।।

ॐ अप्प्स्वग्ग्नेसधिष्ट्वसौषधीरतुरुध्यसे।। गर्ब्भेसञ्जायसेपुनः अद्भ्यः स्वाहा।।

ॐ मरुतो यस्यहिक्षये पाथादिवोव्विकहसः।। ससुगोपातमोजनः मरुद्भ्यः स्वाहा।।

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी।। यक्षानःशर्म्मसप्प्रथाः पृथिव्यै स्वाहा।।

ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः।। सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित् गङ्गादिनदीभ्यः स्वाहा।।

ॐ समुद्रोऽसिनमभस्वार्द्रदानुः।। शम्भूर्म्मयोभूरभिमाव्वाहिस्वाहा।। मारुतोऽसिमरुतांगणःशम्भूर्म्मयोभूरभिमाव्वाहि सप्तसागरेभ्यः स्वाहा।।

ॐ प्रपर्व्वतस्यव्वृषभस्यपृष्ठान्नावश्चरन्तिस्वसिचऽइयानाः।। ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताअहिम्बुध्न्यमनुरीयमाणाः।। व्विष्णोर्व्विक्क्रमणमसिव्विष्णोर्व्विक्क्रान्तमसिव्विष्णोःक्क्रान्तमसि मेरवे स्वाहा।।

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवानहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम।। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् गौतमाय स्वाहा।।

ॐ त्रिꣳशद्धामव्विराजतिव्वाक्पतङ्गायधीयते। प्रतिवस्तोरहद्द्युभिः भरद्वाजाय स्वाहा ।।

ॐ महाँ२।।इन्द्रोव्वज्रहस्तःषोडशीशर्म्मयच्छतु।। हन्तुपाप्मानंयोऽस्मानद्वेष्टि।। उपयामगृहीतोऽसिमहेन्द्रायत्त्वैषतेयोतिर्म्महेन्द्रायत्वा विश्वामित्राय स्वाहा।।

ॐ व्वसुचमेव्वसतिश्चमेकर्म्मचमेशक्तिश्चमेऽर्थश्चमएमश्चमइत्याचमेगतिश्चमे यज्ञेन कल्प्पन्ताम् कश्यपाय स्वाहा।।

ॐ इडऽएह्यदितऽएहिकाम्म्याऽएत।। मयि वः कामध रणं भूयात् जमदग्नये स्वाहा।।

ॐ खड्गोव्वैश्वदेवःश्वाकृष्णःकर्ण्णोगर्द्दभस्तरक्षुस्तेरक्षसामिन्द्रायसूकरःसिꣳहोमारुतःकृकलासःपिप्प्पकाशकुनिस्तेशरव्यायैविश्वेषांदेवानांपृषतः वशिष्ठाय स्वाहा।।

ॐ उदुत्तमंव्वरुणपाशमस्म्मदवाधमंव्विमध्यमꣳश्रथायअथाव्वयमादित्यव्व्रतेतवानागसोऽअदितयेस्याम अत्रये स्वाहा।।

ॐ अꣳ शुश्चमे रश्मिश्चमे ऽदाब्भ्यश्चमे ऽधिपतिश्च मऽउपाꣳ शुश्चमेऽन्तर्य्यामश्चमऽऐन्द्रवायवश्चमेमैत्रावरुणश्चमेऽआश्विनश्चमेप्प्रतिप्प्रस्थानश्चमेशुक्क्रश्चमे मन्थीच मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम् अरुन्धत्यै स्वाहा।।

ॐ आयंगौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः।। पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः गदायै स्वाहा।।

ॐ अयंदक्षिणाविश्श्वकर्म्मातस्यमनोवैश्श्वकर्म्मणंग्रीष्म्मोमानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्म्मी त्रिष्टुभःस्वारꣳस्वारादन्तर्य्यामोऽन्तर्य्यामात्पञ्चदशःपञ्चदशाद्बृहद्भरद्वाजऽऋषिःप्प्रजापतिगृहीतयात्वयामनोगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः त्रिशूलाय स्वाहा।।

ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्यश्रोत्रꣳसौवꣳशरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्शारद्यनुष्टुभऽऐडमैडान्मन्थीमन्थिनऽएकविꣳशऽएकविꣳशाद्वैराजंविश्श्वामित्रऽऋषिःप्प्रजापति गृहीतया त्वयाश्रोत्रंगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः वज्राय स्वाहा।।

ॐ त्र्यायुषंजमदग्ग्नेःकश्यपस्यत्र्यायुषम्।। यद्देवेषुत्र्यायुषंतन्नोअस्तु त्र्यायुषम् शक्तये स्वाहा।।

ॐ अयंपश्श्चाद्विश्श्वव्यचास्तस्यचक्षुर्वैश्श्वव्यचसंवर्षाश्श्चाक्षुष्ष्योजगतीवार्षी जगत्याऽऋक्स्समृक्स्समाच्छुक्रःशुक्रात्सप्प्तदशःसप्प्तदशाद्वैरूपंजमदग्ग्निर्ऋषिः प्प्रजापतिगृहीतयात्वयाचक्षुर्ग्गृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः दण्डाय स्वाहा।।

ॐ अयंपुरोभुवस्तस्यप्प्राणोभौवायनोवसन्तःप्प्राणयनोगायत्रीवासन्तीगायत्र्यै गायत्रंगायत्रादुपाꣳशुरुपाꣳशोस्त्रिवृत्त्रिवृतोरथान्तरंवसिष्ठऽऋषिःप्प्रजापतिगृहीतयात्वयाप्प्राणंगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः खड्गाय स्वाहा।।

ॐ अत्रपितरोमादयद्ध्वंय्यथाभागमावृषायद्ध्वम्।। अमी मदन्त पितरो यथा भागमावृषायिषत पाशाय स्वाहा।।

ॐ तंपत्नीभिरनुगच्छेमदेवाःपुत्रैर्ब्भ्रातृभिरुतवाहिरण्ण्यैः।। नाकंगृभ्णानाः सुकृतस्यलोकेतृतीयेपृष्ठेऽअधिरोचनेदिवः अङ्कुशाय स्वाहा।।

ॐ अदित्यैरास्नासीन्द्राण्ण्याऽउष्ण्णीषः।। पूषासि घर्म्माय दीष्ष्व ऐन्द्र्यै स्वाहा।।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्श्चन।। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् कौमार्यै स्वाहा।।

ॐ इन्द्रायाहिधियेषितो विप्प्रजूतः सुतावतः।। उपब्ब्रह्माणि वाग्घतः ब्राह्म्यै स्वाहा।।

ॐ इन्द्रस्यक्क्रोडोऽअदित्यैपाजस्स्यंदिशांजत्रवोऽदित्यैभसज्जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षंपुरीततानभऽउदर्य्येणचक्रवाकौमतस्नाब्भ्यांदिवंवृक्काब्भ्यांगिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीह्नावल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौभिर्ग्गुल्म्मान्हिराभिःस्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिब्भ्याꣳसमुद्रमुदरेणवैश्श्वनरंभस्म्मना वाराह्यै स्वाहा।।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन।। ससस्त्यश्श्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् चामुण्डायै स्वाहा।।

ॐ आप्प्या॑यस्व॒ सम॑तु ते व्वि॒श्वत॑ः सोम॒ व्वृष्ण्य॑म् ।। भवा॒ व्वाज॑स्य सङ्गथे वैष्णव्यै स्वाहा।।

ॐ या ते॑ रुद्रशि॒वात॒नूरघो॒राऽपा॑पकाशिनी।। तया॑न स्त॒न्वा॒ शन्त॑ मया॒ गिरि॑शन्ता॒भिचा॑कशीहि माहेश्वर्यै स्वाहा।।

ॐ सम॑क्ख्येदे॒व्व्याधि॒यासन्दक्षि॑णयो॒रुच॑क्षसा।। माम॒ऽआयु॒ꣳप्प्रमो॑षी॒र्म्मोऽअ॒हं तव॑व्वी॒रंव्वि॑देय॒तव॑देविस॒न्दृशि॑ वैनायक्यै स्वाहा।।

अग्निपूजनं स्विष्टकृद्धोम:—

संकल्प:—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य हवनफलसाफल्यतासिद्ध्यर्थं स्वाहास्वधायुतायमग्निपूजनं करिष्ये।

ॐ अग्ग्ने॒नय॑सु॒पथा॑रा॒येऽअस्म्मान्विश्श्वा॑निदेवव्व॒युना॑निव्विद्वान्।। यु॒यो॒द्ध्य॒स्म्मज्जु॑हुरा॒णमेनो॒भूयि॑ष्ठां॑ते॒नम॑ऽउक्तिंव्विधेम।।

ॐ स्वाहास्वधायुताग्नये वैश्वानराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।।

ॐ अग्नये स्विष्टिकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।।

भूरादि नवाहुतय:—

ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम।।१।।

ॐ भुवः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।।२।।

ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।।३।।

ॐ त्वन्नो॑ऽअग्ने॒ व्वरु॑णस्य व्वि॒द्वान् दे॒वस्य॒ हेडो॒ऽअव॑यासि सीष्ठाः।। यजि॑ष्ठो॒ व्वह्नि॑तम॒ः शोशु॑चानो॒ व्विश्श्वा॒द्वेषा॑ꣳसि॒प्प्रमु॑ मुग्ग्ध्य॒स्म्मत्।। स्वाहा इदमग्नी-वरुणाभ्यां न मम।।४।।

ॐ सत्त्वन्नो॑ऽअग्नेऽव॒मोभ॑वो॒तीनेदि॑ष्ठोऽअ॒स्याऽउ॒षसो॒व्युष्टौ।। अव॑यक्ष्वनो॒ व्वरु॑ण॒ꣳररा॑णोव्वी॒हिमृ॑डी॒कꣳसु॒हवो॑नऽएधि।। स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।५।।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्चसत्यमित्त्वमयाऽअसि।। अयानोयज्ञंव्वहास्ययानोधेहिभेषजꣳ।। स्वाहा इदमग्नये अयसे न मम।।६।।

ॐ ये ते शतं व्वरुण ये सहस्रं यज्ञियाःपाशा व्वितता महान्तः।। तेभिर्न्नोऽअद्य सवितोतविष्णुर्व्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः।। स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।।७।।

ॐ उदु॑त्तमंव्व॑रुण॒पाश॑म॒स्मदवा॑ध॒मंव्विम॑ध्य॒मꣳश्श्र॑थाय।। अथा॑ व्व॒यमा॑दित्य

व्र॒तेतवा॑नागसो॒ऽअदि॑तयेस्याम।। स्वाहा इदं वरुणायादित्यायादितये च न मम।।८।।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।।९।।

नवाहुति परिपूर्णम्

•

कुमारी-सुवासिनीपूजनम्

पूजा गृह में कुमारी तथा सुवासिनी को लाकर प्रदक्षिणा करके, उद्वर्तनादि से स्नपन कराकर वस्त्रादि से अलंकृत करके पीठ पर समावेशित कर, स्वयं षडङ्गादि न्यास कर पूजनीया कुमारी का न्यास करे।

ॐ क्लाँ कुलकुमारिके हृदयाय नमः।
ॐ क्लीँ कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा।
ॐ क्लूँ कुलकुमारिके शिखायै वषट्।
ॐ क्लैँ कुलकुमारिके कवचाय हुम्।
ॐ क्लौँ कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ क्लः कुलकुमारिके अस्त्राय फट्।

षडङ्ग न्यास के बाद कुमारी के तत्तत् अङ्गों पर मातृका न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ नमः कुलकुमारिके शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ नमः कुलकुमारिके मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईँ नमः कुलकुमारिके वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऊँ नमः कुलकुमारिके वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऋँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॠँ नमः कुलकुमारिके वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऌँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॡँ नमः कुलकुमारिके वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ नमः कुलकुमारिके ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ नमः कुलकुमारिके अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ नमः कुलकुमारिके ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ औँ नमः कुलकुमारिके अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ नमः कुलकुमारिके जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अः नमः कुलकुमारिके कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ घँ नमः कुलकुमारिके दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ङँ नमः कुलकुमारिके दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ नमः कुलकुमारिके वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ छँ नमः कुलकुमारिके वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जँ नमः कुलकुमारिके वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ झँ नमः कुलकुमारिके वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ञँ नमः कुलकुमारिके वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टँ नमः कुलकुमारिके दक्षोरौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ठँ नमः कुलकुमारिके दक्षजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ डँ नमः कुलकुमारिके दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ढँ नमः कुलकुमारिके दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ णँ नमः कुलकुमारिके दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तँ नमः कुलकुमारिके वामोरौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ थँ नमः कुलकुमारिके वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दँ नमः कुलकुमारिके वामजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धँ नमः कुलकुमारिके वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नँ नमः कुलकुमारिके वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ नमः कुलकुमारिके दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फँ नमः कुलकुमारिके वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ बँ नमः कुलकुमारिके पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भँ नमः कुलकुमारिके नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मँ नमः कुलकुमारिके उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ नमः कुलकुमारिके हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ नमः कुलकुमारिके दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ नमः कुलकुमारिके ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ नमः कुलकुमारिके वामांसे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ षँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ नमः कुलकुमारिके कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ नमः कुलकुमारिके कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।

ध्यानम्—

शङ्खेन्दुं धवलां दिव्यां द्विभुजां वरदाभयाम्।
चन्द्रमध्यमहामोजभावहावविराजिताम् ।।

ध्यान करके पूजन करे।

इदं पाद्यं कुलकुमारिकायै नमः।
इदमर्घ्यं कुलकुमारिकायै नमः।
इदमाचमनीयं कुलकुमारिकायै नमः।
इदमनुलेपनं कुलकुमारिकायै नमः।
एते अक्षताः कुलकुमारिकायै नमः।
एतानि पुष्पाणि कुलकुमारिकायै नमः।
एष धूपं कुलकुमारिकायै नमः।
एष दीपः कुलकुमारिकायै नमः।
इदं नैवेद्यं कुलकुमारिकायै नमः।
इदं ताम्बूलं कुलकुमारिकायै नमः।
इदं फलं कुलकुमारिकायै नमः।
एषा दक्षिणा कुलकुमारिकायै नमः।

पूजन के वाद प्रर्थना करे।

ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
पूजां गृहाण कौमारि! जगन्मातर्नमोस्तु ते।।१।।
त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम्।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्।।२।।
कलात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम्।।३।।
अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम् ।
शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्।।४।।
कलाधारां कलारूपां कालचक्रस्वरूपिणीम्।
कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम्।।५।।
चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनाशिनीम्।
प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम्।।६।।
सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां देवीं शाङ्करीं प्रणमाम्यहम्।।७।।

दुर्गमे दुःस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गे नमाम्यहम्।।८।।
सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम्।।९।।

ॐ ह्रीँ हंसः कुलकुमारिकाश्रीपादुकां पूजयामि।

प्रार्थना के बाद तीन बार पुष्पाञ्जली प्रदान कर कालिका का पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सन्ध्यायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सरस्वत्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ त्रिमूर्त्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सुभगायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उमायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कुब्जिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालसङ्कर्षिण्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अपराजितायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भैरव्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पीठनायिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षेत्रज्ञायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चर्चिकायै नमः।

मूल मन्त्र से पुष्पाञ्जली प्रदान कर प्रदक्षिणापूर्वक प्रणाम करे

कुमारीसुवासिनीपूजनं परिपूर्णम्

बलिदानप्रकरणम्

छागादि (कूष्माण्ड) बलिदान—

ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा।

युग्म बलि को सिन्दूरादि से अलंकृत करके अर्घ्योदक जल से तीन बार सम्प्रोक्षण कर स्नान कराये।

ॐ वाराही यमुना गङ्ग करतोया सरस्वती।
कावेरी चन्द्रभागा च सिन्धु भैरव सागर।।१।।
पशुपाशविनाशाय हेमकूटस्थिताय च।
पराय परमेष्ठिने नमः हूँकारमूर्तये।।२।।

गन्धोदक से तीन बार प्रोक्षण करके हाथ में पुष्पाञ्जली लेकर मन्त्रपाठ कर समर्पित करे।

ॐ कुष्माण्ड त्वं बलिरूपेण महाभाग्यादुपस्थितः।
प्रणमामि सदा भक्त्या रूपिणं बलिरूपिणम्।।१।।

चण्डिका प्रीतिकामस्य दातुरापद् विनाशिने।
चण्डिका बलिरूपाय बले तुभ्यं नमो नमः।।२।।
यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा।
अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः।।३।।

पार्श्व पूजनम्—

१.ॐ जयन्त्यै नमः।
२.ॐ मङ्गलायै नमः।
३.ॐ काल्यै नमः।
४.ॐ भद्रकाल्यै नमः।
५.ॐ मानस्तोकायै नमः।
६.ॐ विजयायै नमः।
७.ॐ अपराजितायै नमः।
८.ॐ अनन्तायै नमः।

अङ्गपूजनम्—

१.ॐ रुधिरवदनायै नमः।
२.ॐ चण्डिकायै नमः।
३.ॐ चन्द्रार्काभ्यां नमः।
४.ॐ वृहस्पतये नमः।
५.ॐ सरस्वत्यै नमः।
६.ॐ उग्रदन्तिकायै नमः।
७.ॐ महादन्तिकायै नमः।
८.ॐ पृथिव्यै नमः।
९.ॐ धर्माय नमः।

ॐ ह्रीँ श्रीँ वरुणमण्डलाधिष्ठितविग्रहायै पशुरूपचण्डिकायै इमं पशुं प्रोक्षामि स्वाहा। प्रोक्षण करे।

सङ्कल्पः—**ॐ अद्यामुकमास्यमुकपक्षेऽमुकतिथिवारे अमुकगोत्रः प्रवरः अमुकशर्मा छागसमसंख्यकदशवर्षावच्छिन्नश्रीचण्डिकाप्रीतिकामोऽहमेतान् वह्निदैवतान् भगवत्यै श्रीचण्डिकायै तुभ्यं घातयिष्ये।**

ॐ कृष्णं पिनाकपाणिं च कालरात्रिस्वरूपिणम्।
उग्रं रक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनम्।।
रक्ताम्बरधरं चैव पाशहस्तं कुटुम्बिकम्।
पिबमानं च रुधिरं भुञ्जानं कव्यसंहतिम्।।

ॐ कालिका कालि वज्रेश्वरि लौहदण्डाय नमः।

तीन बार संप्रोक्षण करे।

ॐ ह्रीँ। सिन्दूर से मन्त्र को खड्ग के ऊपर लिखे बलि कर्ण में बलि गायत्री सुनाये।

बलि गायत्री—**ॐ ह्रीँ बलिरूपाय विद्महे देविप्रियाय धीमहि तन्न पशुः प्रचोदयात्।**

खड्ग-प्रार्थना—

ॐ असिर्विनाशनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः।
श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोऽस्तु ते।।१।।
इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा।
नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वरः।।२।।
रोहिण्यश्च शरीरं ते धाता देवो जनार्दनः।
पिता पितामहो देवस्त्वं मां पालय सर्वदा।।३।।
नीलजीमूतसङ्काशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः।
भावशुद्धोऽमर्षणश्च अर्जितास्तथैव च।।४।।
इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः।
तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः।।५।।

चण्डिका के जिह्वा की बुद्धि से एक बार में ही घात करे।

ॐ पशुपाशाय विद्महे विप्रकर्णाय धीमहि तन्नश्छागः प्रचोदयात्।

घात के बाद सम्पूर्ण रुधिर मुण्डादि देवी के आगे सम भाग करके दीपक जलाये।

ॐ क्रौँ क्रौँ नमो नमः।

प्रत्येक मुण्ड में दीप प्रज्वलित करके रुधिरादि से तर्पण करे।

१.चामुण्डां तर्पयामि नमः पूर्वे।
२.योगिनीं तर्पयामि नमः दक्षिणे।
३.काकिनीं तर्पयामि नमः पश्चिमे।
४.डाकिनीं तर्पयामि नमः उत्तरे।
५.कालिकां तर्पयामि नमः ईशाने।
६.चरकीं तर्पयामि नमः आग्नेय्याम्।
७.पूतनां तर्पयामि नमः वायव्ये।
८.पापराक्षसीं तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये।

ॐ अद्य दशवर्षावच्छिन्नश्रीचण्डिकाप्रीतिकाममिमं छागरुधिरं समुण्डं विष्णुदैवतं भगवत्यै श्रीचण्डिकायै तुभ्यमहं सम्प्रददे। हाथ में जल लेकर समर्पित करे।

नीराजनविधिः

ॐ फट्। दीपपात्र का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ नमः। दीपपात्र का अभ्यर्चन करे।

ॐ यँ। द्वादश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। वाम हस्ततल को दक्ष हस्तपृष्ठ पर रख कर निवेशन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ जय ध्वनि मातः स्वाहा। घण्टा का पूजन करे।

दीपज्योतिपूजनम्—

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पाहि नो भीतिर्भद्रकाली नमोस्तु ते।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ज्वालामालिन्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना—

जले ज्वाला स्थले ज्वाला ज्वाला पर्वतमस्तके।
त्रैलोक्यव्यापिनी ज्वाला ज्वालादेवी नमोस्तु ते।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ज्वालादेव्यै नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

नीराजनम्—

ॐ कर्पूरवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं च यत्।
आरार्तिकमिदं दिव्यं गृहाण जगदीश्वरि।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा श्रीचण्डिकायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

मूल मन्त्र से पूजन कर एक बार नाभि प्रदेश तक, दो बार स्तन मण्डल तक, चार बार मुख मण्डल तक और पुनः सात बार पूरे शरीर तक आरती घूमाये।

पुष्पाञ्जली विधिः—

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वरि।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा श्रीचण्डिकायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै पुष्पाञ्जलीं समर्पयामि।

तीन बार पुष्पाञ्जली प्रदान कर योनिमुद्रा प्रदर्शित करके छत्र-चामर डुला कर पुनः पुष्पाञ्जली प्रदान करे।

बुद्धिः शरासने क्लृप्ता दर्पणं मङ्गलानि च।
मनोवृत्तिर्विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता।।१।।
ध्वनयो गीतिरूपेण शब्दवाद्यप्रभेदतः।
छत्राणि तव पद्मानि कल्पितानि मया प्रभो।।२।।
सुषुम्ना ध्वजरूपेण प्राणाद्या वा शरात्मना।
अहंकारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तोरथात्मना।।३।।
इन्द्रियाण्यश्वरूपाणि शब्दादीन् रथवर्त्मना।
मनः प्रग्रहरूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः।।४।।
सर्वमन्यं तवाक्लृप्तं तवोपकरणात्मना।।

श्लोकोच्चार-पूर्वक पुष्पाञ्जली प्रदान करे।

दिक्पालादि बलिदान

इन्द्र के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः **प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इन्द्रदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम्।। ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो इन्द्र! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम्।

अग्नि के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः **प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च अग्निदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ त्वन्नोऽअग्ग्रेतवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्न्वश्श्चवन्द्य।। त्रातातोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणस्तवव्व्रते।।

ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नये देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अग्ने! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयताम्।

यम के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यमदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ यमायत्त्वङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा।। स्वाहाघर्म्मायस्वाहा घर्म्मः पित्रे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो यम! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम्।

निर्ऋति के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च निर्ऋतिदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य।। अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु।।

ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतये देय बलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो निर्ऋते! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः-कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम्।

वरुण के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल-प्राप्त्यर्थं च वरुणदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ तत्त्वायामि॒ब्ब्रह्मणा॒व्वन्दमानु॒स्तदाशास्ते॒यजमानोहु॒विर्ब्भि÷।। अहेडमानो व्वरुणेहु॒बोद्ध्युरुशꣳसु॒मानु॒ऽआयु॒ꣳप्प्रमोषीꣳ।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप-दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वरुण! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः-कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम्।

वायु के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल-प्राप्त्यर्थं च वायुदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ आनोनि॒युद्भि÷शु॒तिनीभिरध्व॒रꣳसहु॒स्रिणीभि॒रुपयाहि य॒ज्ञम्।। व्वायोऽ अ॒स्म्मिनत्सवनेमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिःसदानः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वायो! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः-कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम्।

सोम के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल-प्राप्त्यर्थं च सोमदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ व॒यꣳ सोमव्र॒तेतव॒मनस्त॒नूषु॒बिब्भ्रतꣳ।। प्र॒जावन्तꣳ सचे महि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सोमाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः सोमाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाष-भक्तबलिं समर्पयामि।

भो सोम! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः-कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम्।

ईशान के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल-प्राप्त्यर्थं च ईश्वरप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ तमीशानु॒ञ्जगतस्त॒स्थुषु॒स्पतिंधियञ्जि॒न्न्वमवसेहूमहेव॒यम्।। पू॒षानो॒यथा॒ वेदसा॒मसद्वृधेरक्षितापा॒युरदब्धःस्व॒स्तये।।

ॐ भूर्भुवःस्वः ईशानाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः ईशानाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाष-भक्तबलिं समर्पयामि।

भो ईशान! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः-कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन ईश्वरः प्रीयताम्।

ब्रह्मा के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल-प्राप्त्यर्थं च ब्रह्माप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ अ॒स्मेरु॒द्रामे॒हना॒पर्व॑तासोवृ॒त्र॒हत्ये॒भर॑हूतौस॒जोषाः॑।। यः॒ शꣳ सं॑तेस्तुव॒ते धायि॑प॒ज्ज्रऽइन्द्र॑ज्ज्येष्ठाऽअ॒स्माँ२।।ऽअ॒वन्तु॒दे॒वाः॒।।

ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाष-भक्तबलिं समर्पयामि।

भो ब्रह्मन्! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः-कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन ब्रह्मा प्रीयताम्।

अनन्त के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल-प्राप्त्यर्थं च अनन्तप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ स्यो॒ना पृ॑थिविनोभवानृक्ष॒रानि॒वेशनी।। यक्षा॑नु॒ꣳशर्म्म॑स॒ प्प्रथाः॑।।

ॐ भूर्भुवःस्वः अनन्ताय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः अनन्ताय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाष-भक्तबलिं समर्पयामि।

भो अनन्त! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः-कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयताम्।

नवग्रहों के बलिदान

सूर्य के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः**

प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च सूर्यप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ आकृ॒ष्णेन॒रज॑सा॒वर्त॑मानोनिवे॒शय॑न्न॒मृतं॒मर्त्त्यं॑च।। हि॒रण्यये॑न सवि॒तार॒थे॒ना दे॒वोया॑ति॒भुव॑नानि॒पश्य॑न्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्याय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सूर्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित सूर्य! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितः सूर्यः प्रीयताम्।

चन्द्र के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च चन्द्रप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ इ॒मंदे॑वाऽअसप॒त्नꣳसु॑वद्ध्वंमह॒तेक्ष॒त्राय॑मह॒तेज्यैष्ठ्या॑यमह॒तेजान॑राज्ज्या॒येन्द्र॒याय॑।। इ॒मम॒मुष्ष्य॑पु॒त्रम॒मुष्ष्यै॑पु॒त्रम॒स्यै॑व्वि॒शऽए॒षवो॑ऽमी॒ राजा॒ सोमो॒ऽस्माकं॑ ब्ब्राह्म॒णाना॒ꣳ॒राजा॑।।

ॐ भूर्भुवःस्वः उमाऽऽपौरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितायचन्द्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः उमाऽऽपौरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय चन्द्राय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

चन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय उमाऽऽपौ रूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो उमाऽऽपौरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित चन्द्र! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितः सोमः प्रीयताम्।

भौम के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च भौमप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ अ॒ग्निर्मू॒र्द्धादि॒वःक॒कुत्पतिः॑पृथि॒व्याऽअयम्।। अ॒पाꣳरेताꣳसिजिन्वति।।

ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दभूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय भौमाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दभूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय भौमाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

भौमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय स्कन्दभूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो स्कन्द भूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित भौम! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितः भौमः प्रीयताम्।

बुध के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च बुधप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ उद्बु॒ध्यस्वाग्ने॒प्रतिजागृहि॒त्वमि॑ष्टापू॒र्त्तेसꣳसृ॑जेथाम॒यञ्च।। अ॒स्मिन्त्स॒धस्थे॒ऽ अध्युत्तरस्मि॒न्विश्वे॑देवा॒यजमानश्चसीदत।।

ॐ भूर्भुवःस्वः नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बुधाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बुधाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बुध! साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय नारायणविष्णुरूपाधि देवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमंसदीपदधिमाषभक्त बलिं समर्पयामि।

भो नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित बुध! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितः बुधः प्रीयताम्।

बृहस्पति के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च बृहस्पतिप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ बृहस्पतेऽअतिदुर्य्योऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु।। यद्दिदयच्छवसऽ ऋतप्प्रजाततदस्म्मासुद्रविणंधेहिचित्रम्।

ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बृहस्पतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बृहस्पतये देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बृहस्पतये! साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित बृहस्पति! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितः गुरुः प्रीयताम्।

शुक्र के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च शुक्रप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसंब्ब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रंपयꣳसोमंप्प्रजापतिः।। ऋतेनसत्त्य मिन्द्रियंव्विपानꣳशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोऽमृतंमधु।।

ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रेन्द्राणिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शुक्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्रेन्द्राणिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शुक्राय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

शुक्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इन्द्रेन्द्राणिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो इन्द्रेन्द्राणिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित शुक्र! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितः शुक्रः प्रीयताम्।

शनि के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च शनिप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ शन्नो॑दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ऽआपो॑भवन्तुपी॒तये॑।। शंय्यो॒र॒भि स्र॑वन्तुनः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शनैश्चराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शनैश्चराय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

शनैश्चराय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित शनैश्चर! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितः शनैश्चरः प्रीयताम्।

राहु के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च राहुप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ कया॑नश्चि॒त्रऽआभु॑वदू॒तीस॒दावृ॑धः॒सखा॑।। कया॒शचि॑ष्ठया॒ऽवृ॒ता।।

ॐ भूर्भुवःस्वः कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय राहवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय राहवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

राहवे! साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित राहु! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितः राहुः प्रीयताम्।

केतु के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च केतुप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ के॒तुं कृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒पेशो॑मर्य्याऽअपे॒शसे॑।। समु॒षद्भि॑रजा यथाः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय केतवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय केतवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

केतवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित केतु! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितः केतुः प्रीयताम्।

पञ्चलोकपालादिबलिदानम्

गणेश के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च गणेशप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ ग॒णाना॑न्त्वाग॒णप॑तिꣳहवामहेप्प्रि॒याणा॑न्त्वाप्प्रि॒यप॑तिꣳहवामहेनिधी॒नान्त्वा निधि॒पतिꣳहवामहेव्वसोमम।। आहमजानिगर्ब्भ॒धमात्त्वमजासि गर्ब्भ॒धम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गणेशाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो गणेश! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन गणेशः प्रीयताम्।

दुर्गा के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च दुर्गाप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ अम्बे॒ऽअम्बि॒केऽम्बा॑लिके॒नमा॑नयति॒कश्च॒न।। सस॑स्त्यश्व॒कः॑सुभ॑द्रिका ङ्काम्पीलवा॒सिनी॑म्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः दुर्गायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः दुर्गायै देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

दुर्गायै साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो दुर्गे' इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदा भव।

अनेन बलिदानेन दुर्गा प्रीयताम्।

वायु के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्र प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वायुप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ व्वायो॒येतें॑सहु॒स्रिणो॒रथा॑सु॒स्तेभि॒राग॑हि।। नि॒युत्त्वा॒न्त्सोम॑पीतये।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वायो! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम्।

आकाश के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च आकाशप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ घृतंघृतपावानःपिबतुवसांवसापावानः पिबन्तान्तरिक्षस्य हुविरसिस्वाहा।। दिशःप्प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवःस्वः आकाशाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः आकाशाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

आकाशाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो आकाश! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन आकाशः प्रीयताम्।

अश्विनी कुमार के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च अश्विनौप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ यावांकशा मधुमत्याश्श्विनासूनृतावती।। तया यज्ञं मिमिक्षताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः अश्विभ्यां नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः अश्विभ्यां देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अश्विभ्यां साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अश्विनिकुमारौ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदोभव।

अनेन बलिदानेन अश्विनिकुमारौ प्रीयेताम्।

वास्तोस्पति के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वास्तोष्पतिप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः।। यत्त्वेमहेप्रति तन्नोजुषस्वशन्नोभवद्विपदेशंचतुष्पदे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः वास्तोस्पतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः वास्तोष्पतये देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

वास्तोष्पतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वास्तोष्पते! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदोभव।

अनेन बलिदानेन वास्तोष्पतिः प्रीयताम्।

योगिनी के लिये बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीपुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च चतुष्षष्टियोगिनीनां प्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ योगैयोगेत॒वस्त॑रं॒व्वाजेंवाजेंहवामहे।। सखा॑य॒ऽइन्द्रंभूतयें।।

ॐ भूर्भुवःस्वः योगिनीभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः योगिनीभ्यः देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

योगिनीभ्यः साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो योगिन्यः। इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदा भव।

अनेन बलिदानेन योगिनीभ्यः प्रीयन्तां न मम।

क्षेत्रपाल के लिए बलिदान—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च क्षेत्रपालप्रीतये दधिमापभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ न॒हिस्प्पश॒मविदन्न॒न्यम॒स्म्माद्वैश्श्वान॒रात्पुरऽएतार॑म॒ग्ग्नेः।। एनौमवृधन्न॒मृता॒ऽ अमर्त्त्यंव्वैश्श्वन॒रंक्षैत्रजित्त्यायदे॒वाः।।

नमो वैं क्षेत्रपाल त्वं भूतप्रेतगणैः सह।
पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा।।
पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा।।

ॐ भूर्भुवःस्वः क्षेत्रपालाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवःस्वः क्षेत्रपालाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-राक्षस-कूष्माण्ड-वेताल-भूतप्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-पिशाचिनी-ब्रह्म-राक्षस-गणसहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो क्षेत्रपाल! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम्।

प्रार्थना—

बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः।।
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः।
डाकिन्यो यक्षवेतालयोगिन्यः पूतनाः शिवाः।।
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वाः सौम्या विद्याधरानगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः।।
जगतां शान्तिकर्तारः ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः।।
सौम्यो भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः।
भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।।
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र।

अब्राह्मण नापितादि कोई यजमान के मस्तक पर वामावर्त घुमा कर घर के बाहर चौराहे पर ले जाकर रख दे। तथा आचार्यादि यजमान के मस्तक पर अधोलिखित मन्त्र से जल छिड़के—

ॐ हि॒ङ्का॒राय॒ स्वाहा॒ हिंकृ॑ताय॒ स्वाहा॒ क्रन्द॑ते॒ स्वाहा॑ऽव क्रन्दाय॒ स्वाहा॒ प्प्रोथ॑ते॒ स्वाहा॑ प्रप्पो॒थाय॒ स्वाहा॑ ग॒न्धाय॒ स्वाहा॑ घ्रा॒ताय॒ निवि॑ष्टाय॒ स्वाहोप॑विष्टाय स्वाहा॒ सन्दि॑ताय॒ स्वाहा॒ वल्ग॑ते॒ स्वाहा॒ऽसी॑नाय॒ स्वाहा॒ शया॑नाय॒ स्वाहा॒ स्वप॑ते॒ स्वाहा॒ जाग्र॑ते॒ स्वाहा॒ कूज॑ते॒ स्वाहा॒ प्प्रबु॑द्धाय॒ स्वाहा॑ विजृम्भ॑माणाय॒ स्वाहा॒ विचृ॑त्ताय स्वाहा॒ सꣳहा॑नाय॒ स्वाहोप॑स्थिताय॒ स्वाहाऽय॑नाय॒ स्वाहा॒ प्प्राय॑णाय॒ स्वाहा॑।।

पूर्णाहुतिः

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः**

प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च मृडमग्नौ पूर्णाहुतिं होष्यामि।।

ॐ पू॒र्णाद॑र्व्वि॒परा॑पत॒सुपू॑र्ण्णा॒पुन॒राप॑त।। व॒स्नेव॒विक्क्री॑णावहा॒ऽइष॒मूर्ज्ज॑ꣳ सतक्रतोः।। ॐ पुर्णाहुत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ स॒मु॒द्राद॒ूर्म्मिर्म्मधु॑माँ२।।ऽउदा॒र॒दु॒पा॒ꣳशुना॒सम॑मृत॒त्त्वमा॑नट्घृ॒तस्य॒नाम॒गुह्यं॑य्यदस्ति॑जि॒ह्वादे॒वाना॑मृत॑स्य॒नाभि॑ः।। व॒यंनाम॒प्प्रब्र॑वामाघृ॒तस्या॒स्मिन्य॒ज्ञेधा॑रयामा॒नमो॑भिः।। उप॑ब्रह्माश्शृ॑मवच्छ॒स्यमा॑नं॒चतु॑ःशृङ्गो॑ऽवमीद्गौ॒र॒ऽए॒तत्।। च॒त्त्वारि॒श्शृङ्गा॒त्रयो॑ऽअस्य॒पादा॒द्वेशी॒र्षेस॒प्तहस्ता॑सोऽअस्य।। त्रिधा॑ब॒द्धोवृ॑ष॒भोरो॑रवीतिम॒होदे॒वोम र्त्त्यारँ।।ऽआवि॑वेश।। त्रिधा॑हि॒तंप॒णिभि॑र्गु॒ह्यमा॑नंगवि॑दे॒वासो॑घृ॒तमन्व॑विन्दन्।। इन्द्र॒ऽएकꣳ॒सूर्य्य॒ऽएकं॑ञ्जजान॒वे॒नादेक॑ꣳस्व॒धया॒निष्ट॑तक्षुः।। ए॒ताऽअ॑र्षन्ति॒हृद्या॑त्समु॒द्राच्छ॒तव्र॑जारि॒पुणा॒नाव॒चक्षे।। घृ॒तस्य॒धारा॑ऽअ॒भिचा॑कशीमिहि॒र॒ण्ययो॑वे॒त॒सोमध्य॑ऽआसाम्।। स॒म्म्यक्स्र॑वन्तिस॒रिता॒नधेना॑ऽअ॒न्तर्हृ॒दामन॑सापू॒यमा॑नाः।। ए॒तेऽअ॑र्षन्त्यू॒र्म्मयो॑घृ॒तस्य॑मृ॒गाऽइ॑वक्षिप॒णोरीष॑माणः।। सिन्धो॑रिवप्प्राध्व॒नेशू॒घ॒नासो॒वातप्प्रमियः॑पतयन्तिय॒ह्वाः।। घृ॒तस्य॒धारा॑ऽअरु॒षोनवा॒जी काष्ठा॑भि॒न्दन्नू॒र्म्मिभि॑ः पिन्व॑मानः।। अ॒भिप्प्र॑वन्त॒सम॑नेव॒योषाः॑ कल्ल्या॒ण्य॑ःस्म्मय॑मानासोऽअ॒ग्ग्निम्।। घृ॒तस्य॑धारा॑ःस॒मिधो॑नसन्त॒ताजु॑षा॒णोह॑र्य्यतिजा॒तवे॑दाः।। क॒न्न्या॒ऽइव॑वह॒तुमेत॒वाऽउ॑ऽअ॒ञ्ज्य॒ञ्जा॒नाऽअ॒भिचा॑कशीमि।। यत्र॒सोम॑ःसू॒यते॒यत्र॑य॒ज्ञोघृ॒तस्य॒धारा॑ऽअ॒भितत्प॑वन्ते।। अ॒भ्य॒र्षतसुष्टु॒तिंगव्य॑मा॒जिम॒स्मासु॑भ॒द्राद्द्रवि॑णानिधत्त।। इ॒मं य॒ज्ञंन॑यतदे॒वता॑नोघृ॒तस्य॒धारा॒मधु॑मत्पवन्ते।। धाम॑न्ते॒व्विश्श्वं॒भुव॑न॒मधि॑श्श्रि॒तम॒न्तःस॑मु॒द्रेहृ॒द्य॒न्तरायु॑षि।। अ॒पामनी॑केसमि॒थेयऽआभृ॑त॒स्तम॑श्यामम॒धुम॑न्तंतऽऊ॒र्म्मिम्।। पुन॑स्त्वाऽऽदि॒त्यारु॒द्राव्व॒स॑वः॒समि॑न्धतां॒पुन॑र्ब्र॒ह्माणो॑व्वसुनीथय॒ज्ञैः।। घृ॒तेन॒त्वंत॒न्न्वं॒व्वर्द्धयस्वस॒त्त्याः॑ सन्तु॒यज॑मानस्य॒कामाः॑।। मू॒र्द्धानं॑दि॒वोऽअ॑र॒तिंपृ॑थि॒व्याव्वै॑श्श्वान॒रमृ॒तऽआजा॒तम॒ग्निम्।। क॒विꣳस॒म्म्राज॒मति॑थिं॒जना॑नामा॒सन्नापात्रं॑जनयन्तदे॒वाः।। पू॒र्णाद॑र्व्वि॒परा॑पत॒सुपू॑र्ण्णा॒पु॒नराप॑त।। व॒स्नेव॒विक्क्री॑णावहा॒ऽइष॒मूर्ज्ज॑ꣳशतक्रतो स्वाहा।।

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नयेऽद्भ्यश्श्च न मम।।

वसोर्द्धाराहोमः

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीपुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वसोद्धारा होष्यामि।।

कुण्ड के ऊपर वसोर्द्धारा पूर्व की तरफ करके उसके ऊपर घृतपात्र रख कर

नीचे यवमात्र छिद्र रख कर अग्नि के ऊपर स्रुक के मुख में सुवर्णनिर्मित जिह्वा बांध कर वसोर्द्धारा छोड़े।

ॐ सप्ततेऽअग्नेसमिधःसप्तजिह्वाःसप्तऽऋषयःसप्तधामप्प्रियाणि।। सप्तहोत्राःसप्तधात्त्वायजन्तिसप्तयोनीरापृमस्वघृतेनस्वाहा।। शुक्रज्ज्योतिश्च्चचित्रज्ज्योतिश्च्चसत्यज्ज्योतिश्च्चज्ज्योतिष्म्माँश्च्च।। शुक्रश्च्चऋतपाश्च्चात्यꣳहाः।। ईदृङ्ङ्प्रतिसदृङ्ङ्।। मितश्च्चसम्मितश्च्चसभराः।। ऋतश्च्चसत्यश्च्चध्रुवश्च्चधरुणश्च्च।। धर्त्ताचविधर्त्ताचविधारयः।। ऋतजिच्चसत्य जिच्चसेनजिच्चसुषेणश्च्च।। अन्तिमित्रश्च्चदूरेऽअमित्रश्च्चगणः।। ईदृक्षासऽएतादृक्षासऽऊपुणःसदृक्षासःप्प्रतिसदृक्षासऽएत न।।मितासश्च्चसम्मितासोनोऽअद्यसभरसोमरुतोयज्ञेऽअस्मिन्।। स्वतवाँश्च्चप्प्रघासीचसान्तपनश्च्चगृहमेधीच।। क्रीडीचशाकीच्चोज्जेषी।। इन्द्रंदैवीर्व्विशोमरुतोऽनुवर्त्मानोगऽभवन्यथेन्द्रंदैवीर्व्विशोमरुतोऽनुवर्त्मानोगऽभवन्।। एवमिमंयजमानंदैवीश्च्चव्विशोमानुषीश्च्चानुवर्त्मानोभवन्तु।। इमꣳस्तनमूर्ज्जस्वन्तंधयापांप्प्रपीनमग्नेसरिरस्यमद्ध्ये।। उत्संजुषस्वमधुमन्तमर्व्वन्त्समुद्द्रियꣳसदनमाविशस्व।। घृतंमिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्श्रितोघृतम्वस्यधाम।। अनुष्ष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंव्वृषभवक्षिहव्यम्।। ॐ व्वसोःपवित्रमसिशतधारं व्वसोःपवित्रमसिसहस्रधारम्।। देवस्त्वासवितापुनातुव्वसोः पवित्रमसि शतधरिण सुप्वा।। ॐ कामधुक्षः स्वाहा।।

इदमग्नये वैश्वानराय न मम।।

अग्नि प्रदक्षिणा—

ॐ अग्ग्नेनयसुपथारायेऽअस्मान्विश्श्वानिदेवव्वयुननिविद्वान्।। युयोद्ध्यस्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठांतेनमऽउक्तिंविधेम।।

परिक्रमा करके यजमान अग्नि के पश्चिम दिशा में पूर्वमुख वैठे।

हवनीयकुण्डभस्मधारणम्—आचार्य कुण्ड के ईशान कोण से भस्म लेकर पहले आचार्य के सहित समस्त ब्राह्मण फिर यजमान के शरीर में भस्म-लेपन करे।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः। मन्त्र से ललाट पर भस्म लगाये।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्। मन्त्र से ग्रीवा पर भस्म लगाये।

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्। मन्त्र से दक्षिण बाहुमूल पर भस्म लगाये।

ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्। मन्त्र से हृदय पर भस्म लगाये।

संस्रवप्राशनम्। प्रोक्षणीपात्र के जल का यजमान को प्राशन अथवा घ्राण कराये।

आचमनम्। पश्चात् आचमन कराये।

पवित्राभ्याम् मार्जनम्। प्रणीता पात्रस्थित पवित्री से मार्जन करे।

अग्नैपवित्रप्रतिपत्तिः। पवित्री का अग्नि में प्रक्षेप करे।

विभिन्नदानादिसङ्कल्पः

ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे।।**

ब्रह्मा पूर्णपात्र ग्रहण कर बोले—**ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु।**

प्रणीता पात्र के जल से ब्रह्मा यजमान के ऊपर उपयमन कुशा से अभिषेक करे।

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।

उपयमन कुशा का अग्नि में प्रक्षेप कर ब्रह्मग्रन्थि को खोल दे।

श्रेयोदानम्—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये।।**

सौमनस्यमस्तु। पुष्प प्रदान करे।

अक्षतं चारिष्टं चास्तु। अक्षत प्रदान करे।

भवन्नियोगेन मया अस्मिन् सार्द्धनवचण्डीकर्मणि यत्कृतम् आचार्यत्वं एभिर्ब्रह्मगाणपत्यसदस्योपद्रष्टाजापकादिभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं जपादि हवनादिकं च तेनोत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत् साक्षतेन तुभ्यमहं सम्प्रददे। तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव।

यजमान बोले—**भवामि।**

आचार्यादिभ्यो दक्षिणादानम्—

श्रेयोदान के बाद आचार्यादि ब्राह्मणों को कर्मदक्षिणा (मुख्य दक्षिण) तुरन्त अवश्य दे देनी चाहिए; विलम्ब करने से प्रायश्चित्त होता है।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थञ्च आचार्यादिभ्योब्राह्मणेभ्यो विभज्यमनसोद्दिष्टांदक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।।**

आचार्याय गोदानसङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं गोनिष्क्रय भूतं द्रव्यं अमुकगोत्रस्य प्रवरस्य अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

ब्रह्मणे वृषभदानसङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं वृषभनिष्क्रयभूतं द्रव्यममुकगोत्रस्य प्रवरस्य अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

गाणपत्ये अश्वदानसङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं अश्वनिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमुकगोत्रस्य प्रवरस्य अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय गाणपतये तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

उपद्रष्टाय गन्त्रीदानसङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं गन्त्रीनिष्क्रयभूतं द्रव्यममुक गोत्रः प्रवरः अमुकशर्मणे उपद्रष्टात्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

सदस्येभ्यः सुवर्णदानसङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्र प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं सुवर्णनिष्क्रयभूतं द्रव्यममुकगोत्रेभ्यो प्रवरेय अमुकामुकशर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यो तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

भूयसीदक्षिणासङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं निष्क्रयभूतं द्रव्यं नानानामगोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो नटनर्तकगायकेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां विभ्यज्य दातुमहमुत्सृजे।**

सङ्कल्प करके ब्राह्मणों तथा अन्य बहनों तथा गरीब लोगों को भूयसी दक्षिणा प्रदान करे।

ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यथासंख्यकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये।**

दानादिसङ्कल्पं पूर्णम्

◆

आवाहितदेवतानामुत्तरपूजनम्

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं चावाहितदेवानामुत्तरपूजनं करिष्ये।**

सङ्कल्प करके आवाहित देवताओं का यथोपचार उत्तरपूजन करे। पश्चात् प्रधान पीठसहित समस्त पीठों का दक्षिणा के सहित आचार्य को दान करे।

महागणपति-पूजनम्—**ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम।। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः ऋद्धिसिद्धिसहिताय महागणाधिपतये नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

महागौरी-पूजनम्—**ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन।। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः महागौर्यै नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

स्वस्तिकलशस्थदेवता-पूजनम्—**ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः।। अहेडमानो व्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुः प्प्रमोषीः।।**

स्वस्तिकलशस्थ ॐ अपांपते वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

षोडशमातृकानां देवतापूजनम्—

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश।।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः।।

गणेशसहितगौर्यादि आत्मनः कुलदेवतान्त आवहितषोडशमातृभ्यो नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

सप्तघृतमातृकानां देवतापूजनम्—

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः।।

यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्।।

पूजनेन श्र्यादिसरस्वन्त्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवानां पूजनम्—ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः।। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्माद्यावाहितसर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रधानकलशस्थदेवानां पूजनम्—ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः।। अहेडमानो वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्रमोषीः।।

प्रधानकलशस्थ ॐ अपांपते वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

दुर्गा देवी का षोडशोपचार पूजन

१. ध्यानम्—

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

२. आसनम्—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

३. पाद्यम्—

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

४. अर्घ्यम्—

ॐ कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

५. आचमनीयम्—

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

६. स्नानीयम्—

ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

७. पुनराचमनीयम्—

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभि स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

८. पञ्चामृतस्नानम्—

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

९. शुद्धोदकस्नानम्—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

१०. पुनराचमनीयम्—

ॐआदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ विल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

११. वस्त्रोपवस्त्रम्—

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

१२. यज्ञोपवीतम्—

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

१३. गन्धम्—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

१४. अक्षतम्—

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

१५. पुष्पमालाम्—

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

१६. अबीरबुक्काम्—

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

१७. सिन्दूरम्—

ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जवाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य—

१८. धूपम्—

ॐ दशाङ्गगुगुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः धूपं समर्पयामि।

१९. दीपम्—

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

२०. नैवेद्यम्—

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

२१. करोद्वर्तनम्—

ॐ नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

२२. ताम्बूलम्—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलपत्रं पूगीफलं एलालवङ्गादिकञ्च समर्पयामि।

२३. फलम्—

ॐ द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाऽऽम्रकपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्वादिफलानि प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

२४. दक्षिणाम्—

ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान्कुरु मनोरथान्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

२५. प्रदक्षिणाम्—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषानहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

२६. पुष्पाञ्जलीम्—

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलीं समर्पयामि।

भैरवपूजनम्—

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः साङ्गाय सपरिवाराय सावरणाय सायुधाय सशक्तिकाय वटुकभैरवाय नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ग्रहमण्डलस्थदेवानां पूजनम्—ॐ ग्रहाऽऊर्जाहुतयो॒व्यन्तौंव्विप्रायम॒तिम्।। **तेषा॒ंव्विशिप्प्रियाणांव्वोऽहमिष॒मूर्ज्ज॒ꣳ॒समग्ग्रभमुपयामगृहीतो॒ऽसीन्द्रायत्त्वा॒जुष्टंगृह्णाम्म्ये॒षते॒योनि॒रिन्द्रायत्त्वा॒जुष्टंजमम्।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्याद्यनन्तग्रहमण्डस्थदेवताभ्यो नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

असंख्यातरुद्राणां पूजनम्—**ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यः।। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽ अस्तुरुद्ररूपेभ्यः स्वाहा।।**

ॐ भूर्भुवःस्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

नीराजन—**ॐ इदꣳहविःप्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्वगणꣳस्वस्तये।। आत्मसनिप्प्रजासनिपशुसनिलोकसन्न्यभयसनि।। अग्निःप्प्रजांबहुलांमेकरोत्वन्नंपयोरेतोऽअस्म्मासुधत्त।। ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजःपितुरप्प्रायिधामभिः।। दिवःसदाꣳसिबृहतोव्वितिष्ठसऽआत्त्वेषंव्वर्त्ततेतमः।।**

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
मैया तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव जी।।१।।
मैया जय अम्बे गौरी।।
माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को।
मैया टीको मृगमद को।
उज्वल से दोऊ नयना, चन्द्रवदन नीको।।२।।
मैया जय अम्बे गौरी।।
कनक समाना कलेवर, रक्ताम्बर राजे।।
मैया रक्ताम्बर राजे।।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे।।३।।
मैया जय अम्बे गौरी।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारि।।
मैया खड्ग खप्पर धारि।।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःख हारी।।४।।
मैया जय अम्बे गौरी।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।।
मैया नासाग्रे मोती।।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति।।५।।
मैया जय अम्बे गौरी।।
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।।
मैया महिषा सुर घाती।।
धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती।।६।।
मैया जय अम्बे गौरी।।

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।।
मैया शोणित बीज हरे।।
मधु कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे।।७।।
मैया जय अम्बे गौरी।।
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।।
मैया तुम कमला रानी।।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।।८।।
मैया जय अम्बे गौरी।।
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों।।
मैया नृत्य करत भैरों।।
बाजत ताल मृदङ्ग, और बाजे डमरू।।९।।
मैया जय अम्बे गौरी।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।।
मैया तुम ही हो भरता।।
भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पति करता।।१०।।
मैया जय अम्बे गौरी।।
भुजा चार अति शोभित, वरद अभय धारी।।
मैया वरद अभय धारी।।
मन वाच्छित फल पावे, सेवत नर नारी।।११।।
मैया जय अम्बे गौरी।।
कंचन थाल विराजत, अगर कपुर बाती।।
मैया अगर कपुर बाती।।
श्री माल केतु मे राजत, कोटि रतन ज्योति।।१२।।
मैया जय अम्बे गौरी।।
ये अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावें।।
मैया जो कोई नर गावें।।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे।।१३।।
मैया जय अम्बे गौरी।।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामे गौरी।
मैया तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव जी।।
मैया हरि ब्रह्मा शिव जी।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि।।
कदलीगर्भसम्भूतं, कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे, पश्य मे वरदो भव।।

श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिणीं श्रीदुर्गादेवतां कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।।

जलेन शीतलीकरणम्—

पात्रमध्ये स्थितं तोयं, भ्रामितं देवतोपरि।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां, सर्वं पापं व्यपोहतु।।

पुष्पैः देवाभिवन्दनम्, आरार्तिक्यग्रहणम्, हस्तौ प्रच्छालनम्, पुष्पसंग्रहणम्, मन्त्रपुष्पाञ्जली।

पुष्प से देवताओं का अभिनन्दन करके आरती ग्रहण करने के बाद दोनों हाथ धोकर दोनों हाथों में फुल लेकर पुष्पाञ्जली बोल कर भगवती को तथा सभी देवताओं को समर्पित करे।

पुष्पाञ्जलिः—**ॐ य॒ज्ञेन॑य॒ज्ञम॑यजन्तदे॒वास्तानि॒धर्म्मा॑णिप्प्रथ॒मान्न्या॑सन्।। ते॒ह॒नाक॑म्ममहि॒मानः॑सचन्त॒यत्र॒पूर्व्वे॑सा॒द्ध्याःसन्ति॑दे॒वाः।। ॐ राजाधिराजायप्रसह्य साहिनेनमोवयंवैश्रवणायकुर्महेसमेकामान्कामकामायमह्यंकामेश्वरोवैश्रवणो ददातु।। कुवेरायवैश्रवणायमहाराजायनमः। ॐ स्वस्तिसाम्राज्यंस्वाराज्यंवैराज्यं पारमेष्ठ्यंराज्यंमहाराज्यमाधिपत्यमयंसमन्तपर्यायैस्यात्सार्वभौमःसार्वायुषां तदपरार्धात्पृथिव्यैसमुद्रपर्यन्तायाऽएकराडिति।। तदप्येषश्लोकोऽभिगीतोमरुतः परिवेष्टारोमरुत्तस्याऽवसन्गृहे।। आवीक्षितस्यकामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।**

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वरि!।।

ॐ भूर्भुवःस्वः मण्डपस्थ आवाहितदेवतासहितायै साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलीं समर्पयामि।

देवीपुष्पाञ्जलीस्तोत्रम्—

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिसुते,
गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूतिकृते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।१।।

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते,
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते।
दनुजनिरोषिणि दुर्मदशोषिणि दुर्मुनिरोषिणि सिन्धुसुते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।२।।
अयि जगदम्ब! कदम्बवनप्रियवासिनि तोषिणि हासरते,
शिखरिशिरोमणितुङ्गहिमालयशृङ्गनिजालयमध्यगते ।
मधुमधुरे मधुकैटभभञ्जिनि महिषविदारिणि रासरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।३।।
अयि निजहुंकृतिमात्रनिराकृतधूम्रविलोचनधूम्रशते,
समरविशोषितरोषितशोषितबीजसमुद्भवबीजलते ।
शिव शिव शुम्भनिशुम्भ महाहव तर्पितभूतपिशाचरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।४।।
अयि शतखण्डविखण्डितरुण्डवितुण्डितशुण्डगजाधिपते,
निजभुजदण्डनिपातितचण्डविपाटितमुण्डभटाधिपते ।
रिपुगजगण्डविदारणचण्डपराक्रशौण्डमृगाधिपते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।५।।
धनुरनुषङ्ग–रणक्षणसङ्ग–परिस्फुरदङ्ग–नटत्कटते,
कनकपिशङ्ग–पृषत्कनिषङ्ग–रसोद्भटशृङ्गहताबटुके ।
हतचतुरङ्ग–बलत्क्षितिरङ्ग–घटद्बहुरङ्गरटद्बटुके,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।६।।
अयि रणदुर्मद शत्रुवधाद्धर दुर्धरनिर्भर शक्तिवृते,
चतुरविचार धुरीणमहाशय दूतकृत प्रमथाधिपते।
दुरित दुरीह दुराशय दुर्मति दानवदूत दुरन्तगते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।७।।
अयि शरणागत वैरिवधुजनवीरवराभवदायिकरे,
त्रिभुवनमस्तकशूलविरोधि शिरोधि कृतामलशूलकरे।
दुमि दुमितामर दुन्दुभिनाद मुहुर्मुखरीकृत दिङ्निकरे,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।८।।
सुरललना ततथेयि तथेयि तथाभि नयोत्तर नृत्यरते,
कृतकुकुथा कुकुथोदि डदादिक ताल कूतुहल गानरते।
धुधुकुट धूधुट धिन्धिमितध्वनि धीरमृदङ्ग निनादरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।९।।

जय जय जाप्यजये जयशब्द परस्तुति तत्पर विश्वनुते,
झणझण झिंझिम झिंकृत नूपुर शिञ्जित मोहित भूतपते।
नटित नटार्ध नटोनटनायक नाट ननाटितनाट्यरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।१०।।
अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोरमकान्तियुते,
श्रितरजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रभृते।
सुनयन विभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।११।।
महित महाहव मल्ल मतल्लिक वल्लित रल्लित भल्लिरते,
विरचित वल्लिकपालिक पल्लिक झिल्लित भिल्लिक वर्गवृते।
श्रुतकृतपुल्ल समुल्लतसितारुण तल्लज पल्लव सल्ललिते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।१२।।
अयि सुदतीजन लालस मानस मोहन मन्मथ राजसुते,
अविरल गण्डगलन्मदनेदुर भत्तमतङ्गजराजगते।
त्रिभुवन भूषण भूतकलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।१३।।
कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामलभालतले,
सकलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामलभालतले।
सकलविलास कलानिलय क्रमकेलि चलत्कलहंसकुले,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।१४।।
करमुरलीरव वर्जित कूजित लज्जितकोकिल मञ्जुमते,
मिलित मिलिन्द मनोहर गुञ्जित रञ्जित शैल निकुञ्जगते।
निजगणभूत महाशबरीगण रङ्गण सम्भृत केलिरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।१५।।
कटितट पीत दुकूलविचित्र मयूख तिरस्कृत चण्डरुचे,
जित कनकाचल मौलि मदोर्जित गर्जित कुञ्जर कुम्भकुचे।
प्रणतसुराऽसुर मौलि मणिस्फुरदंशु लसन्नख चन्द्ररुचे,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।१६।।
विजित सहस्र करैक सहस्र करैक सहस्रकरैकनुते,
कृतसुरतारक सङ्गरतारक सङ्गरतारक सूनुनुते।
सुरथसमाधि समानसमाधि समानसमाधि सुजाप्यरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।१७।।

पदकमलं करुणा निलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे,
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
तव पदमेव परं पदमस्त्विति शीललयो मम किं न शिवे,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।१८।।
कनक लसत्कलशीकजलैरनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवम्,
भजति स किं न शचीकुचकुम्भ नटीपरिरम्भ सुखानुभवम्।
तव चरणं शरणं करवाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवम्
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।१९।।
तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं कलयन्ननुकूलयते,
किमुपुरुहुतपुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमुनक्रियते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।२०।।
अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे,
अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासि रमे।
यदुचित्तमत्र भवत्पुरगं कुरु शाम्भवि देवि दयां कुरु मे,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि! रम्यकपर्दिनि! शैलसुते।।२१।।
स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत्।
परमया रमया स निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत्।।२२।।

देव्यापुष्पाञ्जलीस्तोत्रं श्रीदुर्गादेवतार्पणमस्तु

◆

अपराधक्षमापन स्तुतिपाठ—

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो,
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथा।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं,
परं जाने मातस्त्वदनुशरणं क्लेशहरणम्।।१।।
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणाऽलसतया,
विधेयाऽशक्यत्वात् तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।२।।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः,
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।३।।
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता,
न वा दत्तं देवि! द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथाऽपि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत् प्रकुरुषे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।४।।
परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया,
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नाऽपि भविता,
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्।।५।।
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा,
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं,
जनः को जानीते जननि जपनीयं फलमिदम्।।६।।
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो,
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपालीभूतेशो भजति जगदीशैकपदवीम्,
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्।।७।।
न मोक्षस्याऽऽकांक्षा भवविभववाच्छापि च न मे,
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छाऽपि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै,
मृडानि रुद्राणि शिव शिव भवानीति जपतः।।८।।
नाऽऽराधितासि विधिना विविधोपचारैः,
किं रूक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे,
धत्से कृपामुचितमम्ब! परं तवैव।।९।।
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः, क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति।।१०।।
जगदम्ब! विचित्रमत्र किं, परिपूर्णा करुणाऽस्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परापरं न हि, माता समुपेक्षते सुतम्।।११।।

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु।।१२।।

देव्यापराधक्षमापनस्तुतिपाठं श्रीदुर्गादेव्यार्पणमस्तु

●

भवानी स्तुति—

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता,
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।१।।
भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः,
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसारपाशः प्रबद्धः सदाऽहं,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।२।।
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं,
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।३।।
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं,
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वाऽपि मात-
र्गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।४।।
कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः दुराचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।५।।
प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं,
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चाऽन्यत्सदाऽहं शरण्ये,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।६।।
विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे,
जले चाऽनले पर्वते शत्रु मध्ये।

अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।७।।
अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो,
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाऽहं,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।८।।

श्रीभवानीस्तुतिः श्रीदुर्गादिव्यार्पणमस्तु

●

दुर्गास्तुतिः—

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे,
नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्यपादारविन्दे,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।१।।
नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे,
नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।२।।
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य,
भयार्तस्य भीतस्य बुद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।३।।
अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये-
ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।४।।
अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे,
विपत्सागरे मज्जतां देहभाजां।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतुः,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।५।।
नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला,
समुत्खण्डिता खण्डिताशेषशत्रो।

त्वमेका गतिर्देवि निस्तारबीजं,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।६।।
त्वमेवाघभावाधृता सत्यवादीः,
न जाता जितक्रोधनात्क्रोधनिष्ठा।
इडापिङ्गला त्वं सुषुम्ना च नाडी,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।७।।
नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे,
सरस्वत्यरुन्धन्त्यमोघस्वरूपे।
विभूतिः शची कालरात्रिः सतित्वं,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।८।।
शरणमसि सुराणां सिद्धविद्याधराणां,
मुतिमनुजपशूनां दस्युभिस्त्रासितानाम्।
नृपतिगृहगतानां व्याधिभिः पीडितानां
त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद।।९।।

फलश्रुतिः—

इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तमापदुद्धारहेतुकम्।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा पठनाद् घोरसंकटात्।।१०।।
मुच्यते नाऽत्र सन्देहो भुवि स्वर्गे रसातले।
सर्वं वा श्लोकमेकं वा यः पठेद् भक्तिमान् सदा।।११।।
स सर्वं दुष्कृतं त्यक्त्वा प्राप्नोति परमं पदम्।
पठनादस्य देवेशि किं न सिध्यति भूतले।।१२।।
स्तवराजमिमं देवि संक्षेपात् कथितं मया।।

अनेन स्तुतिपाठाख्येन श्रीदुर्गादेवता प्रीयतां न मम।

●

आवाहितदेवतानां विसर्जनम्—स्तुत्यादि पाठ करने के बाद देवी के सहित समस्त देवों को अपने-अपने लोक पधारने के लिए प्रार्थना कर ब्राह्मणों, कुमारियों तथा सुवासिनियों को भोजन कराकर दक्षिणादि से सन्तुष्ट कर आशीर्वाद ग्रहण करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्माङ्गत्वेन आवाहितदेवतानां उत्थापनं विसर्जनं करिष्ये।।**

संकल्प करके सानुनय अग्नि तथा आवाहित समस्त देवताओं का यथोपचार पुष्पाक्षतादि से पूजन करके देवताओं तथा अग्नि को स्व-स्वलोकगमनार्थ विदा कर कर्म का विसर्जन करे।

ॐ उत्तिष्ठब्ब्रह्मणस्पतेदेव॒ययन्तस्त्वेमहे।। उप॒प्प्रयन्तुम॒रुतःसु॒दानव॒ऽइन्द्र प्प्रा॒शूर्ब्भवा॒सचा।। ॐ यज्ञंगच्छय॒ज्ञपतिंगच्छ॒स्वांयोनिंगच्छ॒स्वाहा।। एषतेय॒ज्ञो यज्ञपतेस॒हसूक्तवाक॒ःसर्व्ववीर॒स्तंजुषस्व॒स्वाहा।।

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन।।

प्रार्थना—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः।।
यत्पादपङ्कजस्मरणात् यस्य नामजपादपि।
न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्।।

ॐ विष्णवे नमः।। ॐ विष्णवे नमः।। ॐ विष्णवे नमः।। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।।

अनेन यथाशक्तिकृतेन सार्द्धनवचण्डीकर्मणा श्रीमहापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्।

प्रधानपीठादिदानम्—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थञ्च इमानि सोपष्कर सहितानिप्रधनपीठादीनि अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाचार्य तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

ब्राह्मणों के सहित आचार्य सपरिवार यजमान का रुद्र कलश तथा प्रधान कलश के जल को एकत्र कर अभिषेक करे।

अभिषेक:—

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥
प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान्यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जावपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमाभौमो बुधजीवसिताऽर्कजाः॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः॥
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये॥

ॐ पय॑÷पृथि॒व्यांपय॒ऽओष॑धीषु॒पयो॑दि॒व्य॒न्तरि॑क्षे॒पयो॑धाः॥ पय॑स्वतीः॒प्प्र॒दिश॑÷ सन्तु॒मह्य॑म्॥ ॐ पञ्च॑न॒द्यः॒सर॑स्वती॒मपि॑यन्ति॒सस्रो॑तसः॥ सर॑स्वती॒तुप॑ञ्च॒धासो दे॒शेभ॑वत्स॒रित्॥ ॐ व॒रुण॑स्यो॒त्तम्भ॑नमसि॒व्वरु॑णस्यस्कम्भ॒सर्ज्ज॑नी॒स्थो॒व्वरु॑णस्यऽ ऋ॒तसद॑न्न्यसि॒व्वरु॑णस्यऽऋ॒तसद॑नमसि॒व्वरु॑णस्यऽऋ॒तसद॑नमासीद॥ ॐ पुनन्तु॑मा दे॒वज॒नाः॒पुन॑न्तु॒मन॑साधि॒य॑÷॥ पुन॑न्तु॒व्विश्वा॑भू॒तानि॒जात॑वेदः॒पुनी॒हिमा॑॥ ॐ दे॒वस्य॑त्वा सवि॒तुः॒प्प्र॑स॒व्वे॒ऽश्विनो॑र्ब्बा॒हुभ्या॑म्पू॒ष्णोहस्ता॑भ्याम्॥ सर॑स्वत्यैव्वा॒चोय॒न्तु॒र्य॒न्त्रितयै॑ दधामि॒बृह॒स्प्पते॑ष्ट्वा॒साम्प्राज्येना॒भिषि॑ञ्चाम्यसौ॥ ॐ दे॒वस्य॑त्वासवि॒तुः॒प्प्र॑स॒व्वे॒ ऽश्विनो॑र्ब्बा॒हुभ्या॑म्पू॒ष्णोहस्ता॑भ्याम्॥ सर॑स्वत्यैव्वा॒चोय॒न्तुर्य॒न्त्रेणा‌ग्ग्नेः॒साम्प्राज्येना॒ भिषि॑ञ्चामि॥ ॐ दे॒वस्य॑त्वासवि॒तुः॒प्प्र॑स॒व्वे॒ऽश्विनो॑र्ब्बा॒हुभ्या॑म्पू॒ष्णोहस्ता॑भ्याम्॥ अ॒श्विनो॒र्भैष॑ज्येन॒तेज॑सेब्रह्मवर्च॒साया॒भिषि॑ञ्चामि॒॥ सर॑स्वत्यै॒भैष॑ज्येनव्वी॒र्या॒न्नाद्या॑या॒ भिषि॑ञ्चामीन्द्र॑स्येन्द्रियेण॒बला॑यश्रि॒यैयश॑से॒ऽभिषि॑ञ्चामि॥ ॐ विश्वा॑निदेव सवितर्द्दु॒रि॒तानि॒परा॑सुव॥ यद्भ॒द्रन्तन्न॒ऽआसु॑व॥ धा॒मच्छ॒द॒ग्ग्निरिन्द्रो॑ब्र॒ह्मादे॒वोबृह॒स्प्पति॑÷॥ सचे॑तसो॒व्विश्वे॑दे॒वाय॒ज्ञम्प्राव॑न्तनः॒शु॒भे॥ त्वंय्य॑-

विष्ठदाशुषोनॄꣳपाहि शृणुधीगिरः।। रक्षा तोकमुतत्क्मना।। ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यंशुष्मिणः।। प्रप्रंदातारंतारिषऊर्जंनोंधेहिद्विपदेचतुष्पदे।। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापꣳशान्तिरोषधयꣳ शान्तिः।। ब्वनस्प्पतयꣳशान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्ब्रह्म शान्तिꣳसर्वꣳशान्तिꣳशान्तिरेवशान्तिꣳसामाशान्तिरेधि।। यतोयतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु।। शन्नःकुरुप्प्रजाब्भ्योभयन्नꣳप्पशुब्भ्यः।। सुशान्तिर्भवतु।।

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।।

छायापात्रदानम्—कांस्यपात्र में घृत भरकर उसमें द्रव्य डालकर मुख अवलोकन करके संकल्प करे।

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं सर्वारिष्टविनाशार्थं चाज्यावेक्षणं करिष्ये।।

ॐ रूपेणवोरूपमब्भ्यागांतुथोवोंविश्ववेदाविभजतु।। ऋतस्यपथाप्प्रेतचन्द्र दक्षिणाविस्वःपश्श्यव्यन्तरिक्षंयतस्वसदस्यैः।।

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं कृतस्य सार्द्धनवचण्डीकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं इदमवलोकितं कांस्यपात्रस्थितं सदक्षिणां मृत्युञ्जयदैवतं मृत्युञ्जयदेवताप्रीतये सर्वारिष्टविनाशार्थञ्च अमुकगोत्राय अमुकशर्मणं ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

संकल्प करके यजमान ब्राह्मण को आज्यपात्र दे दे। ब्राह्मण आज्य पात्र ग्रहण कर स्वस्ति वाक्य बोलकर यजमान को आशीर्वाद प्रदान करे।

क्षमापनम्—

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।
जपच्छिद्रं तपच्छिद्रं यच्छिद्रं शान्तिकर्मणि।
सर्वं भवतु मेऽछिद्रं ब्राह्मणां प्रसादतः।।
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वर।।

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।
कर्मणा मनसा वाचा सार्द्धनवचण्डीर्मया कृता।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वरि।।

यजमानरक्षाबन्धनम्—आचार्य यजमान को रक्षा बाँधे—

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्यꣳशतानीकायसुमनस्यमानाः।। तन्मऽआ बध्नामिशतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्।।

यजमानपत्नि रक्षाबन्धनम्—आचार्य यजमान-पत्नी को रक्षा बाँधे—

ॐ तंपत्नीभिरनुगच्छेमदेवाःपुत्रैर्भ्रातृभिरुतवाहिरण्यैः।। नाकंगृभ्णानाःसुकृतस्यलोकेतृतीयेपृष्ठेऽअधिरोचनेदिवः।।

यजमानतिलकाशीर्वादः—आचार्य यजमान को सपरिवार तिलक करे—

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्श्रवाःस्वस्तिनःपूषाविश्श्ववेदाः।। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु।।

आशीर्वाद—आचार्य यजमान को आशीर्वादस्वरूप फलादि प्रदान करे—

ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्त्यारुद्रावसवःसमिन्धतां पुनर्ब्रह्माणोवसुनीथयज्ञैः।। घृतेनत्वंतन्वं वर्द्धयस्वसत्त्याःसन्तुयजमानस्यकामाः।।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।
शान्तिरस्तु शिवं चास्तु शुभं चास्तु धनं तथा।
ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु ब्राह्मणानां प्रसादतः।।
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्।।
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।

यजमानपत्नि आशीर्वादः—आचार्य यजमान पत्नी को आशीर्वादस्वरूप फलादि प्रदान करे—

ॐ अनाधृष्टापुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्म्मेदाःपुत्रवतीदक्षिणतऽइन्द्रस्याधिपत्त्येप्रजांमेदाःसुषदापश्चाद्देवस्यसवितुराधिपत्त्येचक्षुर्म्मेदाऽआश्श्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्त्येरायस्पोषंमेदाः।। विधृतिरुपरिष्टाद्बृहस्पतेराधिपत्त्यऽओजोमेदा विश्श्वाभ्योमानाष्ट्राभ्यस्पाहिमनोरश्श्वासि।।

श्रीसार्द्धनवचण्डीपुरश्चरणं परिपूर्णम्

●

तन्त्रशास्त्र के महत्वपूर्ण ग्रन्थ-मूल संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित

- तन्त्रसार : परमहंस मिश्र (1-2 भाग)
- कुलार्णवतन्त्रम् : परमहंस मिश्र
- नित्योत्सव : (श्रीविद्याविमर्शकसद्ग्रन्थ) परमहंस मिश्र
- त्रिपुरारहस्यम् : (ज्ञान एवं महात्म्य खण्ड) जगदीशचन्द्र मिश्र (1-2 भाग)
- तन्त्रालोक : राधेश्याम चतुर्वेदी (1-5 भाग)
- स्वच्छन्दतन्त्रं : राधेश्याम चतुर्वेदी (1-2 भाग)
- नेत्रतन्त्रम् : राधेश्याम चतुर्वेदी
- कामाख्यातन्त्रम् : राधेश्याम चतुर्वेदी
- महाकालसंहिता : (कामकला-कालीखण्ड) राधेश्याम चतुर्वेदी
- महाकालसंहिता : (गुह्यकाली-खण्ड) राधेश्याम चतुर्वेदी (1-5 भाग)
- रुद्रयामलम् : सुधाकर मालवीय (1-2 भाग)
- शारदातिलकम्-सुधाकर मालवीय (1-2 भाग)
- मन्त्रमहोदधि : सुधाकर मालवीय
- लक्ष्मीतन्त्रम् : कपिलदेवनारायण (1-2 भाग)
- तन्त्रराजतन्त्रम्-कपिलदेवनारायण (1-2 भाग)
- महानिर्वाणतन्त्रम् : कपिलदेवनारायण
- कामकलाविलास : श्यामाकान्त द्विवेदी
- वरिवस्यारहस्यम् : श्यामाकान्त द्विवेदी
- स्पन्दकारिका : श्यामाकान्त द्विवेदी
- सर्वोल्लासतन्त्रम् : एस. खण्डेलवाल
- नीलसरस्वतीतन्त्रम् : एस. खण्डेलवाल
- भूतडामरतन्त्रम् : एस. खण्डेलवाल
- सिद्धनागार्जुनतन्त्रम् : एस. खण्डेलवाल
- अन्नदाकल्पतन्त्रम् : एस. खण्डेलवाल
- त्रिपुरार्णवतन्त्रम् : एस. खण्डेलवाल
- विज्ञानभैरव : बापूलाल अँजना
- श्रीविद्यार्णवतन्त्रम् । कपिलदेवनारायण (1-5 भाग सम्पूर्ण)
- देवीरहस्यम् : (रुद्रयामलतन्त्रोक्तम्) कपिलदेवनारायण (1-2 भाग)
- स्वर्णतन्त्र : भाषा टीका
- महानिर्वाणतन्त्रम् : कपिलदेवनारायण
- बृहत्तन्त्रसार : कपिलदेवनारायण (1-2 भाग)
- सौन्दर्यलहरी : लक्ष्मीधरी टीका सहित सुधाकर मालवीय
- सिद्धसिद्धान्तपद्धति : द्वारकादास शास्त्री
- आगमतत्त्वविलास : एस.एन.खण्डेलवाल (1-4 भाग सम्पूर्ण)
- राधातन्त्रम् : एस.एन. खण्डेलवाल
- सौभाग्यलक्ष्मीतन्त्रम् एस.एन.खण्डेलवाल

◆◆◆

डॉ. श्यामाकान्त द्विवेदी द्वारा हिन्दी में लिखित
तंत्र विषयक महत्त्वपूर्ण शास्त्रीय ग्रन्थ

- **श्रीविद्या-साधना :** (श्रीविद्या-उपासना का साङ्गोपाङ्ग शास्त्रीय विवेचन) (1-2 भाग सम्पूर्ण)
- **भारतीय शक्ति-साधना :** (शक्ति-विज्ञानः स्वरूप एवं सिद्धान्त का शास्त्रीय विवेचन)
- **ब्रह्मास्त्रविद्या एवं बगलामुखी-साधना :** (महाविद्याबगला-उपासना का शास्त्रीय विवेचन)
- **काश्मीर शैवदर्शन एवं स्पन्दशास्त्र :** (शिवसूत्र, शक्तिसूत्र एवं स्पन्दसूत्र के सन्दर्भ में)
- **मुद्राविज्ञान एवं साधना :** (नित्यकर्मीय एवं तान्त्रिक मुद्राओं का सचित्र एवं शास्त्रीय विवेचन)

◆◆◆

श्रीदक्षिणकालिका-सपर्यापद्धति
(दक्षिणकालिका-पूजक प्रबन्ध)
डॉ. रामप्रिय पाण्डेय

◆◆◆

वितरक
चौखाम्बा पब्लिशिंग हाऊस
नई दिल्ली - 110002
फोन न. 011-23286537, 32996391

प्रकाशक
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी-221001
फोन न. 0542-2335263, 2335264